श्री हरि

श्री प्रागट्य सिद्धांत ग्रंथ

रचयिता : श्री गोपालदासभाई
व्यासनिवासी
अनुग्रह महेश्वर
श्री रमणलालजी महाराज

संपादक : वैष्णवदास कमलवाला

सहायक : डी. पी. गुप्ता
रामरतन अग्रवाल
निर्मला शर्मा
कीशन स्वरूप
बालुभाई शर्मा

प्रसिद्ध करनार : रमणभाई रामजी राजा

मुद्रक : शैलेष प्रिन्टरी, रतनबाई मस्जिद सामे,
जामनगर. फोन : (०२८८) २६७१२९२
मोबाईल : ९८२५० ५३३३२

मांगल्य - १६ - सोळमुं

राग : 'अेवी सेजयाने जोइ जोइ रे नित्य भामनडा लीजे'

उपवित आनंद उत्सव करीयने रे श्री गुंसाईजी थया प्रसन्न
नित्य नौतन रस अनुभव करे रे पोताने माने धन्य ।१।
रूकमणीजी आदि सहु भक्तने रे अेणी पेरे दे सुख दान
स्वतः दयाअे सींचन सर्वने रे करे अेवा कृपा निधान ।२।
अेणी पेरे लीला प्रतीक्षण नितनवी रे करे व्हालो परम उदार
अे सुख अनुभवीआ अनुभव करे रे पण कहेता न आवे पार ।३।
अेवे अेक समय श्री गुंसाईजीअे रे कर्यो द्वारकानो उदेश
चाल्यानी सामग्री सिध्ध करी रे लीधुं मुहुरत परम सुदेश ।४।
पुत्र रत्न महा वल्लभ कारणे रे भणावाने आव्युं मन
उपाध्यो अेक उतम राखीअे रे जो होअे महा वितपन ।५।
त्यारे गिरधरजीअे अेम कह्युं रे उपाध्यानुं शुं काज
नित्य हुं भणावीश अेहने रे तमो पधारोजी राज ।६।
अेना मननो आशय अेणी पेरे हुं भणावीस न कांइ तेह
अेवुं बुध्धी प्रमाणे सूचव्युं रे जे भण्या विन रहेशे अेह ।७।
श्री गुंसाईजी पधार्या द्वारका रे सहु सोंपीने अेहोने काम
अेणे जे विचार्युं तेह कर्युं रे भणावानुं न लीधुं नाम ।८।
कोइ अेक कारणे फरी पधार्या रे श्री गुंसाईजी निजपुर ज्यांहां
उपाध्यो तेडावी राख्यो रे महाप्रभुने भणावा त्यांहां ।९।
वेदना मंत्र सहित श्रीजी पढे रे ते उपाध्या केरे पास
उपाध्यो नाम नारायण तेहनुं रे करणाटक तेहनो वास ।१०।
लोक विदित सहु कोइ अेम लहे रे पण पूरे उपाध्यानी आस
श्री महाप्रभुसुं स्नेह करे घर्णो रे नित्य अेम रहे जेम निजदास ।११।
वेद पूराण स्वरूप थकी हवा रे आतो महा प्रमेय प्रकार
आश्चर्य थई अने उभा रह्या रे प्रभुजीअे कर्यो सतकार ।१२।
अेह स्वरूपनी कणिका जाणवा रे अभिलाष कर्यो अतिसार
ने अंतरगत महाप्रभु लहे रे कीधो छे अंगीकार ।१३।
जीरे वेद भणे अलौकिक पेरे रे जाण्युं आवडयुं अेहोने सर्व
सरस्वति कर जोडी उभी रही रे मेली पोतानो गर्व ।१४।
विद्या जावदिक जे भांतीनी रे ब्रह्मानी निरमी जेह
तेथी अलौकिक आदि सहु रे सनमुख ठाडी रहे तेह ।१५।
अवसर पामे नहीं को आपणो रे अभिलाष धरी मन मांह
जे सामुं व्हालो सनमुख जुअे रे ते भाग्य सराहे त्यांह ।१६।

सहु कोइ मनमां मनोरथ अतिघणो रे करता आगे कर जोड
अे प्रागट्य थकी सहु कोइना रे पूर्या व्हालाजीअे कोड ।१७।
जे अक्षर प्रभु श्रवणे सुणे रे ते सत गणुं उरमां थाअे
कोटि गणुं थई वचन उचरे रे उपाध्यो हरख न माय ।१८।
व्हाल करे व्हालासुं अति घणुं रे खोले लइ थई प्रसन्न
अेणी रीते भणावे प्रेमसुं रे पोताने माने धन्य ।१९।
अेवुं जोइ अंतरमां लहे र अे बालक कारण रूप
मानवीय कृत्य न अेमां संभवे रे अे को अलौकिक अेह स्वरूप ।२०।
अेहवुं जे ज्ञान उपाध्याने हवुं रे तेनुं कारण कोण प्रतिक्ष
प्रतिष्ठा अेहने दीधी घणी रे पोते कहाव्युं ज़े शिक्ष ।२१।
महा दुर्लभ छे अे प्रभु जाणवा रे कृपाथी पाम्यो अेह
अेवो अनुग्रह अेहोने कर्यो रे खोले बेसाडया तेह ।२२।
वेद सकलनुं फल अेहोने हवुं रे महा सफळ थयो अे श्रम
प्रभुने पढावी पोते पढयो रे ने जाण्या पूरण ब्रह्म ।२३।
अशुद्ध उच्चार उपाध्यो करे रे अज्ञाने जेह अन्यत्र
शुद्ध करी सुणावे तेहने रे प्रभु अेहवा महा विचित्र ।२४।
वेद समग्र प्रभु पासे पढयो रे उपाध्यो तेणी वार
प्रभु पढाव्या ते केणे नथी रे पढाये नथी निरधार ।२५।
ते प्रमाण करवा कहुं छुं रे श्रीमुख वचनामृते सार
उलटभर व्हालाजीअे कहयुं रे जे करवा अे निरधार ।२६।
लरिका ब्राह्मणके बोहोत पढे हमारे संगनी मांह
उपाध्या उनहीसो खीजत रहे रे पे हमसुं बोलत नांहीं ।२७।
अेक वेर उपाध्याने यों कहयो रे में कहां पढाउं वेदांग
लरिकाइ पढावत है मोंहेकुं रे जब घोषत हैं हम संग ।२८।
श्री गोकुलमां अेक तिहोतीओ रे ब्राह्मण आव्यो अेकवार
वेद भणे महाप्रभुजी आगल रे प्रभुजी भणावे अे अनुहार ।२९।
ते जोइ मालजी पंचोली कहे रे जे सुणीअे श्री महाराज
वेद पढया वरस घणा थया रे अने जाणे पढया जो आज ।३०।
अे सुणी मुसकाया महाप्रभु रे आनंद सहित करी नेह
त्यारे पंचोलीजीअे पूछयुं रे केनी पास भण्या छो अेह ।३१।
वलतो उतर अेहोने कहयो रे करूणा करी अने हित मांह
सब काहुन ये हम पढे रे अरू काहुपे पढे नांहीं ।३२।
अेणे वचने अे प्रमाण लहे रे जे भण्या नथी को पास
नित्ये करवुं ते सहु अे करे रे जे भट्टनी पूरी आस ।३३।
वेद तो आतुर थई शरणे रहयो रे जाणी रक्षा करशे अेह
कलीयुगमां अमने अेह राखशे रे अेम जणाव्युं निःसंदेह ।३४।

अेवुं जाणीने जे अनुसर्या रे जादव अेक विद्या मात्र
इच्छाअेथी सहु सांप्रत्य छे रे उपाध्यानुं शुं गात्र ।३५।
अेणीपेरे वेद पढया व्हालो त्यांहां रे हर्या सहुना परिताप
उपाध्यानी अेक हांसी कही रे श्री महाप्रभुजीअे आप ।३६।
जब हम वेद पढे लरिकाइमों रे तब वात चली अेक वार
अमका ब्राह्मणको नाम ले रे सो भूखे रहे निरधार ।३७।
तब उपाध्याने अेसी कही रे जे काहे ते यों होअे
तब कही कृपण बोहोत हे याहीते वाको नाम न लेवे कोइ ।३८।
तब बोल्यो अेसी कयों बुझीअे रे ले ते ब्राह्मणको नाम
केसे के कोइ भूखो रहे रे अे ब्राह्मणको नहीं काम ।३९।
अे लेहुं में उनको नाम लेतहुं रे देखे क्हा होयगो आज
यों कही नाम लीयो उन वाहीको रे अेम बोल्या श्री महाराज ।४०।
तेसे निहोता आयो आपुने रे गोविंद मामाको सोय
काकी आदि सब काहकुं रे उपाध्या सहित सब कोय ।४१।
तुम आये पीछे वहां होयंगो रे अपने सब मंगल काज
कह्युं देवरखे तुम सब चलो र मेरे घर भोज हे आज ।४२।
पाछे काकीकुं वहां ले गये रे उपाध्याकुं गअे भूली
मोसुं पूछो माता कहां गये रे मेरो कहा कीनो शूल ।४३।
तब में उतर वासुं यों कहयो रे गये नहोतो आयो त्यांह
लाउं में सामग्री आपुं तेरे तुम पाक करो जो आंहां ।४४।
तब उपाध्या बोले मोहेसुं रे करवेको मोही प्रमाद
भूख बहोत लगी हे मोहीकुं रे कछु होय तो लावो प्रसाद ।४५।
हम ज्यांहां देख्यो त्यांहां पैये नहीं रे काकी कछु राख्यो न त्यांहां
हम पूछयो पायाकी बहेनकुं रे मासी कहेत हम ज्यांहां ।४६।
उन कहयो रूकमणीजी आये पाइये रे तब हांसी आइ मोहे
उपाध्या खिसीयानो होइ रहे रे तब कारण समजे सोअे ।४७।
पाछे काकी घर आये जबे रे तब दिनो कछु प्रसाद
सो लेके सोअे रातकुं रे अेसो यहु भयो विवाद ।४८।
उपाध्या बोल्यो आज पे रे भूलेहुं न लेहुं नाम
अे श्रीमुखे वातो कही रे हंसी हंसीने महा सुखधाम ।४९।
दीनता उपाध्याने उपजी रे पाम्यो मन पश्चाताप
मिथ्यावाद कर्यो महाप्रभुसुं रे हम समज्यो नहीं कांइ आप ।५०।
प्रभुअे शास्त्र तणो आदर कर्यो रे जे न लीजे कृपणनुं नाम
ते मारा मनमां आव्युं नहीं रे अे अनुचित कीधुं काम ।५१।

अवगुण पोतानो ओहोने स्पुर्यों गुण मान्यो प्रभुनो सर्व ।५२।
दिनता आवी ओहने अति घणी रे गयो लौकिक सघळो गर्व
अंगीकार तणु बल ओहनुं रे जेने करवा हिंदे दान ।५३।
तेने अलौकिक प्रभुना गुण स्फुरे रे ओवा महा कृपा निधान
वेद स्मृति भणाव्युं उपाध्याने रे तेथी प्रगट्यु स्वरूपनु ज्ञान ।५४।
अदभुत कारण विचारी ओहोने रे कराव्युं ओ पस्यान
गुंसाईजी न्यारा थावा दे नहीं रे पासेथी ओक क्षण मात्र ।५५।
लाड करावे नाना भांतसुं रे अति प्रेमे दिन ने रात्र
ओम नित्य कौतिक हास्य करे घणारे सहुना सिध्ध थाओ काज ।५६।
क्रीडा अनेक प्रकारे सर्वसुं रे करे नौतन श्री महाराज
ज्यारे पधारे यमुना स्नानकुं रे पधरावे प्रभुने साथ ।५७।
तेह प्रकार करी विसद आपणो रे श्री मुखथी कह्यो छे नाथ
श्री गुंसाईजी पधारे स्नानकुं रे तब मोहेकुं संग ले जाय ।५८।
हाथ उपर राखे मोहीकुं रे ओही भांती तेरवो सिखाये
ओ वात महाप्रभु प्रफुल्लित थई रे कही छे पोते बहुवार ।५९।
तेनो आसय को लहे नहीं रे अति गर्भित बहु विस्तार
जाणेसमर्पे श्री गुंसाईजी ने रे महा वस्तु अपूर्व सार ।६०।
ओथी अधिक सुख कांइ बीजुं नहीं रे मन जाणी ओ निरधार
इंद्र नीलमणीनी आभा हरे रे ओवुं महा सुशोभित वारी ।६१।
विश्वतारकने तरावे ते मांहीं रे ओ अपूर्व परम अपार
अथवा मध्य थई श्री गुंसाईजी रे जल क्रीडा केरे द्वार ।६२।
दान करावे यमुनाजी ने रे जेमां रसनो नहीं पार
यमुनाजी सौभाग्य मदे थकी रे आनंदया अतिसे त्यांहां ।६३।
तरंग रूपी निज भुजसुं करी रे आलिंग्या अति रसमांह
कोटि कंदर्प लावण्य वालमो रे महा माधुर्य छे श्री अंग ।६४।
अंतरनी आतुरताओ मल्या रे अभिलाषे पाम्या संग
अति आशक्ते चलण वलण करी रे अति गुप्त प्रगट अनुहार ।६५।
महा प्रेमभर ओहोना भावनो रे प्रभुओ कर्यो अंगीकार
पेस्यामां जे प्रेम प्रगट होओ रे थाओ सहु क्रीडा संपन्न ।६६।
रस अनुभवीआ ते रस लहे रे बीजा नव समजे अन्य
सात्विक आदी अनंत प्रगट हवा रे रस अंतर्गति भाव ।६७।
जल आवर्णे को जाणे नहीं रे जाणे रसिक वर राव
ओहोनी करूणाथी ज्ञापित होओ रे के अनुभवी जाणे ओह ।६८।
व्हालो अलौकिक द्रष्टिथी जेहने रे जणावे जाणे तेह
त्यां रहीने जे कोइ दर्शन करे रे तेहने नेत्र परम सुख होय ।६९।
रसभर अनेक मनोरथ उपजे रे अने तृप्ती न थाओ कोय

नेत्र अंजुलीअे मधुर लीला तणु रे प्रेम जुत करे पान ।७०।
आलिंघन आदि भाव अनेकनुं रे होअे उदीपन रस दान
श्री यमुनाजीना भाग्य सराहे छे रे जल क्रीडा जोइ सहु कोय ।७१।
करी प्रशंसा अति प्रेमे भरी रे जे रस भावापन सोय
सर्वना रसनो अनुभव करे रे जमुनाजी भाग्य श्रेष्ठ ।७२।
जेने तट जइने उभा रह्या रे वनिता वृंद कोटि वरेष्ट
यमुनाजीनुं महातम को कहे रे महा अंतरंग अनुकूल ।७३।
केवल रस भावापन अे लहीअे रे तेनुं कारण महा समूल
तेहज जाणे जे कोइ अनुभवे रे बीजां नव जाणे कोय ।७४।
के वली पदम पूराणे अे कहयुं रे दसमा अध्यायमां सोय
यमुनाष्टक जेमां प्रगट कहयुं रे स्वकीय तणु सुखदाय ।७५।
वर्णन महाप्रभुजीअे कर्युं रे तेनो महीमा केम कहेवाय
प्रथम श्री गुंसाईजीअे कांइ श्लोकनी रे पोते टीका करी आप ।७६।
विवरण यथार्थ थाअे नहीं रे ते मनमां रहे परीताप
गूढ अगम्य रसे पूरित सदा रे जे अनुभवथी समजाय ।७७।
केवल रसात्मिक अंतरंग तणो रे तेनुं विवरण केम करी थाय
श्री गुंसाईजीअे स्वरूप आसे लही रे जाणी मनमां निरधार ।७८।
तमो विवरण करो श्री यमुनाजीनुं रे श्रीजीने कह्युं तेणी वार
आज्ञा पालके आज्ञाने हिते रे कांइ विवरण कीधुं श्लोक ।७९।
संपूर्ण विवरण कीधुं नहीं रे कीधुं साडा त्रण श्लोक
अष्टपदी श्री गुंसाईजी कृत हवी रे हरी कृष्ण मिलन अंतराय ।८०।
जे टीका श्रीजीअे करी नहीं रे कह्युं महारस विसद न थाय
अेवा रसात्मिकनो रस अनुभवी रे बाहेर पधार्या नाथ ।८१।
अंगुछो कीधो श्री गुंसाईजीअे रे निजघेर पधार्या साथ
को अेक समये वली श्री गुंसाईजी रे पधारे गंगा स्नान ।८२।
प्रागदिशे पहोंचे तेरीअने रे अेम कह्युं छे कृपा निधान
जब कबहुं श्री गुंसाईजी आपकुं रे त्रीवेणी स्नानकी इच्छा होय ।८३।
तब पधारे आप तेरीके रे ठाडे हम देखे सोय
लीला संतोष आनंद भर थकी रे उपज्युं फलनुं फल सार ।८४।
अेम करी करी देखाडे प्रभुने रे हुं पोहोंतो महासुख पार
अेवा भाव अनेक प्रकारसुं रे पधारे पेले पार ।८५।
आतुरता अंतर क्षण न सहे रे आवी जुअे प्राण आधार
अेवी प्रतिक्षणुं लीला नितनवी रे जलक्रीडा अनेक प्रकार ।८६।
प्रमुदित थई आनंदे रमे रे श्री विठलजीने द्वार
ज्यारे रथ यात्रा उत्सव होय रे रथ बाहेर काढे त्यांहां ।८७।
जमुनाजीना कूले थई अने रे फेरे ते सहु नगर मांहां

त्यारे श्रीजीने शणगारीने रे पधरावे बहु करी प्रीत ।८८।
सेव्य स्वरूप बहु साजसुं रे बेसाडया मार्ग प्रणीत
तेनी आगल श्री महाप्रभुजीने रे मुख्य बेसाडे त्यांहां ।८९।
श्री गुंसाईजी अति उलट भर्या रे रथ सिद्ध कर्यो छे त्यांहां
श्री मुख लावण्य सागर उलसे रे शोभाभर अमित तरंग ।९०।
दर्प हरे छे कंदर्प कोटिनो रे मोहक छे श्री अंग
ते परम अदभुत शोभा जोइने रे करे अव्यक्त रूप रसपान ।९१।
फरीने सहु कोइ अेने जुअे रे कांइ रहे न अनुसंधान
गान करे छे अनेक प्रकारना रे त्यां वाजे बहु वाजिंत्र ।९२।
ताल पखावज नाना भांत्यना रे नृत्यकारी करे नृत्य
रथ रचना ज्युत बहु शोभा भर्यो रे ते दीसे परम अनूप ।९३।
तेनुं वर्णन करीअे क्यांहां लगी रे ज्यांहां बेठा श्री गोकुलभूप
अनेक समाजे परवेष्टीत घणुं रे त्यां मल्यो छे बहु संजोग ।९४।
परदा करी ने भीतर भावसुं रे समय समय समर्पे भोग
परदामां श्री महाप्रभुजी रहे रे तेनी आतुरता न सहेवाय ।९५।
भोग सरे सहु कोइ दर्शन करे रे त्यारे नेत्र शीतल सुख थाय
श्रीमुख अवलोके प्रेमसुं रे करे लावण्यामृत पान ।९६।
अेणे समय न जाण्युं केहेने रे होये सौभाग्यनुं अे दान
श्री गुंसाईजीअे त्यां दंडवत कर्या रे श्री नाथजी ने उदेश ।९७।
लीला माहा दूरावी अेणी पेरे रे जेम समजे नहीं कोइ लेश
मर्यादा विरूध्ध रूचे नहीं रे श्री गुंसाईजीअे जाण्युं अेह ।९८।
धर्म रक्षकनो आश्रय लहीने रे दूरावी नमन कर्युं तेह
सनमुख बेसाड्यामां कारण घणुं रे ते विसद नहीं कहेवाय ।९९।
महा उत्कर्ष विचारी अेहनो रे ते आसय नहीं समजाय
अे आसय जणाव्यो तेने रे चाचाजी आदि भक्त ।१००।
लीला भेद तणुं कारण लहे रे जे अंतरंग अनुरक्त
अे कहयुं छे श्री महाप्रभुजीअे रे श्री मुखथी सर्व प्रमाण ।१।
दामोदरभटे अेम पूछीयुं रे ते सुणीयुं भक्त सुजाण
जे महाराज अमोअे सांभल्युं रे रथ उत्सव केरे दिन ।२।
राजने सनमुख बेसाडिने रे श्री गुंसाईजी थाअे प्रसन्न
त्यारे श्री महाप्रभुजीअे अेम कह्युं रे हांहां कही तेही वार ।३।
सब आगे मोहेकुं बेठावत रे करते बोहोत श्रृंगार
अडेल गढा उत्सव मनोरथ समे रे प्रतिवर्ष करे इह भांत ।४।
जब ते मथुरा आये वासकुं रे तबे ते छूटी यहु वात
हिंदु स्थल बाहेर फरते रे कछु नाहीन रथको सोच ।१०५।
मथुरामां आये हम जबहीते रे इहां मलेछन को संकोच

अरू वे रथ बहु बडो हतो रे गढामो करवायो मोल ।१०६।
महा सुंदर विचित्र भांत्यको रे वाकुं पैया कीने सोल
ताकुं घोडा कीने काठके रे दोउ समयके माप ।७।
देखतहुंके असे दीशे रे मानो उठी चली हे आप
अणे प्रकारे रथनी वारता रे करी कही छे ते बहु पेर ।८।
समय समय ते सहुअे सुणी रे महा आनंद उलट भेर
सवंत सोलसे सोलोतर रे महा वदी ने तेरस मांह ।९।
अडेल थकी श्री गुंसाईजी पधार्या रे जगन्नाथराय छे त्यांह
शोभाजी गीरधरजी संग छे रे रूकमणीजी सहित समाज ।१०।
अे सहु साथे लेइ पधार्या रे घेर महेल्या श्री महाराज
पांचमे मासे परम उत्साहसुं रे श्री गुंसाईजी पधार्या घेर ।११।
श्री महाप्रभुजीने सनमुख थई रे करी वात्सल्यनी बहु पेर
श्रम गति कीधो अे श्रीमुख जोइ रे श्री गुंसाईजीअे तेणी वार ।१२।
अंतरनो परिताप समावीने रे जोया ते वारंवार
त्यांहां रथ उत्सव जोइ आव्या रे ते आणी मनमां प्रीत ।१३।
तेवी लीला सहु अे अहींया करे रे करी अधिक अधिक बहु प्रीत
रासो सूतार संगे त्यां हतो रे ते जोइ आव्यो चकडोल ।१४।
तेणे त्यां आवीने रथ घडयो रे महा सुंदर परम विशाल
ते दिवसथी रथ रचना घणी रे बहु भांति ते प्रति वर्ष ।१५।
नित्य प्रतिक्षणुं लीला वाधती रे सहुने मन प्रगटे हर्ष
अेक वार ते बांधागढ तणो रे वाधेलो राजा जेह ।१६।
रामचंद्र अभिद्यान छे जेहनुं रे दरशनने आव्यो तेह
नमन करी श्री गुंसाईजीने रे त्यां बेसे सनमुख थई ।१७।
गीरधरजी आदि ते आव्या रे ते पूछया नाम लेइ
श्री गुंसाईजीअे नाम तेहने कहया रे समजावी तेणी वार ।१८।
गीरधरजी गोविंद बालकृष्ण कही रे कहयुं अे त्रणे अनुहार
अे सुणी राजा विस्मय थयो रे क्यां सार तणुं जे सार ।१९।
पोते महा विचिक्षण अति भलो रे कीधो मन मांहें विचार
त्रिलोक विख्याती छे अेहनी रे महा धर्म धुरंधर जेह ।२०।
जे श्री वल्लभ वल्लभ जगतना रे पूछयुं कहो क्यां छे तेह
त्यारे पूछयुं श्री गुंसाईजीने रे जग वल्लभ छे क्यांहां ।२१।
उतर दीधो राजाने त्यांहा रे शो भीतर अपरस मांहां
त्यारे राजाअे विनती करी रे जे मारे अेक विगतव्या ।२२।
बोल्यो तेहोने अहींया पधरावीये रे तेहनुं दर्शन करतव्य
श्री गुंसाईजीअे गीरधरजीने रे पधरावा पठव्या त्यांहां ।१२३।
वेगा वेगा थई अने त्यां गया रे श्री प्राण वल्लभ छे ज्यांहां

लाड लडेतो अति रसभर रमे रे भीतर मंदिर नवरंग ।१२४।
खेले खेलवणे आनंदसु रे त्यां भीतरीयाने संग
त्यां जइ गीरधरजीअे अेम कह्युं रे राजा आव्यो छे अहींया ।२५।
सुरति करे छे मनमां अति घणी रे पूछे छे तमने त्यांहां
महाराजा राजेश्वर अभिनवा रे अतिशय महा धीरजवान ।२६।
बोल्या में तो हुं यहां काजमें रे अेम कही समजाव्युं सान
त्यारे गीरधरजीअे अेम कह्युं रे राजाने मन परिताप ।२७।
ते माटे मने अहीं मोकल्यो रे काका तेडे छे आप
त्यारे धर्म धुरंधर बोलीया रे करी पिता वचन प्रमाण ।२८।
वहां आयो हों छोही जाउंगो रे अेम बोल्या चतुर सुजाण
गीरधरजी त्यारे अेम बोल्या रे नाही लीज्यो छोहे जाओ ।२९।
पे आयो तो वहां चाहीये ताते वेगेही करीके आओ
वलता महाप्रभु पधारीया रे अनाध्य पुरूष अवतंश ।३०।
पद अंबुज वंदित छे जगतने रे परमादभुत भूषण वंश
कोटि कंदर्प लावण्य मुसकनी रे करे सर्वना दु:ख परीहार ।३१।
धोती उपरेणो अति भावता रे ओवारूं कोटिक मार
झलकते अंबोडे उलट भर्या रे वक्ष:स्थल परम विसाल ।३२।
मणी मुक्ता संयुक्ते शोभीअे रे कंठे तुलसी माल
करणे कुंडल सोहे ललकता रे झलकती मुद्रिका सार ।३३।
केशर तिलक ते परम सोहामणुं रे अंग भूषणनो नहीं पार
महा प्रतापैक अतिसय उग्रसुं रे करूणा भरनो नहीं पार ।३४।
विकसित वदने अतिसय लटकता रे पधार्या सभा मंझार
अतिसय अदभुत सुंदर जोइने रे राजा महा भाग्यवान ।३५।
सभा सहित उठी उभो थयो रे प्रभुअे कीधुं सनमान
श्री गुंसाईजी महा कारण जोइ रे उठी बेठा त्यां आप ।३६।
आश्चर्य अनुभवे अति घणुं रे सही शक्या न तेज प्रताप
मुक्ष तो पिता श्री गुंसाईजी रे अने ते वली पुरूषोतम ।३७।
अेहनुं आसन ठहेराणुं नहीं रे अदभुत चरित्र अगम्य
परम प्रतापेश्वर शोभा भर्या रे जे अनाद्य पुरूष कहेवाय ।३८।
तेह पधारे ज्यारे मलपता रे त्यां बेठा केम रहेवाय
अेवी लीलामां भाव अनेक छे रे वली कारणनो नहीं पार ।३९।
बुध्धी न चाले मारी बोलवा ते केम थाअे विस्तार
ते राजा सौभागी अति घणो रे जे परात्पर भाग्यवान ।४०।
सनमुख बेठो श्री महाप्रभुजीने रे करे स्वरूप सुधा रसपान
अे राजा उपर श्री महाप्रभुजी रे पोतेथी सदा प्रसन्न ।१४१।
गाअेण धुपद गाअे अेहना रे त्यारे रीझे अतिशे मन

चूटकी दे स्वर पूरे तेहने रे वली कही समजावे वात ।१४२।
ते उपर वातो चाले घणी रे अेहना जशनी नाना भांत
ते राजानी श्रीमुखे वारता रे श्री गोकुलमां बहुवार ।४३।
अन्य उपदेशे हित अर्थने रे करी कही छे विस्तार
जे मांहे दया दान बहु भांतना रे जे स्नेह तणुं छे रूप ।४४।
सेवक धर्में स्वामीनी उग्रता रे उदार गुणज्ञ अनूप
ते कहेता वचनामृत सांभले रे होअे स्वरूप ते हृदयारूढ ।४५।
अनुभवीने अनुभव सहु संपजे रे वली माने आसय गूढ
अे मांहे केवल कारण स्वकीयनुं रे मांहे अन्य प्रकार अनेक ।४६।
तेहने जाणवा को सामर्थ नहीं रे कांइ अेक कहीअे विवेक
समय समय श्री महाप्रभुजीअे रे वार्ता कही वारंवार ।४७।
राजा रामचंद्र धरमात्मा रे ब्रह्मणिक ओर बडो उदार
उनके बेटा वीरभद्र हतो रे ओ जाणे शास्त्र विचार ।४८।
वापे ब्राह्मण आयो जाचवा रे ताको कीयो नमस्कार
मनकामना सिध्ध यों बोली के रे उन दिनो आशीरवाद ।४९।
नमन कर्यो नहीं याही बोलकुं रे वासु कीनो बहुत विवाद
देखो इतनो हुं समझत नहीं रे ब्राह्मण हे बडो अज्ञान ।५०।
आशीरवाद दीयो विन जानी के रे नहीं अक्षरको विज्ञान
ब्राह्मण खिशीयानो बहोत भयो रे सो सुन्यो रामचंद्र आप ।५१।
बेटा वेगी निकट बोली लीयो रे मनमों उपज्यो परिताप
तुम जो पढे सो ब्रह्मनाहुं को रे करवेकुं श्रोणीत पान ।५२।
अपने पढवे को कहा काज है रे सेवा करी दीजे दान
ब्रह्मना कहे जो शुभ मानीअे अरू दीजे नाहीन दोष ।५३।
अबते ब्रह्मनासुं कछु मति कहो रे में मानुगो तब रोष
अेक ब्राह्मण केरे काजकुं रे कीयो बेटाको अपमान ।५४।
अेहवो ब्रहमणिक धरमात्मा रे अरू दयावंत गुणजान
वली अेकवार अेहोना देशमां रे विडंबर थयुं तेणी वार ।५५।
तेणे सर्व देश उद्धोष हवो रे राजाअे कर्यो विचार
देशाधीपतिसुं मली अने रे पोतानो वार्यो देश ।५६।
त्यारे फरी अने आवी देशमां रे पोते कीधो प्रवेश
त्यारे दीवानने अेम कहयुं रे जे ब्राह्मणनुं होअे गाम ।५७।
महारा घोडानो खुर मुकवा रे म देशो तेणे ठाम
अेहवो सत्य संकल्प दाननो रे ब्राह्मणनो अे प्रतीपाल ।५८।
शुध्ध मने आचारी अति भलो रे मागदनो परम दयाल
अेक समय ब्राह्मणना पुत्रने रे उपवित केरूं छे काज ।१५९।
ते आव्यो आतुर थई जाचवा रे उभो रहयो कही महाराज

त्यारे महीपाले मंत्रीने रे पूछयुं शुं आपुं आज ।१६०।
बोल्या सत रूपैआ आपीये रे ब्राहमणनुं थाशे काज
त्यारे राजाअे त्यां अेम कह्युं रे सत रूपैया कहा होअे ।६१।
अपने बबुअेको जब व्याह कर्यो रे देखा कहा लगोअे सोअे
क्यां बबुओ क्यां ब्राहमण रे पण अेवुं मोटुं मन ।६२।
अे द्रष्टीमां आवे नहीं रे त्रणवत छे वैभव धन
मुक्ती मेहेली छे दातुर्यनी रे दान तणी जे वाट ।६३।
इन काहुकुं कबहुं दीयो रे सहश्र ते कछु नहीं घाट
श्रीजीअे सभा मांहे फूलशुं रे कहयुं छे कंइ वार ।६४।
इनकुं लक्ष कोड बहु नहीं रे अेसो बडो उदार
कहे ते कछुअे बने तो नहीं रे याकेसी मन वृत्य ।६५।
कबहुं अेसो होय नहीं रे ओरन ते यह कृत्य
तानसेनना गुणना गुण उपरे रे राजा रीझयो अेकवार ।६६।
आज्ञा दीधी अेहने आपीये रे रूपैया दश हजार
त्यारे तानसेनने तेडी अने रे कहयुं राजानी समक्ष ।६७।
तेणे आशीरवाद दीधो अेणीपेरे रे जे महारे छे लक्ष
राजाअे पूछयुं अेणे शुं कहयुं रे ते कहयुं करी सनमान ।६८।
बोल्या लक्ष करीने मानीयुं रे अेणे राजानुं दान
लक्ष कहा दश हजार ते अधिक हे रे अेम बोल्यो मुख महीपाल ।६९।
तो बोल्या लक्ष देवावहुं याहीकुं रे महा शुध्ध ने परम दयाल
त्यारे तानसेनने अेम कहयुं रे राजा अेसे अेसी होय ।७०।
राजा अति प्रसन्न तुम पर भयें रे जो लक्ष देवावत तोय
ते वली गुणीजन फरी अेम कह्युं रे में पाअे दाम करोड ।७१।
अे सुणी राजाअे ततक्षण कह्युं रे आपो अेहने करोड
त्यारे परधाने ढेरी करी रे जे करोड रूपैया तेह ।७२।
ते राजानी द्रष्टे परीआ रे कहयो इतेक होत हे तेह
जद्यपि करोड रूपियानी करी रे ढेरी तेणी वार ।७३।
पण राजाने चित न आव्युं रे अेवो महा परम उदार
जेनो जश सहु जगत विस्तर्यो रे ने आपे अेटलोक दान ।७४।
जेनी कृत्य प्रभु आगल हवी रे महीपतना मेटे मान
वली अेक समय अे उपरे रे राजा थयो प्रसन्न ।७५।
सुणी गान महा गुणीनुं रे रीझयो ते अति घणुं मन
आज्ञा आपी आपो अेहने रे खीचडी भरी अने थाल ।७६।
मणी माणेकनी भेली करी रे आपी खीचडी महीपाल
अेवो अे राजा अवनी हवो रे जेनुं अति उदभट दान ।१७७।
जे दीठे को धीरज नव धरे रे महीपतना मोडया मान

ते राजानो जस बहु पेरनो रे	प्रभु बोल्या छे हितभेर	।१७८।
मुसकाईने ते महा मोदसुं रे	अे धुरपदनी कही पेर	
अेक वेर अकबरने पूछीओ रे	तानसेनकुं दे के मान	।७९।
तुम धुरपदमां अेसे क्यों कह्यो रे	राजा हिंदु सुलतान	
तानसेनने जब उतर दीओ रे	महीपतिसुं अेसी भांत	।८०।
वे अेसेही हे सब काजकुं रे	जिनकी कहीअे क्या वात	
तब पूछयो राजाने कहा दीओ रे	इन उतर दीयो ताहे	।८१।
मानिक मोतीनी खीचडी देइ रे	जे अजहुं खैयत आहे	
फरी पूछो अेक हम अेसी सुनी रे	जामें मोती बहु मोल	।८२।
कंठमाला राजाके कंठकी रे	तुमको दिनी हे खोल	
तानसेनने तब अेसी करी रे	माला मोतीकी धोअे	।८३।
मेली रकेबीमों आगल धरी रे	देखी रहयो आश्चर्य होअे	
इन जान्यो कछु ओर अधिक करे रे	देवेंगो मोही दील्लेश	।८४।
उन राखी अपने भंडारमें रे	कछुये दिनो नांही विशेष	
वली अेकवार महाप्रभुजीअे कही रे	अे राजानी अेक वात	।८५।
अे मांहे सहेन ने उदारता रे	करी कही छे नाना भांत	
अेकवार अेक ब्राह्मण मांगवे रे	आवत हे राजा पास	।८६।
श्रमित भयो मारगमें आवतो रे	नेक छाहया लीओ उसास	
मनोरथ मांगवेको जितनो कीयो रे	सो लख्यो सव अवनी मांहें	।८७।
राजा मृगयाकुं गयो हतो रे	सो आयो अकेलो त्यांहें	
राजाने पूछयुं तुं कोन हे रे	अरू कहा लिखत हे अेह	।८८।
ब्राह्मण राजाकुं चिन्हे नहीं रे	कहयो मन को मनोरथ जेह	
में ब्राह्मण ओर आयो मांगवे रे	महीपतीकी महिमा जान	।८९।
लिखत हुं जो मेरे चहीये रे	देनो हे कन्यादान	
अेक मनोरथ मेरे यज्ञ को रे	अरू चहीये उदर निर्वाह	।९०।
अेह सब राजापे मांगवे रे	आयो हुं करी उमाह	
तब वे राजाने दूरी कहयो रे	वे ब्राहमणसुं तेणी वार	।९१।
इतनो राजा तोहीकुं देयगो रे	जानत हे निरधार	
राजा मेरो गुण जानि हे रे	अरू कहे महा सुजाण	।९२।
ते छाती पर पाय देयके रे	लेउंगो उचित दान	
अे सुनीके राजा त्यां ते चाल्यो रे	सो आयो अपने धाम	।९३।
पाछे ब्राह्मण आयो रे	लेत राजाको नाम	
राजा सभा सहित बेठो हतो रे	उन दिनो आशीरवाद	।९४।
तबही लीनो निकट वुलायके रे	पूछी मनकी मर्याद	
तब उन अभिलाषा कही रे	मनमों धरीयो जोय	।१९५।
राजाने तबही मंगवाय के रे	तेही छीनुं दिनो सोय	

राजाने ब्राहमणसुं कही रे पहेलेकी सुरति देवाय ।१९६।
तुम जु कही हे में लेउंगो रे छातीपे पग पसराय
जो कह्यो सो कीनो चहीये रे राजाने कह्यो सुख पाय ।९७।
अेसी भांतीको दान दीयो सबे रे तब विप्र रह्यो संकुचाय
महा सुशील नीको हतो रे शुभ नेष्टिक अरू सुज्ञान ।९८।
मलेच्छसुं संभाषन ना करे रे जे करे तो करे स्नान
अेवी वातो प्रसन्न थई रे कही छे ते श्री महाराज ।९९।
तेणे अर्थे में आ विशद कर्युं रे समे सूचन करवा काज
कह्युं अेक वेर इनको पिता रे राजा वीरभाण हे जाअे ।२००।
श्री आचार्यजीकुं मिलवेकी हुं रे रहे उत्कंठा मन मांहे
श्री बडे श्री गुंसाईजी जब रे पुरूषोतम पधारे दुजीवार ।१।
राजा मारगमां आयके रे कीनी बहुत मनुहार
श्री आचार्यजी सहेज नित बेठे हुते रे धोती उपरेणा जुक्त ।२।
राजाके जो पंडित साथमें रे उन पूछी त्यां अेक उक्त
माला उपवित उपरेणाहुंकुं रे देखाय कह्यो अे कहा ।३।
तब श्री आचार्यजीने कही दीओ रे सबही को सबनी मांहा
श्रुती स्मृति श्री भागवत रे उपवित उपरना माल ।४।
अे तीन्यो देखाय वाहीकुं रे कही मुसकित वचन रसाल
श्री आचार्यजीकुं फरी पूछीयो रे सब सभा सहित तिन मांहां ।५।
हम यों सुन्यो श्री भागवतकी रे तुम टीका कीनी आहे
बडे श्री गुंसाईजीने उतर दीओ रे हां कीनी तो हे सत्य ।६।
बोलेश्री भागवतकी टीका कहा रे यामों कठीन कहा हे अत्य
तब बोले वेद वेदांतलों रे में देख्यो शास्त्र पूराण ।७।
श्री भागवत सम कोउ कठीनमों रे अेसो कोउ नाहींन आन
तब वे बोले अे भागवत हे रे इनमों कहा कठीन प्रकार ।८।
तब सबनकुं यह गवत हे रे श्री आचार्यजीअे कह्युंतेणीवार
तब अेक श्लोक कह्यो श्री आचार्यजीअे रे याको अर्थ कहो समजाअे ।९।
अतः सर्व गुणो पेत रे काल परम शोभाय
काल परम शोभान केसे भयो रे माहा निंदित मास हे चात्र ।१०।
कृष्णपक्ष दक्षणायन भादों रे अष्टमी अरू अर्ध रात्र
श्री रघुनाथजीके प्रागट्यमों रे सबही हुते राजाके योग ।११।
सोतो याहुमों कोउ नाहीं रे ते क्यों आवे उपयोग
अेसे वचन सुने आचार्य के रे तब सबे गये घिघिआय ।१२।
कहेते उत्तर आवे नहीं रे रहे नीचो शीष नमाय
ता पाछे राजाने यों कह्यो रे अे कहा जाने महामूढ ।२१३।
गुंसाईजी तुमही कहो कछु आपथी रे अे महा परम रस गूढ

तब आचार्यजीने विवरण कीयो रे राजा भयो बहोत प्रसन्न ।२१४।
नमन करी स्तुति बहोत करी रे अरू बोल्यो विनय वचन
श्री आचार्यजी बोहोत प्रसन्न व्है रे बोले अतिशे करी नेह ।१५।
श्लोक अेकको अर्थ छे मांसलों रे करे ते नहीं आवे छेह
वली अेक ते राजानो पिता हतो रे तेनुं नाम ते वरसंग देव ।१६।
भक्ति मारगी ने स्नेही घणो रे कांइ नहीं मनमां अहमेव
तेहनी वात श्री महाप्रभुजीअे कही रे बेठा ते जलग्रह मांह ।१७।
उठी व्हालानुं श्री मुख जोअे रे महाभाग्यवान सहु त्यांह
त्यारे स्नेह तणी अेक वारता रे चाली ते नाना भांत्य ।१८।
वलतां महाप्रभुजी मुसकाइने रे कीधी तेहवे ते वात
श्रीमुखथी अेणीपेरे उचर्या रे जाको नाती राजाराम ।१९।
अेक समय अे मृगयाकुं गयो रे वाको वरसंग देव नाम
उनके अेक मित्र संग रहे रे वासु करे बहोत स्नेह ।२०।
खेल अहेडाको जब खेलते रे सनमुख बेठाये त्यांह
जब सब मृगयाकुं लाये घेर के रे राजा बेठो हे तांझ ।२१।
सर डार्यो सोतो लाग्यो नहीं रे लाग्यो उनके उरमांझ
लागत मात्रही प्राण निकसी गये रे वे विसभर तीक्ष्ण बाण ।२२।
वाकी अवस्था तेही छीनुं देखके रे काहु करी राजासों जाण
तब राजा बहोत उक्ताय के रे वेग गयो उनके पास ।२३।
देखे तो वामो कछुअे नहीं रे नहीं प्राण न वाके श्वास
तवे नेही उछंगे लीओ रे मुख देखे वारंवार ।२४।
अेवे अंतरगति आतुर हते रे नयनो लगी जलधार
इनके प्रेम महा बल नेहको रे जिनकी समता नहीं आन ।२५।
रोवत रोवत ही जीवत भयो रे उनके तन आये प्राण
अेहवी वात महाप्रभुअे कही रे ते सांभली सर्व समाज ।२६।
कोइ अेक भक्तने अेवुं उपज्युं रे रहयो प्रश्न पूछवा काज
महाराज महा आश्चर्य वारता रे श्रीमुखे जाणी अेह ।२७।
अेथी प्राण गया तो सांभल्या रे फरी आव्यो कौतुक अेह
आज लगी अमो अेहवी स्नेहनी रे सांभली नथी महाराज ।२८।
अे तो महा अपरमित वारता रे श्रीमुखथी जाणी आज
त्यारे श्री महाप्रभुजी मुसकाइने रे कहयुं यामो केतिक वात ।२९।
जो जाते मरे सो ताते जीअे रे त्यां आश्चर्य कोन भांत
साचे स्नेहे सब कछु संपजे रे पे साचो चहीअे स्नेह ।३०।
लौकिक अलौकिक सब सनमुख रहे रे ते केतिक वात हे अेह
अेवी कारणमय बहु वारता रे करी स्वकीय हेत संपन्न ।२३१।
घणी वार घणी घणी भांत्ये करी रे कही छे श्री प्राण जीवन

अेवो राजा रामचंद्र त्यांहां रे जेनो पिता पितामह उक्त
बेठो महाप्रभुजीने सनमुख थई रे जुअे श्रीमुख प्रेम संयुक्त ।२३२।
पाछे श्री गुंसाईजीने कहयो रे याकुं हे भीतर काज
राजा ततक्षण उठी ठाडो भयो रे अपने सब सहित समाज ।३३।
श्री गुंसाईजीने तब यों कहयो रे बाबा तुम भीतर जाओ
पाछे में उठीके भीतर गयो रे अपनी रूची सू सहेज सुभाओ ।३४।
अेवी वात महाभाग्यवानने रे पोतानुं परम अनूप
प्रगट करी देखाडयुं तेहने रे सर्वोधिक स्वतः स्वरूप ।३५।
पोते ते माहा दाता गुण प्रीय रे स्नेह तणा अति जाण
बीजा अनेक भाव अेहमां कहया रे ते सर्व कर्या प्रमाण ।३६।
अेणीपेरे लीला होअे अडेल मांहे रे ते नितनित आनंद कंद
श्री विठलग्रह क्रीडा नितनवी रे करे श्री गोकुलनो चंद ।३७।
आगल विजय कर्यो जे अडेलथी रे देशांतर लीला काज
तेह विसद करी कांइ अेक कहुं रे सांभलजो स्वकीय समाज ।२३८।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अदभुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित
।। मांगल्य सोलमुं समाप्तम् ।।

मांगल्य – १७ – सत्तरमुं

राग मारूं जात : नवरसमानी 'व्रषभान भवन गइ हती' अे जाते गवासे

श्री महाप्रभुने शिर नामी लीला कहुं छुं आनंद पामी ।१।
जेनो अनिरवचनी छे धर्म अतिशय कारण बहु मर्म ।२।
चलण वलण आदि जे काज जे वचने कहे श्री महाराज ।३।
जे जे कृत्य करे छे समेत सहु मांहें स्वकीयनुं हेत ।४।
अेवी लीला परम विचित्र कारण विना नहीं अन्यत्र ।५।
करे श्री विठलजीने घेर होअे नितनित नवली पेर ।६।
श्री गुंसाईजीअे करीसंकेत सुओ पाल्यो श्री वल्लभ हेत ।७।
ते अलौकिक कारण रूप कोइ भगवद भक्त अनूप ।८।
तेहनी श्री मुखे करी कही वात अति प्रहसित नाना भांत ।९।
वाको गोपालदास धर्यो हे नाम सो रहे हे हमारे धाम ।१०।
वांके गुन बाहोतेरे ताते हमसों करे नीकी वाते ।११।
सबहीनकुं पहेचाने अपनो विरानो जाने ।१२।
मनुष्य तो सबे जानी लीने पशु पर्यंत सबनको चीन्हें ।१३।
ओरनकी आवे गाअे कबहुं घरको त्रण खाअे ।१४।
तब वाको तबही पोकारे घरकीकुं देखी विचारे ।१५।
हमकुं सोये ते जगावे विरीयाभइ कही कही सुनावे ।१६।
अेसे बोले मधुर वचन सुनते होअे मन प्रसन्न ।१७।
चारू वाक्य अरू बुध्ध वान वाकी पटंतरकुं नहीं आन ।१८।
अेक दिवस अेसी बनी आइ अपराध कीयो हे बिलाइ ।१९।
श्री गुंसाईजी सुन्यो जे वार वाको करवाव्यो संस्कार ।२०।
शरणागत वत्सल सार अेम जणाव्यो अंगीकार ।२१।
करूणा अेहवीनोअे सुओ तेहनो प्रगट प्रकार अे जुओ ।२२।
पशु पर्यंतनो पक्षपात आश्रित जे को जीव जात ।२३।
अेणे मारगे अंगीकार नहीं पात्रापात्र विचार ।२४।
अेह प्रागट्यनो जेह महिमा सामर्थ न केहेने कहेवा ।२५।
लीला चरित्र तणो विस्तार उतकर्ष तणो नहीं पार ।२६।
अेनो महिमा क्यां लगी कहीअे द्रष्टांत अनुभवे लहीअे ।२७।
वात श्री मुखथी कही अेह हरवा सहुना संदेह ।२८।
अेक गाय गुंसाईजीके गामे त्यांहां ते मंगवाइ धामे ।२९।
मारगमों आवत मांहीं त्यां साप मल्यो अेक ठांही ।३०।
इन वाकुं शींग लगायो उनले माथा पर खायो ।३१।
तब मंत्रवादी अेक आयो उन भेदसुं साप बोलायो ।३२।
कह्यो छांडी दे तुं वाको बोले पहेलेही छांडी हे याकुं ।३३।

अे बडे ठोरकी गाय	मोंपे क्यों काटी जाअे	।३४।
मेरो कछुअे नांहीं दोष	मोंकों दाब्यो तब भयो रोष	।३५।
अेहवी अंगीकारनी कान	कीटी पतंगने राणाराण	।३६।
सहुकोअेहोने शिर नामे	महिमानो पार न पामे	।३७।
जेहनुं प्रागट्य जगत प्रमाणे	पशु पक्षी महिमा जाणे	।३८।
अेवा अनुभव कोटि अनंत	कहेतां नहीं आवे अंत	।३९।
तेमां कारज कारण बहु	तेनो कहेतां पार न लहुं	।४०।
अेणी पेरे संपूर्ण राजा	दश वरस अडेल बिराज्या	।४१।
तेदश वरसनुं कारण जेह	आगल कहीसे तेह	।४२।
पछी अडेल थकी सुखरास	आवी गढे कर्यो निवास	।४३।
तेनुं कारण अनेक प्रकार	कहुं छुं करी ते विस्तार	।४४।
दुर्गशाह दुर्गावती राणी	ते गढा गढनी पटराणी	।४५।
तेनी श्रीमुखे वातो करी	उलटभर आनंदे भरी	।४६।
उमराव सहुको आवे	दुर्गशाह कहीने बोलावे	।४७।
अेना रसना रसिकवर भोगी	अे महा लीला उपयोगी	।४८।
रमण मध्य पातीय रूप	रस सामग्री अनूप	।४९।
रसभावे अति उत्कृष्ट	महा अंतरंग पुष्ट पुष्ट	।५०।
जे लीला अनुभवने अर्थे	करी सृष्टी स्वतः सामर्थ	।५१।
तेहने हेत रमणने काज	पोते प्रगट्या श्री महाराज	।५२।
ते जे जे स्थले प्रगटावी	ते महाप्रभुने मन भावी	।५३।
अेवी सृष्टी रची करी खांत	ते अलौकिक नाना भांत	।५४।
को रंकने राजस वली	दीसे लौकिकमां ते भली	।५५।
कृपाअे जणावी तेणे जाणी	ते सृष्टी मांहेनी अे राणी	।५६।
प्रभुता विभुताने संग	जेहनां प्रगट हवां छे अंग	।५७।
अेवी दुर्गावती राणी	ते केम करी जाअे वखाणी	।५८।
प्रभुनी लीलाने हेत	सृष्टी प्रगटी रस संकेत	।५९।
करवा लीला रस रमण	तेहनुं करे आकरसण	।६०।
आकरषण भांत अनेक	तेनो क्यां लगी कहुं विवेक	।६१।
केहेनुं इच्छाने जे प्रभावे	केहेनुं संग परस्पर भावे	।६२।
केहेनुं महातमे मन रंजे	केहेनुं वचन सामर्थे गंजे	।६३।
केहेनुं मर्यादा अवतंशे	केहेनुं धर्म तणे ते अंशे	।६४।
केहेनुं आचारे अभिराम	केहेनुं दाने पूरे काम	।६५।
केहेने स्वतः स्नेह उपजावी	केहेने उत्कर्षता मन आवी	।६६।
केहेने बे चार वैश्नव साथे	अे संबंध कराव्यो नाथे	।६७।
केहेने परचक्र भय पमाडी	केहेने ताडने नाम देवाडी	।६८।
केहेनुं दुती उपजावी देश	केहेनुं जीती वाते वरेस	।६९।
केहेनुं प्रगट सर्वे सुखकारी	केहेनुं नाम प्रतापे भारी	।७०।

केहेनुं स्वप्न द्वारा अनुभावे	केहेनुं घेर पधारी चावे	।७१।
केहेनुं केवल स्वरूप प्रकार	अेम करेते बहु विस्तार	।७२।
केहेनुं परकर पूरण लील	केहेनुं देखी सदा सुखशील	।७३।
केहेनुं अविरूद्धता अतिसहने	केहेनुं अदभुत अगाध गतिगेहेने	।७४।
केहेनुं निरूपाधी निरलोभे	केहेनुं कारूणीक कृत शोभे	।७५।
आवी आकरसणनी रीते	ते भांत्य भली अति प्रीते	।७६।
अे सहेज संबंधे आवे	ते प्रभुने मन सहु भावे	।७७।
आतो आव्यानी अति पेर	प्रभु पधार्या तेहने घेर	।७८।
लीला सुधासिंधु तोष करी	आरंभी आनंद भरी	।७९।
बाल कुमार पौगंड रसीला	प्राग अडेलमां कीधी लीला	।८०।
पछे परम किशोर प्रवेश	अंग अंगमां परम सुदेश	।८१।
किशोराकृत वय संपन्न	हवां कोटि कंदर्प लावण्य	।८२।
राणीना अनुग्रह हित सार	कर्यो प्रेमाभिसरण विचार	।८३।
लौकिक निमित कांइ जोइअे	जे मांहांथी अलौकिक सोहीअे	।८४।
प्रागट्य लौकिकमां कीधुं	माटे लौकिक मुक्षे लीधुं	।८५।
भाजण निमित उपजाव्युं	अेवुं प्रभुने चित आव्युं	।८६।
अे महा कारण तणु प्रमाण	ते केम थाअे निर्माण	।८७।
श्री आचार्यजीनी कारिका अेहवी	श्री प्रभुअे कही छे तेहवी	।८८।
अेक कारजमां बहु अर्थ	साधे छे प्रभु सामर्थ	।८९।
हवे ते भाजणनो प्रकार	कांइ कहुं छुं करी विस्तार	।९०।
अेक वार नगर सेसराम	त्यांहां शेरशाहनुं धाम	।९१।
ते उग्र प्रतापिक अेहवो	देशपति सम कहीअे तेवो	।९२।
तेणे द्वंद उठाव्यो हाथे	याकी थयो हुमायु साथे	।९३।
तेणे राजा रामने कहाव्युं	मारे मन अेहवुं भाव्युं	।९४।
तमो थाओ मारी सहाय	हुं लेउं देश समुदाय	।९५।
ते राजाने चित ना आव्युं	तेणे करी निरउतर कहाव्युं	।९६।
तेणे रोषे शेरशाह भरीयो	अेक ऊमरायो सिद्ध करीयो	।९७।
पाछे करी मन अे उदेश	तेणे लीधो हुमायुनो देश	।९८।
आगमन अडेलज मांहां	उपद्रव सूचन थयो त्यांहां	।९९।
भगवद इच्छाअे अेवी रीत	उग्यो बुद्धनो तारो पीत	।१००।
त्यारे गुंसाईजीअे कही वात	कछु होयगो उतपात	।१।
ज्यां श्री महाप्रभुजी सोहे	त्यां उतपात केम करी होय	।२।
पण प्रभुने इच्छा जेहवी	प्रगटी सामग्री तेहवी	।३।
देशांतर लीला कारण	तेहवा प्रगट्या आचरण	।४।
कांइ निमित विना केम थाअे	स्थानक मुक्युं केम जाअे	।५।
अंतर रसनी रीत	बाहेर करे करी निमित	।६।
अेहवा गोपनीय रस जाण	करे कारज प्रगट प्रमाण	।१०७।

अेहवुं कर्युं छे श्रीमुखे रद्य लौकिक वैदिक कापटय ।१०८।
अेणे वचने रस सिंधु कीधो सरवोपर मानी लीधो ।९।
जेहने वस पोते थाअे तेनुं कारण केम कहेवाअे ।१०।
बीजा लौकिक काज समाज करे रस गोपनने काज ।११।
पण गोपनथी रस वाधे तेनो कांइ पार न लाधे ।१२।
ते स्वरूप अनुभवी जाणे जेहनो भाव न थाय प्रमाण ।१३।
अे अनन्य समजे आसय लौकिकने लौकिक भासे ।१४।
अेवा रसना भेद अनेक ते क्यां लगी कहुं विवेक ।१५।
अेणे कारणे मनमां आव्युं माटे निमित प्रगटाव्युं ।१६।
उतपातनो तारो जोइ समाधान कर्युं सहु कोइ ।१७।
पछी अकबर थयो ज्यारे उग्र त्यां सेना पठइ समग्र ।१८।
उमराव राजानो भारी ते अडेल तणो अधिकारी ।१९।
सनमुख युध्धे चढीयो ते सेनापतिसुं बढीयो ।२०।
त्यां द्वंद उठयो तेणे ठाम तेणे भाजन थई सहु गाम ।२१।
अेहवे आवी लाग्युं माठुं ते अचानक सहुको नाठुं ।२२।
प्रभुजी गडुओ कर धरी गडुआ केरूं मिस करी ।२३।
बालकृष्णजी अने रघुनाथ अे पोते लीधा साथ ।२४।
श्रीमुखे प्रगट कह्युं छे सार लेखन कर्युं अेह अनुसार ।२५।
रघुनाथ तो बाल्य अपार बालकृष्ण बोहोत सुकुमार ।२६।
चालवे ते अति संकुचाय पनही विनु चल्यो न जाय ।२७।
मेरी पहेरी इन पनही पें क्योंहुं न चलते बनहीं ।२८।
क्योंहुं क्योंहुं करी कोस तीन ज्यां गाम रहे अेक भिन्न ।२९।
जथा किंचित करी के आये पेडेमें अति दुःख पाय ।३०।
नटशाल अेक हम पाइ त्यां उतरे तीन्यो भाइ ।३१।
भ्रात वत्सल परम कृपाल कीधी भ्रात तणी प्रतिपाल ।३२।
ईश्वरेश्वरने दुःख प्राप्य ब्रह्मादिक नावे जाप्य ।३३।
अेहवी पनही भ्रातने धरावी मारगमां रक्षा करावी ।३४।
पोते पनही विना पधार्या क्षितीना परिताप निवार्या ।३५।
पदतल परसावी अेहने मनोरथ पूरण कर्यो तेहनो ।३६।
पछी भये जब मध्यान तब कुआ पर गये न्हान ।३७।
जल काढयो गडुआ सेती न्हाये हम पहेरी धोती ।३८।
वे धोती फेर सुकाइ तब पेहेरी हम अरू भाइ ।३९।
बालकृष्णको लगी भूख अेक वात भइ हे अनूप ।४०।
अेक सेवक त्यां क्षत्राणी सो आ गइ विनु जाणी ।४१।
वे दाल चणाकी लाइ हम तबही लेके भींजाइ ।४२।
वे बालकृष्णकुं लेवाइ हमहुं लेइ जो मन भाइ ।४३।
अेवा भ्रात वत्सल भगवान वली भावनुं कर्युं सनमान ।१४४।

प्रभु तो महा खटरस भोगी	सर्वज्ञ महा संयोगी	।१४५।
नर रूपनो अंगीकार	नरवत लीला करे सार	।४६।
अेक कारणमां बहु काज	अेहवा अे श्री महाराज	।४७।
श्री गुंसाईजीअे अेसो कीनो	बीरां मोहेकुं पठे दिनो	।४८।
कहयुं बीरा विन न रहेगो	याको क्योंहुं न सरेगो	।४९।
व्याह तो कीनो मथुरा मांहां	समावर्तन कीनो त्यांहां	।५०।
ताते हम बीरा लेते	रहेते ब्रह्मचर्य समेते	।५१।
श्री गुंसाईजी सबे समुदाय	निशिकुं काकी सब आय	।५२।
श्री गुंसाईजी बोहोत दुःख पाये	जो लों हमपे नहीं आये	।५३।
जबही इनको हम देखे	तबही मन आनंद लेखे	।५४।
पाछे बोहोत सुख पाये	हिलीमीली भोजन करवाये	।५५।
तहांते सब कोउ चलेअे	सो अकबरपोरमें आये	।५६।
अेक स्थल रहीवेकुं लीनी	को दिवस वहां स्थिति कीनी	।५७।
ज्यांहां जे सुं बोल्या राज	तेना सरीया सघला काज	।५८।
जेणे जेणे दरशन कीधा	ते सहुना कारज सीधा	।५९।
ज्यां वसी रहया मारो नाथ	ते सहु को थया सनाथ	।६०।
अे लीला महा उपकारी	सहु जगत तणी हितकारी	।६१।
परहित अर्थे कृपा आणी	सहुना अंतर दुःख जाणी	।६२।
जीवना उध्धारना अर्थे	करे चरित्र सकल सामर्थे	।६३।
हरवा सहुना परिताप	सर्वत्र गमन करे आप	।६४।
वली श्रीमुखथी आप बोल्या	निज अंतरपट खोल्या	।६५।
पछी उहाहुं रहयो न जाय	तब कीनो ओर उपाय	।६६।
सो चलवे खरिकाकुं	ले कुटुंब सहित लरिकाकुं	।६७।
अेक समय श्री वल्लभबाल	बेठा मातानी सुखपाल	।६८।
माताजी मनमां हरखे	आनंदे आनंदे वरखे	।६९।
करे वात्सल्य अनेक प्रकार	प्रमुदित भावे अनुसार	।७०।
परस्परनुं जोइ हेत	वारू तन मन प्राण समेत	।७१।
ते समय तणी अेक वात	प्रभुअे कही नीकी भांत	।७२।
सुखपालहुंके जो भोइ	महुआ खावे सब कोइ	।७३।
देखतके को समतूल	जेसो रायवेलको फूल	।७४।
में पूछयो उनको अेसे	अे लागत कहो केसे	।७५।
उन कहयो सुनोही गुंसाई	सुंठ निक कहे नहीं जाइ	।७६।
तब में काकीकुं सुनाउं	कहो तो अेक में खाउं	।७७।
काकीने दिनी शिक्षा	खाये तो तेरी इच्छा	।७८।
पालखीते उतरीके यों कीनो	अेक महुओ करमों लीनो	।७९।
ले दांतनसेती चांप्यो	तबही मेरो जीय कांप्यो	।८०।
अति कलमलाय मन हार्यो	तबही मुख मांहेथी डार्यो	।१८१।

अति व्याकूल मन हिरानो कबहुंलो शीश पिरानो ।१८२।
तब ब्रह्मचर्य हम रहीअे विन होम कीये क्यों लहीअे ।८३।
स्नान करीके त्यां होम कीनो पाछे कछु हम अेक लीनो ।८४।
पाछो स्वस्थ भयो मेरे मनमों तब सुख पायो सब तनमों ।८५।
स्वकीयने शिक्षा काज अे वात कही महाराज ।८६।
अेवी सामग्री अणजाणी प्रभु आगल धरीअे न आणी ।८७।
देखीते सुंदर भावे पण गुण विन काज न आवे ।८८।
अेम क्रम क्रम लीला करतां चाले छे भक्ते परवरता ।८९।
अेम मारगमों नदी आइ वाके सनमुख देख्यो नहीं जाइ ।९०।
वे महा कठिन भय भीत देखतकी अति विपरीत ।९१।
अेक घोडा सोदागर को महा सुंदर वाके घरको ।९२।
तबही वही चाल्यो सोअे वे पीटे अरू दुख रोये ।९३।
देखे सब कोउं दु:ख पायो कोउ निकट न जाअे आयो ।९४।
हमतो धीरनी मंगवाइ त्यां बेठे सब समुदाइ ।९५।
सामग्री सहित सब भार हम तबही पोंहोंचे पार ।९६।
विश्वतारक सहुने तारी उतर्या सहु कोइ नरनारी ।९७।
दूरघट सरिता महा भारी अति सुगम थई सुखकारी ।९८।
सुख आप्युं स्वरूप प्रभावे जीर्ण तरीने जे भावे ।९९।
दामोदरदासी आदि भक्त जेको स्नेह रसे अनुरक्त ।२००।
तेहने स्वरूप विसय महा सोच उपज्यो मनमां सोचपोच ।१।
कहे शुं थाशे शुं थाशे महा आतुर मन विमाशे ।२।
व्हालो सहु केहेने सुखदाइ पहोंच्या सुखसुं समुदाइ ।३।
त्यां पुलिन परम शुभ जोइ माताजीअे करी रसोइ ।४।
नाहवा पोते पधार्या त्यां भक्तना भाव समार्या ।५।
जोइ भमर ने लहेर तरंग आवी स्पर्शया श्री अंग ।६।
त्यां मोद अपरमित वाध्यो समयो सरिताये साध्यो ।७।
करी मनोरथ सर्व समर्प्युं प्रभुअे रस वस सुख अर्प्युं ।८।
अेम करी क्रीडा जल केल पधार्या मोहन वेल ।९।
श्री गुंसाईजी सहित सुखभरी उठया छे भोजन करी ।१०।
कोस अेक टीकडी गाम रात रह्या तेणे ठाम ।११।
त्यांना लोक महा दूराचारी बोले अविक्त अविचारी ।१२।
अे वात कही श्री मुखथी सुणी छे सहु कोइअे सुखथी ।१३।
वे गाममें कोउ आवे सोउ रहे नहीं पावे ।१४।
कछु लेत हो पूछे वाकुं हां लेत कहे जे ताकुं ।१५।
अेतो तथे वस थेते आवो इतलो उनथे वसथे जायो उतलो ।१६।
जे कहे हमतो कछुअ न लेवे तो उनकुं रहे न देवे ।१७।
कहे दूरी दूरी कहे दूर अेसे अवधि महा क्रुर ।२१८।

पें हमसुं कछुअ न बोले	सब देखी रहे अन बोले	।२१९।
अे स्वरूप तणुं अैश्वर्य	सहु मोहित थया आश्चर्य	।२०।
अेवा विकल अने महा मूढ	अहरनिश अमले आरूढ	।२१।
अेहेवा मनमां अेह विचारे	जे अे प्रभु अहीं पधारे	।२२।
अहींया रही करे विश्राम	अेम मनोरथ धामे धाम	।२३।
अेवा दुष्टने मन अेम भावे	महा अतुल स्वरूप प्रभावे	।२४।
लक्ष्मीपति ज्युत सहु साजे	पोतानुं वारती लाजे	।२५।
अेवा प्रभुने जे जुअे	सहु सहेज कृतार्थ होअे	।२६।
अेवुं सुंदर महा स्वरूप	सहु केहेनुं पामे न रूप	।२७।
अेम जगत तणे हित अर्थे	प्रयाण स्वतः सामर्थे	।२८।
स्नानादिक कर्युं कलेउं	त्यांथी पधार्या अेह	।२९।
कही वात ते महाप्रभुअे	सांभली छे भक्त सहुअे	।३०।
पेंडेमों कहीअे काहाकुं	अस्वास्थ भयो दादाकुं	।३१।
तब गअे गाम अेक मांहे	बाहेर तो रहयो नहीं जाय	।३२।
मेह वरसे तब कहां जइअे	ब्राह्मण के घर जाय रहीअे	।३३।
श्री गुंसाईजीने अेसी विचारी	पठयो खीरा आचारी	।३४।
तुं देखी आव अेक ठोर	वसीये जहांलो होये भोर	।३५।
तब खीराने जाय कर	पूछयो ब्राह्मणको घर	।३६।
कहयो ब्राह्मण तो यहां नाहीं	अग्निहोत्री रहेत इंहांही	।३७।
कहयो तो पाछे कहा चहीअे	उनको घर देखन जइअे	।३८।
अग्निहोतरीको ले नाम	पूछयो जाय उनको धाम	।३९।
खेतीको गयो हे तबही	आवेगो डेरा अबही	।४०।
तेसेहुं में वे आयो	खीराने शीष धुनायो	।४१।
माथे हर अरू पहेरे तनीआ	देखतको अति धनवनीया	।४२।
पूछयो अग्निहोत्री तुम हे	कहयो अन अधनोतरी हम हे	।४३।
अग्निहोतर कुंड देखायो	हम देखनकुं बतायो	।४४।
जानत अधनोतरी कस हे	सुनी हम अधनोतरी अस हे	।४५।
जा गाम नारायणदास मारे	तामों हम अग्नि परजारे	।४६।
हम विनुं कोउ और लगावे	तापर हम मार खवावे	।४७।
खीरा सुनीके फिरी आयो	श्री गुंसाईजीकुं सबही सुनायो	।४८।
श्री गुंसाईजी कहयो चलो तांहीं	और ठोर तो उचित नांहीं	।४९।
अेसोउं ये ब्राह्मण नाम	क्यों रहीअे औरके धाम	।५०।
धर्म धुरंधरने अे दयाल	महा ब्राह्मण प्रति पाल	।५१।
अेणे कारण करी विचार	ब्राह्मणनो कर्यो उध्धार	।५२।
जेनुं जगत बंधु अेवुं नाम	पधार्या तेहोने धाम	।५३।
भ्रष्ट ब्राह्मण घेर पधार्या	अेवा महा पतित उद्धार्या	।५४।
महाप्रभु साथ होअे जेहने	अस्वास्थ क्यांथी होअे तेहने	।२५५।

बहु कारण मनमां आणी	अस्वास्थ पात्र अे जाणी	।२५६।
अेहवुं निमित उपजावी	करे लीला जे मन भावी	।५७।
कहयो पात अेरंडके चहीअे	ता पूछो वे कहां पइअे	।५८।
उन तपसी अेक बताये	ताके घर पात देखाये	।५९।
उन जाय वे तपसी देख्यो	सो क्यों करी जाय विसेख्यो	।६०।
साबु वेंचे अरू खावे	अरू तपसी नाम कहावे	।६१।
अेहनुं तात्पर्य अेह विशेष	अेहवा जे अनारज देश	।६२।
तेहने पावन करवा काज	त्यां पधार्या महाराज	।६३।
को कहेशे प्रभु रस रूप	नित्य लीला नवल अनूप	।६४।
रस वांछित ने रसदाइ	रसविन न रहे सदाइ	।६५।
तेणे अे लीला केम कीधी	शे कारणे मानी लीधी	।६६।
ते कहुं छुं करी विवेक	पण कारण अमित अनेक	।६७।
प्रभुनुं हारद्र कोन जाणे	निश्चय करी कोण प्रमाणे	।६८।
कांइ अेक ते गोचर देखुं	ते बुध्धि प्रमाणे विसेखुं	।६९।
अेक अे प्रभु परम कृपाल	दया सिंधु महा करूणाल	।७०।
सहु जगतने कारण सुखथी	अे प्रगट कर्युं श्री मुखथी	।७१।
बीजी लीला जेम ग्रही छे,	तेम अे प्रगट कहीं छे	।७२।
जेम भोजन मिष्ट मांहां	कटु अम्ल परोसे त्यांहां	।७३।
तेथी सहु स्वादित थाअे	वली भेदा भेद जणाअे	।७४।
मांहे मुक्ष अवांतर सार	अेवी अगणितनो नहीं पार	।७५।
तेह विसद करवाने काज	कही श्रीमुखथी महाराज	।७६।
लीला स्वरूप संयोगी	सामर्थ सहित उपयोगी	।७७।
अेक अेक लीलानो अंश	ते महा फलनो अवतंश	।७८।
जेणे अंशे जे कोइ रीझे	तेना कारज त्यांहांथी सीझे	।७९।
जे अनेक भांतनी सृष्टी	बहु वरणी भावे मिष्ट	।८०।
जेने जे लीला रस रम्य	जेहने ज्यांहां पर्यंत गम्य	।८१।
जेहने जे रूचती सार	जेहने जेहनो अधिकार	।८२।
तेहने ते छे महा निध्ध	त्यां सकल पदारथ सिद्ध	।८३।
अेक अेकथी परम अनूप	वली महा पुरूषार्थ रूप	।८४।
अथाह अपरमित जाणी	जेको अलगो रहे अेवुं जाणी	।८५।
तेहने क्यांथी होअे दान	अनुभवी करे रसपान	।८६।
अेवा कारणनो नहीं पार	तेनो केम थाअे विस्तार	।८७।
लीला प्रगट करी अेम जाणी	ते केम करी जाणे वखाणी	।८८।
अेहवे अधम देश अनुसरी	चरणाकिंते पावन करी	।८९।
त्यांथी विजय करी समुदाय	पेंडा मांहे चाल्या जाअे	।९०।
त्यांहां गाजे अति घनघोर	उमडया वादल चहुं ओर	।९१।
चहुं दिसथी पवन झकोले	पक्षी मधुरे स्वर बोले	।२९२।

सोहे इन्द्र धनुष्य बग पांत्य ते शोभा अनुपम भांत |२९३|
धरणी नव पल्लव सोहे दीठे रति पतिना मन मोहे |९४|
अेवी शोभा मारग मांहां प्रगटी छे सुंदर त्यांहां |९५|
साथे घोडा ने सुखपाल श्री गुंसाईजी सहित सहु बाल |९६|
आगल पाछळ आसपास साथे भक्त महा सुख रास |९७|
हरिवंशजी आदि जेह नित नौतन जेहना नेह |९८|
चाले करता हास्य विनोद तेणे अभिनव प्रगटे मोद |९९|
अेणी भांते सहु पर परवरीया खडके आवी उतरीया |३००|
तेनी सेवा मानी लीधी बहु सृष्टी कृतार्थ कीधी |१|
कर्यों भांत भांत उध्धार अति अगणित नावे पार |२|
बीजा भक्त तणे संकेत त्यां पधार्यानो हेत |३|
अढी मास त्यां स्थिति करी पछी विजय कर्यों सुखभरी |४|
बांधे पधार्या आप हरवा तेहनां परिताप |५|
संताप अलौकिक धर्म जेहनो ते नव जाणे मर्म |६|
लौकिक मांहें परवरीया लौकिक बुध्धे आवरीया |७|
ते अलौकिकने शुं जाणे परीताप क्यांथी प्रमाणे |८|
प्रभु सहुना अंतर यामी प्राणत्वे अति अभिरामी |९|
अेवा जाण शिरोमणी राय अलौकिक दुःख कहयुं नव जाय |१०|
ते आरति मनमां आणी उपकार करे मन जाणी |११|
अेवा महा परम दयाल स्वतःथी करे संभाल |१२|
बांधेश्वर महा नरेन्द्र सनमुख आव्यो रामचंद्र |१३|
वाधेलो राजा तेह तेहने मन अतिशे नेह |१४|
दंडवत कीधां बहु वार कर्या समाधान सत्कार |१५|
पालो थई आगल चाले देह सुरति नहीं संभाले |१६|
मन मांहे अति आनंद आणे करी जन्म कृतार्थ जाणे |१७|
बहु भांते मनोरथ करी पधराव्या उलट भरी |१८|
राजानो मनोरथ फाव्यो गीरधरजीने बेटो आव्यो |१९|
तेणे मिसे आनंद मांहां वाजिंत्र वजडाव्या त्यांहां |२०|
अे वात श्री महाप्रभुजीअे कही तेह सुणी छे सहुअे |२१|
त्यां बेटा भयो दादाकुं प्रगट्यो उत्साह राजाकुं |२२|
तब राजाने यों कहयो गुंसाईजीकुं नाती भयो |२३|
दुदामाकी दस जोड पठइ घेर करी बहु कोड |२४|
दश दिन पर्यंत बजाअे जेसे उनके मन भाअे |२५|
अेमां कारण छे अेह राजानो मनोरथ तेह |२६|
महाप्रभु घेर पधार्या मनमां उत्साह विचार्या |२७|
तेणे आनंद उलट भरी वजडाव्या मनोरथ करी |२८|
निमित विना जो वाअे तो मननो धर्म जणाये |३२९|

अेवो गोपनीय गंभीर भावे पूरित महा धीर ।३३०।
अेणे अेणी पेरे उत्सव कीधा अेहना सकल पदारथ सीधा ।३१।
अेवो राजा अंतरंग महा कारूणिक सर्वांग ।३२।
तेना कारण अलौकिक भाशे कहेवाय नहीं ते आसय ।३३।
तेने नामे प्रभु प्रसन्न वातो कहे मृदुल वचन ।३४।
अेनुं कृत्य सर्वात्मिक माने रीझे अेहोने गुण गाने ।३५।
अेवा प्रभु ज्यांहां प्रसन्न तेना भाग्य समान न अन्य ।३६।
तेने लौकिक केम करी कहीअे अलौकिक द्रष्टे करी लइअे ।३७।
अेवो वाघेलो राजा त्यां पधार्या महाराजा ।३८।
त्यां रात्र दिवस सहु कोइ सुख पामे श्रीमुख जोइ ।३९।
त्यां स्वतः शरण बहु लीधा सहुकोने कृतार्थ कीधा ।४०।
बहु भक्त जुथशुं राजे अेम बांधामां बिराजे ।४१।
पछी सवंत सोल ओगणीसे विजय कीधो श्री गोकुलाधीशे ।४२।
राजा सर्व सैन्य संघाते पहोंचावा आव्यो साथे ।४३।
चाले सुखपालनी साथे समाधान कर्या बहु नाथे ।४४।
करूणा द्रस्ट संतोष्या अंतर अनुभावे पोष्या ।४५।
पछी आणी पामरी जोड ओढाडी करी बहु कोड ।४६।
लेइ लेइ चढावे शीष ने करे नमन श्री गोकुलाधीशने ।४७।
वली दिन वचन बहु बोले नहीं कोइ अे भावने तोले ।४८।
लइ चरण छुवावे माथ वली शीश धराव्यो हाथ ।४९।
अे पात्र परम रस जाणी रूचीसुं अति करूणा आणी ।५०।
आप्या बीडा महा प्रसाद मन पाम्यो अति अहेलाद ।५१।
प्रसन्ने कर्यो विदाय सनमुख पाछे पग जाय ।५२।
थयो अतिशे मन आनंद उलटयो उर प्रेम समुद्र ।५३।
तेहने मन आरति जेह गोकुलपति जाणे तेह ।५४।
पछी पधार्या प्राणेश पावन करवा ते देश ।५५।
कर्यो गढा तणो उदेश ते लीला महा वरेश ।५६।
ज्यां छे दुर्गावतीराणी तेना भाव अपरमित जाणी ।५७।
ते कहुं कांइ अेक विस्तार मारी मतिने अनुसार ।३५८।

राणी दुर्गावती अनुग्रहार्थ अनेक लीला सिद्धार्थ देशांतर गमन लीला वर्णनो नाम

।। मांगल्य १७ संपूर्णम् ।।

मांगल्य -१८ - अढारमुं

राग : ''श्री विठलदासे विनव्या प्रभु करी बहु प्रकार''

प्रभु पद कमले स्पर्शी अने लीला कही सुदेश
कुल प्रागट्य थकी ते बाल पौगंड प्रवेश ।१।
आगल कहुं कीशोराकृत अनिरवचनीय रस रीत
महा रसनो विस्तार अने नित्य नौतन प्रीत ।२।
त्रिविध भक्तनां निरोधनी लीला कही प्रमाण
हवे निरोध कहुं रस जुत जेहनुं नहीं निर्माण ।३।
अति वल्लभ वल्लभ ने वल्लभनो रस सार
जे विण क्षणुं विलसे नहीं जे रस वर आधार ।४।
जीवन धन ने परम प्रिय जे प्रभुनुं अभिराम
ते लीला कहेवानी मनमां करूं हाम ।५।
पण उर धरवा अदभुत रसने मारूं नहीं गात्र
अेक कणिकानो रस ग्रही सकुं हुं अेहवुं नहीं पात्र ।६।
अे रस नी नहीं योग्यता ने वली परम निकृष्ठ
पोतेथी रस पात्र करी अने करी वृष्टी ।७।
नि:साधन फल रूप अे नाम तणो जे अर्थ
ते सिध्ध कर्यो मारे विषे पोताने सामर्थ ।८।
अेह बले बल सूचवीने करूं रस विस्तार
पात्र प्रमाणे करी कहुं पण रसनो नहीं पार ।९।
जेहने को जाणे नहीं वचने न आवे जेह
भाव थकी महा गूढ जे कोण विसद करे तेह ।१०।
अेवी लीलानो अनुभव करवा महाराज
प्रगट्या परम रसिकवर सहित सकल समाज ।११।
नव नायक नव नेह निपुण नौतन अभिलाष
नव नव रति प्रगटे प्रतिक्षणुं मननुं मन साक्ष ।१२।
परम प्रवीण रसात्मिक रसभर रसनुं मूल
अंग अंग रस पूरित रसमय रस अनुकूल ।१३।
रसना मनोरथ रसिक रसिकवर पूरण काज
लीला रसिक प्रगट करी अमित अतुल रस राज ।१४।
सामग्री समरस रसभर नहीं तेहनुं मान
उभय भाव भावात्मिक रसनुं परम निदान ।१५।
उभय रसे रस भोगी द्विदलात्मिक रसनी रीत
रस वांछित रस दायक करी नौतन बहु प्रीत ।१६।

रमण रसे संपूर्ण व्हालो पूरण काम
रसनो भर रसमय रसनुं परिपूर्ण धाम ।१७।
अंग अंग उनमत अनंग रति रसनो चाव
अंकुर महा कुसुमित फल रस इच्छित भव भाव ।१८।
को कहेशे प्रभु रसभर रसपूर्ण कहेवाय
तो रसपात्र तणो अभिलाष करे छे कां अे ।१९।
त्यां कहुं छुं अे मांहे सकल रसनी छे रीत
विवेक करी मंथन करे प्रगटे नवनीत ।२०।
जेम गवरीनुं पय लेइ करीअे पात्रज मांह
ते पात्रेथी फरी पान करे रस पामे त्यांह ।२१।
अेहवा रसना भेद रसिकवर जाणे सोय
रस विलसे वाधे रस अन्य न समजे कोय ।२२।
बीजा प्रागट्य प्रगट ते कार्य कारण अर्थ
आ पूर्ण परम प्रागट्य ते सकल करण सामर्थ ।२३।
अलौकिक अे प्रागट्य अलौकिक रसनी सृष्टी
लौकिक को समुजे नहीं होअे रस वृष्टी ।२४।
अंग अंगथी अंगना प्रागट्य ते रमणने अर्थ
परस्परे रस प्रोजीने सोंप्या रस सामर्थ ।२५।
तेह सृष्टीसुं रमण करे मोहक थई आधीन
स्वतः सुरति नहीं अंगनी यद्यपी महा प्रवीण ।२६।
पोते दान करी वांछे रस तेहनो आप
विलसेथी रीझे घणुं विण विलसे परिताप ।२७।
अनुदिन अभिलाषा रहे अे रसनी करे आस
अन्य सुरति आवे नहीं क्षणु न मेले पास ।२८।
भाव भावांतर अति घणां ते कांइ विसद न थाय
गोपनीय अति रसिक ते वचने केम कहेवाय ।२९।
दान पात्र महा निपुण अने दाता रस रम्य
अनुभवता रस नव लहे अेहवो परम अगम्य ।३०।
प्रतिक्षणु रस अभिलाखे तृप्ती न पामे तेह
जे अनुदिन अनुभव करे तेह नवी जाणे अेह ।३१।
जे नायक रस दायक तेह न पामे पार
ज्यांहां भाव नहीं संचरे ते केम कहुं विस्तार ।३२।
अेवा भाग्य भक्त तणां प्रगट कर्या रस काज
आधुनिक प्रागट्य धरी गोकुलेश महाराज ।३३।
महेद अनुग्रहथी लहे कांइ अेक छाया मात्र
संपूर्ण रस ग्रही सके कोइ अेहवुं नहीं पात्र ।३४।

गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल
कांइ अेक अे ग्रंथे करी कहुं मांहें रसना रोल ।३५।
नवल नाहो नौतन रति जे रसनो नहीं पार
कांइ अेक ते वर्णन करूं बुध्धिे तणे अनुसार ।३६।
बांधेगढथी विजय करी प्रधार्या महाराज
नि:साधन फलरूप भक्तना करवा काज ।३७।
केवल पोते स्वत: थकी कृपा तणे सामर्थ
गढे राणी दुर्गावती तेहनां अनुग्रह अर्थ ।३८।
अे स्वभाव अे प्रभु तणो पोतेथी नित्य नेम
स्वकीयने करे दान भक्त रस भावने प्रेम ।३९।
दान करी सुख भोगवे साधननुं फल जेह
पोतानुं कांइ नव लहे जे आप्युं छे तेह ।४०।
आप्युं जो पोते लहे तो रसाभास थई जाय
अेम रस भेदे अनुसरे ते केम करी कहेवाय ।४१।
अेम पेंडे लीला करता पधारे छे आप
स्वकीयना सुख हेत अने हरवा परिताप ।४२।
क्रम क्रम निकट पधारे तेम मन आरत थाय
रसना मनोरथ पूरवा उलट अंग न माय ।४३।
अणदीठे अभिलाषा करे मनमां बहु अेह
प्रफुल्लित रस वांछित अंग जाणी पूरव नेह ।४४।
विविध भाव सोचे उर मनमां संकुचाय
दानातुर रसवस घणुं ते कांइ कह्युं न जाय ।४५।
अेणी पेरे पेंडे पधारे छे व्हालो प्राण जीवन
निरोध राणीनो करवाने करूणा आणी मन ।४६।
निरोधे निरोधाया छे प्रभुना सर्वांग
अन्य सुरती आवे नहीं अेह रसे रस रंग ।४७।
अेह भाव मनमां प्रभुअे आण्यो जेही वार
आगमने आगमन हवो ते सुंदर नार ।४८।
मन मनने वेधे अेहवी छे रसनी रीत
आतो महा अलौकिक अने वली पूरव प्रीत ।४९।
भावे मन वेधुं राणीनुं अंतर मांहां
प्रथम प्रगटी आरत अंग सहेज सुभावी त्यांहां ।५०।
मन लोचे ललचाये अने वली विहवल थाय
अंतरमां सोचे घणुं पण कारण नहीं समजाय ।५१।
क्षणु अेकमां उलट घणो मनमां अभिनव रंग
क्षणुं पुलकित रोमांचित क्षणुं फरके रस अंग ।५२।

क्षणुं भूलु संभारीअे तेम सोचे छे मन
क्षणु विस्मय क्षण प्रहसित अेवा प्रगट्या चिन्ह ।५३।

महा सभा मंडित बेठी छे सभा मंझार
तेहवे आवी वधाइ पधारे प्राण आधार ।५४।

आश्चर्य पामी अति घणुं मनमां मोद न माय
कारूणिक कारण लह्यु तेणे विस्मय थाय ।५५।

तेडी निकट वधायाने सनमुख पूछे वात
क्यां आव्या क्यारे आवसे उर उरमां न समात ।५६।

कोण प्रकारे क्यां थकी कोण कर्यो छे विचार
सूं कारण महा धर्यु तुं जाणे निरधार ।५७।

अदभुत अे प्रागट्य अने अदभुत कारण अेह
के जाणे जे अनुभवे के अे जणावे तेह ।५८।

वचन सुणी वेगा थई महेल्या लौकिक काज
सभा सहित सनमुख पधार्या दर्शनने महाराज ।५९।

आपी वधाई वधाईआने जे कांइ मननी फुल
वस्त्र द्रव्य आप्या घणां अने भूषण बहु मूल ।६०।

संतोषी साथे लेइ फिरी फिरी पूछे अेह
लौकिकमां दूरावीने अंतरनो ।६१।

हस्ती घोडा ने रथ पायदळनो नहीं पार
राज साज साथे सनमुख आव्या तेणी वार ।६२।

जेम जेम निकट पधारे तेम तेम आतुर थाय
विलंब थाअे विलंबे नहीं क्षणुं अे न सहेवाय ।६३।

करण पंथे आचरण प्रगट हवा अंग अंग अेह
अे उत्साह अपरमित वचने न आवे तेह ।६४।

परम प्रवीण विचिक्षण महाराणी रस पात्र
भाग्यवान संपूर्ण अने जाणे विधी शास्त्र ।६५।

को कहेसे राणीनुं कारण सूं प्राचीन
जे विण दीठे अे भाव प्रगट हवा परम नवीन ।६६।

त्यां कहुं छुं अेह अलौकिक अदभुत कारण मयी
अनुभवथी ज्ञापित होय वचने न जाय कही ।६७।

जे भोग्यवरे रस अनुभव्यो सार तणो जे सार
ते आगम सूचन करूं कारण समूल प्रकार ।६८।

वीज प्रथम भूतलमां स्वारथ रसने हेत
इच्छाथी प्रगटाव्या प्रभुअे करी संकेत ।६९।

सींचन आगमने आगमन हवुं जल पूर
अंग अंग चिन्ह प्रगट हवा ते प्रगट्या अंकुर ।७०।

वर्षाने आगमने भूमीथी जल सिंचाय
अंकुरीत पल्लवित जेम सहु वनस्पती थाय ।७१।
नाम सुणी गुण सांभली मूल गया पाताल
सनमुख थया दरशनने आशा वेल रसाल ।७२।
जोयुं रूप अनूप रसिकवर परम सुजाण
शाखा परशाखा प्रसरी पल्लवित प्रमाण ।७३।
वंक विलोकनी मुसकनी फरकनी अधर रसाल
नमित अमित नव नव पल्लव जेम लहेलहेती सुडाल ।७४।
वचन रचन रस रंजित स्वरस परस रस रीत
कुसुमित फल संयुक्त प्रगट हवी नौतन प्रीत ।७५।
अंग अंग अेकांत महा रसनो भर भोग
रसमय फल परिपूरण अेणी पेरे हवो संजोग ।७६।
सुरति भेद भेदे रमे ते केवल रस रूप
भाव भावती उभय रूची ते मांहे स्वाद अनूप ।७७।
अेवा अनेक प्रकार अनुपम अभिनव होय
भाग्यवान रसभर लहे ते नव जाणे कोय ।७८।
अेणी पेरे जे अंतरंगना कीधा अंगीकार
ते मांहेनी दुर्गावती भाग्य तणो नहीं पार ।७९।
द्रष्टी पंथे दीठा ज्यारे सनमुख सुख रास
वाहन वेगे मेलीने निपट निकट थया पास ।८०।
अंतर भाव अनुपम जाण्या प्रभुअे मन
करूणा भर हित भर थई अने आप्युं दर्शन ।८१।
कंदर्प कोटि लावण्य सकल शोभानुं सार
महा मोहक परम अदभुत सुंदरता नहीं पार ।८२।
भालने निकट विकट भोंहें बेहुं धनुषाकार
नयण वयण विण रीझवे ने मूरछे जोइ मार ।८३।
तिलक भाल भलुका बेहु ते वेधे सर्वांग
जोइ धीर धीरा तणुं होय सिथिल गती पंग ।८४।
अधर अरूण लोभी लोभात्मक अे कहेवाय
रस लोभी लोभ्या त्यांहां ते अलगा नव थाय ।८५।
माणिक रत्न जडित नाना विधि कुंडल कर्ण
तेहनी ज्योति जगमगे सकल भुवन आभर्ण ।८६।
श्री हस्ते चूडो श्री कंठे मोतीनो हार
पदक सुनानी माल अने बाजुबंध सार ।८७।
कर कमले अंगुली दल मुद्रिका परम अनूप
विविधी नंगसुं जटित ते राजे अभिनव रूप ।८८।

धोती धरी केसर भरी करी सोंघे रस सार
उपरेणो अंगी कर्यो अेक रंग परम सुचार ।८९।
जरकसी लाल हरित रंग सोहे सुंदर पाग
पेच सुपेचे बांधी टेडी दक्षिण भाग ।९०।
महा सौरभ जुत पुष्प तणी सोहे उर माल
कोटि चंद्र आभा हरे अेहवो रूकमणी लाल ।९१।
ईक्षण तीक्षण शील मुख ते कांइ सह्युं नव जाय
सात्विक सुशील तणा जोइ धीरज नहीं ठहेराय ।९२।
भक्त तणा मुख कमल भमर भोगी रस जाण
तेह रसे उनमत रहे महा चतुर सुजाण ।९३।
वस्त्र वयारे फरहरे थरहरे त्रीयना अंग
ते दीसे रस उलटे वाधे अधिक अनंग ।९४।
सृंगार सारनुं सर्वस्व अलौकिक सुधाकर सार
कोटिक ताप निवारण वारूं कोटिक मार ।९५।
भक्तनुं जीवन धन महा लीला परम विचित्र
अभिनव वेसी अे अंगमां दीसे नहीं अन्यत्र ।९६।
मुसकनी कुसुम सुवासित मुख निसरीत शुभ श्वास
ते वासे मकरंद अने महा सौरभ रस रास ।९७।
रसिक तणा नयणा विकसावे ईक्षण मात्र
सनमुख रहे जोइ सके अेहेवुं कोनुं गात्र ।९८।
अेक अेक अंग प्रत्यंग अलंकृतनो जे धर्म
ते मोहे सहु जगतने धर्मी न जाणे मर्म ।९९।
अेहवो सहेज सुभाव धर्मीनो नित्य प्रमाण
पोते जेहने रीझवे तेहनुं सूं निर्माण ।१००।
भक्त मंडली मध्ये उभा सुंदर वर
राणीअे महा रसार्णव दीठा आनंद भर ।१।
जे अंगे जोयुं मोह्युं मन तेणे ठाम
रूप समुद्र समोह मांहां मग्न थई अे वाम ।२।
अेकथी अेक अगाधिमां जे होअे मन लीन
आप बले अलगु करी ते केम सके प्रवीण ।३।
रूप रसार्णवमां आरति सरिता मिली जेह
जेम जलमां जल मळ्युं केम अलगुं करे तेह ।४।
अेक अंगमां सर्वे अंग सहेज सिथिल थई जाय
जोयानी गति अेह त्यांहां अनुभव केम थाय ।५।
शुध्ध बुध्ध मन उत्साह स्वाद सुख दुःखनो भोग
श्री मुख जोइ सहु विसर्युं विप्रयोग संयोग ।१०६।

द्रग मन संग स्पर्श आरत मूर्छा उनमाद
अे सर्व दशा प्रगटी इच्छाअे ने हवो प्रमाद ।१०७।

फरी नामे रूची उपजावी कामे कर्यो प्रबोध
रूपे मन आकर्षी राणीनो कर्यो निरोध ।८।

कारण लह्युं इच्छाअे करवो रस संपन्न
रूची जोइ रूची उपजावी त्यांथी फेर्युं मन ।९।

स्पर्शातुर अभिलाष प्रबल थयुं अेहनुं मन
तेह बले बल सूचवीने कीधा चैतन्य ।१०।

लाज सहित संकुचाया ने संभाळ्युं अंग
सनमुख जोइ श्री गुंसाईजीने कर्या दंडवत साष्टांग ।११।

करी विनती तेह समय ने प्रणिप्रति बहु पेर
आदरसुं आनंदे लेइ पधराव्या घेर ।१२।

अे स्वरूप दीठे अेहने लागी द्रष्टी साध्य
अटक्या नयण न मटके प्रगटी आध्य ।१३।

नयण दुत दुति थई मध्ये कर्यो प्रचार
उभय अंतर आकर्षीने कीधा अेक सार ।१४।

आरतनुं फल प्रगट्युं जेहनुं नहीं निरमाण
फरी फरी श्रीमुख जुअे अनुभव लहे प्रमाण ।१५।

नयण वयण मन मली रहया अंग मल्यानी आस
अंतरमां अभिलाषे अनेक भांति सुख रास ।१६।

जुअे द्रष्टी दूरावी पींड दूरावे वाम
महा मनोरथे आवर्या अेम आव्या निजधाम ।१७।

पोताना निज भवन देखाडया सहु अे त्यांह
मनोरथ मनमां अेह जे व्हालोजी रहे अहींया ।१८।

स्थल जोइ श्री गुंसाईजीअे अेम कहयुं निरधार
सेवाना असौकर्यनो मनमां कर्यो विचार ।१९।

नगर सहु देखाडयुं जाण्युं निकट करे वास
प्रेमदा प्रेमे पूरित मनमां धरी बहु आस ।२०।

सेवानो संकोच अने जलनुं असौकर्य
ते जोइ श्री गुंसाईजीने मन भासे आश्चर्य ।२१।

प्रभुनां मनमां अेह जे रहीअे जो दूर
अंतरथी आरत होअे ने वाधे रसपूर ।२२।

संयोगनुं सुख तो लहे जो होअे विप्रयोग
आतुर थई आवी मले त्यां रसनो भर भोग ।२३।

उभय अभिशरण भाव अने दुती संचार
नयण वयण अभिलाष गूढ रस बहु विस्तार ।२४।

अेकत्र रही अति परिचयमां अनुभव नहीं सार
ते माटे इच्छाअे अलगो हवो विचार ।१२५।
गाम थकी अति निकट तलाव जमनीयुं नाम
अे संमत निरधार्या रहेवुं तेणे ठाम ।२६।
जमुनाजीने नामे जेहनुं नाम छे जेह
करीअे त्यांहां निवास रहेवा उचित अेह ।२७।
अे राणीनी संपति ने वैभव विस्तार
श्री गोकुलमां श्रीमुखथी कीधो उच्चार ।२८।
वलता सहु परिवार सहित त्यांहां कर्यो निवास
नौतन धाम समार्यांने सेवा सुख रास ।२९।
ज्यारे अेह प्रसंग हवो छे सभा मंझार
अति मुसकित प्रफुल्लीत मुखने उलट नहीं पार ।३०।
कहा राणीकी संपति अरू महा उग्र प्रताप
मांडव पर्यंत देश राणीने लीनो आप ।३१।
महा साहस अरू शूर धीर कछु कहयो न जाय
बाज बहादूर सुभट पति जीत्यो जिन जाय ।३२।
बोहोत नृपति सेवा करे अपनो ओसर पाय
राणीके सनमुख काहु देख्यो नहीं जाय ।३३।
सब उमराव अति कांपे अरू त्राशे मनमां
सनमुख रहे ठाडे पे मुखथी बोले नांहीं ।३४।
सहीअ तिलंगी राणीकी जा उपर जाय
सब कोइ आज्ञा माने अरूं ले शीष चढाय ।३५।
बावन गढकी राणी आप करे अधिकार
सब वाहन चढी जाणे अरू राखे हथियार ।३६।
अेसी तुपक चलावे जाकी सर नहीं आन
अश्व दमानकमो उलटे मारे निशान ।३७।
कहा गढाकी संपति वैभवको नहीं पार
सब कोइ समृध्धवान अरू महा सुखी नरनार ।३८।
हाथी तो इतने जितने गीनी सके न कोय
हाथीकी बाहुल्यता घर घर हाथी सोय ।३९।
इतने तो हाथी गजपति वनमों नांहीं होय
इतने तो घर काहुके मुसाहुं नांहीं होय ।४०।
ब्राह्मणके हाथी अरू हाथी भाट कुंभार
जाचकके हाथी अरू हाथी धोबी लुहार ।४१।
पांच मोहोरकुं पइये सुंदर हाथी मोल
पे राणीके चढिवे के हाथी बहु मोल ।१४२।

पलट्या गुलदार नाम अरू हाथी सारदूल
मंडलीआ सींधसार वाअेसे परम अमूल ।१४३।
चौदसे तो पायगे मांहे साधारण नहीं पार
तोउ प्रती वरसे राणी होअे खेदाकुं स्वार ।४४।
अेक वेर महारखी राणीको उमराव
दरशनकुं अपनेको घर आयो करी बहु चाव ।४५।
ते समे श्री गुंसाईजीने चांपा लीओ भूलाअे
खीजत हे कछु उनसुं अपने मनके भाअे ।४६।
तब महारखीने पूछी कयों खीजत हैं गुंसाई
तब वे वात सबे वासु कीनी समजाइ ।४७।
भंडारी आंहाके प्रकार कछु समजे नांहीं
चणा सातसो मण सो ले के महेले खोह मांहे ।४८।
भीतरथी भींजे सो वास उठी हे अपार
वासु कहेत हे गुंसाईजी याकुं दीजे डार ।४९।
तब महारखीने यों कह्यो डार काहेकुं देहुं
अे सब हमकुं दे कर तुम आछे कर लेहु ।५०।
चांपाने वासुं कह्यो याको तुमारे कहा काज
उन कहयो तुम कहां करी हो हमारे बोहोत समाज ।५१।
अेक हाथी दो मन चणा पावत हे नित्य रोज
तामे सेर अेक डारीअे तो पावे को खोज ।५२।
अेसी राणीकी संपति काहु कही नव जाय
अरू इनको जो वैभव सहित नगर समुदाय ।५३।
कोउ भिक्षातुर नांहीं कोउ दरिद्र नांहीं
कोउ मलीन नाहीं राज्यमें पाप को अंश न ज्यांह ।५४।
अेवी राणीनी वारता प्रभुजीअे करी प्रकाश
प्राण प्रिये प्रेम जुत त्यां कीधो छे निवास ।५५।
वैंकुठथी अधिकतर जे शोभा महासार
अेवा भवन समार्या सुंदरता नहीं पार ।५६।
त्यां सहु कोइ आवे छे दरशनने काज
सुंदर रूप निहाळी मोहे सर्व समाज ।५७।
रूप समुद्रमां सुख पामीने होअे रस मग्न
कारण करूणाब्धी निधीसुं होअे मन लग्न ।५८।
शरणागत पालक ने भक्त अर्थ प्रयोजन
विविधी भांते आकरषीने निरोधे मन ।५९।
अेणी पेरे प्रभु लीला करे भांत भांत रस रीत
आनंद अनुदिन नौतन उपजावे प्रीत ।१६०।

त्यां रस वेधी रस वांछित करी रसना बहु साज
आरत ज्युत आवे राणी दरशन काज ।१६१।

अे राणीनो गुण सुंदरता बहु प्रकार
श्रीजीअे श्रीमुखथी कीधो छे विस्तार ।६२।

देखवेकी अति भव्य फरहरी पतरे अंग
स्वेत वस्त्र पहेरे रहे सुंदरता अंग अंग ।६३।

अेक श्वेत बिंदुकी लीलाट पर दे मन भाय
करमो लर मुक्ता फलकी शोभा परम सोहाय ।६४।

कोमल वाको अंग कहा कहीअे सुख सार
स्पर्श किये नवनीत हुंथे महा अति सकुमार ।६५।

अेसी सुंदर जो कोइ देखीअे नाहीं
चंचल बोहोत अे वचन कहयुं छे महा रस मांह ।६६।

अति मोदे उदबोध हास्यसुं कहयुं बहुवार
अे वर्णनने भाग्यनो कोण करे विस्तार ।६७।

सुंदर दीर्घ विशाल परम अणिआला नेण
कोकिला कोटि वारीअे अेहवा बोले वेण ।६८।

अधर सहेज अति अरूण पातलो परम रसाल
नाशा दीर्घ वंक विलोके रहे न संभाल ।६९।

दंड पंलि दाडम कली मली रही अेक सार
कांती हरे हीरानी तेज तणो नहीं पार ।७०।

अति प्रसन्न आनन सदा गुणजश पूरित कर्ण
आभरण कोटि ओवारीअे वण पहेरे आभरण ।७१।

वाणी वर्णन केम कं सृंगार रसनुं धाम
सुरति समे कर ग्रहे त्यांहां वाधे उभय रति काम ।७२।

उंच उरोज अति निबिड नवल बेहु दीसे संग
निरखेथी नायकाने वाधे कोटि अनंग ।७३।

मृगपतिने आकार उदर सोहे कटि लंक
महा प्रवीण रस रास अने रहे स्वत: निशंक ।७४।

जानु जंघ खंभ कदलिना मोडे मान
नखमणीने शोभा दीजे अेहवुं नहीं आन ।७५।

कोमल सूक्ष्म गौर अंग भुषित अनुराग
अंग अंग परि पूरण पूरित प्रिय सोहाग ।७६।

स्नेहरूपी रत्ने जडया रतन नंग अमोल
कांतीरूपी कुंदन मढी नहीं कोइ अे समतोल ।७७।

अेवा भूषणनी श्रेणी नख शिख पर्यंत
लौकिक ते शा काजना अे करे मनोरथ अंत ।१७८।

जेहने जोइ रीझे छे सुंदर नवल कुमार
ते उपर हुं सर्वस्व वारूं वारंवार ।१७९।
अे भूषण स्वरूपात्मिक अेहनो महा प्रभाव
आकर्षे स्वरूपमां अेवो अेहनो भाव ।८०।
अेवी अे राणी आवे दरशनने काज
वेधी अेह स्वरूपे जोवा श्री महाराज ।८१।
अे वात श्री मुखथी कही छे करी विस्तार
सानुकूल सनमुख थईने बोल्या बहु वार ।८२।
राणी जब दरशनकुं आवे हमारे धाम
सबकुं छांडी अकेली साथ सहेली वाम ।८३।
उमरावनिकुं वरजे कछु अेक मिस करी आप
कोउ संग नाहीं आवे इनको जाने प्रताप ।८४।
नाम पायवेकुं बोहोते कछु कीनो तांहे
पे श्री गुंसाईजीने नाम वाहीकुं दिनो नांहीं ।८५।
अेह वचननो भाव कहुं छुं सिध्ध प्रमाण
श्री गुंसाईजी आप सर्वज्ञ शिरोमणी जाण ।८६।
सनमुख करीने स्वरूप संबंध करावे नाम
आ तो स्वरूपासक्त छे तेहने नामनुं शुं काम ।८७।
स्वरूपासक्त कहया तेहनुं एहज परिमांण
श्री मुखथी कहयुं छे अे महा शिरोमणी जाण ।८८।
इनको अंतःकरण ते वैश्नवही हुतो अेह
अेक नाम नहीं पाइअे अेम बोल्या छे जेह ।८९।
मर्यादा हित नामनी कीधी विनती मात्र
पण अेह नाम केम पामे राणी महा रस पात्र ।९०।
श्रीजीना गुण स्वरूप सहित अंतरगति मांह
बाह्याभ्यंतर रमी रहया नामनुं काज न त्यांह ।९१।
नाम साधन ने स्वरूप फल पाम्या रस राज
ते साधनने अे शुं करे नाम तणुं शुं काज ।९२।
प्रगट कहयो छे श्लोक श्रीमुखथी कारण रूप
अेह प्रमाण कर्याने ते कहुं छुं भाव अनूप ।९३।
शास्त्र ते न्यामिक त्यांहां लगी ज्यां लगी कृपा न होय
कृपा हवी परिपूर्ण ज्यांहां न्यामिक नहीं कोअे ।९४।
अहींया तो राणी रसार्णवने स्वरूपात्मिक देह
जेहना हितने वांछे छे प्रीय आरत करी नेह ।९५।
पोतेथी अभिसरण करी पधार्या ज्यांहां
परकीयानो रस प्रेमे अनुभव करवा त्यांह ।१९६।

पाणी ग्रहण प्रकार नीत मारग कांइ भिन्न
आतो पुष्ट पुष्टनुं परम फूल को नव जाणे अन्य ।१९७।
त्यां नाम तणुं न्यामिक शुं ज्यां रसनो विस्तार
रसना भेद रसिक लहे अन्य न जाणे पार ।९८।
श्रीमुखे कह्युं चलिवेकुं जब हम भये जेही वार
श्री गुंसाईजीने नाम देवेको कीओ विचार ।९९।
पीछे तो चलनो भयो कछु बनी आयो नाहीं
अेह वचन पोते कहयुं कारण छे अेह मांह ।२००।
श्री गुंसाईजी नाम कहयानो कर्यो जेह विचार
ते मांहे कारण सूचव्युं इच्छाने अनुसार ।१।
नाम बीजे गुण द्वारा जे अेहोनी स्थिती थाय
अेवुं मनमां धरी श्री गुंसाईजीअे कर्यो उपाय ।२।
पण असाधारण इच्छाअे मनमां आण्युं सोय
महा रस अनुभव कीधो तेनी स्थिति केम होय ।३।
स्वरूपात्मिक जेको तेहनो स्वरूपे विनियोग
ते माटे अेहने नामनो मल्यो नहीं संजोग ।४।
जेणे अे रस पान कर्युं ते रसनो अे धर्म
स्वरूप थकी स्थिति अलगी नहीं अेहज धर्म ।५।
महा रत्न अभिधाने करी राख्या ते पास
अनुभव उभय भांते भांते रस पूरित आस ।६।
तेहनी अेहने योग्यता अेहनी ते अनुहार
रूपांतरे अंगीकर्या कोअे न जाणे पार ।७।
महेदने मन जे आव्युं तेहज सत्य प्रमाण
ते आसयथी में लख्युं छे अे करी निर्माण ।८।
अेवी राणीसूं रस अनुभवनो जे प्रकार
ते सागरनी कणिकानो प्रभुअे कर्यो विस्तार ।९।
तेहनी छाया मात्र ते में मनमां धरी अेह
करूणानुं बल जाचीने हुं विसद करूं तेह ।१०।
श्री गोकुलमां श्रीमुखथी बोल्या सुखरास
आनंदित उदबोध रसे कीधो ते प्रकास ।११।
दरशनकुं आवे राणी हमारे घर मांह
निःसंकोच अकेली अति अेकांत हे ज्यांह ।१२।
इत उत देखे तो गुंसाईजी देखे नाहीं
मोहे अकेलो पायके पकरी मेरी बांह ।१३।
छांडे नहीं छुडाये मोहेकुं होय संकोच
में कहयो मोहेकुं छाडो तो करे मनमें सोच ।२१४।

मिसकरी मोहेकुं बोलावे अरू कछु पूछे वात

काहो जा कहां पढे हो कहां सोवत हो रात ।२१५।

श्री गुंसाईजी कहा करत है मोहेसुं कहो तुम वात

नेक तो ठाडे रहो किन्न अेतो कहो उक्तात ।१६।

जो कछु मोहेकुं पूछयो उतर दिनो तांह

कहयो छांडो जु छांडो पे मोहेकुं छांडे नांहीं ।१७।

हलमलावे मेरी बांहे अरू बोहोत अकुताय

कछु कहेवे मों पर आवे पें मनमें संकुचाय ।१८।

आपुहुंने छांडे नांहीं ओर कछु कहयो न जाय

पछी लघु लाघवे करी लीनी में बाहें छुडाय ।१९।

अेह वचन रस भरथी प्रगट कर्या महाराज

त्यारे परम रसज्ञ उभो छे भक्त समाज ।२०।

लीला अभिनव वेसी अंतःकरण गुणनी रास

आनंदे आतुर थई अेम बोल्या ध्यानदास ।२१।

आपु केतिक वयमो हुते मोहेसर आइ के नाहीं

हलमलाइ तुम उनकी के उन तमारी ग्रही बांहय ।२२।

अेह वचन सुणी हितसुं प्रभुजी अती मुसकीयात

मोद संकोच करी अने कहयुं रहे रहे रे कुजात ।२३।

मुसकनी युत महा मोदसुं प्रगट कर्यो रस जेह

अेहनो आसय लइ अेक विवरण करूं तेह ।२४।

अे राणी दुर्गावती दर्शनने आवे नित्य

अति आतुर अविलोके अेतदरस पर चित ।२५।

अेक समे अेम करता दीधुं दरशन

दीठा महा रसज्ञ जे रसनुं परम निदान ।२६।

नेत्ररूपी करमां आप्युं रमणीय स्वरूप

सहित अंगत्वे सामग्री परम अनूप ।२७।

श्वेत धोती उपरेणो चंचल नयण विसाल

जेहनी चितवनी वांछे रसिकजन परम रसाल ।२८।

झलकतुं सुभग कपोल अने गलस्थल सार

ते रस बोधक अभिनव जे रसनो नहीं पार ।२९।

अधर अमोघ रस भर ते कांइ कह्युं न जाय

धीरज केहनू नव रहे ते दीठे ललचाय ।३०।

सुंदर दीर्घ नाशाने प्रतिक्षणुं अे आश

कुरंगी द्रग भंगीना वांछे अंग सुवास ।३१।

भुजवर दीर्घ आजानुं अने बाजुबंध युक्त

वक्षस्थल पर सोहे हार कनक अनो मुक्त ।२३२।

ते देखी परिरंभणनो होओे अभिलाष
मानिनी मन आतुर होओे ते मननुं मन साक्ष ।२३३।
चरण कमल अति दुर्लभ ते कांइ कहया न जाय
रसिकाने घेर पधारवा अति चंचल थाय ।३४।
सोडस मंगल चिन्हे रेखा अंकुश सोहे
भक्त करी उनमत ने खेंचे ने मन मोंहे ।३५।
वचनामृत मधुरा बोले जाणे मोहक मंत्र
गौर सचीकण झलकती दीसे अनुपम कांत ।३६।
रूप जोइ व्हालानुं को सुख पामे आप
को जोइ मोही रहे केहेने अति परिताप ।३७।
अेक कृपाल दयाल कही सराहे नार
अेक निष्ठुर करीने कहे जेहनो जे अधिकार ।३८।
अंग अलंकृत धर्मीनुं दीसे अेहवुं रूप
जोइ धीरज नव रहे अेहवुं सहेज स्वरूप ।३९।
अविलोकता आकर्षे सर्वने करे स्वाधीन
रूप स्वरूप वांछी अे ग्रहे रसिक तणा मन मीन ।४०।
अंग सुवासे नासिकानो टाले परिताप
अेवो सुंदर सुभग सलूणो सोहे आप ।४१।
अंग अंग आभूषित ते जेम मोहक फंद
जे निरखे तेहने करे सद्य सिथिल गति पंग ।४२।
रूप समुद्रे वरसतुं लीला लहेर तरंग
लावण्य भर पूरित अेहवुं अे सर्वांग ।४३।
नयणनी कोर कटाक्ष ते अेवी अति बलवंत
भक्त गजेन्द्र निरंकुशने खेंचे उनमत ।४४।
अेवा जोइ आरत जुत राणी विहवल थाय
अभिलाखे अति वेष्टित ते कांइ कह्युं न जाय ।४५।
प्रेमभर आरतयुत अेहवा दीठा त्यांहां
राणी अति आश्चर्य आनंदी मन मांहां ।४६।
जुअे राणी द्रष्टी दूरावी मुख मोडी मुसकाय
अंग आलस मोडे वारंवार जंभाय ।४७।
को बालकने आलींघे ने खजुआले कर्ण
आगल जइ फरी फरी जुअे निज आभरण ।४८।
अंग समारे आपणुं वली निवारे केश
अंचल अलगो करी देखाडे नाभी सुदेश ।४९।
मनोरथ मिलन तणो करे ने वांछे मन मांहां
राखुं उर अंतर के राखुं नयणा मांहां ।२५०।

कंठ भूषण करी राखुं के करूं हार अमोल
मनमां मेली राखुं नहीं को अेनी तोल ।२५१।
चंदन पेर चढावुं अेहने मारे अंग
शुं करूं जेम होअे शीतलता सर्वांग ।५२।
अयोग थकी आतुर घणुं रही नहीं मर्याद
अनंग दिशा दिश व्यापी प्रगट हवो उनमाद ।५३।
नाम सुणी अवलोकीया प्रथमे लाग्युं त्यां मन
स्पर्श वांछना प्रगटी ने जागे निशदिन ।५४।
क्षणु अंग आरत हवी ने मन मेहेली लाज
उनमादित मुरछाअे काम दशाना साज ।५५।
अे सहुनो अनुभव कर्यो इच्छाने सामर्थ
प्रभुने रूची उपजावाने राणी हिते अर्थ ।५६।
रूप समुद्र झकोलीया वचनमां थया मग्न
मुसकनी मांहें नाहया ने शुध्धताअे हवा लग्न ।५७।
व्याकुलता व्यापी अंग आतुर थया रस मांहां
कोटिक काम शिरोमणीनी त्यारे ग्रही बांह ।५८।
प्रथम नायकने ग्रहे नहीं नायकानो अे मर्म
स्वरूप धर्म जोइने कांइ रहयो नहीं अेहनो धर्म ।५९।
अे शोभा कहेवाने मन मारूं अकुलाय
समोवड को आवे नहीं तो केम करी कहेवाय ।६०।
कोण कल्पतरू जेहेने कहीअे अेहोनी बांह
रसनाने योग्यता जे साहे रस मांह ।६१।
रस सागर ओवारूं केम करूं स्वरूप समान
राणीना करनी उपमाने नहीं कोइ आन ।६२।
अेहनी भुजा महा रसिक निज पूरण रस रूप
रसभर राणीअे ग्रही उपमा अेह अनूप ।६३।
अेहनी समता कीजीअे अेहवो को नहीं संसार
अेहनी उपमा अेहनो अेहनी अे अनुहार ।६४।
मुसकनी नेत्र विलासे उभयतानो जे विवेक
स्पर्श करी प्रेमे भर्या प्रगट्या भाव अनेक ।६५।
उदीपन अनुभाव अने विभचारी भाव
भावे करी रस नीपजे ते मांहे बहु आविर्भाव ।६६।
अविलंबन विभाव जे रस अविलंब्यो ज्यांह
सात्वीक आदी अष्ट भाव ते प्रगट हवा त्यांह ।६७।
स्थंभन श्वेद रोमांचित कंप अने स्वर भंग
अश्रुपात वैवर्ण प्रलाप अे प्रगट्या अंग ।२६८।

अष्ट विभाव अनुपम रति हास्ये जे तेह
क्रोध उत्साह भय ज्युत स्थाई विस्मय जेह ।२६९।
भाव अनेक प्रगट हवा सृंगारात्मीक सार
ते समय जे उभय रस कोण करे विस्तार ।७०।
हलमलाव्या व्याकूल थई अने बोलाव्या अेह
प्रभुअे उतर दीधा हुल्लासे करी नेह ।७१।
प्रथम समागमे मुग्धाने आरत संकोच
नायक नो रस आरतनो होअे मन सोच ।७२।
ते दान कर्युं राणीने नायकनो रस भाव
नातकार कर्यो पोते मुग्धा थयो नवल कुमार ।७३।
अे रस अनुभव कीधो व्हाले अति रस मांह
छोडो जु छोडो कहीने छोडावी बांह ।७४।
नायक नायकनो रस सर्वदा नित्य
अे अलौकिक रस अनुसर्या महा अनूप विपरीत ।७५।
अेह समय उपर वारूं सर्वस्व तेही वार
जेह समय अे रसनो कीधो अंगीकार ।७६।
हाथ छोडाव्यो हाथथी तेहनुं कारण अन्य
उपजावा परितापने अे रस छे कांइ भिन्न ।७७।
ताप प्रगट पाखे नव होअे रसनो स्वाद
लोभे मन आरति रहे ते माटे कर्यो आद्य ।७८।
तापे आतुरता होअे तापे भाव प्रकाश
तापे अभिलाषा रहे तापे होअे रसरास ।७९।
ताप अंतरगति उपजे सद्य करे निरदोष
तापे रति उपजे घणी ने होअे रस पोष ।८०।
तापात्मीक जे विरह रस प्रगटे जेहने अंग
प्रभु प्रेमभर नव सहे सद्य करावे संग ।८१।
तापज साधन स्वरूपनुं तापनुं रूप अनूप
तापे सहु सुख संपजे ताप परम फल रूप ।८२।
राणीने अे रस अनुभव कराववा आप
ते माटे कर छोडावी उपजाव्यो परिताप ।८३।
ते परिताप असहय हवो अने कांइ रह्युं न जाय
गूढ व्यथा उर व्यापी केहेने नव कहेवाय ।८४।
स्पर्शी अंग आरत भरी व्याकूल थई अे वाम
मन ते रह्युं अे स्वरूपमां आव्या ते निजधाम ।८५।
अे स्वरूप अंतर लइ अने राख्युं उर मांहां
पोते भावात्मक थई अने सनमुख रहयां त्यांहां ।२८६।

सर्वांगे स्वरूपात्मिक दीसे अेहनो देह

अन्य सुरति आवे नहीं प्रगट्यो पूरण नेह ।२८७।

अंतर रमण अनुपम भावे भर रस मांह

सांप्रत्यनी अनुहार अे अेम उरमां अवगाहे ।८८।

वक्ष:स्थल अवलोकीने नींदे निज उर आप

भ्रांते स्पर्श्यानुं करे अने प्रगटे परिताप ।८९।

तुलसीने दंडवत करी अेहना भाग्य सराहे

कंचननी माला पर वारे सर्वस्व त्यांह ।९०।

गुंजा पर गुण वारे पोताना बहु वार

जन्म वृथा करी जाणे नहीं अेहनी अनुहार ।९१।

क्षणुं अेकमां चैतन्य ने क्षणुंमां विस्मय थाय

क्षण सोचे उर अंतर क्षणुं आनंद न माय ।९२।

क्षणुं उतर प्रतिउतर भावे दे रस मांहा

क्षणुं मनोरथ बहु भांतीना व्हालासुं करे त्यांहां ।९३।

क्षणुं खेंचे रस आपनो ने प्रभुसुं करे मान

ओलंभा दे अति घणा कहे तमने नहीं सान ।९४।

क्षणुं बोले थई खंडिता क्यांहां वसी आव्या राज

कोण मिशे पधार्या मारे घेर शें काज ।९५।

त्यांहां जाओ ज्यां रूची घणी ने नौतन रस रीत

भलु मनावो तेहने जेमां होअे बहु प्रीत ।९६।

वचन चातुरी त्यां करो जे को होअे प्रवीण

तेहने वस अहरनिश रहो जेहने रस आधीन ।९७।

अलगा रहोजी छुहो रखे जाण्युं तमारूं हेत

अमने भलु मनावा करी आव्या संकेत ।९८।

अेम तामस तामसनो अेहने अनुभव थाय

सात्वीके आदर करी क्षणुं चरणे लपटाय ।९९।

भामनडा भावे करी ने वारे तन प्राण

विनय वचन बोले घणां रीझवे परम सुजाण ।३००।

अंतर रमण तणो रस अेहने सांप्रत्य थाय

विकल करी विलखे घणुं ते कांइ कहयुं न जाय ।१।

दु:खमां सुख सर्वस्व तणुं पान करे छे अेह

अेम भावे रस भोगवे कोण विसद करे तेह ।२।

हुं न हवी अेम वांछे अेहोने उर आभरण

रज न हवी लपटाणी रहेती अेहोने चरण ।३।

अधरे हवी नहीं लालिमा सदा रहेत नित्य संग

कांति हवी नहीं अेहनी ओपत ओहोने अंग ।३०४।

धोती हवी नहीं अेहोनी जे अंगे पहेरत आप
प्रीया हवी नहीं अेहनी जे टालत परीताप ।३०५।
कुंडल ज्योत हवी नहीं अथवा वाणी विलास
वरूणी हवी नहीं अेहोनी के मुसकनी रसाल ।६।
अेम कही कही भावे करी अंग अंगमां होअे लीन
सात्वीक भावे प्रोज्या अलौकिक प्रगटी दिन ।७।
अंग वांछे अंग भावता तेहने अति परिताप
अेक मन ते परवस हवुं कोण संभाले आप ।८।
सर्वांग व्यापी रस प्रगट हवो छे अेह
बाह्याभ्यंतर व्याप्यो अने हवो रसमय देह ।९।
राग रंग आभूषण अने बहु सुखना भोग
जे हितदाइ अंगना लागे विष संजोग ।१०।
चिंतातुर चतुरा घणुं कहे अे केम वस थाय
कोण प्रकारे अे पामीअे करीअे कोण उपाय ।११।
आतुरता असह्य हवी ने कांइ रह्युं न जाय
भाव प्रबलथी उपज्युं केहेने करूं सहाय ।१२।
स्वरूप आसक्ति सुखद घणुं ने परम रस जाण
अंतरंग अंतरहित चाचोजी सुजाण ।१३।
अदभुत साहस करवुं अने ग्रहेवी माहानिध्ध
ते अेहोना संमत पाखे अर्थ न होअे सिध्ध ।१४।
पाछे पोतानी अनुचरी तेडी करी बहु आश
भाव निरूपी मोकली चाचाजीने पास ।१५।
तेणे जइ अंतरंगने आसे कहयो तेणीवार
विनती करी पधराववा प्रेमे प्राण आधार ।१६।
इच्छाने अनुभावे आंतरिक लही ताप
उभय अमित रूची जाणी विनती मानी आप ।१७।
करी संकेत सहचरी चाचाजीसुं त्यां
भवन पधार्या आपणे अतिशे उलट मांह ।१८।
भाग्यवान भावे भर्या आरति सम नहीं कोय
मन ते नेत्रात्मिक थई अने रहया मारग जोय ।१९।
तेहवे आव्या सहचरी दीठा सुखनुं मूल
अति आदरे आलंघी बेसाडया अनुकूल ।२०।
पूछ्युं अति आतुर थई कहोजी कोण प्रकार
बोल्या अति उत्साहे कीधुं सहु निरधार ।२१।
अेह वचन सुणी अंतर आनंदया भाग्यवान
उत्साहे आतुरता ने कीधुं समाधान ।३२२।

आतुरता मांहे मोद ने पधार्यानो अभिलाख
अे रसनो स्वाद अनुभवे जे तेहनुं मन साख ।३२३।
वलतुं उथापने चतुर सहचरी साथ
पठव्युं चोवीस पाननुं बीडुं अेहोने हाथ ।२४।
सभा मंदिर श्री गुंसाईजी हरिवंशजी पास
त्यां बेठा प्रभु पातलो सुंदरतानी रास ।२५।
सहचरीअे चतुराइसुं लघु लाघाव करी मोद
कोइ न देखे तेम करी मेल्युं प्रभुनी गोद ।२६।
महा विचिक्षण नायक चातुरी कला प्रवीन्न
चपल पणे चतुराइ अेक त्यां करी नवीन ।२७।
स्कंधेथी खसतो उपरेणो मेहेल्यो अेह
वेग करी दूराव्युं बीडुं पोते तेह ।२८।
बीडा करमां लेइ अने उठया उलट मांहां
अेकांते चाचाजीने देखाडयुं त्यांहां ।२९।
हरिवंशजी बोल्या बाबा सुनीये करी तेह
तुम सबकुं पधरायवेकुं बीडा पठयो अेह ।३०।
उनके घर दूरीके पधार्यो चहीअे आज
ताते यहु बीडा पठायो हे तुमारे काज ।३१।
अे सुणी हर्षातुर जुत बोल्या उलट भेर
बनी आवेगो कैसे जानो उनके घेर ।३२।
त्यारे चाचाजीअे कह्युं हम रख्यो हे बनाय
अेणे वचने फूल्या ते मनमां न समाय ।३३।
प्रथम रस अनुभव अभिनवो अति आरत संकोच
अभिलाखे आतुर घणुं ने मनमां करे सोच ।३४।
अति आतुरता प्रगटी अंतर आरत हरण
मनमां अेह विचारे करवुं छे अभिसरण ।३५।
अति विस्तीर्ण अनेक भाव भावे जुत थाय
उभय मनोरथ पूरवाने अतिशे अकुताय ।३६।
तेह समय शुभ वेळा क्यारे होय संपन्न
अेम रस दाता रस वांछे आरत प्रगटी अंग ।३७।
त्यां राणी रस पूरित भावे भर बहु प्रीत
उत्साहे आतुर घणुं ने होअे नवली रीत ।३८।
आरतने अभिलाष हवो मनोरथने मोद
दुःखने सुख संपन्न हवुं रसने परम विनोद ।३९।
सामग्री उपयोगनी समय जे आवे काज
अनेक भांति करी अनपम कीधा रसना साज ।३४०।

निज मंदिरे रचना करी रचयुं रमण रस धाम
अेक अेहोनो वैभव अने पधारे पूरण काम ।३४१।
तेल सुंगध अरगजा हार बीडां नहीं पार
मेवा भांति भांति रस केम थाअे विस्तार ।४२।
अति अनुराग अलंकृत भावे भुषित अंग
अंतर बाह्याज्य अनुपम दीसे अभीनव रंग ।४३।
जेम जेम दिवस घटे वाधे आरति मनमां
सोचे लोचे लोचन क्यारे पधारे अहीं ।४४।
मर्यादी मारतंडने निंदे निरउतर भाख
रयणी रस मार्गी सुजातीनो करे अभिलाख ।४५।
मनोरथ भांति भांति करे ते कांइ कहया न जाय
क्षणु क्षणु विलंब होअे हवे ते अति असहय थाय ।४६।
अष्ट नायकाना सोचे मन भाव अनेक
ते अभिलाषा मन धरे क्यां लगी कहुं विवेक ।४७।
स्वाधीन पति उत्कंठता अभिसंधिता जे नाम
खंडिता प्रोसित प्रेयसी विप्रलंभा अे वाम ।४८।
अे सहुनो रस अेक समय अनुभव करे अनूप
भावात्मिक भावे लहे अेहवा रसनुं रूप ।४९।
पुष्ट पुष्ट रस प्रेमसुं जेहनो अंगीकार
ते अे रसने अनुभवे अन्य न जाणे पार ।५०।
अति उदबोध परम फल अे रस भावापन्न
भाव मारगी ते लहे गंध न जाणे अन्य ।५१।
अदभुत परम गोप्य जेनो नहीं कांइ पार
तेह बापडाशुं लहे जेहने नहीं अधिकार ।५२।
अेवा अनेक प्रकारे होअे भाव प्रकाश
सुंदरवर आगमने प्रगट होअे रस रास ।५३।
विरह अवस्था भोगवे ने रह्या मार्ग जोय
तेह समय नयन मइ थई इंद्री सहु कोय ।५४।
अेम करता सौभाग्य समय आव्यो तेणी वार
भाग्यवानने भाग्ये भाग्ये कर्यो विस्तार ।५५।
हवे त्यां पधार्यानो जे कर्यो विचार
प्रगट करी कांइ अेक कहुं छुं तेह प्रकार ।५६।
सुंदर लाड लहलहयो अतिसय नवल कुमार
महा नायके नायकानो कीधो सृंगार ।५७।
अे कारण श्रीमुख वचने कहयुं सहित समाज
राणीने अपनो वाघो पठव्यो मोहे काज ।३५८।

वाघो अे महा मोहक सुंदरतानी रास
ते मोटा सृंगारनो क्यां लगी करूं प्रकाश ।३५९।
दान सामर्थे थई प्रभुने जो करूं अे विस्तार
ग्रंथ अपरमित वाधे ने नव आवे पार ।६०।
अेहवे रवि आथमाणो रयणी हवी प्रकास
वांछित ने फल दायकनी पूरवा आस ।६१।
अमोघ रस दायक मन भायक नायक आप
उभय अमित सुख करण अने अे हरण परिताप ।६२।
सयन आरति पछी पालखी परम अनूप
त्यां छाना बेसाडया श्री गोकुलनो भूप ।६३।
अद्‌भुत साहसना गुरू ने रसनो भंडार
सकल कला संपूरण अेम कीधो अभिसार ।६४।
आतुर थई अभिसरण कर्युं ते रसिकवर राये
सहचरी पधरावी गया थईने संग सहाय ।६५।
महेल मांहें अंतरग्रह ज्यां रमण रस धाम
काम केली मांहे रसिकवर पधार्या अति अभिराम ।६६।
धाइ आव्या सनमुख सुख सागर प्रगट्यो त्यांह
अदभुत आनंदनो रस जेम मल्यो रस मांह ।६७।
अेम रस विवसे आव्या सहुथी थई निशंक
प्राण प्रीय प्रेम भरने लइ भीडया अंक ।६८।
तेह समयना सुखनो अनिरवचनी विस्तार
अंग अंग आनंदनो कहेतां न पामुं पार ।६९।
महा विचित्र वेशांतर कर्यो प्रभुअे शृंगार
अहींया राणी रस पूरण रूप तणो नहीं पार ।७०।
कनकलता साथे जेम कनकलता लपटाय
जलमां जेम जल मल्युं अलगुं केमे न थाय ।७१।
अेम अंगमां अंग मली गया प्रीछ्यो न जाअे वर्ण
मनसुं मन अेणी पेरे मल्या जेम जलने अनुकर्ण ।७२।
विवस हवा रोमांचित ने पुलकित स्वर भंग
उभय अनुपम भावे सिथिल थया सर्वांग ।७३।
अनुसंधान न अंगे ते कांइ कहयुं न जाय
उर उरसुं उरझी रहया को अलगा नव थाय ।७४।
सहचरी निपुण निकट रही तेनुं अतिशे हेज
केम केम करी पधराव्या ज्यां ढाली सुख सेज ।७५।
अहीं छे अति अेकांत त्यां केहेनो नहीं गम्य
उभय अपरमित रसभर प्रगट हवो रस रम्य ।३७६।

ज्यावद रस सामग्री नवरसने संजोग
सेवाने सहु उभी छे जे आवे उपयोग ।३७७।
भोग राग बीडा सुगंध जे रसनी रीत
ते सहु त्यां समर्प्युं करी प्रभुने बहु प्रीत ।७८।
प्रथम समागमे लज्जित नौतन नवल कुमार
अति प्रगल्भ प्रेमदा अे रसनो कर्यो अंगीकार ।७९।
राणी महा नायक प्रवीण अे परम रस जाण
सुरति भेद रसवस करी रीझव्या रसिक सुजाण ।८०।
आलिंघन चुंबन कुच पीडन नखक्षत रीत
उतानक तीर्यक आशीतक स्थित अनंत विपरीत ।८१।
हास्य विलास रास रस रही नहीं मर्याद
अंग भेद अलगो नहीं विलसे वादो वाद ।८२।
अेवा रसना भेद अनेक भांतिनां जेह
उभय अनुपम रस रमे कोण विसद करे तेह ।८३।
के वैभव के तेह समय के रस विलस्यो अेह
अेक अेकनुं वर्णन करूं तो नहीं आवे छेह ।८४।
वात्सल्य अनेक प्रकारनां तेह कर्या बहु हेत
न्योछावरी वारूं तन मन धन प्राण समेत ।८५।
महा नायक रस निपुण मली अनुपम जोड
ते समय जे रसिक जनने जोवानुं कोड ।८६।
रस ते रस विवसे थई अने हवो मनोरथ पार
आनंदना अभिलाख कर्या पूरण तेही वार ।८७।
अति आधीन थई अे क्षणुं न मेले पास
रहे चरण लपटाया अंतर कर्यो निवास ।८८।
महा मनोरथ पूर्या राणीना तेणी वार
तेथी अधिक मनोरथनो वाध्यो विस्तार ।८९।
कहेवा बुध्धि न चाले मन उर न समाय
लौकिकने संकोचे समय सूचन थाय ।९०।
पधार्याने समय वनिता विहवल थाय
सर्वस्व वारे आपणुं अने चरणे लपटाय ।९१।
बहु प्रकारे विनव्या विनय वचन कही
सात्वीक भाव जुत अंतर प्रगट्यो बहु नेह ।९२।
नवल धीर अति धीरव्या धीरज दे बहु पेर
प्रभुअे रसिक वचन कहया अतिशे उलट भेर ।९३।
मुख उपर कर फेरवी रसवस थापी स्कंध
शीतलता प्रगटावी द्रढ कीधो ते संबंध ।३९४।

भाव तणे आधिक्ये क्षणु महेल्या नव जाय
प्रीत तणे संकोचे केम केम करी करे विदाय ।३९५।
प्रथमे काम विजय कर्यो ते हवो जैजैकार
रस अभिलाषीने मन मोद तणो नहीं पार ।९६।
श्रमित अमित रस सुछूट्या ने अति मरगजे अंग
चिन्ह अलंकृत अभिनवा अधिक भर्या रस रंग ।९७।
अेणी पेरे रस विलसीया पधार्या प्राण आधार
रसना मनोरथ पूरी आव्या भवन मंझार ।९८।
वलतुं चाचाजीने पूछयुं प्रभुजीअे अेह
श्री गुंसाईजी निशी जोवा आव्या शुं कीधुं तेह ।९९।
ते सहु कारण तेह समय प्रभुने कहयुं प्रकाश
ते सुणी आनंदया अति महा सुंदर रस रास ।४००।
श्री गुंसाईजी स्नेह जुत सदा सर्वदा नित्य
श्रीजी पोढे त्यां आवे जोवाने निमित्य ।१।
श्रीअंग कर फेरवे त्यारे होअे आराम
अेणी पेरे नीशी आवीने जुअे पछी करे विश्राम ।२।
ते दिवसे पण आव्या जोवा नित्यनी रीत
अदभुत वात्सल्य मन धरीने वली करी बहु प्रीत ।३।
चाचाजीअे सनमुख जइने करी विनती अेह
अबही पोढेहे अरू नींद पडी जेह ।४।
वचन सुणी श्री गुंसाईजी फरी पधार्या धाम
निकट न आव्या ज्यां प्रभुने पोढयानुं ठाम ।५।
ज्यारे अेम अभिशरणे पधारे महाराज
त्यारे चाचोजी रहे सेजया रक्षा काज ।६।
अेहवी नित्य नौतन लीलाना होय प्रकार
अनिरवचनी असाधारण केम थाअे विस्तार ।७।
अेहवी अे राणी आतुर दर्शन निमित
अे रसनी गीधी गुणवेधी आवे नित्य ।८।
आगल अनुक्रमे करी प्रगट करूं छुं जेह
अहीं रहीने लीला करी हवे कांइ कहुं छुं तेह ।९।
महेद तणे मनोरथथी जमुनादास सहाय
बुध्धी अनुसारे अनुसरी गोपालदास बली जाय ।४१०।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अदभुत विचित्र व्याराना गोपालदास विरचित गढा गमन रस आरंभ वर्णनो नाम

।। मांगल्य १८ मुं संपूर्णम् ।।

मांगल्य – १९ – ओगणीसमुं

राग : "रसिक रस ग्रंथमां खंभातना मांगल्यनी "

गढे रहीने लीला करे ते सुंदर महा वरेश
ते रसभर रसमय कही अने वली कहुं सुदेश ।१।
नित्य नौतन नौतन रूचि रमे ते नवल कुमार
मोद सहित उछलित रसनो नहीं पार ।२।
त्यां राणी दुर्गावती तेहनो अतिशय नेह
अेहनुं वर्णन प्रथम प्रसंगे कहयुं छे तेह ।३।
आगल जे लीला हवी कहुं छुं तेह प्रकार
श्री गोकुलमां श्रीमुखथी कीधो उच्चार ।४।
राणी जब कबहुं कहुं स्वारीकुं जावे
दर्शन केरे उत्साहे प्रथम अपने घर आवे ।५।
प्रतिदिन तो दर्शनकुं आवे सहेज सुभावे
उत्सवकुं तो आवश्य ही आवे ही आवे ।६।
अेक वेर रथ उत्सवकुं आइ अनुरागे
श्री गुंसाईजी अरू राणी चले रथकी आगे ।७।
नगर मांहें चलत चोतरा आयो पाथरको
मारगमों पैआ अटक्यो वासेती रथको ।८।
श्री गुंसाईजीअे कहयुं कोउ पावडा मंगवाओ
खोदी चोतरा वेग ने पैया कढवाओ ।९।
तब राणीने कहयो वीरशाहको ले नाम
तुमारो खपुआ आवेगो कोन काम ।१०।
इतनो कहेत कटारी लागी सहश्र अपार
छूटकीमों चोतरा खोदी डार्यो तेहीं वार ।११।
अे मांहे राणीना जे वचन तणुं सामर्थ
उग्र प्रतापिक कहयो अेहनो अेह अर्थ ।१२।
पुरूषार्थ संपत अने रस कारज अेह
प्रथम श्रीमुख वचनेथी विसद कर्युं छे तेह ।१३।
अहीं रहीने रथ उत्सव कीधो छे अतिसार
तेहनी छाया मात्र करी कहुं छुं विस्तार ।१४।
पुरूषोतम क्षेत्रेथी गुंसाईजी पधार्या ज्यारे
त्यांनी रथ रचना जोइने आव्या छे त्यारे ।१५।
तेणी रीते अडेल थकी अहींया अधिक कराव्यो
घोडा सहित सोल पैयानो तेह घडाव्यो ।१६।

अति सुंदर महा मनोहर शोभानो नहीं पार
ते सहु प्रथम मंगले कीधो छे विस्तार ।१७।
मारग प्रणित स्वरूप सेव्य सुख जे पमाडया
अनुपम रचना करी तेह मध्ये बेसाडया ।१८।
श्रृंगार सार शिरोमणी महाप्रभुने तेणी वार
श्री गुंसाईजीअे पोते कीधो छे शृंगार ।१९।
कोटिक प्राण अधिक प्रीय पुत्रने करी बहु नेह
कारण सहित श्री गुंसाईजीअे मुख्य बेसाडया अेह ।२०।
आसाड सुदी प्रतिपदा आदि पुष्य नक्षत्र जे मांहें
प्रातः समय अभिप्राय पूर्वक अति उत्साह ।२१।
उतरोतर अधिक कला रसनी त्यांहां वाघे
किसोराकृत सर्वोपर नागरी कोटि आराधे ।२२।
परिहासे रसार्णव लीला भ्रुअ विलास
अति प्रफुल्लीत अंबुज मुख सौरभ परम सुवास ।२३।
श्री गोकुलनुं सर्वस्व लीलामां निधान
पदम दलायत लोचन उपमाने नहीं आन ।२४।
केसर वरण कसुंभी जरकसी पाग अनूप
तुरो सिर पर सोहे श्री गोकुल भूप ।२५।
कोटिक काम अने कोटिक अश्वनी कुमार
ते सुंदरता तुच्छ करी वारूं बहु वार ।२६।
अंगाभरण संदोह थकी अति रूडा भावे
स्त्रीजन रसिक तणा जोइने नयण विकसावे ।२७।
महा सलुणो सुंदर विचित्र लीला करण
देखत मात्र सकल सुंदरीना मन हरण ।२८।
नेत्र भोमी उपर सींचन होअे सघली सृष्टी
श्री अंग घनथी रूपामृत रत्ने होअे वृष्टी ।२९।
कोटिक ताप निवारण भक्त प्राण प्रिय राजे
बेठा अनुपम भांति रथे त्यांहां मुक्ष बिराजे ।३०।
चोंहों पास घन घटा उमडी आव्यो छे मेह
छाहया रूपी छत्र धरी रहयो छे तेह ।३१।
इंद्र धनुषनी शोभा दीसे कारण मइ
दुष्टनी द्रष्टी निवारण सिध्ध रहयो छे थई ।३२।
बग पंगति अवली सवली फरे तेणी वार
प्रभु उपर आपापणु ओवारे वारंवार ।३३।
देव सकल लेइ वधुअ सहित त्यां आव्या बहु
उपर नभ मारग विमाने छायो सहु ।३४।

तेहने बग पंगति निरवारे पंख प्रसार
तमने अे लीला जोवानो नहीं अधिकार ।३५।
मयूर मनोहर शब्द करे जाणे प्रभुनी कृत्य
लीला रस उनमत कला करी करे ते नृत्य ।३६।
कोकिल कीर पपैआ बोले वचन सुदेश
विजय मंत्र मुख कही अने जाणे करे अभिषेश ।३७।
मेघ मधुर धुनी गाजे ने करे सघले जाण
जाणे कंदर्प कोटिक जीत्याना बाजे निशान ।३८।
श्री गुंसाईजी सहित राणी आदि जे भक्त
चाचोजी चांपोभाइ अेहवा अति अनुरक्त ।३९।
बीजा जे साधारण जे कोइ उभा त्यांह
आनंद सागरनां तरंग प्रगटे उर मांह ।४०।
यथा योग्य अधिकार परत्वे भावानुसार
पान करे रूपामृत अनिरवचन विस्तार ।४१।
रूप वय मुसकनी प्रेम कटाक्षे करी
भूषण स्वरूप प्रभावे सर्वना ले मन हरी ।४२।
प्रेम समुद्रे चकित थकित ते कह्युं नव जाय
चंद्र चकोरनी पेटे द्रष्टी अलगी न थाय ।४३।
स्वाभाविक नेत्रे जुअे छे सुखद स्वरूप
होअे महा संतोष तेहनुं रूप अनूप ।४४।
ठामे ठाम कौतुहल आगल ताल पखावज
पंचशब्दा वाजे वाजिंत्र तणो बहु साज ।४५।
अेणी पेरे महा अदभुत रथ यात्रा थाअे ज्यांहां
सकल काज मुकी दुर्गावती आवे त्यांहां ।४६।
श्री गुंसाईजी सहित सहु रथ आगल चाले
फरी फरी श्री मुख जुअे ने वली अंग संभाले ।४७।
मध्ये भोग समर्प्यो ने आरती उतारे
न्योछावरी वारी अने राइ लुण ओवारे ।४८।
राणीने दर्शननी उत्कंठा नहीं माय
नेत्र तृषित जोता जोता तृप्ती न थाय ।४९।
भक्त अंतरगत भाव लही प्रभु मनमां जाणी
सद्य सिध्ध फलदाअेक अेम उर अंतर आणी ।५०।
उत्साहे रथनुं पैडुं चोतरे ते अटक्युं
त्यां सनमुख दरसन सुख अमित उभयता प्रगट्युं ।५१।
तेह चोतरा दूर कर्यो छे तेणी वार
वलतो रथ आगल चाल्यो हवो जय जय कार ।५२।

ऐणी पेरे रथ फेरी आनंदे मंदिर आण्यो
स्वरूपे मन अटक्या तेणे फिरतो नहीं जाण्यो ।५३।
जे कोइ सृष्टी त्यां छे ते कृतार्थ होय
अे रथ यात्राने समता करवा नहीं कोय ।५४।
ज्यांहां पुरूषोतम उत्तम रीते पोते बेठा
स्वरूप घने गरजी गरजी रूपामृत वूढया ।५५।
तेह जले को वहया केहेने थाह न लाधी
केहेने सींचन अने कहेने तृषा अति वाधी ।५६।
आरती आरत जुत कीधी ते आरत हरने
भाव सहित भीतर पधराव्या सुंदर वरने ।५७।
अति सुंदर शुभ मंदिर सेवाना स्थल ज्यांह
सेव्य स्वरूप सुखद रीते बेसाडया त्यांह ।५८।
राणी आदी नगर वासी सहु कोअे छे जेह
नामी नामी शीष भवन वल्या सहु तेह ।५९।
महेली मनोहर रूप घेर केम करी जवाय
मन स्वरूपमां मेली मर्यादा लेइ जाय ।६०।
अेम रथयात्रा करी अतिशे कारज सीधुं
महा लीला सुखदान भक्तने अेणीपेरे दीधुं ।६१।
को अेक समय राणी मर्यादा केरे भावे
अनुरोधे अवकास रहित दरशने नहीं आवे ।६२।
त्यारे श्री गुंसाईजीने पधरावे निज घेर
अेह मिसे प्रभुने पधरावे करी बहु पेर ।६३।
लोक शृंखला भीत स्वतंत्र नहीं अवाय
ते माटे मनमां धरी रचे ते अेह उपाय ।६४।
अेक समय श्री गुंसाईजीने पधराव्या निज धाम
साथे स्नेहपूर्वक सुंदर पूरण काम ।६५।
राजस राजकला वैभव युत सभा अनूप
त्यां मुख्य बेसाडया श्री गोकुलनो भूप ।६६।
त्यारे ब्रहमदासे आ पद कहयुं अतिसे उलट भेर
कर मुरली कटि भुअ कुटिल कीअे अंगनागन घेर ।६७।
अे सुणी श्री गुंसाईजी रीझीया अतिशे मन
केवल शुध्ध जात वर्णने सुणी थया प्रसन्न ।६८।
श्री प्रभुअे श्रीमुखथी प्रगट कर्युं छे जेह
ते वचने अनुसरी विसद कर्युं छे तेह ।६९।
राणीने श्री गुंसाईजी अपने धर पधराअे
इनके मनोरथ हेत तहां हमहुं संग आअे ।७०।

तब उन अे पद गायो श्री गुंसाईजी रीझे
वापे फेरी गवायो अरू मनमां समजे ।७१।

पहेरी डगली अपनी सोइ उनकुं ले दिनी
वे भयो बोहोत प्रसन्न दंडवत करीके लीनी ।७२।

सर्वत्र प्रतिष्ठा भई ओर इनको बढयो प्रताप
ब्रह्मदासकुं गुंसाईजीने डगली दिनी आप ।७३।

बोहोत दरिद्री हतो अने मागे ते चून
दरीद्र चूर्ण कीधुं वैभवे रहयुं त्यां न न्यून ।७४।

अे डगलीने प्रभावे वलतो अेवो वाध्यो
जेणे मित्रत्वे करी अने दिल्लेश्वर साध्यो ।७५।

श्री मुखे कहयुं जा दिनथे इन अेसो जस पायो
बढत बढयो अेसो जु बीरबल नाम कहायो ।७६।

पाछे दुसंगती थई भयो बहिरमुख अेसो
इहांकी कछुं वात कहेन लाग्यो हे तेसो ।७७।

मोटानो जे अनुग्रह तेहनुं कारण अेह
भिक्षुकथी राजा क्षण अेकमां कीधो जेह ।७८।

दुष्ट संगने भावे बहिरमुखता होअे जे मांहे
अेहनो अेह प्रताप अचरज शुं छे अे मांहे ।७९।

थई मध्यत्वे गुंसाईजी राणी ते आनंद भरी
सहु केने सुख आपी घेर पधार्या फरी ।८०।

राणीनो उत्कर्ष अपरमित क्यां लही कहीअे
अेहोना अलौकिक भाग्य तणो कांइ पार न लहीअे ।८१।

महाराज राजेश्वर जेहने नित्य वखाणे
तेहनी उपमाने समोवड कवि केने आणे ।८२।

तेहनी सुरति सर्वदा रही प्रभुना उर मांह
अेहना भाग्य समान नहीं कोइ तिंहुपूर मांह ।८३।

ज्यारे ज्यारे अेहनी वात कही मुसकाई
मोद सहित उत्साहे फूल न अंग समाई ।८४।

भाग्यवान भक्ते जे सनमुख अनुभव कीधो
तेह समयनो रस नयणे अंतरगति पीधो ।८५।

अेतदरस स्पर्श जेह तेहने वाक्य सुधाअे
प्रगट जणाव्यो अेह कर्या सींचन समुदाय ।८६।

अे में निकट रही अनुभव कर्यो प्रगट प्रमाणे
भाग्यवान भगवदी तेह सहु कोइ जाणे ।८७।

अंतरंग अर्थे जे अे रस कर्यो प्रकाश
अे अनुभवी भक्त महाभाग्य तणी अति रास ।८८।

बाहाज्य गोप्य अंतर फूले मुसकनी मुख पर
वातो रसिक वरे रसवर कीधी थई सुर ।८९।
सर्व थकी जे अधिक फल ते मुसकनीअे दीधुं
अे फलनी आगल बीजुं न्योछावर कीधुं ।९०।
अेवी रीते करी कह्युं महाप्रभुअे जेहनुं
अेक रसना केम करी कही भाग्य सराहुं तेहनुं ।९१।
अेवी भाग्यरास अे राणी अति पूरित नेह
केवल स्वरूपानंद तणो अनुभव करे अेह ।९२।
अेम उदबोध रसे पूरित अंतर उर माहा
अेकांते श्री रूक्ष्मणीजीने पूछयुं त्यांह ।९३।
सुणीअे महाराणी रूक्ष्मणीजी विनती मारी
अे महा रत्न गर्भ आव्या ते कहो संभारी ।९४।
तेह समय सादर शी शी प्रगटी छे तमने
शा शा चिन्ह हवा ते अंगे तेह कहो तमो अमने ।९५।
कोण मनोरथ प्रगट्या अने कहेवो उत्साह
प्रती मासे केवो रस प्रगट्यो कोण उमाह ।९६।
कोण प्रकारे जाया केम केम पूरी आश
पोंहोंता कोड केही पेरे ते करोजी प्रकाश ।९७।
अतिशे अेहोनी आकृति अतिशे अेहनुं रूप
अदभुत महा विचिक्षण छे कोण स्वरूप ।९८।
भांति भांतिना कारण पूछे बहु प्रकार
भाव बले उलट भर उत्साहनो नहीं पार ।९९।
हर्ष भर्या रूक्ष्मणीजी अनुभव पूर्वक जेह
जेम जेम पूछे तेम तेम उतर दे छे तेह ।१००।
अेहवा रसना रंग प्रगट होय तेणी वार
वात्सल्य अने वली स्नेह तणा केम कहुं विस्तार ।१।
अेणी पेरे परम उदार रसिकवर त्यां पधारी
भाव भावता दान करी लीला विस्तारी ।२।
सौभाग्यवती धनवती राश महाभाग्य तणीजी
रूपवती गुणवतीजी पुत्रवती रूक्ष्मणीजी ।३।
पुत्रत्वे पुरूषोतम उत्तमने खेलावी
लालन पालन भांति भांति लीला करवावी ।४।
महा रस सुधा सिंधु पूरण सुख अनुभव कीधुं
लौकिक अलौकिक सर्व अेहोनुं कारज सींधु ।५।
वलता इच्छाअे गुंसाईजीना अंग मांहां
अे सहु अनुभव करी अंतरहित हवा ते त्यांहां ।१०६।

बीजो विवाह कीधो श्री गुंसाईजी श्री विठलनाथे
कृष्णराय दशेरी घेर पदमावतीजी साथ ।१०७।
सवंत सोल वीसोतरे वैशाख सुदी मांहां
त्रीजे गौरज वेला लग्न हवुं छे त्यांहां ।८।
अे पोते श्री मुखथी सघली वात कही छे
तेह समय सहु भगवदी सांप्रत्य लही छे ।९।
विवाहको श्री गुंसाईजीके मनमों नहीं आयो
राणीने बोहोत आग्रह करीने करवायो ।१०।
दादाकुं ओ शिखायो तुमहीं कहेते जी न डरीयो
हम विवाह तब करे जबे तुम पहेले करीयो ।११।
अेसी महा सुबुद्धी राणी अतिसे आदर थे
पाणी ग्रहण कीयो त्यांहां सो इनके आदर थे ।१२।
जबे भयो विवाह गुंसाईजीको धर मांहां
तबे अेक भट के धर हम देखन गये त्यांहां ।१३।
अेसी रीत सदैव हमारे ज्ञाती मांहीं
मोड पिताको देखन काहु उचित नांहीं ।१४।
सदाचारु बुरो लागो श्री गुंसाईजीकुं तबहीं
मोड छोड सुख पायो बोली लीये जब हमहीं ।१५।
ताहालों सह्यो न गयो ज्यांहां ज्यों आपथे आये
श्री गुंसाईजी बोहोत नेह करीके हम वेग वुलाये ।१६।
अेवो नेह श्री गुंसाईजी अेहो उपर बहु आणे
अनुभाव सहित अंतरमां अेह स्वरूपने जाणे ।१७।
अेहोने विरह उपजे तेहनुं आश्चर्य कहेवुं
ताप प्रगट केम न होअे जे स्वरूप अनुभव अेवुं ।१८।
अे स्वरूप तणो अे धर्म जणावे पोते जेहने
सनमुख जोतां सांप्रत्य विरह उपजे तेहने ।१९।
तो दूर थकी उपजे त्यां आश्चर्य शुं कहीअे
अे अनुभव प्रगट प्रेम अनुभवथी लहीअे ।२०।
अे स्वरूप ते द्वीदल रस स्वरूप आत्मिक सोहे
महा नायक सृंगार सार जोइ सहु को मोहे ।२१।
अे स्वरूप वियोगे विरह उपजे भक्त छे जेहने
पण भक्त वियोग विरह परिताप प्रगट होये अेहोने ।२२।
अेक समय अे भक्तसुं प्रथम मिलन रसभर मांहां
ते हितनो परिताप प्रगट हवो अंतर गत मांहा ।२३।
प्रभु महा धीर उदार ते बाहाज्य करे नहीं कांइ
विरह ज्वर प्रगट्यो जाणी रहे मन मांहीं ।१२४।

लोक सर्वको लौकिक दोष जनित ज्वर जाणे
शोभाजी श्री गुंसाईजी सहु मनमां अेम आणे ।१२५।
स्नेहभर करे लौकिक मंत्रादिक उपचार
अलौकिकने स्पर्शे नहीं जो करे अनेक प्रकार ।२६।
अे वात श्रीमुखथी कही महा प्रभुअे
समय समय सनमुखे सुणी छे भक्त सहुअे ।२७।
बोहोत कीये उपचार पे को लागे नहीं क्योंही
जब जायवेको भयो तबे गयो आपुथे योंही ।२८।
जोतशको जो प्रकार ओर जो वैदिक मांहीं
अे उपचार तो हमकुं कबहुं लागे नाहीं ।२९।
अेहनुं कारण अेह प्रभुअे प्रगट जणाव्युं
वचनामृत रस वेधीने उर अंतर आव्युं ।३०।
महा निरदोष वस्तुने दोष स्पर्श केम थाय
भक्त विसइक ताप उपचारे केम करी जाय ।३१।
गुरू जनना मन मांहे जे दोष उपस्थित भासे
प्रेमे परम अधीर नेहनो अेहज आसे ।३२।
अेह भाव द्वारा प्रभुअे कीधो सत्कार
अेणी पेरे अेहनां स्नेह तणो करे अंगीकार ।३३।
भक्तना मननो भाव लहे अे अति अभिरामी
तापे ताप उपजे अेवा अंतर यामी ।३४।
ते परिताप जनित जे कष्ट उपजेअंगे
व्यापे अंतरमां तेथी कृशता सर्वांगे ।३५।
अे श्री मुखथी वात प्रगट करी कही छे आप
अेक वेर त्यांहां मोकुं उपस्थित भयो हतो ताप ।३६।
अेक समय दुर्गावतीको बेटा वीरशाह
आयो इंहां दर्शनकुं करीके बोहोत उमाहा ।३७।
मोहेकुं देखी गुंसाईजीकुं पूछयो तब योंहे
कहीये जु यहु बाबु अेसे दुर्बल क्यों हे ।३८।
तब श्री गुंसाईजीने कहयो कछु ज्वर अंश रहेत है
मेरे घर पठवो इनके उपचार बोहोत है ।३९।
पाछे श्री गुंसाईजीने मोकुं त्यांहां पठे दिनो
तब हमारे संग त्यांहां खीराकुं कीनो ।४०।
हम गअे उनके धाम आपुं बेठो हो भुजाइ
हम आयेकी बात काहुने वाहे सुनाइ ।४१।
उन कहे पठयो नेक बेठीअेमें सुख पायो
पाछेथी भोजन करी पैया पहेरे आयो ।१४२।

मोहेसुं कहयो भली भइ जो तुम इहां आये
आजथी ताप न आवेंगो यों कहे समुजाये ।१४३।
तब उन हमसुं यो कहयो नाम लेहो तुम मेरो
हम उनसुं यो कहयो नाम नहीं लेहो तेरो ।४४।
अनन्य पुरूष स्वामी अने रक्षक धर्म अनन्य
पालक टेक ग्रहण जे तेह बोले केम भिन्न ।४५।
फिरी उन हमसुं कहयो पाग बांधो तुम मेरी
तब हम उनसुं कहयो पाग क्यों बांधे तेरी ।४६।
मेरी पुष्पकी माल तुम पहेरो उर मांही
वाकी उनके मोंहों पर कीनी हम नांहीं ।४७।
वे बोल्यो चलो मेरे पैया पर तुम अबहुं
उनकुं उतर दिनो में चढिहुं नांहीं कबहुं ।४८।
तब खीराने कहयो नैक जो चढो कांहे नांहीं
पैयातो काठकी कहा लागे इन मांहीं ।४९।
खीरो पंडयो श्री गुंसाईजीनी करे खवासी
पण कृपा विना शुं लहे सून्य मन रहे उदासी ।५०।
जेहवुं स्वरूप यथारथ तेहवुं जो अे जाणे
तो अन्य विनियोगी उपयोग प्रभुने केम करी आणे ।५१।
वात्सल्य धर्मनो पक्ष लही अे वीनती कीधी
प्रभुअे स्वतः सामर्थे तेह तणी ना कीधी ।५२।
राजा अति खिसीआयो रीझयो प्रभुने भावे
अेम बोल्यो कह्युं हवे आजथी ज्वर नहीं आवे ।५३।
श्री मुखथी कह्युं अेह जबे हम नांहीं करी सबे
अबथे ज्वर नहीं आवे वो संकुचाये कहयो तबे ।५४।
पाछे हम घर आये तब बोहोते डर लागे
पूछे तब कहा कहीअे श्री गुंसाईजी आगे ।५५।
खीराकुं सब वात श्री गुंसाईजी ने पूछी जबही
खीराने वृतांत सबे कहे दिनो तबही ।५६।
पूछयो श्री गुंसाईजीने ता पाछे कहा कीनी
उनको कह्यो न कीनो सबनकी ना कहे दिनी ।५७।
अे सुनी श्री गुंसाईजीने भली करी कही जब
तबही जानके मोहेकुं अति संतोष भये तब ।५८।
ता पाछे वे ताप गयो नहीं ताहे उपाअे
ओर प्रकारे आपहीथे गयो अपने भाये ।५९।
अे कारणनो आसय प्रभुअे जणाव्यो अेह
जे कारणथी प्रगट्यो तेमज गयो ज्वर तेह ।१६०।

श्री गुंसाईजीनुं प्रागट्य अनन्य धर्म प्रवृत्य
तेहनो आदर कर्यो प्रभु पोते सांप्रत्य ।१६१।
तेथी श्री गुंसाईजी मनमां थाअे प्रसन्न
प्रिय पुत्रना लक्षण जोइ रीझे छे मन ।६२।
वली अेक समय त्यांहां असद पक्ष जे उलुक तेनुं नाम
रात्रे अशुभ सूचक बोले ते तेणे ठाम ।६३।
जेनुं नाम सुणे तेनुं लेइ बोले त्यांहां
अति अनिष्ट कहेवाय ते वली लौकिक मांहां ।६४।
तेह सुणी श्री गुंसाईजी भय पाम्या हितभेर
पुत्र वत्सलने प्रेमे करी कीधी त्यां अेक पेर ।६५।
नामांतरे बोलावे श्री गोकुल पालकने
अेह संबंधे संबंध जणावे सहु बालकने ।६६।
केहेनुं नाम सोपारी केहेनुं काथो चुनो
अेहोनुं लवंग अेलची अेवो प्रेम प्रभुनो ।६७।
अेह प्रगट करी पोते कही छे श्रीमुखे वात
अलुक गढामां बोले अशुभ वचन सब रात ।६८।
ताते श्री गुंसाईजीने हम भायनको नाम
फेरी धर्यो कछु ओर ले बोले सब जाम ।६९।
काहुको सुंठ पीपर काहुको काथो सोपारी
अेसी विगत करी सबनकी न्यारी न्यारी ।७०।
त्यारे निकटवर्तीअे पूछयुं प्रभुने तेणी वार
राजनुं नाम शुं कहेता ते कहीअे प्राण आधार ।७१।
त्यारे प्रभु मुसकाया बोल्या मनमां राची
नाम धर्यो मेरो श्री गुंसाईजीने लवंग अेलाची ।७२।
अेसे कहीके बोलावे मोहेकुं प्रतिक्षणुं नित्य
कारूणिक बालक तेहना हित तणे निमित्य ।७३।
स्नेह महातम तणु बलाबल प्रगट लहयुं
स्नेह होअे त्यां महातम नहीं अे विसद करी कहयुं ।७४।
यद्यपी श्री गुंसाईजी स्वरूप सामर्थने जाणे
पण स्नेह प्राबल्य थकी महातम मन नहीं आणे ।७५।
ते महातममां मग्न थयुं छे जगत ब्रह्मांड
अेहवो मीठो स्नेह तेणे कीधो सत खंड ।७६।
अेहवो मीठो स्नेह जेहनो प्राबल्य धर्म
अे वृतांत तणो श्री गुंसाईजी जाणे मर्म ।७७।
अे स्नेह आवर्या किशोराकृत छे वेस
उछलित अति उदबोध विविधी रसे परम वरेस ।१७८।

समय समय रस अनुभवे अेहवो महा उनमत
कटी अने करी समाजने खेले ते वसंत ।१७९।
खेल वसंत तणी अेक वात कही श्री मुखथी
ते सनमुख रहीने सुणी छे भररस भक्ते सुखथी ।८०।
स्त्रीजन सब अेकत्र मिली खेले मन भाइ
गढामों हम रहीअे त्यां वसंत रूतु आइ ।८१।
अरू वसंतमां खेल सोतो स्त्रीजन को नीको
यामों अति रस पैये और लागे सब फीको ।८२।
स्त्री भले लोकनकी अरू राणीकी साहेली
सब मीली बाहीर नीकशे खेले लजा महेली ।८३।
उन आगे उमराव निकसी फिरी सके न कोउ
अेसी महा उनमत वे काहुको वदे नहीं ओउ ।८४।
फगुआ विनु लीने काहकुं क्योंहुं न छोडे
जो कोउं हांहुं करे त्यांहां हींहरे वासन मोडे ।८५।
कोउ कोउ त्यांहां खेलनकुं हाथी चढी आवे
उनकी आगे ओर कोउ नीकस नहीं पावे ।८६।
हमारे घर अेक भट निहोतो सो केसे आवे
अेसेमों बोलायवेकुं कोउ नहीं जावे ।८७।
श्री गुंसाईजीने मोसुं कहयो अे कासुं कहीअे
सबकुं होत अवेर वे ब्राह्मण आयो चहिअे ।८८।
तब में वहां गयो धोती उपरेणा सेती
वासु कही मिलीके गयो उनके संग समेती ।८९।
मोहेकुं दिनो जान मोहेसुं कछु न बोली
मेरी ओर चितयके सब कोउ रही अनबोली ।९०।
मोसुं कह्यो तुम जावो कोउ जाने न पावे
हंसत हंसत में आयो पाछे अपने धामे ।९१।
अेम लीला करे अनुपम तलाव जमनीअे रही
आनंद जुत केली करे नित्य परम उमही ।९२।
अे सरोवरनी शोभा कहेवा मन ललचाअे
अलौकिक अनुपम भांती ते वचने केम कहेवाअे ।९३।
पूरण पूरित सुंदर उज्जवल निर्मल नीर
अमल अनुपम लहेरी गेहेरी गति गंभीर ।९४।
नौतन नीलोत्पल ने ताम्र रस कमल कमलनी जात
रंग रंग अति रमणीय सुवासित नाना भांत ।९५।
मकरंदे लोभ्या अलिकुल गुंजे दिन रयण
पक्षी अनेक भांतीना बोले मधुरा वयण ।१९६।

तीरे तरूवर सुंदर छाहया शीतल ज्यांहां
शीतल मंद सुगंधे पवन गवन करे त्यांहां ।१९७।
हस्ती घोडा कोउ निकट न जाओे अन्य
त्यांहां राणी रक्षा करवावे जाणी मन ।९८।
अे रसनुं सरोवर नहीं को भूतल मांहां
रूचीसुं भवन रची रहया व्हालेजी त्यांहां ।९९।
त्रण वर्ष पर्यंत करी लीला त्यां सार
आनंद मय रस पूरित जे रसनो नहीं पार ।२००।
पाछे श्री गोकुल पधारे गोकुल प्राण आधार
तेहनुं कारण कहुं छुं कांइ अेक करी विस्तार ।१।
अेवुं स्वरूप अेहोनुं जे चितव्युं न जाअे
वचने नहीं कहेवाअे निरधार न थाअे ।२।
आनंदमय पुरूषोतम भक्त तणे सुख अर्थ
पोते सुख आस्वाद करवा महा सामर्थ ।३।
भूतल मध्ये प्रागट्य लीला प्रगट करीने
वय क्रम अंगीकार करे संपूर्ण रस भरीने ।४।
सुखानंद रस दान पान ते छे भिन्न भिन्न
रस अनुभव करवा ते को नव जाणे अन्य ।५।
वय क्रमनो अलौकिक स्वरूपे कर्यो अंगीकार
लोकवते लीला ते को नव जाणे पार ।६।
जे जे समय जे जे रस प्रगट होअे छे तेहनुं
पोताने भक्तने नौतन सुख होय अेहनुं ।७।
वय क्रमे वस्या प्राग अतिशे आनंद भेर
प्रागट्य स्थले प्रथम कीधी लीला बहु पेर ।८।
अेणी पेरे प्राग ने अडेल मध्ये कीधो निवास
अति अभिलाख अभिनवे पूरी सहुनी आस ।९।
पौगंड पूरण कर्युं वरश दश वस्या सुखरास
ते दश वरसनुं कारण कांइ अेक करूं प्रकाश ।१०।
अे प्रागट्य सर्वोधिक प्रगट देखाडयुं आप
दश वरसे दश दिशा तणो टाल्यो परिताप ।११।
दश दिसे भक्त प्रसारी भक्त कर्या सहु पुष्ट
प्रगटीने दश विधी लीला करी संतुष्ट ।१२।
दश वरसे रही बाल्य तणी मेटी मर्याद
बहु विधि बाल्य चरित्र तणो लीधो आस्वाद ।१३।
जय बल गुरू सुधता ने वय संग्रहनुं मूल
सूचन कर्युं स्वकीयने दान दीधुं अनुकूल ।२१४।

दश विधि रसनी अवस्थानुं उदीपन कीधुं
दश वरसे दस विधि क्रीडानुं कारज सीधुं ।२१५।
क्रीडा जे गीर वेहेवार कीर्ति विनय ने मोद
गर्व स्वप्न इच्छा ने गर्वने अे परम प्रमोद ।१६।
अेणे प्रकारे उभय भावनुं सूचन कीधुं
बाल्य पौंगड अवस्थानुं सहु कारज सीधुं ।१७।
अेहनो अंगीकार करी दश वरस उपरांत
पाछे तामस लीलानो आरंभ मुक्षथी प्रांत ।१८।
स्वरूप दान अर्थे श्रीमद किशोर वय वेश
काम केली कौतिक कारण रस परम सुदेश ।१९।
अेणी पेरे लीला रमण तणी करवा विस्तार
प्रागट्य स्थलथी ते विजय कीधो प्रभुअे तेणी वार ।२०।
गढे वसिया सृंगार ग्रहण तामसनी लीला
रमण रसे विस्तार कर्यो रस परम रसीला ।२१।
अलौकिक सामर्थ लौकिक वत लोक मांहां
रसारंभ लीला करी वरस त्रण ते त्यांहां ।२२।
त्रीविधी लीला रस भोगीनुं पद ज्ञापित कीधुं
आध्यात्मीक आधिदैवीक आधिभौतिक फूल सीधुं ।२३।
ब्रह्मानंद भजनानंद विषयानंद भरी
आनंद त्रिविधी प्रकार तणो रस सूचन करी ।२४।
त्रिवीध भक्तने भावे अनुसरी लीला करे रसाल
अेणीपेरे ज्ञापित कीधुं अेहवा परम दयाल ।२५।
उतरोतर रस संपन्न सुधता करवा
प्रबल करवा लीला स्थल भूतल भावे भरवा ।२६।
कारज कारण रूप अेहवा अनेक प्रकार
अेम रमण रसे अति रसभर लीलानो विस्तार ।२७।
हवे जोबन आरंभे रसभाव भरेथी जाणी
तारूण्यतानी तत्परता मन मांहें आणी ।२८।
अेतदरस अनुरागे लीला करे प्रतिक्षण
त्यांथी इच्छाअे कीधुं छे आकर्षण ।२९।
अग्रम लीला काज रुची प्रगटी बहु प्रीत
जे महा रस विस्तार अने नित्य नौतन प्रीत ।३०।
प्रभुने मन अभिलाषा उपजावी बहु पेर
नौतन रस लोभे लोभाया आनंद भेर ।३१।
प्रभु तो जेणे समे जे लीलाने अनुसर्या
तेणे समय ते मांहां तन्मय थई रहे परवर्या ।२३२।

ते रसने आधीन ने ते लीला मन लग्न
अेवुं लीलात्मीक स्वरूप लीला मांहें मग्न ।२३३।
पछे महा नायक मन अेह भक्त जे छे पुष्ट पुष्ट
उदेश कर्यो वृजमां वसीअे करवा रस वृष्ट ।३४।
परम अलौकिक रहस्य स्थले लीला करवानो
सृंगार रस दानार्थे मनोरथ रस भरवानो ।३५।
राणीसुं करवा विदाअे पण केम कहेवाय
आरति आग्रह जोइ तेहोने कांइ कह्युं न जाय ।३६।
प्रभुने पण रस सुख अनुभवनो द्रढ अति आशे
निमित विना केम कहे न्युन नाअेक मांहां भाशे ।३७।
राणी स्वरूपासक्त थकी आज्ञा जो आपे
स्नेह दीनता होअे उभय व्याकुलता व्यापे ।३८।
मुक्ष पधारी घेर तेहने भावे भरीया
तेहने स्थले आश्रय रही मनोरथ पूरण करीआ ।३९।
रस पात्रे अति लुब्ध ते भावे थया आधीन
प्रथम समागम रस मेहेले केम परम प्रवीन ।४०।
राणी रस संबंधीनी अतिशय प्रेमनुं पात्र
ते आज्ञा केम आपे रीत नहीं रस मात्र ।४१।
इच्छाअे अग्रम लीलानो मनोरथ सीधो
त्यारे अेहोनो पण अलौकिक विचार पहेले सिध्ध कीधो ।४२।
तेहवे त्यां परचक्र तणो उठयो उपद्रव
तेणे आगमने ते भय पाम्युं सर्व ।४३।
को कहेशे परचक्र त्यां कहो केम करी आवे
अेहवो कोण विचार केम इच्छाने भावे ।४४।
त्यां कहुं छुं अे मांहे ते छे कारण अनेक
प्रभुना हारद्र तणो कोण जाणे अे विवेक ।४५।
राणीना देह आत्मिक भाव तणो अंगीकार
राजयनो अंगीकार नहीं कीधो अेह विचार ।४६।
राजय बे विनियोग अेह प्रभुने नहीं भोग
इच्छा प्रभुने अेह भाव आवे विनियोग ।४७।
प्रभुने नहीं उपयोग ते भक्तने होअे प्रतिबंध
परचक्र तणु निमित प्रगटाव्युं अेह संबंध ।४८।
अे श्रीमुखथी वात करी छे विविधी प्रकास
सनमुख निकट रही सुणी छे सहु निजदास ।४९।
राणी पास अकबरने माग्यो हे तेणी वार
मन माहावत अरू इनको हाथी गुरूदार ।२५०।

राणी महा प्रतापिक अरू अति राजस मांहीं
कछुअ न दिनो ताहे अरू कीनी सब नांहीं ।२५१।
यह सुनीके दिल्लेश बोहोत मनमें संकुचायो
अशरफखान उमराव देश उपर चढी आयो ।५२।
रामचंद्र वाघेले कह्यो मेरो अेक मानो
हाथी महावत देहो तुम हठ जी न ठानो ।५३।
तुम जानत हो हमसुं अे केसे के लरेंगो
बाज बहादूर जीत्यो तो अे कहा करेंगो ।५४।
वे तो भई कांकताली न्याय अेक वात
हाथी महावत दीओजी न कीधो उतपात ।५५।
राणीने मान्यो नहीं मनमें धर्यो सो गर्व
ता दिनथे वे देशमों आरंभ्यो उपद्रव ।५६।
सुनीके श्री गुंसाईजीने वात लखी मन मांहीं
तबहीं कहयो अब इंहां रहेनो उचित नांहीं ।५७।
तब राणीसुं श्री गुंसाईजीने मिस करी मांगी शिक्षा
हमकुं गंगातीर जाइवेकी है इच्छा ।५८।
राणीने कहयो तुम काहेकुं चलत गुंसाई
तुमकुं कहां चिंता है सब दिन रहो इंहाई ।५९।
मेरे चौरागढ अरू और बडे गढ मेरे
तुमकुं रहीवेके तो ठोर मेरे बोहोतेरे ।६०।
तब श्री गुंसाईजीने कहयो मेरो तुम मानो
रहीवेकुं स्थल बोहोत पे हमारे गंगा जानो ।६१।
महा सुबुध्ध राणीअे प्रेम मनमां बहु आणी
प्रभुना वात्सल्य भाव तणु आवश्यक जाणी ।६२।
विरह रसे पूरित अंतरमां अति परिताप
प्रेमे परवस थई गुंसाईजीने आज्ञा आपी ।६३।
पछे मुहुरत उतम लीधुं सवंत सोल अेकवीसे
विजय कर्यो त्यांथी श्री महाप्रभु गोकुलाधीशे ।६४।
श्री मुखथी श्री प्रभुअे कही छे करी विवेक
समय समय सनमुखे सुणी ते भक्त अनेक ।६५।
हम वहांसे तो चले पे राणीने बोहोत दुःख पायो
कहेता भरी आव्या ने भाव उरमां न समायो ।६६।
अेहवी वात राणीनी ते कही वारंवार
अेक वचनमां प्रभुअे कीधो बहु विस्तार ।६७।
जेना गुणने विरहनी सुरति सर्वदा कीधी
ध्यान माधुरी उभयता प्रभुअे मानी लीधी ।२६८।

तेह विसद करी कहेवाने मारूं नहीं गात्र
प्रगट त्यां कहेवाओ नहीं थाओ सूचन मात्र ।२६९।
अेह प्रकार आगल कांइ अेक कहुं छुं तेह
मारग मांहेनी लीला अने राणीनो नेह ।२७०।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अदभुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित गद्य मध्ये रथ लीलानो वर्णननाम
मांगल्य ओगणीसमुं संपूर्ण

मांगल्य - २० मुं

राग : 'रथ आगल भक्तनी भीड माची' - श्री गढेथी गोकुलगमननुं मांगल्य

लीला परम रस रूप गढे रही ते बे मांगल्ये थईने प्रथम कही ।१।
हवे आगल लीला तणो उदेश नित्य नौतन वाधती महा सुदेश ।२।
रमण स्थले रही पूरवी अधिक आस तेणे अर्थे करवो श्री गोकुल निवास ।३।
जे को प्रगटी छे ने प्रगटे छे सृष्टी आगल प्रगटशे बहुभांती मिष्ट ।४।
जे श्री अंगथी प्रगटी छे पुष्ट पुष्ट सर्वोपर सर्वथी अति उत्कृष्ट ।५।
अेक आगलथी अेक प्रगटी संग विचित्र रसे नौतन रमण रंग ।६।
ते सृष्टी दैवी महा प्रगटी आवी निज अर्थ ने उपकार हेत भावी ।७।
करी संग रंगे रस योग्य कीधी भावे भरी लीलामां ताणी लीधी ।८।
अेम परस्पर स्वकीय संबंध करावे संबंधनो स्नेह ते अतिसय भावे ।९।
तेने संगे वियोगता नोहे कहीअे फरी फरी प्रगटे प्रभु पास अहींअ ।१०।
वली को अेक दैवी जे इच्छाअे वरी पुष्ट पुष्टने घेर ते प्रगट करी ।११।
अेणी रीते करे जेहने रमण योग्य ते आवे प्रभुने रसमां भोग ।१२।
प्रभु नवीन रस भोक्ता रसिक राय नौतन रसे अभिलाष नित्य थाय ।१३।
प्रगटी प्रगटे छे ने प्रगट होय अेहना नियंता प्रभु बीजो न कोय ।१४।
अेम भाव भावांतरे सृष्टी बहु ते विसद करी भांत क्यां लगी कहुं ।१५।
जे को प्रेमना पात्र छे बहु प्रकार तेना अंतरमां आरत अपार ।१६।
अेना भाव जाणी प्रभु अति रसाल व्हालो रसिकवर स्वत: कीधी संभाल ।१७।
अेक कार्यमां कारण अनेक प्रभु साधे ते क्यां लखीअे विवेक ।१८।
त्यां राणी दुर्गावती अति सोहागी महा रसिक अने अति प्रेमे पागी ।१९।
अरूझी रहे स्वरूपसुं स्नेह लागी प्रभुने परसी रही सहु विषय त्यागी ।२०।
हवी परम अनन्य समजे न अन्य अे केवल रस रूप नहीं भाव भिन्न ।२१।
अेहनुं अलौकिक कारण कह्युं नव जाय मारी अल्प मति केम विसद थाय ।२२।
सौकर्ज्य उपद्रव आगम विचारे श्री गुंसाईजीअे आज्ञा मांगी ज्यारे ।२३।
अे वचन सुणी राणी थया विवस वेस इच्छाअे रसना मांहे कर्यो प्रवेश ।२४।
जे आज्ञातथी आज्ञा वचने बोली पछे सुरति आवे सुरति भूली ।२५।

वाणी गद गद कंठे कहेवा न चाले थई शिथिलगती आप क्यां लगी संभाले ।२६।
वात्सल्य राणीना भर स्नेहे लीधी आवश्यक प्रभुनुं लही आज्ञा दीधी ।२७।
विचारे मनमां में शुं कीधुं कोण बुध्धि मारीअे में वाक्य दीधुं ।२८।
नहिं चालवा दउं जुअे मन विचारी स्फुरे वात्सल्य ने वली वचन हारी ।२९।
विचारे मनमां घणो सोच पोच कहे शुं कीजे जो लौकिक संकोच ।३०।
पधार्यानुं मुरत जेम निकट आवे तेम देहने गेह वैभव न भावे ।३१।
कहे द्रव्य सामग्री ने अे समाज मारे प्रभु पधारे शो आवे काज ।३२।
पधारता जोइ जो केम आवुं घेर थाशे ते दिवसे मारी कोण पेर ।३३।
रोके कोण प्रतीक्षणुं नवा भाव वाधे अति गूढ रसनो नहीं पार लाधे ।३४।
त्यांथी मुरत दिवसे विजय कीधो नाथे प्रेमे पूरित राणीजी आव्या साथे ।३५।
घोडा पालखी रावटी बहु साज कर्या भेट जे मारगे आवे काज ।३६।
वली अनेक उपहार जे सुखद केरा आप्या प्रभुजीने साथे घणेरा ।३७।
उमराव जे नाम अेक आधारदास बहु सेनानो साज छे अेहो पास ।३८।
तेने शिक्षा दीधी घणी जाणी मन तेह करजो जो प्रभु रहे अति प्रसन्न ।३९।
सुखसुं पहोंचे तमे अेहवुं करजो श्री गुंसाईजी आज्ञा करे त्यांथी फरजो ।४०।
ते वळावाने मोकल्यो साथ साथ लेइ चाल्यो आगल थई नामी माथ ।४१।
राणी प्रेमे पुरित थकां निकट थोभ्या अतिगूढ भावे भर स्वरूप लोभ्या ।४२।
प्रेमे प्रगटी आरत सहु अंग अंग भूली देहनी सुरति गति मति पग ।४३।
जुअे सुंदर रूप लोचन रसाले सनमुख थई द्रष्टी अवली न चाले ।४४।
विचारे मनमां जीवतव्य अल्प हवे राखुं नहीं देह अेम कर्यो संकल्प ।४५।
असह्य थयो परिता पक्षणुं रह्युं न जाय करूं प्राणनो त्याग पण बाहाज्य थाय ।४६।
तेह समयनांभाव कांइ कहया न जाय अनुभवी जाणे केम विसद थाय ।४७।
अेहनो भिन्न देहे रसपान करवो उभय आरतनो परिताप हरवो ।४८।
पोते करी राख्यो छे अलौकिक विचार तेणे सोच मनमां न आवे लगार ।४९।
श्री गुंसाईजी थकी पोताने दूरावी लघु लाघवे राणीने निकट आवी ।५०।
प्रभुअे श्रीमुखे वचन कह्युं सगर्भ मांहीं चिंता मती करो तुमकुं विलंब नाहीं ।५१।
अेह वचन सुणी राणी विस्मय थाय अति प्रेमे विहवल थकां करी विदाय ।५२।
श्री गुंसाईजीअे बहु समाधान करीआ उभा थकित लोचन वही नीर भर्या ।५३।
बीडां महाप्रसाद ने वस्त्र आप्या लही कारण अलौकिकमां स्थाप्या ।५४।
कर्यो विजय अेहोसुं बहु वचन भाखी आग्रह करी मारगमां उभा राखी ।५५।
ज्यां लगी पधारता दीठा नयणे उभा चित्रवत थई अने बोल्या न वेण ।५६।
व्हालो फरी फरी जुअे नयणे निहाली ते जोइ अने विस्मय थाअे व्हाली ।५७।
इच्छाने आधीन रहया देह राखी तेह समयना जाण श्रीजी साखी ।५८।
प्रभुअे विचार्युं अेम आव्युं मन फरी घेर आव्या अे मानी वचन ।५९।
हवो प्रगट बाह्यांतरे प्रबल नेह चाल्या प्राण प्रभुसंग रहयो प्राचीन देह ।६०।
उपयोगी सामग्री त्यां सोंपी आव्या रह्युं अंग कारण काज घेर लाव्या ।६१।

प्रभुना वचननो सोच करे दिन रात	अंतराय नहीं तमकुं अे सोचे वात	।६२।
तेणे देहनी स्थिति करी विलंब सहयो	थोडा दिवस पर्यंत अंतराय रहयो	।६३।
प्रभु सकल भुवनैक मणी मन विचारे	पेंडाने अलंकृत करता पधारे	।६४।
मोहामणी करी प्रभुजीने जो विशेषे	तो जेवा छे तेवा सर्व कां न देखे	।६५।
समाधान तेहनुं करी कह्युं अेह	जुअे भाव द्रष्टे करी देखे तेह	।६६।
नहीं भावनी सृष्टी ते केम पावे	रसभाव विनु वस्तु द्रष्टे न आवे	।६७।
बहु भांतीनी सृष्टी छे विधी अनेक	तेहनो विसद करी कहुं विवेक	।६८।
अेक शास्त्रनी ने अेक अनुरक्त	अेक स्नेह ने अेक अति आशक्त	।६९।
अेक लौकिक अेक अभिमान केरी	अेक अलौकिक अेक इर्षा धणेरी	।७०।
अेक सबंधनी ने वली बहु प्रीत	जेवी सृष्टी तेवुं लहे तेणी रीत	।७१।
अेणी रीते पधारे प्रभु मारगमां	बहु भावना कौतुक होअे त्यांहां	।७२।
प्रभुअे श्री मुखथी कही अे वात	चौरी साथमों भइ मारगमों जात	।७३।
आधारदासने कहयो आज इहां रह्यो गुंसाई	अब सोंज हुं फेरी मंगाउं इंहांहीं	।७४।
तब श्री गुंसाईजीने कहयो अेसो	यों मारगमों रहेनो बने केसो	।७५।
कहयो सोंज सामग्री जो छांडी जैये	तो दीवानकुं उतर कहा कहीअे	।७६।
अेक दिन वहां रहेते सामग्री आइ	अेक बीडा पर्यंत फिरी सब मंगाइ	।७७।
बीडां अेक दो पान के उनहुं खाये	वाके पात सुधा तबही मंगाये	।७८।
अेम श्री मुखथी करी कह्युं बान	ते शोभा ने ते मोद कहेवा न आन	।७९।
अेमां संबंध राणीनो ने उग्र प्रताप	प्रेमे प्रगट करी देखाडयो आप	।८०।
सेवा मानी लीधी करी आधारदास	स्वामी कार्यने दिनता करी प्रकास	।८१।
पछे श्री मुखे कह्युं सेवक भयो अेसो	अति नेष्टिक अरू जेसो कहीअे तेसो	।८२।
गढाकी संघ लो पहोंचावेकुं आयो	त्यां ते फिरयो आपु सेवक पठायो	।८३।
श्री गुंसाईजी मथुरा जबे प्रवेश कीनो	अेसो सुन्यो ता दिन प्रसाद लीनो	।८४।
अेसेमें तो पाछे समाचार पायो	गढा भांज्यो अरू त्यां बहु कटक आयो	।८५।
भाजे लोक आये मिले मारग मांहीं	भूले काहुकी काहुंकुं सुध्ध नांहीं	।८६।
राणीके मनमां कछु अेसी सुझी	टेढे गढ सिंघगढ सामी जाय झुझी	।८७।
हाथी अरू महावत माग्यो पादशाही	हठ करी के इन वाहीकुं दिनो नांहीं	।८८।
बोले वचन पनकी नहीं अेक मेड टरी	परे संकट आपु कीनी कटारी	।८९।
जबलों रहे प्राण राणीके तनमां	तबलों हाथी गुरूडार झुझयो रणमां	।९०।
राणी जबे देह छांडयो इच्छाथी	तब बोहोत दुःख पायो गुरूडार हाथी	।९१।
तीन दिन पर्यंत दानो न घास	जलपान छांडयो छांडी देह आस	।९२।
राणीके पाछे अेसो नेह बढयो	रोय रोय तीन दिनमें देह छांडयो	।९३।
राणीको जो बेटा वीरशाह नाम	बलात्कार करी झुझयो वे वाही ठाम	।९४।
सबनी कहयो झुझो मति रहो अेसे	बोल्यो कोन के द्वार जाय रहुं केसे	।९५।
के राणो के पादशाह दे ठोर हे मेरे	कहा कहुं वासु केसे रहुं अनेरे	।९६।
जाके द्वार जाउं त्यां कहे संसार	गढ को राजा आयो ठाडो हे द्वार	।९७।

असो खेद करीके दुःख पायो अेह	तब जाय झुझयो अरू छांडयो देह	।९८।
राणीने बोहोत कीनी संग्राम शाह पाछे	राख्यो राज नीके करी कीनो आछे	।९९।
कहा जानीअे भगवद इच्छा केसी	क्षण अेकमों कछु भइ अेसी	।१००।
घोडा चालीस हजार राणीके आगे	सनमुख कोइ रहयो नहीं सबे भागे	।१।
कछु भगवद इच्छा अेसी समूल	कहयां वचन श्रीमुखे अे कारणनुं मूल	।२।
भिक्षुगीतानुं वचन त्यां प्रभुअे प्रगट कर्युं	जेहनो अनुग्रह कर्यो तेहनुं चित हर्युं	।३।
कर्युं सर्व कारज पोताने सामर्थ	अेक राणी तणा अनुग्रहने अर्थ	।४।
राणीको समाचार मारगमों आयो	सुनीके श्री गुंसाईजीने क्लेश पायो	।५।
इनको सबही कृत्य मानी लीनो	और बोहोत करी पश्चाताप कीनो	।६।
अेवा वचन गोसाइजीनुं नाम लेइ	कहयां आरत जुत राणी ओट देइ	।७।
पोते दुःख धरे तो जो होय वियोग	कहयो देह अंतरे अलौकिक संयोग	।८।
अेहनुं कारण केम करी विसद थाअे	अति अगणित भाव क्यां लगी कहेवाय	।९।
कृपाबले जेहवा जे तेहने थाशे जाण	अधिकार परत्वे हशे अेह प्रमाण	।१०।
पेंडे बदल महेसो ने गणेसो नाम	साथे श्री गुंसाईजीने आवे काम	।११।
अेहना नामनो अर्थ पिता पुत्र अेह	सेवाने हित अवतर्या करे तेह	।१२।
अेनी वात श्रीमुख थकी कही छे बहु	तेह सांभली सनमुख भक्त सहु	।१३।
महेसा पर पोथी सब नाना भांत	गणेसा पर लादीअे सोंज पात	।१४।
नाला आयो मारगमें हम मन विचारे	कहो पोथी हम कोन भांति उतारे	।१५।
अेसेमें महेसाने कीनो विचार	कूदयो अेसो जो जाय रहयो ठाडो पर	।१६।
अेसो ज्ञान तो कोउ मनुष्यहुमों नांहीं	श्री गुंसाईजी प्रसन्न हे के सराही	।१७।
आगे और अेक मारगमों नदी आइ	गणेसाको पराक्रम कहयो न जाय	।१८।
धस्यो सलिता संयुक्त वे नदी मांहीं	अेसो जाय पहोंच्यो ठाडो पार ज्यांहीं	।१९।
सलिता मण सोलको पहेले हतो	भींजे बोर भारी भयो चले चुचूतो	।२०।
सलिताकुं ठाडे केसेके चढावे	लादे तब गणेसाकुं पहेले बेठावे	।२१।
कहे उठ तब उठी आपु पेंडे लागे	चाले अेसो रहेवाल घोडाकी आगे	।२२।
श्री गुंसाईजी कहयो तेल हलदी दीजे	वाके मनमों नांहीं तो कहा जतन कीजे	।२३।
अेम परम हरखित प्रभु बोल्या वाणी	स्वकीय सेवकनो उत्कर्ष जाणी	।२४।
सेवकना पराक्रम पर प्रभु प्रीते	निज घरना पशु पर्यंत अेह रीते	।२५।
सेवकनो उत्कर्ष तेम प्रभु प्रसन्न	अेहोनो अनुभव सर्व केहेने संपन्न	।२६।
पेंडामां कौतुक होअे अति विनोद	बहु भांति लीला करे सहित मोद	।२७।
संग संग भाजण तणा लोक बहु	चाल्या जाअे छे प्रभुने साथ सहु	।२८।
अेक समय मारगमां पडया भूला	ते रात्रे सहु अेकला रहया अटुला	।२९।
अे वात प्रभुअे कही समय संभारी	श्री गुंसाईजी अरू हम रहे न्यारे न्यारे	।३०।
बालकृष्ण ओर संगमें रघुनाथ	खीराहु रहयो रात हमारे साथ	।३१।
पाछे सोय गये सब रात नेरे	रहे घोडा तीन्यो ग्रहे हाथ मेरे	।३२।
असो शीत लागोजु तब कहा कहीअे	हाथ चाबुक ग्रहये न जाय केसे ग्रहीअे	।३३।

रासा बढइ हतो सो आयो नेरो	उने दूरथी साद पहेचान्यो मेरो	।१३४।
मोसुं कहेन लागे क्यों अकेले आंहीं	तुम न्यारे क्यों भये श्री गुंसाईजी क्याहीं	।३५।
तब में कहयो फेर भयो पेंडा मांहीं	सो न्यारे पड गये मोकुं मिले नांहीं	।३६।
मोसुं धीर दहेन लाग्यो तबही	बाबा तुम कछु चिंता मती करो अबही	।३७।
तब में कहयो चिंता कहा हे हमारे	तेसे दूर श्री गुंसाईजी देखे त्यारे	।३८।
कारे घोडे बेठे मेरी द्रष्टी आये	रघुनाथकुं दूरपे में दिखाये	।३९।
देखो काका आवत हे देखो अकेले	पाछे श्री गुंसाईजी आइ मिले	।४०।
भयो बोहोत संतोष भरी नयन आये	हमारे लीअे रात अति कलेश पाये	।४१।
अे भूल्यानुं कारण कांइ अेक कहेवाय	श्री गुंसाईजी तो मारगे चाल्या जाय	।४२।
रहे आडा अवला जीव अनेक तेह	सुमारगथी अज्ञाने भूल्या छे जेह	।४३।
तेमांथी जेहनो अनुग्रह करवो	दर्शन देइ तेहनो ताप हरवो	।४४।
पोते भूलीने भूल्या सहु शरण लीधा	कृपा स्वत:थी करी अंगीकार कीधा	।४५।
रात्र सघली कलेशमें विहाणी	सह्युं सीत अति घणुं नयने न आंणी	।४६।
तेहनो कलेश जाणी कलेश पाम्या आप	दया निधीअे दया करी हर्यो संताप	।४७।
त्रिविधी भक्तना भाव अश्व द्वारा अेची	दोरी हाथ ग्रही सहु ते लीधा खेंची	।४८।
जेवुं कार्य तेवुं कृत्य करी देखाडे	स्वजाती भाव करी सुख पमाडे	।४९।
पछे सर्व अेकत्र थई मल्या ज्यां	ते दिवसे भोजन करी पोढया त्यां	।५०।
पछे विजय कीधो त्यां रात रही	आगल कहुं छुं जे श्रीमुखे वात कही	।५१।
त्यांथी चाले अेक आगल मजल मांहीं	ता दिन मारगमें जल पायो नांहीं	।५२।
अेक प्यास अरू घाम बोहोत लगे	श्री गुंसाईजी चल गये जलकुं आगे	।५३।
बालकृष्णकुं तो लगी बहोत प्यास	अेक गडुओ जलको स्नेह भटके पास	।५४।
बालकृष्ण कहे जो तुम ल्यो तो लेउं	मेंकहयो भटकेगडुआ को जल मेंन लेउं	।५५।
इतने तो श्री गुंसाईजीने जल पठायो	अेक डबुआ और करवेमें भर्यो आयो	।५६।
पूरवीआ अेक जल लीअे आयो भागे	गुंसाईजीने जल पठायो हे केहेने लागे	।५७।
उन आइ डबुआ वेग हमकुं दिनो	संतुष्ठ थै हम जल पान कीनो	।५८।
में कहयो जु भली भइ जान्यो मर्म	ठाकोरने राख्यो जु तब अेह धर्म	।५९।
अे धर्म रक्षकपोते टाले ताप	अंगीकार करी धर्मने राखे आप	।६०।
बीजो कोण अे वात लहे प्रभु पाखे	सहु स्वकीय ज्ञापित अर्थ टेक राखे	।६१।
अेणी पेरे पधारे पेंडेने गाम	वन सरिता पर्वत कर्या सहेज धाम	।६२।
सहु लीला करी लीलानी पूरे आस	करे गमन प्रवास सुख हेत दास	।६३।
स्वत: भक्तना भाव मनमां विचार्या	आनंदसुं अकबरपूर पधार्या	।६४।
स्थल जोइ श्री गुंसाईजीने आव्युं मनमां	को दिवस स्थिति करी रहीअे अहींया	।६५।
श्री गुंसाईजीना मननी वृत लही	मास दोढ पर्यंत रह्या आरत सही	।६६।
त्यां सुंदर नौतन घर उठाव्या	सेवा सौकर्ज जेवा मनमां भाव्या	।६७।
सेवा रस लीला अधिककरण सेव्य त्यां	दिवस पांसठ लगण बेठा छे ते घरमां	।६८।
रमण स्थले रमण तणी आरत वाधी	मास दोढ रही चाल्या मुहुरत साधी	।१६९।

इच्छाने श्री गोकुल तणो अभिलाष तेणे देशमां द्वंद प्रगट्यो प्रकाश ।१७०।
रमण अर्थ प्रभुने मन अेवुं भाव्युं अे देशने निकट बहु कटक आव्युं ।७१।
त्यांथी कडे पधार्या करी बहु उपाय उपद्रवथी त्यां पण रह्युं न जाय ।७२।
ठाम ठाम दशोदिश द्वंद वाध्युं केणे नव जाण्युं आपणे कार्य साध्युं ।७३।
कोटमां गोलो आवे नाल केरो बहु लश्करे देशमां घाल्यो घेरो ।७४।
पछे हंसीआ फतेहपूर पधार्या प्रात श्रीमुखथी पोते कही छे अे वात ।७५।
कहयुं आगे तो मारग चले नांहीं कोइ दिवस स्थिति करीके रहे इहांहीं ।७६।
उंहांते कोस तीन दूर होअे गंगातीर तहांते जलपानकुं आवे नीर ।७७।
वेहेवारकुं तो जल कुवा केरो आवे काज अरू चहिअे बोहोतेरो ।७८।
अेक वात उठाइ सब मीली गाम सो समुद्र सोखा धर्यो हमारो नाम ।७९।
अे सभामां श्रीमुखे कहयो जे पोते हंसी गूढ भाव प्रगट कर्यो वात ओते ।८०।
अे भावने अनुदिन आप इच्छे जे अनुभवी अंतरंग ते प्रीछे ।८१।
महारस समुद्रमां कहयुं नव जाय जेम पान करे आरत्य तेम अधिक थाय ।८२।
अे रमणीय रमण करे भक्त भाव्युं समुद्र सोखा नाम हास्य मिसे जणाव्युं ।८३।
के भव सिंधु दुःख रूपी भर्यो जले ते सहेजमां सोखी अे स्वरूप बले ।८४।
अे अभय भय नाशक परम सूर इच्छाअे करे भय सर्व ताके दूर ।८५।
तेने भयनो प्रतिबंध ते केम होय पण मार्ग निरोध व्याजे अे सोहे ।८६।
त्यां रहयां कोइ भक्तना भाग्य अर्थ पूर्या मनोरथ स्वतः पोते सामर्थ ।८७।
आगल भाव लीला इच्छा करी ज्यां त्यारे अेक उमराव आव्यो त्यांहां ।८८।
तेणे मिसे त्यांथी विजय कीधो साथ पछे कोरडे गाम पधार्या नाथ ।८९।
ते वात श्री मुख थकी कही छे अेह उमराव अेक सीक्री चलत हे तेह ।९०।
श्री गुंसाईजीने कहे पठयो सुभावे तुम कहो तो तुमारे संग हम आवे ।९१।
उन करी विज्ञप्त मेरो भाग्य आज यहुं भांति तुमकुं जो में आवुं काज ।९२।
आगे पाछे अरू मध्ये बहु तेक स्वार यहु जतनसुं ले चल्यो करी विचार ।९३।
मारगमें कंहु वीच रहे न पाअे दिन रह्यो घडी चार कोरडा आये ।९४।
बडी मजल भइ साथके लोक हारे पाछे रात कीधो पाकतब सब संभारे ।९५।
गोविंदमामाकुं हमतो हारे बोलाअे कहे हम हारे कहेतो उठयो न जाय ।९६।
कीनुं लीयो किनु ना लीओ बन्यो जेसे कोउ हारे रहे बोहोत पडे रहे अेसे ।९७।
श्री गुंसाईजी विचार कीनो सवारे आगे डर नहीं और सब लोग हारे ।९८।
उमरावकुं कहासुं कहे पठायो अरू आज सब आपुन इहांइ रहीअे ।१९९।
परकाला अरू सामग्री पठइ उनकुं विदाय मांगी कहयो आज रहेनो हे हमकुं ।२००।
तब उन कहयो मेरे कछु काज न आवे उलटो श्री गुंसाईजी मोहेकुं पठावे ।१।
करी बोहोत हलमल देओ मोहेकुं तुम चलो साथकुं तो रहुं आज ।२।
क ा ज हम आवेगे कल पेंडे लागे ।३।
श्री गुंसाईजीने कहयो तुम चलो आगे थोरे थोरे पोंहोंचे आये फहरा मांहीं ।४।
पाछे वे तो चल्यो हम रहे उंहांहीं तेहना नाम विसद करी तेह कहुं ।२०५।

पधार्या सहित समाज सहु — अेवा अनेक वैश्नव ते कहया नहीं जाय ।२०६।
साथे हरिवंशजीने चांपाभाई — अति रसिक अने स्नेहसुं अनुरक्त ।७।
दामोदरदासी आदी छे बहु भक्त — खवास नारायणदास घणुं अधीरो ।८।
भीतरीया भाणोभाइने पंडयो खीरो — भक्त सुर जसरथ ने भगवानदास ।९।
परमचारक पोहोरूआ बहु दास — सालीवाहन नरहर ते सारस्वत आदे ।१०।
गोपालदास बेठो करे काज वादे — गोविंदभट वासुदेवभट भट गणेश ।११।
त्रिघराभट त्रण घर कुटुंब देश — तेहनो रसे अंगीकार कर्यो नाथे ।१२।
अहिरना त्रण घर प्रभुनी साथे — अति सुंदर बोलकी सुखनुं धाम ।१३।
अेहनी स्त्री संजीवनी तेहनुं नाम — अेना भाइ बे मानीको ने बलीयो ।१४।
अेहनो पुरूष बबुओ आवे साथे मलीयो — अेणी पेरे प्रभु साथे आवे छे सहु ।१५।
साथे कुटुंब भेंसो अने गायो बहु — प्रभुने अति प्रेमे लेवाडे धार ।१६।
गणेश आदि ग्वाल जे समजे सार — ते श्रीमुख थकी कहयुं छे मधुरवाणी ।१७।
होंअे पुष्टता अेह कारणे जाणी — होअे स्वाद सुंदर सहुको वखाणे ।१८।
लालु गरडीओ गोरस करी जाणे — हंसी हंसी प्रभुजीअे थई प्रसन्न ।१९।
अेहनी अेक हांसी कही रीझी मन — आवी छास लेवा तेने ना कही फेरी ।२०।
पांचण पूरवीयो अेनी वहु अनेरी — कह्युं हुं छुं पांचनकी वहु वचन थकी ।२१।
तेणीअे जाण्युं मुने ओलखी नथी — पांचनकी के साटे क्यों नहोअे दसनकी ।२२।
तब लालुने टोक अेक कही मनकी — करी टोक जाणे अने गातो सारूं ।२३।
पे छास नहीं मेरे अेवो हंसारू — टोके रीझे रीझवे लागे रसाली ।२४।
प्रभुने हास्य रस तणी टोक वाली — भोगी माली साथे करे फूल काम ।२५।
करी गवरी ने मनिका छे स्त्रीनुं नाम — करे बीडा सुंदर अति सुखदाइ ।२६।
तंबोली करण अने रूहवो बेहु भाइ — माना आदि अनंत कहार तेह ।२७।
संतो ने नारायणदास छीपा छे जेह — अे सरीआ घटीया अेहोनी स्त्री बेहु ।२८।
धोबी खेम ने रमै बे भाइ अे सहु — विसद क्यां लगी थाअे जो नहीं परमीत ।२९।
अेम साथे छे अनेक सहु राजनी रीत — घुंट नीला कछीयाणा कहया न जाय ।३०।
घोडा वसंतराय भमर ने दुलेहराय — एहवी घोडी अने घोडानी ।३१।
रायवेल चडकली अने चंद्रकवा — अ स्व श ा ळ ा ।३२।
जीवंदो लवन ने हरिदास साथे — अस्व रक्षकनुं काज अेहोने हाथे ।३३।
साथे वाहेणी पालखी अनेक साज — फहरे आव्या अेणीपेरे संग बहु समाज ।३४।
सुणी प्रसन्न थया सहु ते कहयुं न जाय — हुसल्या मन मोद हैयडे न माय ।३५।
महावन तणा चौधरी सामा आव्या — श्रीमुखे कही वात भला भाव्या ।३६।
भले वैष्नव धर्म नेष्टिक कहावे — उत्थापन भये नित्य दरशनकुं आवे ।३७।
माहासुर महिमावंत समृध्धवाने — सब मांहे मर्याद सब कोउ माने ।३८।
अेसे प्रमाणिक जो कछु कहे न जाइ — अब आजके लोक तो सब उलवाइ ।३९।
तेना नाम विगते कहुं करी प्रकाश — अेहमा छे प्रथमे त्यांहां भोगव्यास ।४०।
अति निपुण ने सर्व मांहें मेढ — जेने कहयुं छे महावनमां वैश्नव डेढ ।२४१।

आधोव्यास अरूं सारोहे कृष्णदास	श्री गुंसाईजीओ आप कहयो मन उल्लास	।२४२।
मित्रसेन धर्मांग अने कपूर	कुंअर शब्दवेधी हतो महासूर	।४३।
अेक भोज उंचो हतो बोले अेवुं	महावनथी गोकुल मांहे सुणीओ तेवुं	।४४।
फूलमदन चंदन कृष्णदास स्वामी	आव्या सर्व सामा ते आनंद पामी	।४५।
करी दंडवत कहयुं अम काज सीधा	श्री गुंसाईजीओ अति सनमान कीधा	।४६।
करी प्रेम परस्परे पूछी वात	घणे आनंदे कही करी नाना भांत	।४७।
श्री गुंसाईजीनी अनेक प्रसंसा कीधी	लइ भामनडा बहु आशिष दीधी	।४८।
बोल्या राजे करूणा करी भली विचारी	नहिं तो गति कोण थात अमारी	।४९।
राज तो प्रतिवर्ष पधारो अहींया	आ स्वरूपनुं दर्शन अमने क्यांहां	।५०।
श्री गोकुल तणु आभरण लेइ आव्या	साधन विना मनोरथ सहेज फाव्या	।५१।
महाराज राजेश्वर दीठा आज	कृपाओ पधार्या भक्त काज	।५२।
उपकार कीधो पोताने सामर्थ	सर्वरसे सरिया सर्वना सर्व अर्थ	।५३।
अति गदगद कंठ ते आव्या भरी	लह्युं सहेज स्वरूप प्रभावे करी	।५४।
अतुल अैश्वर्यता सहु जगत विख्यात	करूणा करे तो होओ स्वरूप ज्ञात	।५५।
कर्युं भोजन रूचीसुं मनमां भावी	श्री गुंसाईजी अेकांत स्थले वेगा आवी	।५६।
पुत्र परम वल्लभ सारनुं ते सार	शुभ अर्थ मुहुरत अेहोनो कर्यो विचार	।५७।
अंगीकृत लही तेडयो देवन त्रिवाडी	पूछयुं मुहुरत अेहोने पासे बेसाडी	।५८।
आनंदे करवो श्री गोकुल प्रवेश	दीजे मुहुरत होओ जे महा सुदेश	।५९।
करी दंडवत स्वरूप उरमां आराधी	शुभ दिन शुभ योग कहयुं मुहरत साधी	।६०।
सवंत सोल बावीस वदी बीज सारी	भाद्रपद मांहां आप्युं उतम विचारी	।२६१।
अेणे मुहुरते प्रभु गोकुल पधारे	ते आगलने मांगल्ये कहीश बहु विस्तारे	

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अदभुत विचित्र रस व्याराना गोपालदास विरचित श्री गोकुल गमन लीला वर्ण नाम

।। मांगल्य वीसमुं संपूर्णम् ।।

मांगल्य – २१ – अेकवीसमुं

राग : "तापीपूरथी भाम गढे" श्री गोकुल प्रथम प्रवेसनुं मांगल्य

श्री गोकुलनुं सर्वस्व धणीभूषण परम अनूप
श्री गोकुल पधारे छे श्री गोकुलनो भूप ।१।
भूतल भांत भांतना रस नर पशु पक्षी जात
ज्यावदीक जेको विलशे रती रस नाना भांत ।२।
देव असुर सर्वत्रमां ज्यांहां जेवो रस परीचार
कर्यो स्वकीय तदात्मीक रस लही रसनो अंगीकार ।३।
अंशकला रसे अनुभवे ज्यां जेहवो रस होय
ते सर्व रस भोगी अे प्रभु अन्य न बीजो कोय ।४।
सर्वना ईश्वर आत्मा अंतर्यामी अेह
स्नेह तणे रसे वस अति पोते होअे ज्यांहां नेह ।५।
पुरूषोतम अंशे परवरे स्वरूपे ससुदाय
अेवुं स्वरूप अे रसमय रसभोक्ता रसदाय ।६।
ते रसने प्रथम पधार्या राणी रसिक छे ज्यांहां
वय किशोर भाजण मिशे निरोध कर्यो जइ त्यांहां ।७।
गढे गाम गुणवंती दुर्गावती अभिधान
तेसुं करी सुख स्वादे अंग अद्‌भुत रसपान ।८।
रसारंभे थई मुग्धा आगम जोबन वेश
नाअेक रीत राणी करी प्रगट ते परम सुदेश ।९।
अे रस स्वादनी इच्छाअे अनुभव कर्यो अनंत
आरंभी किशोर जोबन प्रवेश पर्यंत ।१०।
अे रसने अनुभवी कर्युं मन प्राण आधार
श्री गोकुल अद्‌भुत रस करवा अंगीकार ।११।
जैम अडेलथी गढे पधार्या ते निमित कर्युं वली
अभिसारी जेम अभिसारे करवा केली सुखाली ।१२।
जार धर्मे मर्मे करी संकेतो जेहो वार
दुर्यो रहे गुरूजनथी ते रसनो नहीं पार ।१३।
पछे गढे थकी पधार्या क्रम क्रम फहरे मोझार
सवंत सोल बाशीसे श्री विठल राजकुमार ।१४।
श्री गोकुल प्रवेशने मुहुरत साध्युं परम सुदेश
भाद्रवा वदी दिन बीज नक्षत्र शुभ योग वरेश ।१५।
चंद्र तारा बल उतम लगन ने ग्रहो विशेष
जे समय मंगल रूपे श्री गोकुल कर्यो प्रवेश ।१६।

ते समयनुं वर्णन करूं कांइ अेक करी प्रकाश
पधारे प्रेमे करी सर्वनी पूरवा आश ।१७।
समय पधार्यनो सांभली मलीयो सर्व समाज
लौकिक अलौकिक फूल्या जोवा श्री महाराज ।१८।
स्थल रूपे जे स्थिर हता गोकुल व्रजने संग
ते अतिशय सहु हुलसीने उमंग्या अंगोअंग ।१९।
श्री गोकुल रस रूपे रच्युं रमण रस धाम
उलट अंग न माये पधारे पूरण काम ।२०।
shreenathaji प्रमाण ते प्रमेय थई अने आव्या करी बहु साज
आपपणा अनुभव हिते सहु को सेवा काज ।२१।
महा नायक नर वर नरेन्द्र पधारे ज्यांहां
रसमय सामग्री सहु सिध्ध थई छे त्यांहां ।२२।
जे कोई आधिदैविक स्वरूपे प्रगट्या प्रभुने संग
तेहने स्थले पधार्यानो मनमां अतिसय रंग ।२३।
संग प्रभुने परवर्या ज्यां प्रभु त्यां निवास
सहित रमण सामग्री मनमां अति हुलास ।२४।
आधिदैविक स्वरूपे जे नित्य रहे प्रभुने संग
आधिभौतिक स्थले आव्यानो मनमां अतिसय रंग ।२५।
श्री गोकुल गोवर्धन व्रज उपवन नाम
यमुनाजी सहित सहु पधारे निज धाम ।२६।
आधिभौतिक भूतल हता स्थल रूपे शुभ ठाम
त्यां आधिदैविक आवी मल्या करवा सेवा काम ।२७।
परस्परे अति हर्ष ने मोद तणो नहीं पार
उलट अतिशय ते समय केम थाअे विस्तार ।२८।
फहरे थकी ते विजय कर्यो सुंदर श्री महाराज
आग्रा मथुरा आदिदेइ वैश्नव बहु समाज ।२९।
महावनना चौधरी वाजिंत्री लाव्या अनेक
ताल पखावज पंचशब्दा अति करी विवेक ।३०।
शोभा सिंधु शिरोमणी सुंदरता नहीं पार
महा विचिक्षण नायके धर्यो अनुपम सृंगार ।३१।
अति मोदे प्रहसित घणुं उलट उर न समाय
प्रतिक्षणु छबी नौतन ते कांइ कहीय न जाय ।३२।
वाजिंत्र वाजे अनेक ते सुंदर नाना भांत
मध्ये स्वर शहेनाइ नगारानी बहु जात ।३३।
गान करे गुणीजन अने मानुनी मंगल गाय
अंतरमां अति फूल्या उलट उर न समाय ।३४।

दुल्हेराय तुरी पर स्वार थया सुखरास
श्री गोकुल पधारे छे परवर्या बहु दास ।३५।
कुल दीपक उद्योते आवे सहित समाज
सृष्टि सवारथी श्रीअंग तणी सींचन करवा काज ।३६।
निरगुणनो निरोध करवो छे ते जाणे न कोय
रसिक वर नायक गुणमय आवे गोकुल सोय ।३७।
ते श्री गोकुलनुं आधिदैविक प्रगट स्वरूप
श्री गुंसाईजीअे विध्वनमंडणे कह्यं छे अनूप ।३८।
ब्रह्मानुं निर्मित नहीं जे छे कालातीत
अलौकिकनुं अलौकिक ने प्रकृति प्रपंच रहित ।३९।
लौकिक माया ने कर्मनो गम्य नहीं लवलेश
अलौकिके असुरथी ओटने सेवानो कर्यो प्रवेश ।४०।
वैंकुंठथी अधिकतर वचने अगोचर सोय
अनुभवथी ज्ञापित होअे अन्य न जाणे कोय ।४१।
कृपा थकी अविलोकीअे अे महा परम अनूप
रसभावे प्राप्ती होअे अेहवुं अेह स्वरूप ।४२।
मुक्ष्य अनाघ निरंतर अे छे सर्वदा नित्य
रहस्य लीला रमण स्थल रमणीय निमित्य ।४३।
परम रमण सामग्रीअे सेवित सदा सोहाय
महा सुखनिधी वरेन्द्र वरेसनी उपमा कही अन जाय ।४४।
आनंदमय अति सरस अने सर्वोपर उक्त
निरविधी रस पूरित श्री यमुनाजीअे जुक्त ।४५।
अेवुं जे श्री गोकुल त्यां आनंद दायक मूल
अभिष्ट रूप परम प्रिय कालिंदीनुं कुल ।४६।
कालिंदी रति वर्धन कालिंदी कामद रूप
कालींद्री कृत निकेतन कामी जेह स्वरूप ।४७।
अतुल असाधारण अने अमोघ वीरजवान
पधारे संयोग स्थले करवाने रसदान ।४८।
दान पात्र अति निपुण जे नेह निर्भर रूप
जेहना देह अलौकिक आनंद मय फलरूप ।४९।
लीला भजन उपयोगी कारण सेवा अर्थ
प्रेमे भर्या पोते थकी आप्या सहु सामर्थ ।५०।
भूतल मध्ये रमण हित आपु सुखारथ सृष्टी
प्रगट करी उतरोतर हवी उभय रस वृष्टी ।५१।
तेह समाज मध्ये पोते प्रगटी परमानंद
भजन उपयोगी फल रूपे अेवा आनंद कंद ।५२।

सेवा रसे रस सृष्टीसुं रमण ते अनिरवचन
पूरण रस अनुभव ने सृष्टी सहित संपन्न ।५३।
जेह सामग्री आगल थकी प्रगटी रस उदबोध
जगती तले तेहने नाम प्रतापे कर्यो निरोध ।५४।
पोते पण तेणे स्थले मोह्या परम सुजाण
सकल काम साध्या सहु जेहनुं नहीं निर्माण ।५५।
परंपरा सामग्री मारग प्रणित प्रकार
सानुकूल तेने करी अने करवो अंगीकार ।५६।
सर्व रसे उल्लसित लसित संग रसनी सृष्टी
मुक्ष रमण क्रीडा स्थले करवा रसनी व्रष्टी ।५७।
रसिक समाजे परवर्या सुंदर महा सुदेश
अति उछलल्ति आनंदे श्री गोकुल कर्यो प्रवेश ।५८।
भोमीना भाग्य प्रबल कर्या जे करी रही उदेश
मनोरथ सर्व सफल करी पधार्या प्राणेश ।५९।
श्री यमुनाजी हुलस्या घणुं अंतरंग रस रूप
सकल कला संपूर्ण करी सृंगार अनूप ।६०।
चंद्र पुनमनो जोइ जेम सागर वाधे नीर
अेम निरख्या नर निरूपम उमंगी भर्या बेहु तीर ।६१।
अंग अंग रस पूर्या जोया निज आभरण
लहेर मिसे आगल जइ सनमुख स्पर्शया चरण ।६२।
पुलिन ते अति रमणीय मनोहर मृदु द्रवे बेहु ओर
बहु कमल जुत सेवित सारस हंस चकोर ।६३।
चक्रवाक ते परस्परे आलिंघे बहु मोद
पारावत चुंबन करे उपजे रस उदबोध ।६४।
मंद सुखद सौरभ जुत पवन गवन करे ज्यांहां
जेम श्री अंगे सोहाअे तेम प्रसरे त्यांहां ।६५।
वरषा रितु भर बूंद उनमत थई अेकत्र
प्रभु पधारता जाणे आपु धरी रह्यो छत्र ।६६।
घोरी घोरी घन गरजे शोभा परम विचित्र
काम कला रण जितवा वाजे विजय वाजिंत्र ।६७।
पपैयो पीयु पीयु करे वरसे बूंद सुदेश
जै जै मंत्र मुखे भणी जाणे काम करे अभिशेष ।६८।
उपर बग पंगति अवली सवली वलाय
कीर्ति आपु ओवारी अने जाणे दूर पलाय ।६९।
हरित भोम्य नवपल्लव नौतन करी श्रींगार
ज्यां त्यां झील भर्या राजे शोभानो नहीं पार ।७०।

वनवेली द्रुम गुल्म लता आनंदित अेह
महा मुनी गणने समुहे मनोरथे धरीआ देह ।७१।
निरूपाधि निर्विकार स्थल आश्रया स्थावर रूप
निरावरण अेकांत्य रमण हिते गोकुलभूप ।७२।
वृक्ष ते नव पल्लव हवा पल्लवे कुसुम समोह
कुसुमित ते फल ज्युत थई फल हवा रस संदोह ।७३।
पुलकित रोमांचित हवा अंग श्रवित मधुधार
आमोदे आस्वादित मधुप करे गुंजार ।७४।
प्रभु पधारेथी अेम लहे नहीं कोअे अमारी शाम्य
पवन सहायक करी अने नमी नमी करे प्रणम्य ।७५।
मयूर मधुर स्वरे बोले कुंजे कोकिल कीर
बाह्याज्याभ्यंतर फूल्या दीठा महा नरवीर ।७६।
द्वादश मास छय रितु शोभा सहित छे जेह
सुखद सामग्री सहित सनमुख सहु आव्या तेह ।७७।
शब्द स्पर्श रस द्रव्य सुगंध अनेक जे रूप
अे आव्या सहु सुखतणा आधिदैविक स्वरूप ।७८।
सर्व शक्ति सामर्थे सर्व सेवानुं कोड
सनमुख सहु उभा रह्या मोद भर्या कर जोड ।७९।
चौद लोक ब्रह्मांड सकल दशो दिसे प्रचार
विसद क्यां लगी कहीअे आनंदनो नहीं पार ।८०।
अनेक दान सामग्री पुष्ट पुष्ट रस युक्त
रसिक तणे उपयोग अने करवा रस भुक्त ।८१।
भांत भांत प्रेमे भर बहु रसना बहु पात्र
गोप्य प्रगट सनमुख आव्या जे रसिक जन मात्र ।८२।
अेह जूथे परवर्या आव्या आनंद कंद
श्री गोकुलमां बिराज्या श्री गोकुल केरा चंद ।८३।
अेह अलौकिक इन्दु उदय हवो अति निष्कलंक
संपूर्ण कला वाधती केहेनो नहीं भय शंक ।८४।
अेहनुं कारण श्री विठल उदयाचल रूप
श्री रूकमणीजी प्राची दिशाअेथी प्रगट्यो चंद अनूप ।८५।
क्षणु दोष वरजित संजीवनी जीवन मूल
अलौकिक अमृत श्रवे मुसकनी अतिशे सानुकूल ।८६।
उडगण अगण समुह भक्तना अनेक समाज
सदा अचल सुखदाअेकसुं राजे उडराज ।८७।
परमानंद रसे जुत शीतल कारक आप
शीत उश्न समे सुखद सकल हारक परिताप ।८८।

स्वानंद रस पोषक अने सर्व इंद्रीयास्वाद
विश्व प्रकाश सुधाकर मुक्ष रसे अे आध्य ।८९।
तीर्थराज प्रागांगण कुसुमात्मीक फल राश
त्यांथी उदय करतो थकी गोकुल कर्यो प्रकाश ।९०।
फलात्मीक थई स्थिर रह्यो वृज नभ भोमी सुदेश
शोभा भर कला वाधती अलौकिक अे राकेश ।९१।
मध्य देश तणुं मध्य ते अवनी उर स्थल भक्त
ते उपर व्रज मंडल कमलाकार अव्यक्त ।९२।
त्यांहां बिराजे निरंतर ज्योत तणो नहीं पार
रूप वचन लावण्यामृते द्रवित होअे रस सार ।९३।
तेह कला जोइ भक्त समुद्रने वाधे तरंग
रसभर उर अति उलटे अने उलटे सर्वांग ।९४।
वनस्पती वन अवनीय भक्तना इंद्री देह
स्वरूपानंद रसे भर्या आनंदित करे तेह ।९५।
अथवा भक्त भोम्य अने अंग ते सरोवर रूप
वदन कुमुदनी फूले ज्यां अे चंद्र अनूप ।९६।
कृपा कटाक्ष किरण रसनुं होअे अद्‌भुत दान
भक्तना नेत्र चकोर भावभर करे ते पान ।९७।
असुरावेसी दुष्ट जीव जे राहु समान
दूर करे दाने करी विवेक रूप समाधान ।९८।
अेवो विवेक दाता ते दान करे सिध्धांत
मलीन राहु स्पर्शे नहीं सनमुख मुक्ष ने प्रांत ।९९।
मुनीस्य नाटय माया वरणनुं अभ्र करे छे अेह
असुरथी स्वरूप दुरावे तेणे देखे न तेह ।१००।
भक्त कुमुदनी फूल्या जेहने अचल सबंध
माया ओट अलगी रहे करे नहीं प्रतिबंध ।१।
कुमुदनीथी प्रगट्यो शृंगार सार मरकंद
प्रभु ईक्षण भ्रंगागना पान करे सुखकंद ।२।
अेतदरस परमित रूचे नहीं बीजुं अन्य
वार वार फरी फरी अविलोके निसदिन ।३।
अेह रसे संतुष्य थाअे छे अतिशे मत
अनुसंधान रहित विहवलतासुं आशक्त ।४।
अेह रसे विहवल अने अेह रसे संतुष्ठ
अेह रसे वस सर्वदा अेह रसे सहु पुष्ट ।५।
अेह रस महा मधुर रोचक प्रभुने सुखरूप
तृप्ती होअे नहीं पान करे अेहवो अे अनूप ।१०६।

अेहवो अे कुमुदनी प्रफुल्लितनो रस मकरंद
ते कुमुदनी वृंद प्रकाशित वृज वस्यो गोकुल चंद ।१०७।
आचार्यजी श्री गुंसाईजी हृदय रस कुमुद प्रकाश
श्री भागवत फलनुं सारांस ते आमोद सुवास ।८।
अेहना अधिष्ठाता भोगी फलीतारथ रूप
अेह रसनुं करे पान भमर वत अेह स्वरूप ।९।
श्री विठलना सर्वांग कुमुद प्रफुल्लित करे जेह
अेवा चंद्र आनंदमय श्री गोकुलमां अेह ।१०।
अेवा अनेक गुण ज्युत सहुनी पूरक आस
व्रज जीवन आधारे श्री गोकुल कर्यो निवास ।११।
प्रथम अहीं केवल यमुनाजीनुं उपकुल
वन बहु वृक्ष अनेक ने वास हतो नहीं मूल ।१२।
को अेक आचार्यजीअे करी राख्यो ते साज
प्रति वर्षे पधारे त्यारे रहेवा काज ।१३।
गाय तणो लहेडो रहे कांइ अेक अेणे ठाम
पिता पुत्र नाउ वसे हथुओ ने केशव नाम ।१४।
उद्या ने कमला सासु बहु स्त्री बेहुनी जेह
अेक मालणी ललीआवण सेवी रहे त्यां अेह ।१५।
वृक्षलता कारण रूप तेम अे कारण बंध
प्रथम निवास करी रह्या अलौकिक स्थलने संबंध ।१६।
अेहनी वात प्रगट करी कीधी छे विस्तार
श्री मुखथी प्रभुजीअे कही छे वारंवार ।१७।
पहेले ओ इंहा रहेते स्थल सुख सेवा निमित
स्थल आछो अति राखे ते सुंदर करीके नित्य ।१८।
रक्षा आचार्यजीके घरकी अरू गायनकी करते
उनके घर सेवा रहेते नीके करी अनुसरते ।१९।
अे सेव्यना नामनुं कारण गोप्य प्रगट न कहेवाय
स्थलने आधारभूत राखीने प्रगट कर्युं सुखदाय ।२०।
प्रथम इंहां इतने वसे अरू कोइ नहीं पास
हमारे आये पाछे भयो सबहिन को इंहां वास ।२१।
अेह वचननुं कारण कहुं छुं करी विस्तार
श्री गोकुल नित्य रमण सामग्री अपार ।२२।
लीला सहित प्रागट्य हवुं प्रभुनुं प्राग मंझार
ज्यावदीक रस रूपे कीधो त्यांहां परिचार ।२३।
वलता श्री गोकुल वस्या श्री गोकुलनो भूप
साथे सहु आवी वस्या ते सामग्री अनूप ।१२४।

ते माटे प्रभुअे कह्युं वचन महा सुखराश
हमारे आये पाछे भयो सबहिनको इंहां वास ।१२५।
जेणे प्रकारे वास कर्यो श्री प्रभुअे जेह
कांइ अेक छाया मात्र संक्षेपे कहुं तेह ।२६।
प्रथम पेंडना साज कर्या सहु शुभ दिन मांहां
करी रसोइ चालती स्थल उतम छे त्यांहां ।२७।
आसपास समीआना सुंदर रावटी कनात
टेरा ने तंबु बहु रंग रंग नाना भांत ।२८।
पाकशालामां शोभाजी ने सत्याजी जेह
नाहीने वेगे पधार्या सिद्ध कर्यो करी नेह ।२९।
श्री गुंसाईजीअे मार्ग प्रणित कर्यो प्रगट प्रताप
प्रथम श्री यमुनाजीने भोग समर्प्यो आप ।३०।
लीला समाज विशे प्रभुना लही परम वरेस
भाव सपत्नी जनित जेने कांइ नहीं कलेश ।३१।
अेतद भावापन्न परस्परे अैक्य अनूप
अेवुं लही श्री गुंसाईजीअे जमुनाजीनुं रूप ।३२।
सेवा ने संग जे को करे अनुसरे अेहने कोय
स्वकीय समाजे परस्पर अैक्यता तेहोने होय ।३३।
स्वमारग साधन अे स्वकीयने ज्ञापन अर्थ
प्रभुसुं रति उपजावे पोताने सामर्थ ।३४।
साधक सहु पुरूषारथ महा रसिक रस योग
अे उत्कर्ष लइ अने समर्प्यो गुंसाईजीअे भोग ।३५।
पुष्टी मारगीनुं स्वरूप ते पुष्टी मार्गी अेवुं ज्ञात
ते जाणे श्री गुंसाईजी जगत मांहे विक्षात ।३६।
भोग समर्पवाने समे मिसरीनो कुंजो जेह
भांज्यो तेहना काच तणा पडया टुंक त्यां तेह ।३७।
केणे विण समजे लेइ नाख्या जमुनाजीने तीर
उठीने वेगी गुंसाईजीअे लीधा थई अधीर ।३८।
रीष करी तेहने कह्युं तुम कहां जानो कोय
मुक्ष भक्तकुं जानत नहीं प्रभुकुं कहा जाने सोय ।३९।
अेणे वचने अे भक्तनुं करी कह्युं अति हर्ष
श्री गुंसाईजी विना अे भक्तनो कोण करे उत्कर्ष ।४०।
मार्ग प्रवर्तक पाखे को कहे नित्य मर्याद
स्वकीयने विषे कृपा छे निरहेतुक निरूपाध्य ।४१।
महेद अवज्ञा न करीअे सूचन कर्यो संबंध
फल विलंब होअे अेहथी अे मोटो प्रतिबंध ।१४२।

स्वकीयनुं हित श्री गुंसाईजीअे लेइ कह्यो अे प्रकार
सर्वने ज्ञापित होअे अेहनो अेह विचार ।१४३।
श्लोक कह्यो छे श्री मुखथी हेत स्वकीयने धर्म
हंतीश्रीयाणी सर्वाणी पुण्यो महेद अतिकर्म ।४४।
महेदने जे को अतिकृमे तेना सहु फल नास
पुरूषार्थ नासक होअे प्रभु पूरे नहीं आश ।४५।
ते माटे शिक्षा करी करूणा आणी मन
स्वकीयने रक्षा हिते थई अतिशे ते प्रसन्न ।४६।
पाछे पाक सिध्ध होअे तैटले स्नेह तणे आधिक्य
श्री गुंसाईजीअे श्री प्रभुने तेडया ते समक्य ।४७।
पुत्र परम प्रियने कह्युं पहेले तुम कछु लेहो
वात्सल्य जुत बोल्या बाबा तुम करो कलेउ ।४८।
अेह सुणीने महाप्रभु न्हावा पधार्या आप
जाणीने यमुनाजीनो हरवा परिताप ।४९।
अंग संगे जे उभय सुख अनुभव करी जल केल्य
आवी कर्युं कलेउ उलट भर रंग रेल ।५०।
अेह कलेउनी वारता श्री मुखे कही छे जेह
श्री गुंसाईजी हमकुं बोहोत करे नित्य नेह ।५१।
सूर्य उदय होअे जबथे मंगल आरती प्रांत
बाबा तुम कछु लेहो कहे गुंसाईजीनी वात ।५२।
पाछे हम तब लीजिअे अपने मनके भाय
अे स्नेह तणी पराकाष्टा ते कांइ कही न जाय ।५३।
वलता श्री गुंसाईजीने गोकुलपति प्रसन्न
सहु बालक परिवार सहित कीधुं भोजन ।५४।
वेगे सद्य रह्या ने सिध्ध करावी छान
अनुपम अनेक प्रकारनी सुंदर परम निधान ।५५।
पहेले जे मोटी छानो फिरती चोंहों फेर
आंगण परम विसाल अलगी अलगी वासेर ।५६।
वच्चे वच्चे छोटी छानोनी त्यां सुंदर प्रांत्य
ओसरा अनुपम दिसे तंबुनी भांत्य ।५७।
रावटीनी झालरी फरहरे वयारे सार
ज्यांहां त्यांहां मन मोहे शोभानो कांइ नहीं पार ।५८।
अेक पासे गाय भेंसना ठोर विसाल
अेक पासे सुंदर घोडानी घोडसाल ।५९।
कुंज अनुपम शोभिता गहवेर नवदल पांत्य
आसपास अनुपम वन दीसे अनुपम भांत्य ।१६०।

बेठक पोढवाना स्थल सयन खेलवा काज
शीतल सुखद मनोहर नित्य राजे रति राज ।१६१।
सुंदर महा रमणीय अतिशे शोभायमान
विश्व सकल मोहे उपमाने नहीं को आन ।६२।
अेणी पेरे बहु रचना करी वसुधाथी वृजमांहां
मानिनी मन मोहक ते भक्त सुखदान ते त्यांहां ।६३।
सुंदरीनुं सोभाग्य तिलक भूषण वृजनार
महा दुलह मन भावतो भर रसनो नहीं पार ।६४।
कारूणिक करूणामय सर्वनी पूरक आश
अमोघ रसे अतुली बले गोकुल कर्यो निवास ।६५।
कदाचित त्यां कोइने उपजसे संदेह
प्रथम आचार्यजीअेगोकुल वास कर्यो कां न जेह ।६६।
मार्ग प्रवर्तक आचार्यजी अवनी प्रगट्या तेह
अलौकिक स्थल रही मारग प्रगट कर्यो कां न अेह ।६७।
श्री गुंसाईजी स्वत:थी मार्ग महा रस सार
पोते अहीं वसी अने कां न कर्यो विस्तार ।६८।
श्री आचार्यजी श्री गुंसाईजी वस्या नहीं कोण विचार
वसुधा मध्ये वृज तो छे सहु सारनुं सार ।६९।
तेहनुं तत्व श्री गोकुल महा परम फल रूप
जेहनुं को निरधार करी सके न स्वरूप ।७०।
अनुभवीयने गम्य नहिं अतुल प्रतापीक उग्र
श्री आचार्यजी भाव पूरवक लहे ते समुग्र ।७१।
अेवुं जाणीने जे वास कां कर्यो नहीं कोय
अे मोटो संदेह ते मनमां न समाय ।७२।
तेह तणुं कारण कहुं सांभलजो समुदाय
आचार्यजीनुं प्रागट्य हवुं श्री प्रभुनी इच्छाअे ।७३।
इच्छानुं वर्ती कर्युं जोइअे पोते त्यांहां
प्रभुने अे इच्छा लीला करवी लौकिक मांहां ।७४।
भूतल भक्त सहित महा प्रभु पधारे ज्यारे
आचार्यजी त्यां वसवा केम पधारे त्यारे ।७५।
ते माटे आचार्यजीअे वास कर्यो नहीं मूल
प्रथम प्रभुअे करवो कारण अेह समूल ।७६।
त्यां को कहेशे प्रथम अलौकिक स्थल छे ज्यांहां
त्यां न कराव्युं प्रागट्य ने कां कर्युं लौकिक मांहां ।७७।
तेहना समाधानने कहुं छुं अेह प्रकार
आचार्यजीना प्रागट्यनुं कारण करी विस्तार ।१७८।

श्रीजीअे सर्वोतमे विवरण कीधुं अेह
जेहने नीरूपाधी अलौकिक करूणा करवी तेह ।१७९।
जेहने अर्थे मारग प्रगट कर्यो उद्भट्य
ते दैवी जीव लौकिकमां माटे त्यां प्रागट्य ।८०।
अेणे प्रकारे श्री गुंसाईजीनो सर्व प्रकार
लौकिकमां करवो जे मारगनो विस्तार ।८१।
लोक मध्ये प्रागट्य कर्युं स्वतः कर्यो नहीं वास
गोकुलपतिअे वसीने पूरी सर्वनी आश ।८२।
आत्मा अनुभावे जे रमण इच्छा थई ज्यारे
प्रथम आ स्वरूपे श्री आचार्यजी प्रगट्या त्यारे ।८३।
प्रगट कराव्यो मारग आगलथी बहु साज
अलौकिकथी लौकिकमां प्रागट्य करवा काज ।८४।
प्रागट्य करी सर्वना मनोरथ बहु विस्तार्या
लौकिक रस अनुभव करी अलौकिक स्थल पधार्या ।८५।
पछी गोकुलपति गोकुल वस्या तेनी वधाइ जेह
श्री गुंसाईजीअे अंतरमां आणी बहु नेह ।८६।
गुजराते प्रगटी छे जे महाभाग्यनी सृष्टी
भलोभाई त्यां मोकल्या कहेवा आनंद वृष्टी ।८७।
पत्र परम उलटभर आप्या अेहोने हाथ
अंग अंग अतिसे फूल्या चाल्या नामी माथ ।८८।
जेवा जेहना भाव जेहना जेवा सबंध
तेहने तेहवा उपज्या अंतरमां आनंद ।८९।
सृष्टी ते अनेक प्रकारनी तेह तणो नहीं पार
दैवी जे कारण मइ तेहनो कहुं विस्तार ।९०।
रमण उध्धार अनुग्रही आश्रित अंगीकार
अेवी अे छे बहु चतुर्विध पुष्ट प्रकार ।९१।
पाटण प्रथम आरंभीने वीरपोर जे नाम
कपडवणज आनंद प्रगट हवो ठामे ठाम ।९२।
राजनगर खंभायत भरूच आदी ज्यांहां
थई वधाइ सघले भाग्यवान छे त्यांहां ।९३।
ते सहु उलट भरथी आव्या आरत करी
जोवा अति अभिराम मनोरथ बहु मन भरी ।९४।
जे ज्यांहां ते त्यांहांथी आवी रसमां भळीया
जोइ रूप अनुपम भावे कोटी गुण फळीया ।९५।
प्रिय पुत्रने श्रेय अर्थे स्नेह उलट भेर
गुंसाईजीअे वात्सल्य कीधा तेहवी पेर ।१९६।

श्री गोवर्धन पूजा पठवी पठव्यो कुंडवारो
दान अनेक कर्या अने भोग समर्प्यो न्यारो ।१९७।
यद्यपि श्री गुंसाईजी अेह स्वरूपने जाणे
प्रेम तणे वस थई महातम नहीं कर्यो प्रमाण ।९८।
स्नेह तणे आधिक्ये महेली महातम गर्व
प्रिय पुत्र हित कीधा लौकिक अलौकिक सर्व ।९९।
अेवो बलीयो अतुली प्रतापीक स्नेह सबंध
जेहने आवेथी महातमनी रहे नहीं गंध ।२००।
वल्ता श्री गुंसाईजी अहीं रही दिन बे चार
उभय स्वरूप गोपन हित इच्छाअे कर्यो विचार ।१।
उल्टसुं श्रीजीने पधराव्या श्री गोवर्धन
हरिदासवर्य आनंदया अति हरख्या मन ।२।
श्री नाथजी सामा आव्या आरत सहित प्रमोद
दरशन करी कराव्युं श्रीजीअे करी महा मोद ।३।
अन्य न जाणे पेर अे सेव्य सेवितनो प्रकार
समूल नहीं समजाय कृपा विण अे निरधार ।४।
जेम पुरूषोतम उतम स्वरूप सर्वने सेव्य
तेम पुरूषोतमने लीला मध्य पाती सेव्य ।५।
अे सेवा रस अनुसारनी अे लीला परम अनूप
सेव्य सेवक सिध्ध थाअे अवर नहीं जाणे रूप ।६।
अेतनमारगे वरण कर्युं होअे तो प्रीछाअे
जे स्वरूप सबंधी भाव मार्गीअे समजाअे ।७।
विसद करी श्री आचार्यजी श्री गुंसाईजीअे लेखन कीधुं
ते श्रीमुखे कह्युं तेथी सहुनुं कारज सीधुं ।८।
जे जे करे छे प्रभु ते जन शिक्षाने अर्थ
अेह वचन कह्युं पोते पोताने सामर्थ ।९।
अेहनुं कारण कृपा विना नव समजे कोय
अेतनमारगीने संगेथी ज्ञापित होय ।१०।
पछी जेणे कारणे प्रभुजी पधार्या गोवर्धन
उभय करे अनुभव रस मनमां थई प्रसन्न ।११।
पछी जन्माष्टमी आवी ने उत्सव मानी लीधो
नंद उत्सव गोकुलमां गिरधरजीअे कीधो ।१२।
त्यां महावनना सेदवदन ने सेदनीजुम अे बेहु
उत्सव जोवा आव्या ते दहींअे छिरक्या सहु ।१३।
अरिष्ट हरण गोकुलपती अे जे सदा अविघ्न
तेहो परोक्षे उत्सव हवो माटे उपज्युं विघ्न ।२१४।

वलतो ते साथे थयो वचन बहु कलेश
त्यार थकी खणसाया ते करे अतिसय ध्वेष ।२१५।

पछी श्री गुंसाईजी गोकुलपती आव्या गोकुल आप
समाचार सांभली मनमां थयो अति परीताप ।१६।

वलती ते दुष्टना मनमां अेहवी आवी
साथमां को अेकने घेर चोरी करवावी ।१७।

त्यारे श्री गुंसाईजीने अेम आव्युं मनमांहीं
बालक समृध्ध सहित रहेणो इंहां उचित नांहीं ।१८।

बडो नगर मथुरा हे ताहीमें जइ रहीअे
संमत कीधो अेह कलेश काहेकुं सहीअे ।१९।

महावनना चौधरीअे विनती कीधी त्यांह
आज भइ सो तो भइ आजथे चिंता नांहीं ।२०।

चोकी पहेरो करसुं आजथी अमो अहीं रही
दंड देवाडुं तेहने देशाधीपतीने कही ।२१।

अेह रंकसे लागे शुं होअे अेहोने कीधे
अहींयाथी कां पधारो मथुरा अेहोने लीधे ।२२।

अेवा आदर अनेक चौधरीअे त्यां कीधा
कारणने अनुसारे गुंसाईजीअे उतर दीधा ।२३।

दुष्टनी दुष्टता अनेक सहेन अेवुं प्रागट्य
दोष गणे नहीं केहेना क्षमावंत उदभटय ।२४।

वलता श्री गुंसाईजी अेम बोल्या तेणी वारे
इतनो भौमीआसेती हमारे कोन बिगारे ।२५।

गुंसाईजीअे विनती न मानीने विघ्न थयुं छे जेह
अेहनुं कारण कांइ विसद करूं छुं तेह ।२६।

तेह स्वरूप ते द्विदल रस स्वरूपात्मीक स्वरूप
गोकुल पधारे गोकुलने प्रगट्यो मोद अनूप ।२७।

पर आरत जनित जेहने प्रगट्यो नहीं परिताप
आधिदैविक स्वरूपे संग हतुं जे आप ।२८।

ज्यांहां लगी श्री गोकुलनेज ताप प्रगट नहीं थाय
ते अेहो संबंधी परीकरने अे रस अनुभव केम थाय ।२९।

ते माटे अे भक्तने अने श्री गोकुलने काज
विरहानुभव करवाववा अे लीला करी महाराज ।३०।

अेह सदा संयोगी विप्रयोगी नहीं कहीअे
ते माटे अे विरह रस पान करवाव्यो अहीं ।३१।

ते माटे इच्छाथी गुंसाईजीने आव्युं चित
मथुरानो उदेश कर्यो ते अेह निमित ।२३२।

तापात्मीक अे स्वरूप ते विरहे करी होअे प्राप्य
साधनने नहीं साध्य नहीं महातम नहीं जाप्य ।२३३।
को कहेशे प्रागट्य स्थले गोकुल हतुं साथ
तो मथुरा कां नहीं आवे ज्यांहां पधार्यानाथ ।३४।
त्यां कहुं छुं श्रीजी ज्यांहां ज्यांहां पोते पधारे
त्यांहां त्यांहां श्री गोकुल अलगुं रहे नहीं क्यारे ।३५।
मुक्तिपुरी मध्य नाहीं पधारे आदी ने अंत
मर्यादाने पुष्ट छुअे नहीं अे सिध्धांत ।३६।
अे माटे मथुरामां गोकुल नहीं पधार्युं
मुक्तिपूरीमां ना आव्युं मनमां अेही विचार्युं ।३७।
मुक्तिने अने वली भक्तिने नांहीं कांइ रंच सबंध
साधने जे फल सिद्ध त्यां रसनी नहीं गंध ।३८।
भक्ति ते अनेक प्रकारनी तेहनो बहु विस्तार
पण रसनो स्वाद रसिकमां पुष्ट पुष्ट रस सार ।३९।
ते पूरण स्वाद त्यारे लहे ज्यारे होअे विप्रयोग
अे रस अनुभव करवावीने वेगे कर्यो संयोग ।४०।
अेक ते अे कारण कह्युं जे रस स्वादनुं मूल
ताप पूरण उपजावीने पोते थाअे अनुकूल ।४१।
बीजा कारणनो ते कहुं भाव ते चितमां धरवो
रहस्थ स्थल ते स्वकीय विनुं सर्वथी गोपन करवो ।४२।
ते माटे मथुरामां पधारीने कीधो वास
मुक्ति आदी मर्यादा मार्गीनी पूरी आस ।४३।
अेवा कारण अनेक ते क्यां लगी कहुं विस्तार
कहेवा नहीं सामर्थ ने को पामे नहीं पार ।४४।
पछी मुहुरत विचार्युं ते कारतीक सुदी दशमीअे आव्युं
ते मुहुरत वात्सल्ये श्री गुंसाईजीना चितमां नाव्युं ।४५।
दशमीअे त्यां जइ बालक करे तीर्थ अपवास
बीजे दिवसे प्रबोघिणी ए वेहू पासा पास ।४६।
सो हम सह्यो न जाये गुंसाईजी अेणी पेरे बोल्या
प्रबोघिणीकुं चलेंगे अेम अंतर पट खोल्या ।४७।
जद्यपि श्री गुंसाईजी शास्त्र मर्यादा जाणी
तदपि वात्सल्येथी ते कांइ नहीं प्रमाणी ।४८।
हवे बे मासने चोविस दिन प्रथमे गोकुल वस्या
चोरासी दिवसे चोरासी भावना रसीआ ।४९।
तामस आदि त्रण जेत्रण त्रण नव ते सार
नवे नवे अेकासी ने त्रण अेहोनो विस्तार ।२५०।

भाव भेद यथा योग्य जेहवा पात्रनुं सार
दान सूचन कर्युं सर्वने जे रसनो नहीं पार ।२५१।

वलतो अेणे स्थले महेल्यो ब्राह्मण रामदास
मोड ज्ञाती घणीओरनो ते रह्यो घरने पास ।५२।

पोते सहु परिवार सहित महा नृपती वरेश
कार्तीक सुदी अेकादसी मथुरा कर्यो प्रवेश ।५३।

वरस छ ने त्रण मास अगियार दिवस कर्यो वास
मर्यादा साथे अति सुख आप्युं सहु दास ।५४।

त्यां रही जे लीला करी सुणजो सहु रसपात्र
ते विसद आगल कहुं कांइ अेक छाया मात्र ।२५५।

इति श्रीगोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्‌भुत विचित्ररस
व्याराना गोपालदास विरचित गोकुल प्रथम प्रवेश लीला वर्णनुं नाम
।। मांगल्य २१ मुं संपूर्णम् ।।

मांगल्य – २२ – बावीसमुं

राग : " जमुनाजी पधारे छे सखी श्री गोकुलनो नाथजी "

श्री विठल सुतने नमन करीने करूणानुं बल जाचीजी
आगल लीला अनेक होअे ते कहुं मनमां राचीजी ।१।
महा प्रभु मथुरा पधारे ते कारण अनेक प्रकारजी
बुध्धि अनुसारे सूचन कांइ अेक कही आव्या विस्तारजी ।२।
अेक अेक अनुपम अद्‌भुत महा लीला रस भरीजी
गोप्य प्रगट नित प्रतिक्षणुं सुंदर श्री महाप्रभुअे करीजी ।३।
विविध विषय बहु भांतना बहु स्वरूपात्मीक रस रूपजी
स्वकीय हिते ते प्रगट कर्यो छे गोकुल केरो भूपजी ।४।
अग्रम लीलानो आरंभ कहुं छुं अतिशय सारजी
प्रतिक्षणुं नौतन वाधती ते रसनो नहीं कांइ पारजी ।५।
श्री गुंसाईजीअे संमत कीधो मथुरा लीला काजजी
आगलथी आरंभ कर्यो छे स्थित सेवाना साजजी ।६।
अकिरीने आज्ञा दीधी जाणे जे ते जइअेजी
सेवा सौकर्य स्थल समरावे कोअेक दिवस त्यां रहीअेजी ।७।
अति उत्साहे आज्ञा मानी थई चाल्या ते वेलाजी
रमण स्थल श्री महाप्रभु अर्थ सांप्रत्य करवा पहेलाजी ।८।
कपूर क्षत्रीनी हवेली सुंदर अतिसय सारजी
गताश्रमनो टीलो हतो त्यां रहेवानो निरधारजी ।९।
सेवक ते गुंसाईजीनो सौभागी समृध्धवानजी
अति प्रपंन्र महीमावंत मोटो सहुको राखे मानजी ।१०।
ते आगल वृतांत सर्व ते कह्युं जइ तेहने घेरजी
श्रवण सांभली सुख पाम्यो अति प्रीछो सघळी पेरजी ।११।
तत्पर थई अने मन संधाते सांप्रत्य कह्युं तत्कालजी
भाग्य फल्युं मम प्राण प्रभुअे स्वत: करी संभालजी ।१२।
हवेली हरखे हेलामां सिध्ध करी मन मोदेजी
अति आदर स्वतंत्रता साथे करे ते काज प्रमोदेजी ।१३।
त्यां विचित्र रचना करी ते क्यां लगी करूं प्रकाशजी
ते वरणन केम करी थाअे ज्यां कीधो प्रभुअे वासजी ।१४।
श्री गोकुलपतिअे श्री गोकुलथीविजयो कर्यो ते ज्यारेजी
वाहन आदि साज शोभिता सिध्ध करी आण्या त्यारेजी ।१५।
भांत भांतना रंग बेरंगी अश्व अनुपम सारजी
जीन जोत उपर जगमगता विचित्र विविध सृंगारजी ।१६।

मखमल साज तणी शोभा पर नाना हेम जडावजी
दुमची नकश निर्माण नांहींने चमर चोरासी रावजी ।१७।
जेरबंध जरजरी जरी जुजुवा अनेक अनेरी जातजी
पेस बंध पाखल परमित नहीं नवरंग अनोखी भांतजी ।१८।
मणीमय जटित मोहोरा मुख उपर चारू चोकडे बागजी
पागडा तनीअ जे परम सकोमल अति सुखदाइ रागजी ।१९।
पचरंग मफतूल फुंदा पर झावा झलके हाटकजी
सकल सृंगार तुरी संपूर्ण करता नाना नाटकजी ।२०।
ते आणी सिध्ध कर्या आरोहरणे बागदोर ते धरीजी
पेखसे प्राकृम प्रभु अमारा मनोरथ तेणे भरीजी ।२१।
बाजीराज वसंतराज पर बिराजे वृज राजजी
अेणी पेरे मथुरा पधारे छे साथे भक्त समाजजी ।२२।
पंच सहोदर सहित पोते करी प्रथुक प्रथुक असवारी
त्रण अग्रज ने बे अनुज मध्य प्रभु सकल सुखकारीजी ।२३।
शोभिता स्वार सार श्री वल्लभ महा चंचल रस रूपजी
जाणे जाण शिरोमणी ते जुगमां असवारी भाव अनूपजी ।२४।
ह्यगती भेद निर्भय थई अलके करता धरणी बोलेजी
खुर उंगण समय साध्या विन अलगुं अंग न डोलेजी ।२५।
चांपे चरण अचानक अेडी नृत्य न आवे कामजी
कूदे अति कांपे रोमांचित डीगे न आसन ठामजी ।२६।
अेम अनेक प्रकारे अद्‌भुत अस्वारीना धर्मजी
गोकुलपति विनु अे रसने को अन्य न जाणे मर्मजी ।२७।
महा दुलह मन भावतो मानिनी मद हरण उल्लासजी
नव जोबन उन्नत भावे भर नवनव रसनी रासजी ।२८।
महा माधुर्य तणु माधुर्य मुखांबुज सुंदर सोहेजी
कोटी काम कंदर्प प्रगट करी जगत तणा मन मोहेजी ।२९।
व्रजनायक अभिनव सुखदाअेक वल्लभवर रस रूपजी
अमिय निरूपम परम अलौकिक अेहवुं स्हेज स्वरूपजी ।३०।
सेना सुभग सोहामणी महा सुंदर वेष वपु धारीजी
भक्त आभरण आनंदे पूरित नहीं कोय अनुहारीजी ।३१।
कौतल कोअेक भांते नाचे कोण करूं अे अनुहारजी
पालखी परम सोहासणी वाहेणी तणो नहीं पारजी ।३२।
गाय ग्वाल अनेक ते चाले मनने भाअेजी
राज साज साथे पधारे शोभा कही नव जायेजी ।३३।
शोभा अधिक शोभा करवाने आवी अेणी भांतेजी
अेक अेक श्री अंग प्रति अंगेथी प्रगटे कोटिक कांतिजी ।३४।

मोह पामी महा मोहक रूप आनंदी अत्यंतजी
श्री अंग छटानी परस्पर थई ते शोभा शोभावतजी ।३५।
ते शोभा चालता प्रसरी श्री गोकुल प्रतिपालजी
ज्यांहां त्यांहां सेना चतुरंगिणी दीसे झाकझमालजी ।३६।
मंगल मान सहित त्यां आवी करवा मंगल काजजी
ते बीजे समय अधिक पाम्यो जोइ महा मंगल महाराजजी ।३७।
जैजैकार हवो जगती तल प्रतिक्षणु प्रगट प्रमोदजी
मधुपूरी महीमा उदीपन करवा अेह विनोदजी ।३८।
अति प्रीय पुत्र प्रतापे प्रमुदित गुंसाईजी गुण रासजी
महा वल्लभ श्री वल्लभ सुख जोइ अगणित अंग उल्लासजी ।३९।
नगर निकट पधार्या ज्यारे गोकुल केरो चंदजी
ग्रह ग्रह प्रति प्रगट थयो त्यां सहेज सकल आनंदजी ।४०।
उजागर चौबे सबे चौधरी आदी नगर निवासीजी
उत्साहे सहु सामा आव्या अंतर अति उल्लासीजी ।४१।
धाम धामथी निपुण नायका महा सुंदर अति सारजी
उलट भर उत्साहे कीधा सहुअे बहु सृंगारजी ।४२।
को आव्या सनमुख को गलीअे उभा निज दरबारजी
ग्रह काज भूल्या सहु अेमविकल थया नरनारजी ।४३।
को आनंद भरे भरी पूरित धाइ धाइ चढया अटालीजी
निरखे महा सुंदर वर निरूपम संकेत आपु संभालीजी ।४४।
जोवा रहीप्रेम पुलकित थई चित्र लखीसी दीसेजी
अेक टक चकित थई ज्यांहां त्यांहां हेजे हेयडुं हीशेजी ।४५।
सुंदरीनी सुंदर मुख श्रेणीरही अेक अनुहारजी
प्रभु मंगल हित कमलनी जाणे बांधी बंधन वारजी ।४६।
नयणे अेक टक रूप निहाले ते शोभा न जायें कहीजी
जाणे अली मकरंद पान करे चंचलताथी रहीजी ।४७।
जैजैकार ज्यांह त्यांहां होअे वाजिंत्र बहु विधी वाजेजी
मंगल गान करे मानिनी शोभा जोइ शोभा लाजेजी ।४८।
मंगल साज सज्युं मंदिर त्यांहां रोप्या कलदी स्थंभजी
बांध्या तोरण चोक साथीआ करी मंगल आरंभजी ।४९।
महा मंगल निधी श्री महाप्रभु सहुना पूरक कामजी
अेणी पेरे सुख आपता पधार्या आनंद तेणे धामजी ।५०।
हवे जे मथुरामां श्री महाप्रभु पोते कीधो वासजी
तेह समये अे स्थलनुं वर्णन करूं करी प्रकाशजी ।५१।
महानगरी निरूपण सुंदर सोहे शोभिता घाट विश्रांतजी
केशवराय ज्यांहां त्यांहां राजे सदा आदीथी प्रांतजी ।५२।

चोंहोंफेरी विसाल चोक चौटा अने सुंदर उजवल धामजी
चित्र विचित्र अटाली उंची अतिसय स्थल विश्रामजी ।५३।
छजा चौबारा ने झरोखा रचनानुं नहीं मानजी
ध्वजा पताका कलश शोभिता घर घर वाजिंत्र गानजी ।५४।
काम क्रोध लोभ मोह मत्सर अहंकार जे दोषजी
अे छय बाधक न करे ज्यांहां अेवुं स्थल निरदोषजी ।५५।
त्यां मर्यादा मार्गी पुरूषारथ लौकिकधर्मने अर्थजी
काम मोक्ष कर जोडी उभा सहित आप सामर्थजी ।५६।
जन्म स्थान घडीआलु बोले करे जगतने जाणजी
आठ प्रहर दाने भरवा जे सुकृत तणा निशाणजी ।५७।
अेवी महा महीमा युत मधुपूरी अनेक गुणे आराधीजी
गोकुलपतिअे अलंकृत कीधी तेथी शोभा वाधीजी ।५८।
पतीना पती पधार्या तेणे उलट अंग न मायजी
प्रफुल्लित थई हुलसी मनमां अे ते कांइ कही न जायजी ।५९।
ठाम ठाम स्थावर जंगम जल स्थलनुं सुख संपन्नजी
भांति भांतिनी नौतन शोभा प्रगटी अनिरवचनजी ।६०।
जोयुं रूप रसात्मीक सुंदर सार तणुं जे सारजी
शोभाने शोभा वाधी ज्यांहां त्यांहां थयो पुष्टी प्रचारजी ।६१।
क्षेत्र तणी जे दान सामग्री सहित चतुरविधी मुक्तीजी
अे जोइ दूर रही सर्व ते लज्याअे संयुक्तजी ।६२।
ते समय मधुपूरीनी शोभा जोइ आश्चर्या देवजी
नारद शुक सनकादिक सहुको त्यां आव्या ततखेवजी ।६३।
नभ मंडल विमाने छाह्युं उलट अंग न मायजी
आनंदे आनंदया अति पण कारण नव समजायजी ।६४।
अलभ्य लाभ मनमां सूचवे नेत्र सफल करी लेखेजी
पण यथार्थ स्वरूप जेवुं तेहने अे नव देखेजी ।६५।
महाराज राजेश्वर जे ईश्वरना ईश्वर जेहजी
तेणे वास कर्यो जे स्थले वर्णन केम थाय तेहजी ।६६।
छाया मात्र कह्युं छे अे में मथुरा केरूं रूपजी
जे पोते अलंकृत कीधी ते क्येम कही जाय अनूपजी ।६७।
मंदिर त्यांहां विसाल उठाव्या नहीं को तेहनी तोलेजी
अेक हवेली कपूरे समर्पी बाकी लीधी मोलजी ।६८।
श्री गुंसाईजी कुटुंब परिवार सहित कीधो त्यां वासजी
महा विचित्र वल्लभ लीला करी पूरे सहुनी आसजी ।६९।
वलतो त्यां शिवदत भट दक्षणनो पंडित राजजी
श्री गुंसाईजीअे प्रभु पधराव्या शास्त्र भणवा काजजी ।७०।

महा विचिक्षण वल्लभ वर व्हालो भट घेर भणवा आवेजी
आदरसुं अति घणुं हेत करी शास्त्र सिध्धांत भणावेजी ।७१।
गुण निधान महा प्रभु तणे मन शास्त्र विषे रूची थोडीजी
यथा मात्र भणे पोते गुरू आगल पोथी छोडीजी ।७२।
व्याख्यान भणीने वलीया वेगे उमंग अनुपम भर्याजी
समान वअे विद्यार्थी साथे लरिका मांहां परवर्याजी ।७३।
पोथी परम सोहामणी श्री करमां सोहेजी
लहेरदार बांधणुं अतलसी होद हांसीआ जेहजी ।७४।
निवार रेसमी अतिशय सुंदर सोहे पचरंग चित्रजी
बांधी कोठा करी तेहने फरती भांत विचित्रजी ।७५।
धोती सुंदर फेंटो शीषे तुरो तेहनो थरकेजी
चोलणो स्वेत सोह्यामणो ने छूटा बंध ते फरकेजी ।७६।
तिलक भाल उर माल सुशोभित चितवन नयन विसालजी
कर लटकन मटकन ग्रीवानी सोहे लटकती चालजी ।७७।
अति प्रसन्न सहित भणीने पधारे अेम नित्यजी
आसपास बालक ते मध्ये चालता शोभे अत्यजी ।७८।
रूकमणी कुंवर कोडामणो श्री वल्लभवर सुखदायजी
भणी आवे आनंद भरे ते जोवा आव्या धाइजी ।७९।
अेह अपरमित शोभा प्रगटे जुअे उभा ठामे ठामजी
ते फूले अतिसे आवेशे जोइ जोइ आनंद पामेजी ।८०।
अति आतुर जोवा फरीअने लज्या उर न समायजी
क्षणु क्षणु प्रति जुअे बहार भीतर काज न थायजी ।८१।
लटकेसुं व्हालोजी नित्ये आवे ज्यारेजी
मुख जोइ आशीष देइ ओवारणा ले छे त्यारेजी ।८२।
शोभाजी सनमुख सामा रहे हैजे हैयडुं हीशेजी
लाड लहलह्यो अति लाडको अद्‌भुत आवतो दीशेजी ।८३।
स्नेह जुते वात्सल्य भावे सनमुख द्रष्टि न जोडेजी
शोभा रूप स्वरूप तणी छबी जोइ मीट न अलगी मोडेजी ।८४।
वलता भवन पधारी श्री भागवतना भाव संभारेजी
वार वार रस अनुसंधाने रस भर अेह विचारेजी ।८५।
बीजे साथ तणे लरीके दीठो अेह ज्यारे प्रकारजी
तेणे जइ गुरूनी आगल सहु कह्युं ते तेणी वारेजी ।८६।
तमारूं भणाव्युं भणता नथी, ते अेक लगारजी
बीजी पोथीअे पाठ करे छे पोते भवन मंझारजी ।८७।
तेह सुणी गुरू महाप्रभुने पूछयुं कंठ पाठ कांइ लेशोजी
श्री गुंसाईजी पूछसे ते पछे त्यारे शुं कहेशोजी ।८८।

त्यारे तेने कंठ पाठ करी भणी देखाडे सहुजी
तेह सुणी लुरीकाने खीज्यो ने आनंद पाम्यो बहुजी ।८९।
क्योरे लरिका आ तमे कहेता श्री वल्लभनी वातजी
तेणे तो सहु पाठ करी देखाडयुं रूडी भांतजी ।९०।
वलता ते अेणी पेरे बोल्या भणवानुं शुं कहीअेजी
नथी भणता ते तो अमो जाणुं छुं कारण ते शुं लहीअेजी ।९१।
वलतो गुरू विस्मय थई अने उपज्यो मनमां संदेहजी
अेकांते छानो जइ पोते रह्यो ते सुणवा अेहजी ।९२।
जुअे तो श्री भागवत पढता प्रभु दीठा अेणेजी
अेवुं जोइ मनमां विचारी आश्चर्य पाम्यो तेणेजी ।९३।
गर्व रहित गुरू चरणे लाग्यो प्रभुने करी विवेकजी
कारण रूप स्वरूप तमारूं अेम स्तुति करी अनेकजी ।९४।
वलतो उलटभर आव्यो ते श्री गुंसाईजीने पासजी
कहे वेद शास्त्र श्री भागवत ते आ घेर कर्यो निवासजी ।९५।
अेहने हुं ते शुं भणावुं अे को कारण रूपजी
अेहवा वचन कही वलीयो दीधी आशीष अनूपजी ।९६।
श्री गुंसाईजी शोभाजी अने सहु वली परिवारजी
अेह सुणीने मनमां हरख्या आनंदनो नहीं पारजी ।९७।
श्रीमुख वचन कह्या छे जब हम पढीअे मथुरा मांहेजी
और शास्त्र पढवे उपर हमकुं कबहु रूची नांहींजी ।९८।
हमकुं शास्त्र प्रकार सहेजही आवे नीके करीअजी
हां अेक वेद मात्र पढी हे उपाध्यापे चित धरीजी ।९९।
श्री भागवत हम काहु पास पढे नाहींअे निरधारजी
रघुनाथे कह्यो काकापे पढीअे आपुन अेक वारजी ।१००।
में कह्यो श्री गुंसाईजीकुं श्रम काहेकुं करवाअेजी
अहींया नहीं अेकांतेदेखीअे संदेह तणां सुनाअेजी ।१।
पाछे तो भगवद इच्छाअे पडनो पूछवो नाहींजी
बालकृष्ण तो मेंही पढायो अेम बोल्या रस मांहीजी ।२।
श्री महाप्रभु कंदर्प कोटी ने मीट ते महा रसालजी
पढवाने बेसे ते झरोखे पोता तणी अटालीजी ।३।
उजागर चौबे तीर्थ पिरोहित तेहनी अटली सामीजी
तेहनी भोग स्त्री देखे ते आवे समयो पामीजी ।४।
ते दरसनने सामी बेसे अंतःकरण अति सरसजी
अति गंभीर सुबुध्धिी निपुण प्रभुने जोयानो हर्षजी ।५।
महा सुंदर अति स्नेह युत निहाले सनमुख रहीयजी
प्रभु प्रसन्न रहे ते जोइअे वात श्रीमुखथी कहीयजी ।१०६।

जब हम अपनी अटाली उपर पढीअे अपने भायेजी
तब वे रसनो अपनी अटाली सनमुख बेठी जायेजी ।१०७।
भली मनुष्य सुंदर सुबुध्ध अरू साधारणवत नांहींजी
उनको घर अपनो कर जाने सब इनके कर मांहींजी ।८।
निकट हमारे सनमुख रहे ते रसकी वात चलावेजी
हांसी टोक करे बोहोतेअे हमकुं यह भांत बोलावेजी ।९।
में उनसुं पूछी हांसीकी बात कछु अेक वारजी
तब उन कह्यो वात तो निहारे चलत वटाउ हारजी ।१०।
अे वार्ता महा मोद युत कही छे अति मुसकायजी
तेह समयनो रस जोइने सहुने हरख न मायजी ।११।
काम प्रिया कुलटानो रस प्रभुने समर्प्यो तेणेजी
सहुना रसना भोगी महाप्रभु ते रीझया वचने अेणेजी ।१२।
अेक वेर हम दादा संग गये नाहान विश्रांतजी
जोगनी अेक पुरूषके वेशे ठाडी हे अेकांतजी ।१३।
अेक समय विश्रांते प्रभु पधार्या नाहवा काजजी
जेष्ठ भ्रात साथे हुता अेम कह्युं छे महाराजजी ।१४।
सुंदर देखी कह्यो दादाने बिगर्यो लरिका केसोजी
अेतो स्त्री हे लरिका नांहीं दादाको कह्यो में अेसोजी ।१५।
तब दादाने मोकुं पूछयो तुम स्त्री क्यों करी जाणीजी
चितवन कहे देत हे इनकी याहीमों पहेचानीजी ।१६।
हम जो वात परस्पर कीनी वे समजी मन मांहेजी
करी कटाक्ष मुसकाय चलीअे ठाडी रही नहीं त्यांहेंजी ।१७।
तरूण हती देखतकी सुंदर अेम बोल्या रस भेरजी
नारी नेत्र परीक्षक सुंदर चतुर रसिक बहु पेरजी ।१८।
नेत्र द्वारा अेहना जोबननो कर्यो ते अंगीकारजी
जेहना भाग्य तणुं शुं कहीअे कहेता ना आवे पारजी ।१९।
जेहनी सूरती करे महाप्रभुजी समे समे बहु वारजी
तेह रसे प्रफुल्लित थई वात करी छे ते बहु वारजी ।२०।
वली अेकवार महा मनोहर सुंदर नाहवाने पधार्याजी
बालकृष्णजी जगन्नाथ भट साथे आव्या नहावाजी ।२१।
कोअेक मुगल मोटुं मानस आव्यो ते तेणे ठामजी
सुंदर रूप विश्व मोहक जोइ पूछयुं प्रभुनुं नामजी ।२२।
धर्म धुरंधर जमुना तटे संध्या करता मन भायाजी
असुर जातनी छायाने संकोचे अति संकुचायाजी ।२३।
महा अतुल अे असाधारण ने अति प्रताप उतकृष्टजी
कारण रूप स्वरूप जोइने आसुर थयो संतुष्टजी ।१२४।

वलतो अेम बोल्यो जे उठो मती तुमारी वात में पाइजी
बालकृष्णने जोइ कह्युं जो तुम हो दोउ भाईजी ।१२५।
श्रीजी अपरस थकी बोल्या नहीं धर्म तणुं अंग करीजी
मलेछसुं संभासण न करे करे तो नाहे फरीजी ।२६।
वलतो बालकृष्णजीअे हां हां करी उतर दीधोजी
हां हम दोउ भाई हे अेम कह्युं ते तेणे मानी लीधोजी ।२७।
भटने जोइ अने अेणी पेरे बोल्यो अे भाई नहीं तुमारेजी
रसावेसे तेहनी भाषा संयुक्त करी छे ते समे समे संभारेजी ।२८।
अेह वचन श्री मुखे कह्या छे समय समय संभारी वातजी
स्वकीय सुखार्थे अनुकरण हंसी हंसी उर न समातजी ।२९।
अेहवी कोटी इन्दु सुंदर द्युति परम मनोहर कांतजी
ते मथुरामां लीला नित नौतन करे ते नाना भांतजी ।३०।
त्यांहां जेको आवी सनमुख रही दर्शन प्रेमे करे छेजी
तेहोना नेत्र रूपी आ पात्रमां सुखना समुद्र भरे छे जी ।३१।
अेक दिवस आंगणमां समान लरिकासुं खेलेजी
ते जोइ श्री गुंसाईजीनुं उर आनंद समुद्र रेलेजी ।३२।
अहींया ओटे रही अपर माता पदमावती निरखेजी
निरहेतुक स्नेह प्रगट करे पुत्रना चरित्र जोइ हरखेजी ।३३।
ते जोइ अेहोनी मेहेतारीअे वात सुताने कहीजी
सुण पदमावती दुःख मुने अेक बेटा तारे नाहींजी ।३४।
अेह वचन सुणी पदमावतीने उठी उरमां झालजी
तुं मारी आगलथी जा मुने केम दे छे गालजी ।३५।
अेम बोल्या मारे आवो बेटो उलट भरमेजी
ततक्षण ते बाहिर काढी बेसवा न दीधी घरमेंजी ।३६।
ते खिसीआणी थई अने पामी घणुं दुःखजी
सर्वे कह्युं पण नव मान्युं न जोउं कहे अेहनुं मुखजी ।३७।
अे वात श्रीजीअे सांभली केम केम करी हित विसेसजी
पदमावतीजीने कही अने तेडावी दसमे दिवसेजी ।३८।
श्रीमुखे कह्युं तुमही समजो उनके कह्ये कहा सरेगोजी
श्री गुंसाईजीको सबंध कहा अेसी धाइके कहे टरेगोजी ।३९।
तुम विनुं वे कलेश पावत हे वचन कह्या बहु पेरजी
प्रसन्न करीने पदमावतीने वलती तेडावी घेरजी ।४०।
अेवो सौजन्यता समोह जग वल्लभ वल्लभ राजेजी
आनंदनो आनंद रूप ते मथुरा मांहे बिराजेजी ।४१।
भांती भांती लीला कौतिकनी करे ते अनेक विनोदजी
को अेक समय घोडो फेरवे को समय वाहेणी मोदजी ।१४२।

को अेक समय दरशन मिस ने को समय खेलवा काजजी
अेणी पेरे बाहिर पधारी सहुना मनोरथ पूरे महाराजजी ।१४३।
हवे कहुं अेक श्री महाप्रभुअे स्थापन कीधो धर्मजी
मारग उत्कर्ष कीयो हितअर्थे जेमां छे बहु मर्मजी ।४४।
श्री गुंसाईजीअे जन्माष्टमीअे श्री गोवर्धन विजय कीधोजी
ते समय अहींया श्रीजीअे जन्माष्टमीनो निर्णय कीधोजी ।४५।
स्वमारग मतने अनुसारे स्वपक्ष स्थापन कर्योजी
जगत विदित ज्य कर्यो त्यां ने अन्य मार्ग मद हर्योजी ।४६।
अेह वात श्रीमुखे कही छे समय समय संभारेजी
अेक वेर जब श्री गुंसाईजी गोवर्धनकुं पधारेजी ।४७।
राजा टोंडरमल ओर बीरबल अपने मनके भायेजी
अेसे लोक बोहोत जन्माष्टमी उपर मथुरा आयेजी ।४८।
जन्माष्टमीकुं अकबर सब काहुकुं आज्ञा देतोजी
वहां न गयो सो हिंदु काहेको सबसुं यो करी कहेतोजी ।४९।
राजा सोइ जो धर्म प्रवर्ते अरू दे सबकुं शिक्षाजी
राजा हिते धर्म रहे अरू करे धर्मकी रक्षाजी ।५०।
जन्माष्टमी के दिनकुं बीरबल राजाके घर आयोजी
पान खात देख्यो राजाने तब यह प्रसंग चलायोजी ।५१।
वृत तो आज पान क्यों चावे कहा विचार तुम कीनोजी
हम तो करी काल जन्माष्टमी वेसो उतर दीनोजी ।५२।
तब राजाने फेर कह्यो ओर बोहोत शिक्षा दीनीजी
तुम तो हों श्री गुंसाईजीके सेवक तुम काल क्यों कीनीजी ।५३।
तब बीरबल उतर दीधो पंडित निर्णय कीधोजी
ता उपर हम कल करी हे अेसो समंत लीधोजी ।५४।
तब राजा बोल्यो उनसो अेसी कांइ कहेत हे वातजी
श्री गुंसाईजीके घर विनु समजे क्यों करी अेही भांतेजी ।५५।
श्री गुंसाईजीना घरने सबे अपवास आज क्यों कीनोजी
विनु जाने वे करत होइगे विमुखे उतर दीनोजी ।५६।
श्री गुंसाईजी इश्वर हे अरू शास्त्र पढे हे सोयजी
महा पंडित हे इनके घर विनु समजे कैसे होयजी ।५७।
अे निर्णय करवेकुं श्री गुंसाईजीके घर जइअेजी
त्यांहां सभा करीके सब मिलीअे अे निर्णय कीनो चहीअेजी ।५८।
तब बीरबलने अेसी कही बोलाओ उनकुं अबहींजी
सन्यासी प्रबोध सरस्वतीतो वहां न आवे कबहुंजी ।५९।
तब राजा टोडरमल बोल्यो आस्तिक मनके भावेजी
वे इनके घर जाय नहीं तो अे उनके क्यों आवेजी ।१६०।

तीसरे ठोर सभा कीनी कमलाकर भटने धामजी
आपु आये बेठो ओर पंडित सब बोले लेले नामजी ।१६१।
राजाने पाछे हमारे घरकुं मनुष्य पठायो न्यारोजी
सभा जन्माष्टमी निर्णयकुं करी हे त्यां पधारोजी ।६२।
महा प्रभु मर्यादा रक्षक मनमां अेह विचारेजी
ज्येष्ठ भ्रातने कह्या विना केम करी त्यां पधारेजी ।६३।
पाछे हम दादापे गये दामोदर झा बुलवायजी
ते दामोदरनुं कारण कहुं छुं सहु समुदायजी ।६४।
वैष्नवने टीलुआ कही बोलावे अेहवो सहीयजी
तेहने वाद द्वारा आकर्षण कीधुं अे वात श्रीमुखे कहीयजी ।६५।
वडनगरनो अेह ब्राह्मण अतिशे पंडित अेहजी
श्री गुंसाईजीसुं वाद करीने शरण अनुसर्यो तेहजी ।६६।
ततक्षण तेह समय थयो तेहने दिन भाव उत्पन्नजी
अन्य मत अनुसरतो आगल अेम बोल्यो विनय वचनजी ।६७।
जाण्यो नहीं में वेद समूलक आवो मार्ग समर्थजी
आज लगण आटलो काल में खोयो सहु व्यर्थजी ।६८।
वे दामोदरकुं ले हम गअे दादाके पासजी
सभा भइ हे अरू बोलत हे कही वात सब प्रकासजी ।६९।
दादा कह्यो गुंसाईजी तो नांहीं तुमारो कहा विचारजी
तब में कह्यो वहां सभा भइ हे जानो तो निरधारजी ।७०।
तब दादा अरू हम वहां गअे दामोदरझा ले संगजी
राजा सभा सहित ठाडो भयो पाछे कह्यो प्रसंगजी ।७१।
प्रबोध सरस्वती तब बोल्यो आज क्यों कीनो व्रतजी
क्यांहनी समेतने अनुसारे कोन मते सांप्रत्यजी ।७२।
तब प्रबोध सरस्वती यों बोल्यो छांडे सबकी कानजी
माधवाचर्यको मत हे सो प्रमाण या अप्रमाणजी ।७३।
श्री आचार्यजी सामर्थे झाने सन्यासी समजायोजी
जुक्त कही वहीके मतकी वाकुं उतर नायोजी ।७४।
माधवाचार्य मते कह्युं छे मातुल कन्या लेवीजी
ते को आज कां नथी करता अे समंत क्यांथी देवीजी ।७५।
ते माटे माधवाचार्य मत प्रमाण या अप्रमाणजी
शास्त्र प्रमाण बीरबल जोअे तो न थाअे तेह प्रमाणजी ।७६।
वेध्या त्यांज करे वैश्नव अे कह्या बहु वचनजी
विहाय नवमी सुध्धम पौष अे वचन धरो सहु मनजी ।७७।
उदय मांहें अष्टमी ते किंचीत नवमी सकला होअेजी
काल काष्ट्या अेवी होय ते करवी सहु कोयजी ।१७८।

अेहवे अनेक वचने जन्माष्टमी उदयातनी करी निरधारजी
सबे ध्याते ज्यंति व्रत बेहु व्यक्त करी तेणी वारजी ।१७९।
ज्यंती कामीक वृत छे नहीं अकर्णे ते प्रतिवाअेजी
जन्माष्टमी नित्य छे ते अकर्ण होअे प्रतिवाअेजी ।८०।
अेणे प्रकारे जन्माष्टमी ने ज्यंती कीधी भिन्नजी
अे कारण अे मारग विण सिध्धांत न जाणे अन्यजी ।८१।
अनेक प्रकारे अनेक देशना राजा राणो राणजी
सर्व देखता स्वरूप बले सिध्धांत कर्युं ते प्रमाणजी ।८२।
दिग्विजय कीधो ततक्षणे ने टाल्यो सहुनो गर्वजी
सेवक द्वारा अे निरूतर कीधा वादी सर्वजी ।८३।
तेहनुं कारण कहु छुं जेह मुक्षे को नहीं अे तोलेजी
योग्यता केहेनी नहीं अेहवी जे प्रभ सनमुख बोलेजी ।८४।
प्रभु तेहनी सनसुख नव बोल्या ते कारण चित धरीअेजी
भगवद पक्ष न जाणे तेहसुं संभाषण केम करीअेजी ।८५।
ते करता प्रभु धर्म सेतु राखवी धर्म मर्यादजी
सन्यासी निरूतर करवो माटे न कर्यो पोते वादजी ।८६।
वर्णाश्रम धर्मना रक्षक जे मर्यादा पति सारजी
अेवा प्रभु सन्यासीने केम खंडे सभा मंझारजी ।८७।
जो विप्र नुं मान खंडे ते अशास्त्रबध कहेवायजी
ते माटेप्रभुअे सेवक द्वारा जीती सभा सोहाअेजी ।८८।
बीजुं कारण अेह जे बीरबल आव्यो गुंसाईजीने शरणजी
सर्व देखता केम दुषे व्रत तेणे कर्युं आचरणजी ।८९।
शरणागत आव्यानी कारणे सेवकने प्रभु केम मंडेजी
अति दयाल अपराध टालवा सेवक द्वारा खंडेजी ।९०।
सेवकने सेवक द्वारा दंडे अेहवो अेहनो धर्मजी
सेवकने दंड देवाने बीजो नहीं को सामर्थजी ।९१।
अेहवे अनेक कारणे पोते बोल्या नहीं लगारजी
सेवक द्वारा अेम दिग्विजय कराव्यो तेणी वारजी ।९२।
राजा टोडरमल फूल्यो सभा मांहे अेम बोलेजी
तुम सब कोउ कहा जानो जा घर के नांहीं को तोलेजी ।९३।
अेसो कही वे सब कोउ भ्रष्ट हे धर्म कहा कोउ जानेजी
शास्त्र नित्य मर्यादासों जो गुंसाईजी प्रमाणेजी ।९४।
पाछे राजा अति संतुष्ठ थयो ने घणी अेक प्रणीपत्य कीधीजी
विनती करी वलावा आव्यो प्रभुअे मानी लीधीजी ।९५।
दंड करइ विदा थई अने वलीयो ते तेणी वारजी
प्रभुजी निज मंदिर पधार्या हवो ते जैजै कारजी ।१९६।

वलता श्री गुंसाईजी गोवर्धनथी पधार्याजी
समाचार अे सांभली अने भाव ते अनेक विचार्याजी ।१९७।
जन्माष्टमी निर्णय कीधो तेहनी कही ते पोते वातजी
तेह सुणी श्री गुंसाईजीने उलट अंग न मातजी ।९८।
मनमां मोद अनेक उपज्यो आनंद मानी लीधोजी
वलतो ते ग्रंथ करीने जन्माष्टमी निर्णय कीधोजी ।९९।
अेणे ग्रंथ बहु भ्रमणा टल्या सहु संदेहजी
स्वकीय अर्थ स्वमत सिध्धांते प्रगट कर्यो छे तेहजी ।२००।
हवे कहुं जे श्री नाथजी आव्या मथुरा मांहेजी
उत्साहे उलट भर अतिशे महाप्रभु छे त्यांहांजी ।१।
सवंत तेवीसे द्वारका पधार्या श्री विठलनाथजी
सेवा भार सहु घरनो सोंपी प्रभुने हाथजी ।२।
लीला अनेक प्रकारे प्रतिक्षणुं करे ते आनंद भेरजी
मथुरामां परोणा पधार्या श्री गुंसाईजीने घेरजी ।३।
बे मास अेकवीस दिवस अहीं रह्या तेणी वारजी
जेहनुं कारण कांइ अेक कहुं छुं ते करी विस्तारजी ।४।
श्री गुंसाईजी द्वारिका पधार्या अहींया घरना सहु काजजी
आचार्य कृत सेवा मारग रक्षक श्री महाराजजी ।५।
तेणे कारणे श्री महाप्रभु श्रीद्वार थोडुं आवेजी
श्रीनाथजीने परम प्रिय वल्लभ विनुं कांइ न भावेजी ।६।
नित्य रमणीय महा नायक मलवानी करी आशजी
अनिरवचन रसभर आतुर आव्या अेहोने पासजी ।७।
को कहेशे आतुर थइआव्या तेहनुं शुं निरमाणजी
तेहना समाधानने कहुं छुं करवा अेह प्रमाणजी ।८।
श्री नाथजी पधार्यानी श्री गुंसाईजीने गइ वधाइजी
त्यारे तेहवुं वधायाने पूछयुं अतिशय मन भाईजी ।९।
श्रीनाथजी केसे पधारे को निमित करीयजी
कछु भय हे भय तो कांइ छे नथी आव्या इच्छा धरीजी ।१०।
त्यारे श्री गुंसाईजी मोद भर्या अतिशय मुसकायजी
हां हां हुं जानत हुं श्री वल्लभके लीये आयाजी ।११।
अेह वचन श्री गुंसाईजीनुं ते प्रमाण करवा अर्थजी
अे प्रकार श्री गुंसाईजी जाणे अनुभवने सामर्थजी ।१२।
अेह वारता श्रीमुखे पोते कही छे श्री महाराजजी
तेमां कारण छे बहु पेरना समजे स्वकीय समाजजी ।१३।
डर अरू भय कछु नाहीं पहेले सुनी न वातजी
श्री नाथजी हमारे घर आये हे अकसमातजी ।२१४।

हम तो तब भीतर हुते दादा सनमुख जाय ले आयेजी
पीछवारेकी भीत फोरीके मंदिरमें पधरायेजी ।२१५।
मास अढी इहां रहे वे सुखको नहीं पारजी
उदय अस्त जान्यो नाहीं काहु अेसो भयो प्रकारजी ।१६।
श्री गुंसाईजीने पत्र पठायो कछु संकोचजी न कर्योजी
तुम ते होय आवे जो कछु करनो होइ सो करीयोजी ।१७।
अे त्रण वचन श्रीजीअे प्रगट कर्या तेहनो कहुं छुं भावजी
उग्यो आथम्यो जान्यो नहीं अे मांहे स्वकीयनो चावजी ।१८।
हितनो धर्म असाधारण ते तदैक्यताअे कहीअेजी
पोताना प्रभुनी साथे करवुं अेणी भांते रहीअेजी ।१९।
श्री गुंसाईजीअे अेम लख्युं संकोच मति करो अहींयजी
अेह वचन श्रीजीने तो श्री गुंसाईजी लखे नहीं कहींयजी ।२०।
अे स्वरूपने पोते तो जाणे छे रूडी पेरजी
जे कोउ व्याशक्त होअे लखीये अेणी पेरजी ।२१।
जेहोने हाथ वउचार हतो तेहने लख्युं अेणीपेरजी
श्री वल्लभ तो उत्साह घणो करसे अति आनंद भेरजी ।२२।
तेमां को प्रतिबंध भेदनो करशे जे लवलेशजी
श्री वल्लभ मनमांहे धरशे परम कलेशजी ।२३।
अे कारण माटे तेहोने अेम लखी श्री गुंसाईजीअे शिक्षाजी
श्री महाप्रभुजीना हित मनोरथनी अेहोने रहे अपेक्षाजी ।२४।
वली कहुं जे करनो होय सो कर्यो सोय जी
तेह लख्युं महाप्रभुने ते नव समजे कोइजी ।२५।
मार्ग प्रणीत सेवा भजन परत्व भाव प्रगट कर्या अेहजी
श्री गुंसाईजीअे पोताना प्रागट्य प्रमाणे तेहजी ।२६।
अेह अनुग्रह बलथी प्रीछे गोप्य कह्युं न जायजी
विजाती तेणे संकोच लेखन विसद न थायजी ।२७।
श्री नाथजीना भांती भांतीना मनोरथ पूरे सारजी
थया नित्य नित्य नौतन भोग रागसुं करे छे अनेक प्रकारजी ।२८।
परोणाचार करी संतुष्टया ते सहु मानी लीधाजी
मनगमताने मंदिर आवी मनोरथ पूरण कीधाजी ।२९।
जे भावे पधार्या तेथी कोटी गणा रस फलीयाजी
बहु प्रकार करी प्रेमे भर्या अेहवी रसनी रलीयाजी ।३०।
अनेक प्रकार अनुपम छे पण ते कांइ लख्या न जायजी
अनिरवचन अलेखी कारण केम करी कहेवायजी ।३१।
वलता विदाय थया वैशाख चतुर्दशीने दिनजी
आनंद ने आरत जुत थई पधार्या गोवरधनजी ।२३२।

तेह समय जे परस्परनो रस विसद करे जेह वारजी
कहेवा शक्य नहीं त्यां केहेनी केम थाअे विस्तारजी ।२३३।
अेह विदाय द्वारा श्रीजीअे नीरहेतुक जे स्नेहजी
वसुधा मांहे विसद कीधो जे सबंध प्रेमनो अेहजी ।३४।
वलतां श्री गुंसाईजी द्वारकाथी पधार्या ज्यारेजी
पिता पुत्र अेकांत मोदसुं कही वारता त्यारेजी ।३५।
सेवा नित्य लीला सबंधी रस अनुभवनी जेहजी
श्री गुंसाईजी आगल अति रसमय थई अेहजी ।३६।
अेणे प्रकारे अनेक भांतनी लीला कहीअ न जायजी
यद्यपि बुध्धि नहीं पण आगल कहेवा मनोरथ थायजी ।३७।
विवाह श्री महाप्रभु तणो अहीं हवो तेहनी पेरजी
तेह विसद करी छाया मात्रे कहीश उलट भेरजी ।२३८।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्‌भुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित प्रथम तरंग
मथुरा प्रवेश लीला वर्णनो नाम
।। मांगल्य २२ मुं संपूर्णम् ।।

मांगल्य - २३ - त्रेवीसमुं विवाह उत्सव तरंग - १

"पीयुजी मुजने सासरीयुं व्हालुं, तो वेगे तेडा मोकलोअे" अेम गवाशे।

स्वकीय सुजाति समाज राज राजेश्वर जे वर्या अे
स्वमुख हिते रसकाज रसे जे अंगी कर्याअे ।१।
अेतनमारगी साथ निजनाथने भावताअे
भाव भर्या बहु प्रेमसुं अे रूची उपजावताअे ।२।
जेहने वस रसिकवर राय रसवस विलसे सदाअे
गूढ गोपनीय रसमांहे सुखद समे अेतदाअे ।३।
प्रिय उपयोगी अनूप उतमथी उतम घणुंअे
अल्प बुध्धि क्यांहां लगीअे वर्णन करूं तेह तणुं अे ।४।
स्वरूप अपेक्षित रस ते रसे भर्या पात्र छे अे
तेहने करूं छुं प्रणाम जेहमां हित मात्र छे अे ।५।
अेहना चरण जुग वंदी आनंदी उरमां धरूं अे
अतिसय महा सारनुं सार तेहनो उद्यम करूं अे ।६।
नमन करी नवनाहो नवकुंवरने गाइअे अे
प्रतिक्षणुं नवल किशोर नव रसिक उमाहीअे ।७।
श्री गोकुल केरो नाथ सहु साथने मन वसेअे
गुण निधि नागर निपुण जोइ उर हुल्लसे अे ।८।
सुंदरतानो निधान समान रूप को नहीं अे
कोटी काम मद हरण सराहुं हुं शुं कही अे ।९।
महा नवजोबननो दाम सहु काम पूरण करे अे
वामा तणो वसीकरण दुःख हरण आरत हरे अे ।१०।
प्रेमदानुं प्राण संपन्न जीवन जुवती तणो अे
सुंदरी सकल आभरण रस भरण मोह्यामणोअे ।११।
नायका नयण उत्सव महा नायक रस भर्या अे
नित्य प्रति नव रस जुक्त जेणे रस अंगी कर्यो अे ।१२।
नित्य दुलह वर वेश सुदेश सोह्यामणो अे
अेह तणो कहुं छुं विवाह उलट मन अति घणो अे ।१३।
स्व स्वरूप जनित सुख मात्र सदपात्र मोदे भर्या अे
मांगल्य अनेक प्रकारे आगमनने मंगल कर्या अे ।१४।
ते कहेवा उलट भर भरित मन रहे छे ते मारूं अे
बुध्धि तणे अनुरोध वचने न आवे वाहारू अे ।१५।
जेहवुं छे तेहवुं न कहेवाय तेणेथी लाजी रह्युंअे
कह्या विना न रहेवाय ते समय सूचन कहुं अे ।१६।

संवत सोल चोवीसे महा सारनुं सार छे अे
अषाड वदी दिन बीज ने गुरूवार छे अे ।१७।
उदय घटी अेक दिन चढे मिथुन लग्न धर्युं अे
शुभ वेळा शुभ तणा समयनुं भाग्य पूरण कर्युं अे ।१८।
धन्य धन्य धन्य जोग धन्य समय उतम लह्यो अे
महाभाग्यरास पार्वतीजीयनो कर ग्रह्यो अे ।१९।
अे महा लीला तणो विस्तार कहुं बुध्धीने अनुसरीअे
भगवदीय रस पात्र सांभळजो प्रेमे करीअे ।२०।
श्री गुंसाईजीना मनमां अतिसे उलट घणोअे
श्री वल्लभ वरमां ते विवाह कीधा तणोअे ।२१।
स्नेह भरे अहो रात्र आरत मनमां रहे अे
स्वजन कुटुंब परिवार विचार सहुने कहे अे ।२२।
अेवी कन्या को भाग्यवान प्रभु जोग्यता सुंदर जुअे अे
मिले नहीं कारण मइ तेणेथी विलंब होअे अे ।२३।
अेह विलंबनी बात पोते श्रीमुखे कही अे
समय समय सनमुखे महा भाग्यवाने लहीअे ।२४।
मेरे विवाहकुं कन्या अेक मिली सो सुंदर नाहीं अे
श्री गुंसाईजी शोभाजीके आइ नांहीं मन मांहीं अे ।२५।
अेक मिली सो कारण कछु पयाकुं गमी नहीं अे
श्री वल्लभ अति सकुमार न करीअे अेसी कहीअे ।२६।
दूसरी मिली सो प्रगल्भा अेक थे योंहीं रहीअे
ताते भयो विवाहकुं विलंब श्रीमुखे अेम कहीअे ।२७।
अेम हवो जे विलंब अे तेह विसद कहुं अे
कारण अनेक अगाध पण कहुं छुं जेहवुं लहुं अे ।२८।
कन्याथी द्विगुण वर होअे अे शास्त्रनी रीत छे अे
ते सहु प्रभुअे करी जे मर्यादानी नीत छे अे ।२९।
श्रीमुखे कही छे अे वात कन्या द्विगणो वर भलोअे
शास्त्र सिध्धांते जेसो कह्यो तेसो हमारे मिल्यो अे ।३०।
आठ वरसनी कन्या ने श्री प्रभु सोल वरसना अे
अेणे कारणे हवो ते विलंब मनोरथ पूर्या हरखना अे ।३१।
बीजुं कारण कहुं विलंबनुं जे मांहां विस्तार छे अे
पुष्ट तणुं महा पुष्ट ने सारनुं सार छे अे ।३२।
मुक्ष रस छे जे श्रींगार ते प्रभुअे अंगी कर्यो अे
तेहना भोक्ता महाप्रभु अने प्रभुने अनुसर्यो अे ।३३।
ते मांहे प्रछन्न प्रकार स्वकीया परकीया तणो अे
प्रछन्न परकीया जेह ते मांहे छे रस घणो अे ।३४।

तेहनो अनुभव कर्यो प्रथम जे रस छे प्रछन्ननो अे
परकीयानो प्रेम पूरी मनोरथ मन तणो अे ।३५।
वलतो सृंगार प्रकास ते आश ज्यारे करी अे
स्वकीयाना रस केरे स्वाद ते प्रभुअे मनमां धरीअे ।३६।
सिध्ध थयुं सर्व सांप्रत्य मनवृत ज्यारे हवी अे
आगमने आवी रही सामग्री ते अनुभवी रे ।३७।
तेणे समय वेणोभट देवरखीया देवरखे थकी अे
करवा मथुरामां वास ने आस अेहवी तकीअे ।३८।
त्रट यमुनाजीनुं निकट गुंसाईजी जाणीने अे
अे स्थले करवा निवास मन आस आणीने अे ।३९।
अेहो घेर कन्या रूपवती महा अति सकुमार छे अे
सुंदर गुण शोभा सकलनो अे आधार छे अे ।४०।
सौभाग्य शिरोमणी सर्वदा पूरक काम छे अे
पारवतीजीय अेहवुं शुभ नाम छे अे ।४१।
अेहवा जोइ मन आनंदीया सहु कोइ अे
अेह कन्या अति योग्य उपयोग अे वरने होय अे ।४२।
वेणोभट करे छे विचार कन्या हुं केहने आपुं अे
अेहवो को भूतल नहीं जे को वरे अेहने अे ।४३।
तेहवे विठल कुमार सकुमार सोह्यामणो अे
सकल गुणार्णव सुखद जे जगत मोह्यामणो अे ।४४।
रोम रोम रूप रसधार अपार वरसे घणीअे
उपमा कहेवा नहीं कोय अेहवो जे श्री गोकुल घणीअे ।४५।
जेणे समय वेणे भटे दीठा मीठा लाग्या अति घणुंअे
मन मांहे हरख न माय कहेवाये न तेह तणुअे ।४६।
अे कन्या अेहो उपयोग संयोग जो अे मिले अे
अेहवुं जो करे जगदीश पयमां मिश्री मलेअे ।४७।
मनोरथना बहु साजनुं कारण पूरण सरे अे
कुटुंब सहित मनमांहे अेणी पेरे आरत करे अे ।४८।
करीअे कहे कोण उपाय जो अे वर पामीअे अे
जन्म कृतार्थ थाय ने सहु दुःख वामीअे ।४९।
मली अने सहु परिवार विचार अेहवो कर्योअे
तेडी गोविंदभटने कहीअे संमत मनमां धर्योअे ।५०।
शुभ दिने जोइ सहु मलीआ गोविंदभट तेडावीयाअे
आदरे करी सनमान सनमुख ते बेसाडीयाअे ।५१।
विनय वचन बहु करी अने विनती करीअे
भटजी तमने अेक कहुं सांभलजो चित धरीअे ।५२।

तमो बडा श्रेष्टमां श्रेष्ट वरेष्ट छो अम तणाअे
परउपकार करी अे गुण हुं केम कहुं तम तणाअे ।५३।
बांधव मित्र अमारा गुंसाईजीसुं गम्य घणीअे
तमथी मनोरथ थाअे आस पूरो अम तणीअे ।५४।
अेह हमारूं काज ते आज तमथी थशे अे
अमने तमारो विश्वास निश्चे मनमां वसे अे ।५५।
अेवुं कही भटजीने खोले कन्याजी बेसाडीयाअे
श्री विठल सुत तणे काज अेम कही देखाडीयाअे ।५६।
श्री वल्लभ केरडे अर्थ आपुं छुं हुं तमने अे
प्रणपति करी कह्युं बहु कृपा करो अमने अे ।५७।
गोविंदभट सत्य वचनसुं प्रणाम कर्या सहीअे
अवश्य हुं करूं निरधार श्री गुंसाईजीने कहीअे ।५८।
अेम कही करी समाधान सनमाने घेर आवीयाअे
वेणोभट थया ते प्रसन्न अे सुणी मन भावीयाअे ।५९।
गोविंद भटे मनमांहां धरी वात विनती तणीअे
आव्या श्री गुंसाईजीनी पास आस उरमां घणीअे ।६०।
वेणाभट वरतांत कह्यां जे जे कहावीया अे
श्री गुंसाईजीअे सुणी शोभाजी तेडावीयाअे ।६१।
कह्युं करी अति मनुहार विचार अेवो कर्यो अे
गोविंदभट कहे जे वात ते तमो चितमां धरोअे ।६२।
ते सुणी शोभाजी मोद प्रमोद उलट भर्या अे
बोल्या करी वचन विवेक अनेक त्यांहां कर्या अे ।६३।
सगा उतम कुल उतम उतम घर जेहनुं अे
गाम उतम कन्या उतम हुं शुं कहुं तेहनुं अे ।६४।
शोभाजीअे समजाव्या श्री गुंसाईजीने अेम कहीअे
गोविंदमामा जे करे छे ते विलंब करीअे नहीं अे ।६५।
त्यारे श्री गुंसाईजी विचारीने मनमां सुख लह्युं अे
कन्या देखुं मेरी द्रस्टी गोविंदभट ने अेम कह्युं अे ।६६।
वलता कन्याजी ते घेर पोताने तेडावीयाअे
चंदनी ब्राह्मणी ते खेलावे तेहनी साथे आवीयाअे ।६७।
श्री गुंसाईजी तो निरखी हरख्या मन मांहां घणुअे
गुण शील लक्षण रूप दीठुं ते सोह्यामणुअे ।६८।
निश्चय उपज्युं मनमां करीअे विवाह अे सहीअे
श्री वल्लभ उपयोग अेवी को बीजी नहीं अे ।६९।
हरखी मस्तके धर्यो हाथ सहु साथ मन भावीयाअे
गोद भरी आपी प्रसाद ने घेर वळावीयाअे ।७०।

अेक समय जोतसी महा जाण सुजाण आव्यो ज्यांहां अे
वेणाभट घेर बहु पेर करे कुंवरी कौतुक त्यांहां अे ।७१।
सील सुभाव आकृती ने रूप लक्षण कह्युं अे
अेह कारण रूप जोइने जोतसीअे त्यां अेम कह्युं अे ।७२।
अेह तणुं भाग्य प्रमाण निर्माण थाअे नांहीं अे
बुध्धी तणे अनुसार समजाव्युं कांइ अेक कही अे ।७३।
कुंवरी महाभाग्यवान निदान अेहवी हसे अे
सवा मण उठसे लूण तेहो घेर विहवा थशे अे ।७४।
अेह वारता प्रसंगात प्रभु प्रति केणे कहीअे
हां हां है सत्य पे इहांतो कछु प्रमाण रह्यो नांहीं अे ।७५।
अेहवी अे भाग्यवती पारवती बहु तणुं अे
श्री गुंसाईजीअे तेज सौभाग्य दीठुं घणुं अे ।७६।
वलतुं श्री गुंसाईजीअे प्रथम वेणाभटने कहावीयुं अे
कन्याना जन्मनुं पत्र ते वेगे मंगावीयुं अे ।७७।
वेणोभट ते थया प्रसन्न मनमां अति हुलसे अे
जगत मंगल जगदीश वांछित अमारूं थशे अे ।७८।
जन्म पत्रीना ग्रह सर्व जो जोग उतम मले अे
थाअे सहु काज संपन्न मनोरथ मारा फले अे ।७९।
श्री वल्लभ आवे मारे घेर अेम कहे आप स्वार्थेअे
अेम कही कही वेणोभट जगदीशने प्रारथे अे ।८०।
श्री गुंसाईजी गोविंदभट शोभाजी आदे देइअे
स्वजन कुटुंब परिवार तेडया त्यां सहु कोइ अे ।८१।
मंगल काज विचारी ते अनेक आदर फरी अे
जोशीजी तेडावीआ वेग अतिशे उलट भरी अे ।८२।
जइ जोशीजीने घेर बहु पेर ज्यांहां धाम छे अे
कह्युं श्री गुंसाईजी परिवारसुं बेठा त्यां काम छे अे ।८३।
श्री वल्लभना विवाहने जोवा जन्मोतरी अे
तमने तेडया छे जी वेग अतिसय उलट भरी अे ।८४।
अेह सुणी जोतसी फूल्या मनमां घणुं हरखीया अे
हरख अंग न समाय हरखांसु वरखीया अे ।८५।
धन्य जन्म मारो आज व्रजराजे तेडावीयो अे
अेम कही अतिसे आनंदी जोतसी त्यां आवीयो अे ।८६।
श्री गुंसाईजीअे करी सनमान लेइनाम जोसी तणुं अे
पंडया रघुनाथ पधारो कही मान दीधुं घणुं अे ।८७।
सनमुखे निकट बेसाडी प्रहसित मुखे बोलीया अे
जन्मपत्री आपी हाथ अंतरपट खोलीया अे ।८८।

आदीथी प्रांत वृतांत कही अतिशे हरखीया अे
गादीथी श्री गुंसाईजी जोसी भणी सनमुख सरकीया अे ।८९।
निकट बेसी कह्युं अेह समजी चित धारीके अे
मिलत हे उतम जोग सब देखो विचारीके अे ।९०।
जोशीजी श्री गुंसाईजीने दंडवत करी अने अे
जोइ मनमां विचारी बोल्यो चित धरीयने अे ।९१।
सुणीअेश्री महाराज अे जोग उतम घणुं अे
क्यांहां लगी विसद कहेवाय ते कारण अेह तणुं अे ।९२।
वरस ग्रह मैत्री बहु पेर मले छे विशे विशाअे
अद्‌भुत अेह संजोग प्रतिक्षणु चढती दिशाअे ।९३।
प्रथुक करी प्रगट समजाव्या जेम ग्रहनो विस्तार छे अे
मल्यो अे तो मलता विशेकना जे अनेक प्रकार छे अे ।९४।
सांभली सहु को अे त्यां मनमांहां आनंदीया अे
हरखे श्री गुंसाईजीना चरण शुभ करण लेइ वंदीया अे ।९५।
वलता श्री गुंसाईजीअे पंडयो वेणाभट घेर मोकल्या अे
जे कहो जन्म अक्षर उतमथी उतम मल्या अे ।९६।
अेह विवाह निरधार निश्चय ते करवो सही अे
श्री गुंसाईजीअे सत्य वचन कहाव्युं ते अेहवुं कही अे ।९७।
जोतसी त्यां जइ अने वेणाभटने कह्युं अे
सर्व मिलाप उतम मल्यो छे मनमां लह्युं अे ।९८।
लग्न विचारी पठवशे पाछल थकी शुभ दिने अे
वेणोभट अेह सुणी रीझया ते पोते मने अे ।९९।
विनती कहावी कर जोड कोड करी घणी घणी अे
विवेक करी वृतांत कही गुंसाईजी भणी अे ।१००।
ज्यारे कहेवरावसो राज शुभ काज त्यारे थाशे अे
श्री गुंसाईजीअे कह्युं जे अे अमारडे मन वशे अे ।१।
तेह आवीने जोतसीअे श्री गुंसाईजीने कह्युं सहु अे
वलतो जोतसी ते विदा कर्यो आपी उचित बहु अे ।२।
वेगा वलजो निरधार जे वार संभारीअे अे
शुभ दिने मली तुम साथ शुभ मुहुरत विचारीअे अे ।३।
आव्युं श्री गुंसाईजीने मन ज्यारे लग्न लखवा तणुं अे
पंडयो तेडावीओ वेगे आव्या ते हरखे घणुं अे ।४।
निकट तेडी देइ मान सानीधान बेसाडीया अे
वचन विवेक बहु भांत आनंद पमाडीया अे ।५।
आगल मंगल काजने साज सहु आणीया अे
गंधाक्षत कुमकुम आदी जे जे वली जाणीया अे ।१०६।

लिखण मिसाणी कागल लेइ आगल राखीया अे
श्री गुंसाईजीअे तेह समय वचन शुभ भाखीया अे ।१०७।
कोण मासे कोण दिवसे कोण वेला लग्न हशे अे
अेह सुणी सेवा उपयोग सहु जोग निकट वसे अे ।८।
प्रथम पंडये खडीसुं लेइ लग्न विचारीयुं अे
शुध्ध करी अने शुभ पत्रे ते सर्व उतारीयुं अे ।९।
मुक्ष लख्युं मंगल निधी ज्यति गोकुलपती शुभ करी अे
पछी लखे लग्ननो समय आशीष देइ मन धरी अे ।१०।
स्वस्ति श्री ज्यो मंगल अर्थ सकल शुभ नामना अे
जेहनी अेह विवाह पत्री छे तेहनी पूरो कामना अे ।११।
उलट भरसुं अंतरंग ते आशीष देइ देइ अे
संवछरादि लखे छे ते प्रहसित थई थई अे ।१२।
संवत सोल चोवीसे मंगल प्रद सार छे अे
अषाढ मासे कृष्ण पक्षे द्वितीया गुरूवार छे अे ।१३।
नक्षत्र जोग करण अेम शुध्ध पंचांग छे अे
अे दिवसे ते बीजा शुभ योग सर्वांग छे अे ।१४।
दिवा लग्न उदीयात घडी अेक केरे समय अे
मिथुन लग्न निरधार्युं ते सहु केने गमय अे ।१५।
भक्त जीवन श्री वल्लभ रासे बल ते सूरज तणुं अे
कन्या रासे छे ब्रहस्पति तणुं बल ते घणुं घणुं अे ।१६।
उभय वर वधुअ विवाह लग्न ते शुभ संभवे अे
अेम लग्न लख्युं सुखकंद आनंद थयो नवनवे अे ।१७।
वलता विवाह आरंभना सहु बहु साजना अे
मुहुरत लख्या ते अनेक समय समयना काजना अे ।१८।
अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तीथे आ करीअे अे
अमुक वेला सर्वांग शुभ अमुक मुहुरत धरीअे अे ।१९।
हलदी खांडयानुं गान आरंभी माटी मांगल्य घणुं अे
सिंहासन मंडप ढोलक अने वडी देवा तणुं अे ।२०।
बेटी मांग्या तणुं बांधणुं बीजवापन तणुं अे
वस्त्र अलंकृत चित्र कुलदेव स्थापन तणुं अे ।२१।
कढाइ पकवान आरंभना निश्चे तांबोलना अे
आगमने ते अेहवा लख्या अनेक रंग रोलना अे ।२२।
विवाह अनंतर नागवली स्वग्रह प्रवेशना अे
मंडप वासना गंगा पूजन पर्यंते सुदेशना अे ।२३।
अेणी पेरे श्री वल्लभ तणुं लग्न लख्युं सही अे
पंडये कुमकुम चरची संभलाव्युं सनमुख थई अे ।१२४।

महेली मांहे मंगल द्रव्य हलदी ने अक्षत धरी अे
आप्युं श्री गुंसाईजीने हाथ पंडये ते उलट भरी अे ।१२५।
श्री गुंसाईजीअे लेइ हृदये देइ चांपीयुं अे
वलतुं जोतसीअे गोविंदभटने कर आपीयुं अे ।२६।
वेणाभटने घेर जइअे लग्न शुभ वांचजो अे
सर्व प्रकार विसद कही अने वेला आवजो अे ।२७।
वेणाभट आप मन प्रसन्न थया घणुं अे
आपो श्री गुंसाईजीने हाथ कह्युं थयुं मारा मनतणुं अे ।२८।
आवी श्री गुंसाईजीना करमां आप्युं शुभ पत्र जे अे
रीझया मनमां घणुं आप ने सर्वत्र ते अे ।२९।
बीडां आपी कर मांहें ने तिलक सहुने कर्या अे
वलीया आपापणे घेर बहु पेर उलट भर्या अे ।३०।
जोतसीने कर्युं तिलक बीडुं दक्षिणा लेइ अे
आव्यो पोते घर भणी घणी घणी आशीष देइअे ।३१।
मांगल्य काजने वस्त्र सामग्री जे सिध्ध करे अे
आगल कहुं ते विस्तार जे जे भंडारे भरे अे ।१३२।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्‌भुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित
मथुरा लीला विवाह वर्णने निश्चय नाम
प्रागट्य सिध्धांत लीला वर्णननो नाम
।। प्रथम तरंग समाप्तम् ।।

तरंग बीजो, मांगल्य – २३

" मागशीर मास महा बडभागीजी, तेमाते सुदी सातम अनुरागीजी " अेम गवाशे

अेणी पेरे लग्न लख्युं सुखसारजी मनमांहे उलटनो नहीं पारजी ।१।
आगल कृमथी उचित दिवसेजी मुहुरत साधे छे हित विवसेजी ।२।
प्रथम जे कुल केरा आचारजी कीधा मांगल्य साज सृंगारजी ।३।
पद्मावतीजी वरनी माताजी बेन यमुनाजी अति सुख दाताजी ।४।
मामी गंगा अति गुण भरीजी मासी गोपदेवी हित धरीजी ।५।
अे चारे जण मांगल्य मांडेजी गान करता हलदी खांडेजी ।६।
वारंण स्कल ज्ञातनी स्त्रीनेजी तेडी लावे छे अति प्रीतेजी ।७।
ते हलदी खांडे सहु मलीजी गान करे छे मननी रळीजी ।८।
तेणे समय ते सोहासणीजी वारेण ने वली अहीरणीअजी ।९।
तेहोने शुभ सृंगार करावीजी काजल टीकी मांग भरावीजी ।१०।
अेम करी सहु अे सांप्रत्य सीधुंजी मुहुरत माटी मांगल्यनुं कीधुं जी ।११।
पठव्या माटी लेवा काजजी पांच सोहासणी लेइ सहु साजजी ।१२।
अक्षाणामां अक्षत भरीजी मध्ये कुमकुम सिंदूर धरीजी ।१३।
जल गडुओ भरी लीधो साथजी टोकरी चार सोहासणी हाथजी ।१४।
चाल्या वल्लभ वरने गाताजी उलट भर अतिशे रंग राताजी ।१५।
त्यांहां जइ अने सामग्री धरीजी जल सींचन करी पूजा करीजी ।१६।
पांच डेली थालीमां धरीजी मृतिका चार टोकरी भरीजी ।१७।
फरी आव्या करता सहु गानजी कुल देवता महा भाग्यवानजी ।१८।
तेहनी आगल राखी थालीजी मांगल्य काज करे ते रसालीजी ।१९।
ते माटी मुहुरतमां लीधी जी सिंहासन चोतरी त्यां कीधीजी ।२०।
कुटुंब ज्ञातिना स्त्रीजन सहुजी मांगल्य गान करे छे बहुजी ।२१।
छाबडी मध्ये गोबर धरीजी कुलाचार मंगल हित करीजी ।२२।
त्यांहां वडी दे छे महा बडभागीजी गान करे छे अति अनुरागीजी ।२३।
सुंदर ढोल ढोलका बाजेजी बीजा वाजा भिन राजेजी ।२४।
ज्ञात मांहें सहुकेने घेरजी वांटे गनोडा उलट भेरजी ।२५।
पछी श्री गुंसाईजी उलट भर्याजी भीतर भवनमां परवर्याजी ।२६।
पूछयुं विवाह केरे काजजी शुं शुं अणावुं मंगल साजजी ।२७।
ते सहु पोते लखे छे हस्तजी भीतरथी कहे जे जे वस्तुजी ।२८।
प्रथम हलदी कुमकुम शुभ कर्णजी नाडाछडीने वस्त्र आभरणजी ।२९।
जावदीक लख्युं त्यांहां सर्वजी ते सौभाग्य सूचक द्रव्यजी ।३०।
पत्रनी कुमकुमे पूजा करीजी बाहेर आव्या श्री गुंसाईजी फरीजी ।३१।
वलता चांपोभाई तेडाव्याजी वेगा थई उलटभर आव्याजी ।३२।
तेहने श्री गुंसाईजी पूछेजी भंडारे सिध्ध सामग्री सी छे जी ।३३।

नहीं ते अणावो वेगे करीजी	सहु भंडारे राखो भरीजी	।३४।
सोवर्ण कुंदण रूपा तणुंजी	आभूषणने काज छे घणुंजी	।३५।
हीरा माणेक मोती जवेरजी	पन्ना चुन्नी लो बहु पेरजी	।३६।
देश देशना वस्त्र अनेकजी	आण्या जोइअे करी विवेकजी	।३७।
तेणे समय सहु संभलाव्युंजी	वेगा वेगा जोइअे आव्युं जी	।३८।
अे आवेथी चाले काजजी	भूषण वस्त्र तणा जे साजजी	।३९।
अे करतां अमे ने तमे जाणोजी	उचित होय ते ते सहु आणोजी	।४०।
अेम कही पत्र गुंसाईजीने आप्युंजी	शीष चढावी ने उरसुं चांप्युं जी	।४१।
नमन करी कह्युं महाराजजी	जे कांइ भंडारे छे सहु साजजी	।४२।
बाकी अणावुं मनमां धरीजी	सामग्री सहु वेगे करीजी	।४३।
त्यारे श्री गुंसाईजी बोल्या अेहवुं जी	जे तमने तो शुं कहेवुंजी	।४४।
पण अे श्री वल्लभनो विवाहजी	अद्‌भुत छे अेहनो उत्साहजी	।४५।
संकोच न करसो को भांत्यजी	उतम आणो सहु करी खांतजी	।४६।
अेम बोल्या श्री गुंसाईजी बोलजी	लावो अति सुंदर बहु मोलजी	।४७।
दंडवत करी करी वल्या तेणी वारजी	आवी ने कर्यो सर्व विचारजी	।४८।
कण घृत चावल खांड नहीं पारजी	मिश्री आदी भर्या भंडारजी	।४९।
वस्त्र सामग्री जवेर लीजेजी	अे वेगे थई कारज कीजेजी	।५०।
मंगल काज मिठाई मेवाजी	घणी घणी भांतना बहु लेवाजी	।५१।
लाव्याना अनेक विचार विचार्याजी	चांपोभाई आगरे पधार्याजी	।५२।
जइने बेठा त्यां निज घेरजी	वस्त्र अणाव्या नाना पेरजी	।५३।
देश देशना ने बहु जातजी	स्वेत ने रंग रंग नाना भांतजी	।५४।
कहेता तेहनो पार न लहीयेजी	कांइ अेक नाम विसद करी कहीअेजी	।५५।
अतलस लीधी उतम जोइजी	तेहनी पटंतर नावे कोइजी	।५६।
सादा रंगनी ने पटा दारजी	ते मांहें कसबी ने जरतारजी	।५७।
कलंगी बुलबुल चशमा विलातीजी	शीती चुनडीआ अति रातिजी	।५८।
नीली छींटने वीर बोहोटीआजी	बांधणुं शोभित ने पापडीआजी	।५९।
छापी सोने रूपे भारीजी	को सादी ने को हलकारीजी	।६०।
सुंदर रंग रंग नाना भांत्यजी	तेनी क्यां लगी कहीअे जातजी	।६१।
लाहे ते लीधी बहु गर्थ आपीजी	सादी बांधणुं ने वली छापीजी	।६२।
टुकडी विलायती ने जेमलाइजी	साहेली तासता ने दरीआजी	।६३।
मिसरू इलायचा ते बहु भांतजी	देश देशना रंग सुजातजी	।६४।
साडी करणाटक चित्रकारीजी	दक्षिणी वणावट अतिसे भारीजी	।६५।
पातल उतम अमदावादीजी	सूरतनी वेणीआ सादीजी	।६६।
ने मांहे रंग रंग कह्या न जायजी	देखी सहु को अेह सहरायजी	।६७।
पटोला पाटणना साराजी	बंधालक लीधा ते न्याराजी	।६८।
पीतांबर सुंदर बहु जातीजी	घाट घाटडी जे खंभातीजी	।६९।

साडी रेसमी छापेल बहुजी	लीधी राजनगर अने सहुजी	।७०।
साडी बनारसनी अति घणीजी	मांहें सुपेत कसीदा तणीजी	।७१।
लीधा वस्त्र कसुंबी धणांजी	नाम क्यां लगी कहुं ते तणाजी	।७२।
चुनडी घाट अने घरचोलाजी	अति सुंदर गेहेरे रंग बोल्याजी	।७३।
छापा रूपे कोइ सुनेरीजी	को सादा को भांत अनेरीजी	।७४।
सालु लाल ने छींट जेपूरनीजी	जात जातनी तापी पूरनीजी	।७५।
छींट जामशाही ने मोरबीनीजी	बांधणुं ते रहेवार छबीनीजी	।७६।
छींट सीरोही ने सीरंधीजी	करणाटकनी लीधी संधीजी	।७७।
छींट मछलीपटणनी जेहजी	चादर चोरसा लीधा तेहजी	।७८।
खासा मलमल तनसुख अेकताराजी	सेला ने श्री साफ लीधा न्याराजी	।७९।
बहादुरी सांभली ने दुदामीजी	गंगाजल पंचतोलीआ बहु नामीजी	।८०।
जुना उपरेणा मालदाइजी	पटुका भांत कहीअ न जायजी	।८१।
बासता भरूची महा सुजातीजी	माछलीवाडा नाना भांतीजी	।८२।
अमृती शमाणाना चौतारजी	नहीं को ते तणी अनुहारजी	।८३।
भेख सुखांबर ने महेमुंदीजी	टुकडो अतिशे कीधो कुंदीजी	।८४।
पाग ते कसबी तणी गुजरातीजी	कोचको सादी ने रंग रातीजी	।८५।
पटुका लीधा कसब भरीनाजी	तास विलाती ने हजरीनाजी	।८६।
मंस जरजरी अने जे दुमांसजी	नीलक सार कीर कीरी कुमासजी	।८७।
पामरी बहु रंगनी कसमेरीजी	जरी अने छापी लीधी धणेरीजी	।८८।
पटु सुफ अने सफतालजी	लाव्या जेपूर तकाल विलातजी	।८९।
मकमल जरबफ ने जरतारीजी	कफैअ कतीफो आण्या तारीजी	।९०।
ते मांहे अनेक रंग बहु भांतीजी	को गुजरात ने कोअे विलातीजी	।९१।
हमरू सादा कफैना जुलीचाजी	जरी अने उनना लीधा उंचाजी	।९२।
वस्त्र ते लीधा मननी फूलजी	देश देश रंग रंग बहु मोलजी	।९३।
ते सहु विसद क्यांथी थायजी	अगणित गिणना गिणी न जायजी	।९४।
चूडा लीधा चोंपे करीअजी	सौभाग्य मंगल हित भरीजी	।९५।
दांत कचकडुं भांत अनेरीजी	रंगीन सादा अने सुनेरीजी	।९६।
मेवा मिठाई केरी जात्यजी	ते लीधा सहु करी करी खांतजी	।९७।
कुमकुमआदि जे मंगल द्रव्यजी	ते लीधा छे अेणे पर्वजी	।९८।
केसर कस्तुरी ने बरासजी	चौआ चंदन परम सुवासजी	।९९।
तेल फूलेल जवादे आदजी	जावद सौरभनी मर्यादजी	।१००।
माणिक मोती हीरा लालजी	गुण निरदोष सुदेश सुढालजी	।१।
पांचपिरोजा ने वली चुनीजी	सुंदर जोइ अने लीधी जुनीजी	।२।
जे कांइ भूतल उतम साजजी	लीधा अे उत्सवने काजजी	।३।
तेहना नाम ते क्यां लगी कहीअेजी	बुध प्रमाणे जे नव लहीयेजी	।४।
ते सहु लेइ आव्या अधिकारीजी	श्री गुंसाईजीने कह्युं विस्तारीजी	।१०५।

परम प्रसन्न थया ते घणुंजी रूप विसद क्येम कहुं तेह तणुंजी ।१०६।
शुभ दिवसे सौभाग्यवतीजी परम प्रवीण अने शुभमतीजी ।७।
घरनी सेवक जे खवासणीजी ते पठवी वेणाभट भणीजी ।८।
महाभाग्यरास अचल सौभागीजी श्री पार्वती बहु अनुरागीजी ।९।
आभरण केरा लेवा मापजी श्री गुंसाईजीअे पठवी आपजी ।१०।
वेणाभटे जोइने हरख भरीजी बेसाडया अति आदर करीजी ।११।
मनमां अतिशे उलट भर्याजी मंगल शब्द त्यांहां उचार्याजी ।१२।
सहु व्रज वनितानी जे राणीजी श्री पार्वती बहु वखाणीजी ।१३।
तेहना आभरणना उमाण्याजी लेवा आव्या छे ते परमाणाजी ।१४।
अेह वचन वेणाभटने भाव्याजी कुंवरी कारण रूप तेडाव्याजी ।१५।
तेडीने अति आनंद पमाडयाजी वलता अेहोने खोले बेसाडयाजी ।१६।
अेणे वात्सल्य अतिशे कीधाजी आभरणना परमाणा लीधाजी ।१७।
जेहर पायल विछीया आपजी मुद्रिकाना लेइ आव्या मापजी ।१८।
कंकण चूडा भूषण कर्णजी ताटक तेढीने आभर्णजी ।१९।
पछी सोनी जडीआ तेडाव्याजी लोभ्या आतुर उलट भर आव्याजी ।२०।
तेहने देइ शिक्षा करी खांतजी वलता बेसाडया अेकांतजी ।२१।
ते आगल सामग्री घणीजी कनक रजत हीरा अने मणीजी ।२२।
आणी राखी अनेक प्रकारजी श्री गुंसाईजीअे करी मनुहारजी ।२३।
आभूषणनी आज्ञा दीधीजी ते दंडवत करी मानी लीधीजी ।२४।
वलतो आरंभ कीधो सारजी ते आगल कहुं छुं विस्तारजी ।१२५।

इति श्री विवाह वर्णने महुरत आरंभ वर्णनो नाम

।। प्रसंग बीजो संपूर्णम् ।। (मांगल्य - २३)

प्रसंग - ३, मांगल्य - २३

" हरे हरे कटारूआ हरे उग्यो चंदन छोड रे हरे " अेणी जाते गवाशे

श्री गुंसाईजीअे अेम कह्युं हरे घडो घडो भूषण जोड रे हरे
उतमथी उतम शोभिता हरे मुने घडावानो कोड रे हरे ।१।
हीरा हाटिक मांहें अति घणा हरे पांच पिरोजानी पांत्य रे हरे
जडजो रे सुंदर शोभिता हरे करी करी मन तणी खांत रे हरे ।२।
घडजो स्वदेश रीतना हरे देश देशना विलसार रे हरे
रीतथी अधिक रे अति घणा हरे धणी मालाशो ते वार रे हरे ।३।
करजो रे अंग अंग बेसता हरे सुखद सोहामणा भ्राजे रे हरे
अनुपम अभिनवा अति घणा हरे सर्वोपर जे वली राजे रे हरे ।४।
अेवा वचन सुणी तेह समे हरे सोनीना सुखनो नहीं पार हरे
दंडवत कीधा रे नमी नमी हरे मुहुरत कीधुं तेह वार रे हरे ।५।

प्रथम तिमनीया ते कंठना हरे	अने जडनोटीको करी मोदे रे हरे	
जोइने गुंसाईजी घणुं रीझया हरे	भरी प्रसादे तेहनी गोद रे हरे	।६।
आनंदे आज्ञा अेम कही हरे	सर्व भूषण केरो साज रे हरे	
मांगल्य सूचक उचर्या हरे	सहुनो आरंभ करीअे आज रे हरे	।७।
आगल वय क्रम अनुसारना हरे	वाधते करजो प्रमाणे रे हरे	
बहुजी पनोती पहेरसे हरे	निरंतर जेहने वखाणे रे हरे	।८।
अनेक प्रकारना निपजे हरे	भिन्न भिन्न भांतना जेह रे हरे	
श्री गुंसाईजी क्षणु क्षणु प्रती	जोवाने आवे करी नेह रे हरे	।९।
देश देशना निज देशना हरे	सादा ने जडीया जे नंग रे हरे	
ते शोभ्या सर्वदा संगथी हरे	सुखद श्री बहुजी ने अंग रे हरे	।१०।
सौभाग्य भर ते शोभा भर्या हरे	सौभाग्य सूचक अर्थ रे हरे	
शोभा शोभा पामे जेह थकी हरे	सौभाग्यने जेहनुं सामर्थ रे हरे	।११।
नाम विसद करूं तेह तणा हरे	कवि तमो देसो नहीं कांइ खोड रे हरे	
जेहवा छे तेहवा नहीं कही सकुं हरे	पण कहेवानुं मुने कोड रे हरे	।१२।
बुध्धि न चाले मारी हरे	अे छे अलौकिकनुं महा सार रे हरे	
महेदनी रूची मनमां धरी हरे	कीधो कांइ विस्तार रे हरे	।१३।
अंग अंग प्रति अंगना हरे	प्रथुक प्रथुक करी तेह रे हरे	
कहेसुं रे विसद विगते करी हरे	सुणजो रे सहु करी नेह रे हरे	।१४।
कामणगारडा कंठना हरे	भूषण भावता काज रे हरे	
क्षणु क्षणु रीझे ते जोइ हरे	वस थाअे वल्लभ राज रे हरे	।१५।
तिमनीया टीको मोती तणा हरे	ते मांहे मोती अपार रे हरे	
मंगलसूत्र मोती तणी हरे	दुलरी मोती तणी सार रे हरे	।१६।
तिलरी सोना तणी शोभिती हरे	हांसडी हांस जडाव रे हरे	
कंठसरी ने खजुरडो हरे	गलुबंधमां बहु भाव रे हरे	।१७।
तीलरी ते रत्न जडावनी हरे	छूटी लरे मोती अनूप रे हरे	
चिताकर्षण सोहिती हरे	जोइ मोहे गोकुल भूप रे हरे	।१८।
उरना आभरण ते भावता हरे	चौकी पदक तणी जोड रे हरे	
चंपकली चंद्रहार ललकतो हरे	उरवसी पान संघोड रे हरे	।१९।
मोतीनी माला रत्ने जडी हरे	लटकण लटकतो शोभे रे हरे	
दोहोरी हमेल जडावनी हरे	जोइ मन व्हालानुं लोभे रे हरे	।२०।
हृदयना भूषण रस भर्या हरे	उपजावे रसना तरंग रे हरे	
मोहनमाला मोहामणी हरे	मुक्तानो हार ते संगे रे हरे	।२१।
कजरोटी कामणगारडी हरे	भरी छे काजले पूर रे हरे	
कामण मोहन वस करे हरे	नयणा अंजे जे ज्यारे सुर रे हरे	।२२।
बेहेरखो बेहु पास ढलकतो हरे	टोलणुं टलवले घाट रे हरे	
सोहतो छडी अने झुमरणुं हरे	नहीं को करता अेहनी साट रे हरे	।२३।

हार मोती तणा पंचलरा हरे मध्ये मध्ये चोक ने जडया रे हरे
प्रोया पनोतीअे प्रेमसुं हरे रहे संग संग ते मढीया रे हरे ।२४।
भाल भूषण भाग्यरासना हरे सकल सौभाग्यनुं सार रे हरे
तेह घडावीने कर्या हरे स्वकीयाना भाग्य विस्तार रे हरे ।२५।
टीको टीका नंग जगमगे हरे चांदलो तिलक सुचार रे हरे
फिरता रे मोती बहु मोलना हरे शोभा तणो नहीं पार रे हरे ।२६।
वेणे रह्या मोती ललकता हरे जलकता पानडी पास रे हरे
वांकवारू अने चोपडो हरे जोइ मन उपज्यो हुल्लास रे हरे ।२७।
शीष भूषण सार जे ते सहुनुं हरे श्रींगार सर्वनुं धाम रे हरे
मांग महिते मोती सही हरे सेंथो सोहे शुभ नाम रे हरे ।२८।
शीषफूल बहु नंग जडयुं हरे मध्ये मध्य नायक लाल रे हरे
खांते मोती प्रोया अति भला हरे जोइ रीझया गोकुल पाल रे हरे ।२९।
फूलनी जोड ते अभिनवी हरे पटंतर तेहनी तेह रे हरे
मोर भवर अने राखडी हरे चाक चमरी करी नेह रे हरे ।३०।
त्रसेथीआ अने मचकोडीआ हरे तेहनी शोभानो नहीं पार रे हरे
चमरी संगे सोहे वेणी अेह रे हरे पहेरे पनोती नार रे हरे ।३१।
कर्ण भूषण ते मोह्यामणा हरे कुंदण मुक्ताअे जडया रे हरे
लांगरी नंग बहु जातना रे हरे घाट सुघाट ते बहु जडया रे हरे ।३२।
ताटक जोडी जडावनी हरे झाल चित्रत बहु भांत रे हरे
टेढी अनेक प्रकारनी हरे घडीअ ते करी बहु खांत रे हरे ।३३।
डाबडीयाली खंभातनी हरे फूलकी अने सादी सार रे हरे
मारवाड० अने जालीनी हरे अेहनो छे बहु विस्तार रे हरे ।३४।
खुटला खीटली अने खीटला हरे वली जुमक केरो साथ रे हरे
मोती झुमक ने मोगरे हरे रीझे गोकुल केरो नाथ रें हरे ।३५।
मोरल ओगनीया ने विचकना हरे वेणी पीयल पता लहुरे हरे
नाग नगोदरहुं बहु हरे शोभानो पार नव लहुं रे हरे ।३६।
मनोहर मरकते मन हरे हरे शोभिता करण ते फूल रे हरे
समता करवाने सोची रह्यो हरे नहीं को अेहनी समतोल रे हरे ।३७।
नक भूषण ते नाना भांत्यना हरे नकबेसर ते परम सुदेश रे हरे
मकरो ने काटोखा तणो हरे अेक नंगी सुभग सुवेस रे हरे ।३८।
मोरलीअे नव मोती ललकता हरे अधरे स्पर्शी रहे तेह रे हरे
दीठे आकर्षे मन प्रभुनुं हरे प्रतिक्षणुं प्रगटावे नेह रे हरे ।३९।
नथ नाकफूल ने चौखुंट हरे फिरता ते लाग्या छे नंग रे हरे
मध्य नायक ते अतिसे जगमगे हरे दीठे थाये मने पंग रे हरे ।४०।
बलवंत भूषण बाहुना हरे बांहोने भीडता बाथ रे हरे
हाथथी आगमने जइ मले हरे स्पर्श ते भुज तणी साथ रे हरे ।४१।

बाजुबंध बेहेरखा अति भला हरे बीजा अे ठोपडी दार रे हरे
पाट पचरंग तणा कर्या हरे मध्ये ते फुंदणा सार रे हरे ।४२।
ते उर जोइ उर हुलसे हरे गडेरीमां नहीं खोड रे हरे
सुखद सुढाल कोमल घणुं हरे टाडव अेहनी जोड रे हरे ।४३।
हस्तना भूषण हेमना हरे मुक्षे रजत तणा सार रे हरे
सौभाग्यवतीने शोभिता हरे तेह छे अनेक प्रकार रे हरे ।४४।
चूड चूडा चमकता हरे जडया छे नंग अमोल रे हरे
कंकण चार प्रकारना हरे नहीं को अेहनी समतोल रे हरे ।४५।
गजरा ते गजमोतीअे भर्या हरे कंकण काम जडाव रे हरे
जव ते सादा ने नंग जडया हरे मफतुल सुंदर सांव रे हरे ।४६।
मोरी मनोहर भूषण जोइने हरे रही छे द्रष्ट अनुकूल रे हरे
अलगी करी कोइ केम सके हरे पाग्या छे रसमांहें मूल रे हरे ।४७।
हीरे जडया हथसांकला हरे मध्ये ते रत्ननी पांत्य रे हरे
पहोंचीया परम सोहामणा हरे पीछेला जडीआ करी खांत रे हरे ।४८।
नवग्रही नव नव भांतीनी हरे रंग रंगना न्यारा नंग रे हरे
राखडी ने कचडी भली हरे राजे ते बेहु संग संग रे हरे ।४९।
अंगुली भूषण ते उदय करे हरे धरे ते ज्योती प्रकाश रे हरे
तिमिर हरे त्रिभोवन तणो हरे जोइ मन पामे उल्लास रे हरे ।५०।
मुद्रीका अनेक प्रकारनी हरे आरसी ते अंगु स्थान रे हरे
वांक वींटी छला शोभिता हरे शोभा तणुं नहीं मान रे हरे ।५१।
कटीना भूषण कामिनी तणा हरे को अेक भांत्य अनूप रे हरे
किंकिणी अने छुंद्र धटिका हरे धमधमती अभिनव रूप रे हरे ।५२।
चरण भूषण चतुरा तणा हरे घडया ते सुघड सुनार रे हरे
जडीया ते जगत मोह्यामणा हरे नहीं को अेनी अनुहारे रे हरे ।५३।
जेहर चित्र विचित्रना हरे ढुढणी बतक ने चडीया रे हरे
हीरा चित्र जाली नंगे जडीना हरे सादा ने नंगे जडीया रे हरे ।५४।
गुजरी ने कांबी कनकना हरे वांकने को सम कीजे रे हरे
बिंछीया वेधे मन प्रीयतणुं हरे उपमां अेने कसी दीजे रे हरे ।५५।
सुंदर झांझर झमकता हरे धमकता घुघरा बाजे रे हरे
पायल परम सोह्यामणा हरे शोभा अपरमित राजे रे हरे ।५६।
अणवट ने जे अंगुथला हरे घडीया चमा उचित धरी रे हरे
राठोडी जडी जुगते करी हरे अतिसे सकोमल करी रे हरे ।५७।
बटुआ गढीआ छुदामनी हरे सादा ने कोर किनारे हरे
अेवा ते अनेक भांतीना हरे क्यांहां लगी कहुं ते प्रकार रे हरे ।५८।
नखथी शिख पर्यंतना हरे नाना ते भांत्य अनेक रे हरे
सिध्ध करे भूषण भावता हरे बंटे भरी करी विवेक रे हरे ।५९।

अलौकिक अगणित अभिनवा हरे	जेहनुं नहीं निरमाण रे हरे	
ते गिणनाकरी में कह्या हरे	मूरख बुद्धि अजाण रे हरे	।६०।
आगल लीला कहुं अभिनवी हरे	वाधती विविध प्रकारे रे हरे	
भक्तने लखी जे कंकोत्री हरे	तेहनो कहुं छुं विस्तार रे हरे	।६१।

इति श्री विवाह वर्णनो आभूषण वर्णनो नाम
।। प्रसंग त्रीजो संपूर्णम् ।। (मांगल्य २३ मुं)

प्रसंग – ४, मांगल्य – २३

''समोवड समोवड भडथ लीअे समोवड हवो रे विवाह'' अेम गवाशे.

भक्तना भाग्य विस्तारवा लीला तणो नहीं पार
सकल प्रकारे आकर्षीयाअे कीधो ते अंगीकार ।१।

प्राण प्रभु अति रस ढल्या स्वत:थी करी विचार
ते कारण क्यां लगी कहुं अे अनिरवचनी विस्तार ।२।

ते स्वकीय समाज सौभागीयाअे अेतनमार्गी भक्त
सदा निरंतर रस भर्या अे स्नेह भर्या अनुरक्त ।३।

देश विदेश दया करी अे जे जे अंगीकृत ठाम
श्री गुंसाईजीअे त्यां लखी अे कंकोत्री लेइ नाम ।४।

स्वस्ति श्री विठलनाथ अे समस्त स्वकीय शुभाशीष
स्वजन कुटुंब परिवारसुं अे मन धरी अेणे मीष ।५।

अषाढ वदी शुभदिन भलो अे बीज ने गुरूवार
श्री वल्लभनो विवाह छे उलटनो नहीं पार ।६।

ते उपर वेगा थई आवजो सहु नर नार
केम अधिक अेथी लखीअे क्षणु म लाशो वार ।७।

तम आवे अमने थशे मनमां अभिराम
शोभा अधिक प्रगट हशे अे मंगल मंगल धाम ।८।

अेणे प्रकारे कंकोत्री लखी करी अेकत्र
अक्षत कुमकुम चरचीने अे पठवी ते सर्वत्र ।९।

ज्यांहां पहोंची त्यांहां अति हवी आनंद ओघणी वृष्टी
कारण रूप कंकोतरी अे सींचन कीधी सृष्टी ।१०।

प्रेम रूपी पूरी थकी अे उलटीया सहु भक्त
ठाम ठामथी चालीआ अे उलट भर अनुरक्त ।११।

अति उतिम अति भला अे पूरवना ते प्रपन्न
पस्यमना प्रहसित थई अे आव्या मानी धन्य ।१२।

महातम जुत उतर तणा अे मारग प्रणीत विचार
दक्षण दिसना आवीया अे दक्ष विवेकी सार ।१३।

वायव्य इसान अग्नी तणा घणा घणा अति गुणवंत
सहेजे सुभाव सोह्यामणो सील सदा महा संत ।१४।
निरूपम नैरूत तणा अे गुणभर गुजर देश
भाग्यरास भावे भर्या रसभर्या परम सुदेश ।१५।
आप सुखारथ जे वर्या पुष्ट पुष्ट रस रीत
ते आव्या आरत भर्या भरी उलट करी प्रीत ।१६।
क्यां लगी ते विसद करूं देश देशना बहु गाम
उत्साहे आनंद भर्या आव्या श्री गुंसाईजीने धाम ।१७।
समाधान बहु भांतना करे गुंसाईजी अनेक
प्रेम सहित पूछे घणुं फरी फरी विवेक ।१८।
वलतो शुभ दिन जोइ अने तेडाव्या चित्रकार
प्रथम सिंहासन चोतरे कीधा चित्र ते सार ।१९।
घर घोली सहु सिध्ध कर्या क्यां लगी कहुं विशेक
चित्र कर्या बहु भांतनां नाना रंग अनेक ।२०।
वाजिंत्री बेसाडीया मंडप केरे द्वार
होअे निरघोष सोहामणा शोभानो नहीं पार ।२१।
ठाम ठामथी उलटया वाजिंत्री गुणवंत
अेम महा उत्सव सांभली आवे छे ते अनंत ।२२।
पंचशब्दा शहेनाइयां गौमुख ने मुखचंग
वेणवेणा वंशधर घणा सुखेणी थई संग ।२३।
ताल मृदंग उपंगीया नगारानी जोड
भेर भुंगल बहु जातनी लाव्या करी कोड ।२४।
सार मंडली चंद्र मंडली मुरज आयुज घरे जेह
ढोल रवाव सारंगीया भरी आशा करी नेह ।२५।
डुमडुमी अने हडकीया हुडकनी नाना भांत
निर्तकारी ने गायक भला स्त्री पुरूष बहु जात ।२६।
मागद बंदीजन घणा अे गुजराती गांधर्व
भाट चारण ब्रह्मावतार आव्या अेणे पर्व ।२७।
नायक दक्षण देशनां गायेण ने गुणवान
शास्त्र संगीत कला लहे अे नहीं को ते समान ।२८।
देश देशथी आवीया अे गुणीजननो नहीं पार
गुण पोताना प्रगट करे क्यां लगी कहुं विस्तार ।२९।
मथुरा सहु गाजी रह्युं नगर निवासी लोक
अतिशय उलट उलटयो नर नारी वृध्ध तोक ।३०।
वृज वासीणी सोहामणी गाअे मंगल गीत
वरजीना गुण कहे अने जेम विवाहनी रीत ।३१।

अेम नित्य उत्सव अभिनवा थाअे रंगना रोल
आनंद सागर उलटयो नहीं को अे सुख तोल ।३२।
जूथ जूथ जुवती तणा टोले मलीया बहु
गुण रूपे आकरसीया अति हरखे भर्या सहु ।३३।
वाध विवाहनुं मिस धरी जोवा महासुख धाम
वल्लभवर सोहामणा पूरण कोटिक काम ।३४।
कंदर्प कोटी प्रगट करे शोभा निधी रस रूप
कला निरंतर वाधती सुंदर सहज स्वरूप ।३५।
अति सकुमार सलुणोअे वाने चढयो सोहाय
वसीकरण अंग अेहना जोइ जगत मोहाय ।३६।
धीरानुं धीरज नव खसे अे शीतल थाये सर्वांग
कामिनी कामातुर थई अे प्रगटे काम तरंग ।३७।
ज्यारे मरकलडो करे जुअे नयण विसाल
त्यारे सुरति हित थई भुले देह संभाल ।३८।
अेहवुं रूप प्रगट कर्युं जे कांइ कह्युं नव जाय
महा मोहक मोहामणुं जोइ उरमां न समाय ।३९।
प्रथम लाडीलो ने वली लाड चढयो रंग रेल
लाड लडयो अति लहेलह्यो सुंदर मोहन वेल ।४०।
मोद भर्यो उलट भर्यो रसे भर्यो रस रूप
प्रेम मदे मातो रहे नायक नवल अनूप ।४१।
अवल कुंवर आलींगडो बोले मीठी गाल
कोसुं स्वच्छ मरकलडो करे कोसुं बोले आल ।४२।
कोसुं हास्य करे घणुं मुसकनी परम रसाल
बांह मरोडे केहेनी केनी तोडे मुक्ता माल ।४३।
वस्त्र हरे छे केहेना को पर डारे हार
जल छिरके छे केहेनेको पर नयण सुचार ।४४।
लाड लडेतो अेणी पेरे करे ते अनेक प्रकार
आनंद रसे सहुने भरे क्यां लगी कहुं विस्तार ।४५।
भीड भवने अेणी पेरे रहे आठ प्रहर अहो रात्र
वाध रसे रस अभिनवो आवे प्राणी मात्र ।४६।
को स्वरूपे मोही रहे को चरित्र गुणवान
श्री विठलजीना भवन विना रूचे नांहीं काइ आन ।४७।
घेर जावा को नव करे मेहेलीने महाराज
हवे कांइ अेक सूचन करूं मंगल केरा काज ।४८।
कढाईना मुहुरत दिने मांगल्य करी अे विचार
स्वजन तणा स्त्रीजन सहु ते तेडीने करी शृंगार ।४९।

गान सहित उत्साहसुं जेम अेहोनी होये रीत
कढाइ चढावी अेणी पेरे धरी मनमां बहु प्रीत ।५०।
चौक चुननो पूरीयो चुहला उपर त्यांह
हलदी सोपारी मुक्या प्रथम कोडीया मांह ।५१।
उंची भीते चोडीयुं अे लेइ कोडीयुं तेह
सेव उभय हाथे करे प्रथम सोहासणी तेह ।५२।
भुंजी काढे कढाईमां पछी करे पकवान
बहु विधी भांती अनेकना तेहनुं नहीं मान ।५३।
स्त्रीजन सहुने तिलक करी हलदी आपी बहु पेर
वायनो गनोडा वांटीआ विदाय कर्या ते घेर ।५४।
वलता गुंसाईजीअे बीजा काज अनेक
आज्ञा दे सहु कोइने करी करी बहु विवेक ।५५।
हरवंसजी हरखे भर्या काज करे करी नेह
बीजाने आज्ञा करे शीष धरी करे तेह ।५६।
ज्यांहां त्यांहां चांपे करी नरनारी समाज
उलटभर अति फूलसुं करे ते सघला काज ।५७।
जेठ सुधी अेकादसी बद्रीने पहेले दिन
उथापने श्री गुंसाईजीने उलट अतिशे मन ।५८।
कुटुंब सहित परिवारसुं पहेर्या वस्त्र सुवेश
पति अक्षतनो कटोरडो लीधो संग सुदेश ।५९।
ज्ञात सकलने बद्रीना निहोता देवा काज
पधार्या प्रेम भर्या साथे स्वकीय समाज ।६०।
ज्ञात तणे भवने जइ पोहोंतो सघलो साथ
त्यांहां जइ श्री गुंसाईजीअे लीधो कटोरो हाथ ।६१।
तेहो आगल राखी अने मुसकाइ कह्युं अेह
काल अमारे बद्री छे ते जोवा करी नेह ।६२।
जमवाने त्यां आवजो कुटुंब सहित परिवार
श्री गुंसाईजीअे अेम कह्युं करीने बहु मनुहार ।६३।
श्री गुंसाईजीने हस्तथी अक्षत लीधा हाथ
भाग्य मानी पोता तणुं लेइ चढाव्या माथ ।६४।
ज्ञात मांहें सहु कोइने घेर फरीआ उलट भेर
अेणे प्रकारे निहोतरा देइ पधार्या घेर ।६५।
अेहज रीते वेणेभटे सहित कुटुंब परिवार
सघले दीधा नीहोतरा आनंदे तेणी वार ।६६।
वरमाता पदमावती कीधा अनेक सृंगार
रात्रे सहु सांप्रत्य थया अनेक सोहासणी नार ।६७।

तेल उवटणा संग लेइ हलदी अनेक सुगंध
ज्ञात मांहें स्त्रीजनने अे वांटि ज्यां सबंध ।६८।
साथेथी दे निहोतरा देखवा जमवा काज
वेगा थई सहु आवजो मांगल्य मारे आजे ।६९।
अेम सघले देइ नीहोतरा ने उवटणा अतिसार
वांटी वेगा आवीया पोते भवन मंझार ।७०।
वलता अनेक समाजसुं वाजिंत्र ते बहु पेर
थाल मिठाईनी लेइ अने वेणाभटने घेर ।७१।
पधारे बेटी मागवा उलट भर्या सहु
वेणाभटना स्त्रीजने आदर कीधा बहु ।७२।
पूछ्युं रात्र घणी साथे अनेक समाज
वाजते गाजते सर्वपधार्या शे काज ।७३।
पछी पद्मावतीजीनी दीस थकी उतर दीधो अेह
तमारे घेर कन्या सांभलीने वर विठलजीने ग्रेह ।७४।
श्री वल्लभ सोहामणो अति सुंदर सुखरास
तेहो काज कन्या मांगवा आव्या छीअे तम पास ।७५।
मिलती छे जन्मोतरी पूछे छे तेणी वार
कह्युं उतम जन्मोतरी ग्रहे लग्न शुभ सार ।७६।
तो अवश्य कन्या आपसुं प्रगट्यो मनमां मोद
पारवतीजी बेसाडीया पद्मावतीजीनी गोद ।७७।
पद्मावतीजीअे बहुजीने तिलक बेंदी दीधी भाल
चोली चीर धर्या गोदमां बीडुं रूपैयो ने माल ।७८।
पछे मामी बहुजी तणी गंगा करी बहु साज
तेणे हलदी सर्वने आपी मंगल काज ।७९।
अेणी पेरे कन्या मागीने पधार्या छे धाम
उलट पाम्या अति घणा सरीया सहुना काम ।८०।
आगल कारज वृद्धिनुं अे करी करी बहु नेह
अेह प्रकार विसद करी कांइ अेक करी कहीश तेह ।८१।

इति श्री विवाह वर्णने कंकोत्री वाध रसना वर्णनो नाम
।। चोथो प्रसंग संपूर्णम् ।। (मांगल्य – २३)

प्रसंग – ५, मांगल्य – २३

"कमणले वल्लभजी आवता दीठा कमणलसे मागी वधामणी" अेम गवाशे

द्वादसीने दिवसे तो करे सहु साज अे मांगल्य काजने कारणे अे
पूरे सोहासणीसाथीआ सार अे तोरण बांध्या तोरण बारणे अे ।१।
उतमथी उतम आण्या जे बहु साज अे काज उत्सव अेणे घणा घणा अे
तेह बिछामणा कर्या सहु ठाम अे नाम क्यां लगी कहुं तेह तणा अे ।२।
तेल उवटणा ते करी भाग्यवान अे स्नान मंगल निधीसुं करी अे
अचल सोहासणी परम सोहामणी अे आव्या ते हरखे उलट भरीअे ।३।
श्री रूक्ष्मणी लालने मिली बहु बाल अे हलदी सुगंध अनेकसुं अे
करी अभ्यंग ते सहु सर्वांग अे स्नान करावे विवेकसुं अे ।४।
करी अंगवस्त्र अंग सर्वत्र अे करे सृंगार ते सोहामणा अे
धोती उपरेणो ते केशर भरीआ अे अंगी ते करीआ मोहामणा अे ।५।
कुमकुम तिलक ते त्रिय मन हरण अे अनेक आभरण धरावीआ अे
केस चुचुता ते परम सुदेश अे अंजन नयणे सरावीआ अे ।६।
अनेक प्रकारे सृंगार करावीआ अे भामिनी सहु मन भावीआ अे
लेइ ओवारणा रूप सराहे अे मंडप मांहें पधरावीआ अे ।७।
वाजिंत्रना त्यां होअे निरघोष अे घोष सकल ते गाजी रह्या अे
मानिनी ज्यांहां त्यांहां मंगल गाअे अे तेह न जाअे विसद कह्या अे ।८।
प्रेमदाअे परवर्याजी ते सोहे अे मोहे नरनार नेहे भर्या अे
पछे पुत्र पिता त्यां चोके बेसी अे हंसीहंसी पुन्याह वाचन कर्या अे ।९।
मंडप प्रतिष्ठा ने अंकुरार्पण अे कंकण करसुं बंधन करीअे
द्रढा वांचन कर्या समेत ते अे रक्षाने हेत वात्सल्य धरी अ ।१०।
पित्रु पूजन नांदी मुख विधी करी अे उलट भरी अभ्योदिक कर्या अे
पदमावतीजी ने श्री गुंसाईजी अे छेडला गांठीने परवर्या अे ।११।
आगल वर ने पाछल वरमाता अे परम सोहाता दीसे घणुं अे
तेह पाछल थका श्री गुंसाईजीअे शुं वर्णन करूं तेह तणुं अे ।१२।
हस्ते जल गडुओ ने गंधाक्षत थाली थाली बीजी ते चोखे भरी अे
साडी अति साजती वाजती घंटाअे कर जमणे डाबे करे धरी अे ।१३।
पधार्या ज्यांहां कुलदेव अे त्यांहां ततक्षण सहु अे धर्युं अे
जेह छे अेहनी रीत मर्यादा अे आदीथी ते त्यांहां कर्युं अे ।१४।
करी चोखा तणी ढगली सोल अे मेल्या सोल लाडु ते सेवना अे
सोल सोपारीने सोल टका लीधा अे सहु कीधा ते देवना अे ।१५।
वसोधारा ते भींते करी भली रीत अे मृतिका पूजा ते त्यांहां करी अे
कुलदेव ते स्थापन कीधुं आप अे बाहेर पधार्या आसने फरी अे ।१६।

पांच सोहासाणी घउं थाल भरी अे कुमकुमे पीली प्रमे करी अे
पलवे गेवा सूत्र कुमकुमे चर्ची अे मुस लेवाडे उलटे भरी अे ।१७।
पिता ने पुत्र तणा पासे आवी अे सुफले वधावे ते सहचरी अे
तिलक कुमकुम तणुं करी मन धरी अे आरती वारे आरत भरी अे ।१८।
काजथी पहोंचीने करे सहु साज अे अनेक बिछावणा शुभ तणो अे
वेणाभटने घेरथी लुफी आव्यानो अे पेंडो जुअे छे घणो घणो अे ।१९।
वेणाभटने घेर ते हवी बहु पेर अे विधीसुं विद्योगते सहु कर्या अे
ज्ञात कुटुंब संग स्त्रीजन सर्व अे वाजते गाजते सांचर्या अे ।२०।
श्री गुंसाईजीने घरे बद्रकुंता लेइअे गान करता ते आवीया अे
कण घृत अडद चणा केरी दाल अे सर्व आंगणमां सोहावीया अे ।२१।
वेणभटे विनती करी छे घणी अे पठवी सामग्री ते तम तणी अे
गुंसाईजीने अति प्रणीपत्य करी अे करी विज्ञप्ती ते घणी घणी अे ।२२।
पकवान केरी सामग्री अनेक अे करी विवेक ते लावीआ अे
आदर करी अने बिछावणे बेसाडया अे मान देइ मनमां भावीआ अे ।२३।
तमारे लायक तो अे छे नहीं आज अे राज थोडे घणुं मानजो अे
श्री गुंसाईजीअे आणी मन अे प्रसन्न थई अने कह्युं जाणजो अे ।२४।
अेह सामग्री तो पठवी अनेकअे करी विवेक ते प्रेमथी अे
कह्युं मान देइ अने कर्या समाधान अे अेटलो तो धरवानो स्थल नथी अे ।२५।
बद्रीनी पहेरामणी वेद मंत्रे करी अे घणी श्री गुंसाईजीअे सिध्ध करी अे
कुटुंबना स्त्रीजन ब्हेन भाणेज अे हेजसुं आपी उलट भरी अे ।२६।
ज्ञात मांहें सर्वने तिलक करी अे बीडां आपीने विदाय कर्या अे
वलती जमणवार करी तेणी वार अे पुरूष स्त्रीजन जे को नोतर्या अे ।२७।
हवे श्री गुंसाईजी द्वादसीनी रात्रेअे भांते भवन समारे छे अे
निश्चे तांबोल ते वेणाभट घेर अे करवा भली पेर पधारे छे अे ।२८।
प्रथम बिछावणा पोता केरे घरे अे कर्या हित भर्या सोह्यामणा अे
ज्ञात स्त्री पुरूष सहु परिवार अे कीधां सृंगार सोह्यामणा अे ।२९।
वेगा ते आव्या श्री गुंसाईजीना भवने नमन करी अने बेठा सहु अे
मेवा ने मीठाईनी आंगणा मांहें अे त्यां थाली राखी ते बहु अे ।३०।
तेह सामग्री लैवाडी छे हाथ अे सांज वाजिंत्र वाजे घणा अे
आगल पाछल दीवी उद्योत अे ज्योत ते दीसे सोह्यामणी अे ।३१।
गान करता ते समंधीने घेर अे उलट भरसुं पधार्या अे
वेणेभटे प्रणीपत करी अति घणी अे दंडवत करी बेसाडया अे ।३२।
थाली मेवा तणी धरी त्यांहां अे ज्यां आंगण समंधी तणु अे
कुटुंब परिवारसुं श्री गुंसाईजीअे अे जइ अने कर्युं रळीयामणुं अे ।३३।
कन्यानी दिशाथी को बोल्या अेणी रीत रीत छे जेम अेहो घर तणीअे
वाजते गाजते आवडी राते अे राज पधार्या छो शा भणी अे ।३४।

वर दीशे उतर दीधो अेणी पेरे अे तम घेर कन्या रत्न सांभलीअे
विठलजीने घेर वर वल्लभजीने काज अे आव्या छुं मांगवा मन रली अे ।३५।
त्यारे कह्युं रास नक्षत्र मले अेक अे समजाव्या अेक मल्या कही अे
थई ते प्रसन्न ने अेणी पेरे बोल्या अे अे शुभ काज करो सही अे ।३६।
चोक पूरी अने आसन मांडया अे चीर बिछावणा उपर धर्या अे
विठलजी ने वेणोभट पूर्वदिशा अे बेठा ते अतिसय उलट भर्या अे ।३७।
वलता संकल्प करी कन्या मागे अे अग्यार सोपारी पीली कर ग्रह्याअे
मंत्र सहित वेणाभटने त्यां आपीअे श्री गुंसाईजीअे अेम कह्या अे ।३८।
बोल्या वर विशे अे निशयोभवती अे कन्या विशय वेणाभटे कहीअे
अेणी पेरे कही सोपारी नव लेइ अे आपी श्री गुंसाईजीने मन लहीअे ।३९।
उभय परस्पर अेणी पेरे बोल्या अे आपी सुपारी शुभ काजने अे
ते जोइ उलट अंग न माय अे प्रगट्यो ते सर्व समाजने अे ।४०।
अेणी पेरे निश्चे हवो तांबोल अे रंगना रोल ते त्यां हवा अे
सहु को प्रेमे धरी धरी निरखे अे वरसे आनंद नव नवा अे ।४१।
परम सोभाग्यवतीने शणगारी अे अति सकुमार तेडावीया अे
श्री गुंसाईजीनी दक्षिण गोदे अे मोदे त्यांहां बेसाडीया अे ।४२।
कर्युं गुंसाईजीअे तिलक शुभ भालअे माल धरावी कुसुम तणी अे
बहुजीने चीर आरोप्यो अनूप अे चोली धरावी सोहामणी अे ।४३।
श्रीफल रूपैयो ने बीडुं ते साथ अे हाथ विठलजीअे ते आपीयुं अे
प्रार्थी इसने आशीष दीधी अे अचल सौभाग्य ते स्थापीयुं अे ।४४।
वलता वेणोभट त्यांथी कन्या लेइ अे राखे समंधीनी गोद मांहां अे
ते सहु बहुजीना करी समाधान अे पान ने द्रव्य आपे मोद मांहां अे ।४५।
बहुजीनी मामी गंगा तेहनुं नाम अे काम भीतर जे सहुअे करे अे
कन्याजीने लेइ भीतर ते पधारे अे श्री पद्मावतीजीनी गोद धरे अे ।४६।
अेणीपेरे स्त्रीजन समंधी छे जेह अे तेहने खोले बेसाडीयाअे
तेणे कर्या बहुजीना आदर बहु अे सहुने आनंद पमाडीया अे ।४७।
मली सहु नारी ते संबंध विचारीअे गान करे ते सोहासणी अे
गाअे स्त्रीजन परस्पर पांतसुंजीअे भांत विसद करूं तेह तेणी अे ।४८।

इति श्री विवाह वर्णने बद्री निश्चय तांबोल वर्णनो नाम
।। प्रसंग पांचमो संपूर्णम् ।। (मांगल्य २३ मुं)

प्रसंग – ६, मांगल्य – २३

राग : "आवो आवो रे सुजाति सहीयर साथ" अेम गवाशे।

अे जादरणीनो समय सुखरूप त्यांहां गाअे सोहासणी परम अनूप ।१।
जेवो समय सुशोभित सुख रास तेवुं गान शोभाजी करे प्रकास ।२।
अेहवुं बोली श्री विठलजीनी जाइ में तुं वार्यो हे मारा कोडीला वेवाइ ।३।

तुने करवानुं विवाहनुं कोड	पण कइ पेरे करीश मारी होड	।४।
तोकुं सरखो कर्यो रे वेवाइ	हवे शुं करीश हाथीने गले बंधाइ	।५।
जे तुने पोतेथी न आवी अे सुध	तो तें बीजाने कां न पूछी अे बुध्ध	।६।
ते कीधो मनमां कोण विचार	हवे कइ पेरे पामीश अेहनो पार	।७।
अे छे भूतल सकल भुवनना नाथ	तुं केम करी पहोंचीश अेहोनी साथ	।८।
महा सकल पदार्थ अेहोने हाथ	तुं केम देइस बळीयासुं बाथ	।९।
मारो वल्लभवर अति परम सुजाण	तुं ते केम पामीश सांभल अजाण	।१०।
में तुं वार्यो रे मारा वल्लभजी वरेश	अेणी शेरीये नव जइअे सुदेश	।११।
अे शेरी कामणगारडी	तारी सासु अतिय धुतारडी	।१२।
तारे अंगे भूषण सोहसे	ते देखीने सासु मोहशे	।१३।
तारूं रूप जोइ सुख पामशे	ते सहु केहेने शीर नामसे	।१४।
कहेसे धोरे देवाडो दया करो	अमने विठलजीनो कुंवर मया करो	।१५।
कहेसे धोरे देवाडो दया करो	अमने शोभाजी वीरो मया करो	।१६।
तारी कन्याने रढ लागसे	अेवा वरने वरवा वर मागशे	।१७।
तारी सुंदरता ज्यारे देखसे	बीजुं त्रणवत करी लेखशे	।१८।
वेणाभटने जोइ रढ लागशे	पछे चरणे लागीने वर मागशे	।१९।
अे गोविंदमामाने मध्ये लावशे	घणुं खोलारे पाथरतो घेर आवशे	।२०।
पहेला हती रे वेणाभटसो लोकाइ	हवे थयारे गुंसाईजीना सगा वहेवाइ	।२१।
पहेला हती रे वेणाभट दूध मलाइ	हवे सबंध थये मांहे साकर भेलाइ	।२२।
पहेला हता रे वेवाइ तमे घरना मानीता	हवे क्यारे गुंसाईजीअे जगत जाणीता	।२३।
अेम कही कही सहुको मली गाये	मन उलट अतिशे अंग न माये	।२४।
सामासामी समंधी उभा बेहु पास	ते समय प्रगट होअे अति उल्लास	।२५।
गाअे उभय परस्पर वचन रसाल	गूढ वचन मांहें मीठी गाल	।२६।
उभा समोवड समोवड सरखी जोड	ते सांभलवानुं सहुने कोड	।२७।
अेणी पेरे हवो निश्चे तांबोल	त्यांहां प्रगट्या रंग तणा रोल	।२८।
पछे आप्या रे बीडा दक्षणा अनेक	अेम परस्पर बहु करी विवेक	।२९।
वेद मंत्रे त्यां ब्राह्मण दे रे आशीष	चिरंजीवो अे वर वधु कोड वरीस	।३०।
पछे त्यांथी गुंसाईजी वल्या अेणी पेर	बहुगान वाजिंत्र सहित आव्या घेर	।३१।
त्यां गोविंदमामे रे कर्युं मोसालुं	करी बहु विवेक परम रसालु	।३२।
श्री गुंसाईजी महाप्रभुजी करी हेत	पदमावतीजी शोभाजी समेत	।३३।
परिवार सहित सहु कुटुंब समाज	तेडया आदर करी मोसाला काज	।३४।
आप्या वस्त्र सुशोभित अति मूल	आप्या यथा योग्य करी मननी फूल	।३५।
वली प्रणीपति करी भांत अनेक	तेहनो क्यां लगी कहीअे विसद विवेक	।३६।
महा मांगल्य दिवस तणो जे प्रकार	हवे आगल कहुं कांइ ते विस्तार	।३७।

इति श्री विवाह वर्णनो गान प्रकार वर्णनो नाम

।। प्रसंग ६ ठो संपुर्णम् ।। (मांगल्य २३)

प्रसंग – ७, मांगल्य – २३

" श्री गोकुलनाथ सोहामणा " अेणी जाते उल्लास सहित गवाशे

चाल : दिन प्रतिक्षणु वर लगने कुं आये अे — महा रसधारा ते नित्य नवी अे
जुवतीने जूथे विंटया रहे जेह अे — तेह जाणे जे को अनुभवी अे ।१।
अणु अलगा नहीं अेह समाज अे — रस तणे काज लाग्या रहे अे
जेहने रसे रसवस रस रूप अे — भूप गोकुल तणो रस लहे अे ।२।
क्षणु क्षणु नवल नौतन रस भोगी अे — सदा रे संजोगी सोहामणो अे
जेहोना चरित्रनो पार न लहुं अे — क्यां लगी कहुं रस तेह तणो अे ।३।
नित्य विवाहतानो हवो रे विवाह अे — तेह उमाहां मनमांहां धरी अे
जेह विशे जेणी पेरे हवो संजोग अे — तेह कहुं कांई अेक विसद करी अे ।४।

वलण : विसद करी कांइ अेक कहुं मारी बुध्धि अनुसार
लीला परम अगाध छे कहेतां न आवे पार ।५।
महा मांगल्य दिवस विवाहनो आव्यो ते अतिशे सार
असाड वदी दिन बीज ने शुभ योग जुत गुरूवार ।६।
उध्यात घडी दिन अेक चढते मिथुन लग्न प्रमाण
अे शुभ वेळा संयोग हसे अे वाजीआ निशान ।७।
सर्व उत्तम जोग सेवा अर्थ आव्या त्यांहां
वरद वरेस वडनार वरवा पधारे ज्यांहां ।८।

चाल : प्रतिपदा रात्रे ते होअे बहु पेरेअे — बेहु घेर मंगल अभिनवा अे
मंगल ने मंगलना कर्या साज अे — काज मंगल मारे नित नवा अे ।९।
तोरण मालणी बांधे विचित्रअे — साथीआ चित्र सोहामणा अे
चोक पूरे चतुरा चित धरी अे — भरी उलटे ते मोहामणा अे ।१०।
रचना मंडप तणी करी भली भांतअे — खांत करी अने समारीया अे
तेह प्रकार क्यां लगी कहेवाय अे — कोटिक वैभव वारीया अे ।११।
कुमकुम छडा दीधा रे त्यां सार अे — नार पनोतीअे नेमसुं अे
उलट भरी भरी करी शणगार अे — आव्या तेह वार ते प्रेमसुं अे ।१२।

वलण : प्रेमसुं त्यांहां परस्पर अभ्यंग केरा साज
सामग्री अेक अेक घेर पठवे तेहना हवा काज ।१३।
प्रथम वरने घेरथी लेइ जाये कन्या काज
अरगजो हलदी खली केसर उवटणानो साज ।१४।
वाजे ते वाजिंत्र त्यां सोहासणी बहु पेर
गान करतां लावीया सहु कन्या केरे घेर ।१५।
पिता पुत्री घेर बेठा तेह मेल्या माथ
कन्याने अभ्यंग उवटणे नहवरावे हाथ ।१६।

चाल :
कन्याने नाहता नाहता जे सामग्री रही शेष अे ते मांहे विशेष करी भरी अे
थाल मांहे मेहेली अभ्यंगना साजअे वरजीने काजअे सिध्ध करी अे ।१७।
कन्यानी दिसथी सोहासणी बहुअ अे सहु वरजी घेर आवीया अे
वाजते गाजते गान करतां अे मोद भरता ते लावीया अे ।१८।
वर ने वरमा बेहु चोके बेसाडी अे तेल लगावी मस्तके भरे अे
अरगजा केशर हलदी ने खली अे मली मली उवटणा करे अे ।१९।
जेणी पेरे अेहोने छे कुल तणी रीतअे प्रीते जे जे मन भावीयुं अे
तेणी पेरे चार सोहासणी मली अे मंगल स्नान करावीयुं अे ।२०।

वलण :
मंगल स्नान करावीयुं वरजीने तेणी वार
वलता ते श्री गुंसाईजी नाही अति अनुहार ।२१।
वस्त्र सुंदर भव्य धरी आभूषण पहेर्या सार
पछे वेणाभटने घरे होअे विविध प्रकार ।२२।
कुंवरी कारण रूप ते अति रूपनो नहीं पार
प्रेमदा प्रमोदे प्रेमसुं करावे सृंगार ।२३।
नख थकी शिख पर्यंत जे छे तिलक अंजन आदि
अेकथी अेक मोहता सोहता वादो वाद ।२४।

चाल :
अभिनवा भूषण भांति अनेक अे धरी विवेक ते प्रेमे करी अे
चीर पहेराव्यो पलवट वाली अे परम सुखाली चोली धरी अे ।२५।
सोहीअे सुंदरी परम अनूप अे रूप सम जगतमां को नहीं अे
वरना वरने वरवानो भर जेहने अे तेहने सराहुं हुं शुं कही अे ।२६।
मृतिका स्थापन ते स्थले पधराव्या अे आव्या अे गुण भर्या हरखतां अे
भामणा लेइ सहुने मन भाव्या अे सोहाव्या अे शोभाअे वरखतां अे ।२७।
वलता वेणोभट मंगल निधीने अे काज ते सहु साज ते सिध्ध करे अे
वल्लभ वरना दायजानी सामग्री अे लेइ लेइ आंगण मांहां धरे अे ।२८।

वलण :
धरे आंगणमां अने वली करे सिद्ध अनेक
चरण क्षलण मधुपर्क आदी ते करी विवेक ।२९।
वांसनो मंगल टोकरो चोखे भर्यो अेक त्यांहां
सामग्री मंगल तणी भरी धरी बीजा मांहां ।३०।
मोड धोती अने उपरेणो ते सोंधे करी
आभरण अनेक प्रकारना ते मांहे राख्या भरी ।३१।
थाली अेक चोखे भरी दायजा केरी जेह
कटोरो दूधे भर्यो मध्येते महेल्यो जेह ।३२।

चाल:
मध्ये मंगल सूत्रनी अेक लरीअ अे धरी हलदी पीली करी अे
मंगल साज मंगल निधी काज अे सिध्ध करी अने राख्या धरी अे ।३३।
माहा मनोरथ मनमां धरीयो अे भरीयो उलट निदाननो अे
वेणावटना घेर मन तणी रली अे मली मली पेडो जुअे जाननो अे ।३४।

शेरीअे शेरीअे अगर मेहेक्या अे कमल नयणो रे घेर आवशे अे
आवशे श्री विठ्ठलजीनो कुंवर लडेतो अे जोइ जोइ उरमां भावशे अे ।३५।
श्री गुंसाईजीने घेर बहु पेर अे सुख तणो सागर उलटयो अे
चहुंदिंस वाधी आनंद पूर अे दुरनो सेतक पट फटयो अे ।३६।
ठाम ठामे महा मोद न माय अे गाअे सोहासणी उमाह्या अे
नित्यं ने वाद्यना अति निरघोष अे घोष प्रति घोष गाजी रह्या अे ।३७।

वलण :
गाजी रह्या सहु भक्त भावे भर्या करे सृंगार
मंडपमां महाले घणुं करे काज अनेक प्रकार ।३८।
कृपापात्र ते कृष्णदासीनुं बडीबाइ नाम
मोदे भर्या अंग फूल्या करे मंगल काम ।३९।
ठाकुरदासी शणगारबाइ सृंगार रसनुं धाम
रसपात्र रस अनुभवी अे नागोर जेहनुं गाम ।४०।
गोसाइदासी ने गौरबाइ मेवाडी अेहनी जात
सीरोहीना अति सुखद सेवा करे नाना भांत ।४१।

चाल :
नाना भांति सेवा करे सुख रूप अे परम अनुपम आनंद घणो अे
नामना अर्थनो अनुभव कीधो अे सीधो मनोरथ अेह तणो अे ।४२।
अेहवी दामोदर दासी भाग्यरासी अे वल्लभजीने वल्लभ घणुं अे
क्यां लगी कहुं जो पार न लहुं अे भाग्य सराहुं हुं अेह तणुं अे ।४३।
परम निपुण नानीबाइ मेवाडी अे रजपुत जाते ते रस भरी अे
परम सुंदर भरी आभरणे अे प्रभुजीने संगे ते अनुसरी अे ।४४।
अेहवा आव्या त्यां अनुपम भक्त अे अे अति अनुरत रस भर्या अे
अनुभवी मात्र जे महा रस पात्र अे रसिक वरे जे रसिक वर्या अे ।४५।

वलण :
रसे वरीया भाग्य भरीआ आव्या मंडप त्यांहां
तेह तणो विस्तार कांइ अेक कहुं उलट मांहां ।४६।
हरी वंशजी हरख भर्या करे काज अति सुखदाय
नागजीभाई गोधराना भर्या उलट अंग न थाय ।४७।
जीउभाई खंभातना ने बडा माधवदास
देवराजभाई भावे भर्या ते रहे अेहोने पास ।४८।
लखीभाई भाईलो कोठारी अने जेरामदास
उलट भर्या आव्या जे राजनगर निवास ।४९।

चाल :
गदोरे दुवे ने गोविंद दुवे नाम अे ठाम ठामे परस्पर मल्या अे
रामदूत दुवे ने जे राणो व्यास अे आस करी अने मंडप मल्या अे ।५०।
पबो रे त्रीवाडी ने प्रागदास अे धरी उल्लास आव्या त्यांहां अे
भरथभाई अने रामदास अे पास आव्या रे मंडप ज्यांहां अे ।५१।
आव्या छे राघवदास भीतरिया अे धरीया मनोरथ अति घणा अे
हरखोभाई हरख भर्या आव्या अे गोपाल भट मणोदर तणा अे ।५२।

थाउं वल्लभ ने जगन्नाथ जोसी अे परम संतोषी प्रेमे भर्या अे
गोपीनाथदास गोविंददास भावी अे आवी मंडपमां अनुसर्या अे ।५३।

वलण : मंडपमां अनुसर्या जे भाग्य केरी रास
मधुसूदन गोपालदास दतु मोहन व्रजना दास ।५४।
विष्नो महेतो वछो पारेख आवी करी नेह
कृष्णदास उध्धवदास वीसलनगर केरा अेह ।५५।
विष्णुदास ने गोपालजीनो नरोडामां वास
आसोडानो कहानो भाई लाडको गणपत नाम ।५६।
खेरूआनो सुरो भाई झाडोल त्रंबक व्यास
माधवदास कपूर ने नागोरी मोहनदास ।५७।

चाल : रूपचंद पटणी ज्ञानचंद पछाइ अे पछाइ नरहरदास हरखीया अे
रामदास टंडो आमेरनो आव्या अे भाव्या अे आनंदे वरखीया अे ।५८।
रामदास ग्वालेरी रामदास पुस्करणा अे खवास त्रण जणा ते सोहामणा अे
नागर सीरंगदास वैकुंठ भाई अे भीखमभाई मोहामणा अे ।५९।
नगर निवासी ने जे ज्यांहां वासी अे परम हुल्लासी अे आवीया अे
भूषण वस्त्र सृंगार करवा त्यांहां अे मंडपमां भला भावीया अे ।६०।
भक्त अनंत उलट उनमत अे महा भाग्यवंत भावे भर्या अे
अंगे अनुभवे रस रसे भावते धन अे मानते मन मनोरथ कर्या अे ।६१।

वलण : मनोरथ करी सहु आवीया ते भली पेर
उत्साह आनंद अति घणो श्री विठलजीने घेर ।६२।
आनंद ने आनंद हवा मोदने मोद न माय
फूलने फूल सत गणी फूल्या ते कह्युं न जाय ।६३।
अति उलटसुं मोदे भर्या त्यां श्री विठलजी तात
अने घणुं प्रेमे पूर्या पदमावतीजी मात ।६४।
हरखे भर्या हरिवंशजी बोल्या ते उलट भेर
वरघोडा वेळा थई हवे करो उतम पेर ।६५।

चाल : विलंब मालाओ ने सहु सिद्ध थाओअे समय थोडो रह्यो काजने अे
सोहता सृंगार कर्या रे सुदेश अे परम वरेस महाराजने अे ।६६।
वरघोडा केरी सामग्री अनेक अे करी विवेक ते सिद्ध करी अे
सज थयो छे त्यां भक्त समाज अे उत्सव आज उलट भरी अे ।६७।
अस्व कछीनी जे गती छे पछीनी अे नीलो नौतन गते नाचते अे
अति शणगार्यो परम सोहाव्यो अे आव्यो मनमां घणुं राचतो अे ।६८।
जान सिध्ध थाय छे गोकुलपतीनी अे मतीनीअे गति नहीं केम लहुं अे
योग्यता बुध्धि तणी अनुसार अे अग्रम लीला अे ते कहुं अे ।६९।

इति श्री विवाह वर्णने भक्त वर्णनो नाम
।। प्रसंग ७ मो संपूर्णम् ।। (मांगल्य २३)

प्रसंग – ८, मांगल्य – २३

" धन्य धन्य माता श्री रूक्ष्मणी जेणे, श्री वल्लभराय जायाजी" एम गवाशे।

प्रथम भगवदी भावेभर्या मंडपे महालता दीशेजी
काज करे उलट भर्या हेजे ते हैयलडुं हीशेजी ।१।
हवे वरघोडा वेला थई सिध्ध थाओ सहु जानजी
कुटुंबने ज्ञात वरण बहु तेडया देइ देइ मानजी ।२।
आदे अतिशे सोह्यामणा श्री गुंसाईजीना पुत्रजी
लौकिकथी अलगा सदा तेहनुं अलौकिक सूत्रजी ।३।
महा गुणवंत उत्साहसुं सर्व थया छे ते सिध्धजी
सुंदर परम सुशोभित जाणे त्रिलोकनी निधजी ।४।
श्री गिरीधरजी अति गुण भर्या ते गुण विसद न थायजी
सिध्ध थया रे सोहामणा उलटे गोविंद रायजी ।५।
बालकृष्णजी मन हरखीया ने वली फूल्या छे अंगजी
श्री वल्लभ ने रे वल्लभ घणुं स्नेहे सदा रहे संगजी ।६।
रंग भर्या रघुनाथजी मोदे भर्या महाराजजी
सिध्ध थया रे सोहामणा करे ते समयना काजजी ।७।
कोडे भरी कुंवरी सहु शोभाजी शोभा रूपजी
जमुनाजी जगत मोहामणा जेहनुं रूप अनूपजी ।८।
देवकाजी रंगे भर्या कमलाजी मोद न मायजी
पित्राण ब्हेन लक्ष्मीजीना उलट विसद न थायजी ।९।
शोभा भर्या रे सत्याजी गोपदेवी छे मासीजी
मामी गंगा मन उलटया अंतर मांहे उल्लासजी ।१०।
बीजा स्त्रीजन आव्या अति घणा तेह तणो नहीं पारजी
ज्ञात परज्ञातना आवीया ते केम करीअे विस्तारजी ।११।
प्रथम भूषण नाना भांतिना सिद्ध करी राख्या छे जेहजी
वस्त्र जे अनेक प्रकारना अभिनवा अतिघणा तेहजी ।१२।
श्री गुंसाईजी आणीने वहेंची आप्या नर नारजी
करी पहेरामणी सर्वने तेह तणो नहीं पारजी ।१३।
वसन भूषण भला भावतां पहेर्या परम रसालजी
जानमां सहु सिद्धा थया जादरणी झाक झमालजी ।१४।
मामो गोविंद मामो अच्युत आव्या आनंदे ते घणुजी
पित्राइ मामो जनार्दन भट शुं कहुं कारण तेह तणुजी ।१५।
भट वरणारके मासो अने गणेशभट ने वासुदेवजी
भाणेज भत्रीजा सगा आव्या कुटुंब सहित ततखेवजी ।१६।

हरखे भर्या रे वेगा थई ज्ञात तणो नहीं पारजी
भव्य भुषित भला भावीया आव्या करी सृंगारजी ।१७।
महावन केरो समाज ते आज अवसर लही आव्योजी
उलटे रे अतिशे उलट भर्यो श्री गुंसाईजीने मन भाव्योजी ।१८।
अनेक वैश्नव आग्रा तणा गुणवंत आश्रित जेहजी
उत्सवने उत्साहे भर्या परिवारे आव्या छे तेहजी ।१९।
छीतस्वामी ते शुभ दिने आव्या पीय दयालजी
कमलो चोबे वेगे आव्या आव्या लघु गोपालजी ।२०।
पुत्र पुत्री परिवारसुं वैश्नव व्हाला जे सर्वजी
ज्ञात परज्ञात गायेक गुणी सुणीने आव्या अेणे पर्वजी ।२१।
विविधी विशेरे वैभव जुत वाहने वसने अनेकजी
जान अनुपम सहु सिध्ध थई क्यां लगी कहुं ते विवेकजी ।२२।
नगर मथुरा नवरस भर्युं उलट अंग न मायजी
सुखद सामग्री जुत लहे ते कांइ विसद न थायजी ।२३।
ठामठामे निरघोष वाजिंत्रना वाजे छे ते बहुजी
भेर भुगल शहेनाइ अे जगत गाजी रह्युं सहुजी ।२४।
मंगल गाअे सोहासणी ज्यांहां त्यांहां मंगल बोलेजी
अेह मंगल समय अभिनवो नहीं को अे दिवसने समतोलेजी ।२५।
रूकमणी कुंवर कोडामणो लाड लडेतो आधारजी
युवती सुंदर सुभगा मली रलीये करावे सृंगारजी ।२६।
प्रथम अंगराग अंगे कर्या जे जे सौरभ महा सारजी
अतर अंबर अरगजा अने मांहे घोली घनसारजी ।२७।
उपर अंबर अंग बेसता प्रेमे धरावे छे तेहजी
चुणी चतुराइ वात्सल्यसुं करी धरी बहु नेहजी ।२८।
विविधी भूषण जे ज्यांहां सोहीअे तेह सोहाव्या ते ठामजी
सुखद सादा अने नंगे जडया क्यां लगी कहीये ते नामजी ।२९।
तिलक अंजन अनुपम धर्यांने सोंधो धर्यो पुष्पनो हारजी
मंडप मध्ये सिंहासने पधराव्या प्राण आधारजी ।३०।
सर्वने केसर छिरकीया जे सिध्ध थई छे जानजी
ज्ञातने तिलक करी अने बीडा आप्या देइ मानजी ।३१।
निरविधी नाथे नेहसुं अेह कीधुं करी आसजी
मंगल वांचन कर्युं श्री गुंसाईजीने बेसी पासजी ।३२।
मालण मोड सोहामणो लावी उलट अति भरीजी
राजराजेश्वरने हिते हरखी आशा मन धरीजी ।३३।
अेहने सदा दडीयो भरी चावल दाल साडीनी रीतजी
तेथी अधिक तेहने आपीयुं घणी घणी करी प्रीतजी ।३४।

सुंदरी तिलक मुगट मणी मुगट मुगटाधिपना जेहजी
तेहने त्यांहां मोड धराव्यो शोभा क्यां लगी कहुं तेहजी ।३५।
शोभा जोइ शोभा त्रिलोकनी चरणे लागी मेली गर्वजी
आधिदैविक अे स्वरूपे पोता तणुं वारे छे सर्वजी ।३६।
देवकाजी ने जमुनाजीअे तिलक कुमकुम तणु करीजी
आरत हरणने आरती वारी ते उलट भरी जी ।३७।
महा फलना करमां धर्युं श्री फल मंगल काजजी
नमन करी कुलदेवने विजय करे छे महाराजजी ।३८।
श्री गुंसाईजी मोदे भर्या साथे छे वेदना पात्र जी
वैदिक स्वस्ती वांचन भणे शुभ समयनां शुभ मात्र जी ।३९।
वरद वरेश वल्लभ वर रसभर नवल कुमार जी
अेक लरिकाने साथे लेइ घोडे थया असवारजी ।४०।
ठामठामे अति हुलसीने जै जै जै जै शब्द बोले जी
हरख हरखे हरखीत थयो नहीं को अेह समयने तोलेजी ।४१।
माधवदासे विनती करी श्री गुंसाईजी भणी जी
राजमनोरथ मने अति घणो आरती अेहनी छे घणी घणीजी ।४२।
वरजीने छत्र धरावीअे अेहवी अमारे रीत जी
तमने मनोरथ जे होअे ते करो सहु करी प्रीत जी ।४३।
श्री गुंसाईजीने भावतीकरती महा सुख ने संपन्न जी
अेहवी विनती करी तेह समय रीझ्या ते अतिसय मनजी ।४४।
माधवदासे छत्र धर्युं कर्युं मन भावतुं आप जी
अेहवुं दरसन करावीने जगतनो हरीयो ते ताप जी ।४५।
माधवदासे मनोरथ करी धरी आनंद अपारजी
चौद भुवन तणा छत्रने छत्र धर्युं तेणी वारजी ।४६।
जीवु पारेख नागजीभाई भाईलो कोठारी ने देवराज जी
चमर ढाले चोंहो पासथीसाथे छे अनेक समाज जी ।४७।
जूथ जूथ रे जुवती तणा मलीया छे बहु नर नारजी
अगण गुण गाअे वल्लभ तणा भीड तणो नहीं पारजी ।४८।
उत्साहने रे उत्साह हवो मोदने मोद न मायजी
हरखने हरख प्रगट्यो त्यांहां आनंद अंग न समाय जी ।४९।
जे सामग्री उत्साहनी तेह उमाहे त्यां आवीजी
भरी सुख रूपे सेवा हिते प्रीते प्रभुने मन भावीजी ।५०।
आगल पाछल ने मध्ये दीवी करी छे उद्योत जी
तेहनी आभा अनुपम होअे जगमगे जगमां ज्योत जी ।५१।
वाजिंत्र पंचशब्दा अने ताल पखावजनी जोड जी
निर्त करे नवली पेरे जे धरी आव्या छे बहु कोडजी ।५२।

आतसबाजी बहु भांतीनी खांत करी करी जी
उडे छे अनेक प्रकारनी अनेक कौतिकसुं ते भरीजी ।५३।
आसपासे अति अभिनवा राजता सुंदर बालजी
मध्ये मध्य नायक शोभिता श्री रूकमणीजीनो लाल जी ।५४।
मधुपूरी मध्य रस उलटयो चाली छे रंगनी रेलजी
अेणी पेरे अनेक समाजसुं परवर्या मोहन वेल जी ।५५।
शेरीअे अगर महेकावीया करी रचना नहीं पारजी
कुमकुम चंदन छिरकीया आवे छे प्राण आधारजी ।५६।
नगर निवासी उल्लसीया चढी अटाीअे निरखे जी
समंधीना सहु सनमुख रह्या सुंदर श्री मुख परखे जी ।५७।
सकल भुवन वर वरवते वरवा पधारे छे वडनार जी
रूप उलट शोभानो समय कोण करी सके विस्तारजी ।५८।
श्री गुंसाईजी वेणोभट वर ने कन्या पर वारे जी
नगर घर घर परदेशे हवो आनंद परिचार जी ।५९।
अेह अलगो अलगो करी केम करूं विसद प्रकास जी
तेह थकी ग्रंथ वाधे अने कोण रोके रसरासजी ।६०।
वेणाभट घेर रस अभिनवा प्रगट्या छे पूरण कामजी
जेह रस काज रसिक वर रस भर्या आवे छे धाम जी ।६१।
रयणी रस भरी तेपाछली रही घटिका ज्यारे चारजी
समय शुभ तोरणे पहोंच्या वेगे वेणाभट द्वार जी ।६२।
हलदी कुमकुम चरचीने पल्लव श्री फल सोहावीजी
जुग मंगल कलश भरी सुंदरी सनमुखे लावी जी ।६३।
चार ब्राह्मण उपाध्या सहित लेइ अने पत्ररसालजी
करे अभिशेख ते कुमकुमथी वेद मंत्रे ततकाल जी ।६४।
मंगल शुकन प्रभुने कर्या कलस ते महा भाग्यवानजी
लेइ रूपैयो ते मांहे धर्यो कर्युं ते बहु सनमान जी ।६५।
गंगा मामी बहुजी तणी उलट भरी करी सृंगारजी
वरजीने पास पधारीया थाल उतारी लेइ सारजी ।६६।
आवी श्री मुख जोयुं सुंदर मनोहर मोहक रूपजी
जगतमां अचल जगती तले अेहवुं नहीं को स्वरूपजी ।६७।
सकल सौभाग्यना तिलकने तिलक कुमकुम तणुं करीयुं जी
चोडी तांदुल कर कमलमां हरखभर श्री फल धर्युं जी ।६८।
बीडुं रूपैयो आपी अने सुंदर वस्त्र ओढाडयुं जी
नयण सयणे रे मानी लइ अंतर अति सुख पमाडीयुं जी ।६९।
दहीं चावल वार्या तेह समय वारी इंडी पींडी चोंहें पासजी
चुन हलदी तणु उडी उडावीयुं अति सुख रास जी ।७०।

लीधी आरती ते आरत भरे आरत हरणने काजजी
करी कोडे बहु भांतसुं मुदित थया महाराजजी ।७१।
भामणा लेइ भामिनी त्यांहां अनुपम आशीष बोलेजी
जै जै जै जै सहु को करे नहीं को अेसमयने तोलेजी ।७२।
सासु सुंदर सुभगा जोइ रीझ्या रसिक वर रायजी
सासु घुंघट अवकासमां जोतां तृप्ती न थाय जी ।७३।
ज्यांहां त्यांहां सर्व मोही रह्या निरखता नयणा न मटकेजी
भाग्य सराही पोता तणुं वारी फेरी कर चटकेजी ।७४।
बहुजी महा भाग्यवतीनुं अति सराहुं हुं भाग्यजी
क्यां लगी तेह वर्णन करूं तेहनुं अेह रूप सौभाग्यजी ।७५।
अश्व रक्षकने न्योछावरी वारी आपी तेणी वारजी
मामी सासु शणगट करी पधार्या भवन मंजारजी ।७६।
वेदना मंत्र ब्राह्मण भणे जे जे शुभ समयना भाव्याजी
अेणी पेरे आनंदे वरखता वरजी मंडप मांहे पधराव्याजी ।७७।
चोक पूरीने पटा धर्या वस्त्र बिछाव्या छे ज्यांहां जी
पूर्व दिशे सनमुख थई रसमइ बेठा ते त्यांहांजी ।७८।
जानने मान दीधा घणा सभा मंडप मांहे करीजी
श्री गुंसाईजी परिवार जुत बेठा ते उलट भरीजी ।७९।
वरजी उठी अलगे स्थले चरण क्षालण ते करीजी
आव्या उलटभर लटकता बेठा ते आसने फरीजी ।८०।
वर पासे वेणाभट आवीया चरणे नामी रह्या शीषजी
भाग्य सराही पोता तणुं वेग मुख उतर दीशजी ।८१।
चरण क्षालण कर्या वरजीना वेद मंत्रे करी जुक्तजी
अर्घ पादादि विधि सहु कर्या जेहनी छे शास्त्रनी उक्तजी ।८२।
वलता बेहु पासना त्यां आवीया बेहु आचार्यजी
स्त्रीय पुरूष वाच्य करी अने कर्यो ते गोत्र उचारजी ।८३।
वागो उतार्यो प्रथम तणो केशरी धोती ते धरीजी
सोहे छे भूषण भावता उपरेणो सोंघे ते भरीजी ।८४।
उपवीत जुग्म उतिम कर्युं त्रीजुं ते सुवर्ण तणुजी
वेणेभटे समर्पीयुं राजे छे ते सोहामणुजी ।८५।
जगत सहुना मन मोहतो मोड उपर धर्यो मोडजी
अंबोडले फुंदण कसणनुं तेह जोवानुं छे कोडजी ।८६।
कांसा पात्रे आण्युं दधि मधु प्रभुअे कर्युं मधुपर्कजी
आगल मंडपनो समय तेह कहेवानो छे हर्खजी ।८७।

इति श्री विवाह वर्णने वरघोडानुं तथा जान प्रसंगनुं
।। प्रसंग ८ मो संपूर्णम् ।। (मांगल्य २३)

प्रसंग - ९, मांगल्य - २३

राग : "गोळ गळीयो ने मोढे चोपडो कंसार कपूरे वासीओ" अेणी जात गवाशे

हवे मंडप वेणाभट तणो बेठा वरजी ते उलट अति घणो ।१।
मधुपर्क करावीजे करे कहुं छुं जे जे विधी आचरे ।२।
पछी सुंडला बे त्यां सिध्ध कर्या अति उजवल चोखे ते भर्या ।३।
लेइ पूर्व पश्चिम सच्या वर कन्याने काज आसन रच्या ।४।
वरजी बेठा पश्चिम मुख करी त्यांहां आडुं अंतरपट धरी ।५।
पछी कन्याजी पधराव्या ते पूर्व मुख बेसाडया ।६।
महा सुंदर जोड भली मली सहु जुअे छे मननी रली ।७।
त्यांहां वेगो आचारज आव्यो फरी गोत्रोचार कराव्यो ।८।
सोपारी निश्चे तांबोलना जे महेल्या छे रंग रोलना ।९।
ते लेइ कन्या वरूण ते आचरे पछी संकल्प पाणी ग्रहण करे ।१०।
कन्या संकल्प उपर महानिधी ने गेउं संकल्प करी अर्थ सीद्धीने ।११।
दान सिध अर्थ सोहामणुं सोवर्ण संकल्पे अति घणुं ।१२।
वरजी त्यां पाणि ग्रहण करे पण अंतरपट आडुंधरे ।१३।
बहुजी विहवल वहाला रसे जोउं वरजीनुं मुख कइ मिसे ।१४।
अंग आतुरता अनुसर्या पछे परस्पर थये दुख विसर्या ।१५।
कर स्पर्शी रह्यो छे तेह समे ते सुख अंग अंग सहुमां रमे ।१६।
पण नयणने ताप अधिक हवो श्रीमुख जोवा अति अभिनवो ।१७।
नयणे जोवा मनोरथ मन धर्यो पण अंतरपटे अंतर कर्यो ।१८।
नयणा करती आशा करे अभिलाख घणो मनमां धरे ।१९।
अेह समे जो अमो ते करने हता तो कर द्वारा श्रीमुख निरखता ।२०।
अेम अवगणना पोता तणी अंतरपटथी करे घणी घणी ।२१।
अे आतुरता अंतर लही ते व्हाले नव जाअे सही ।२२।
रसने विलंब करे अेक क्षणु पक्ष राखे मर्यादा तणु ।२३।
अेम वीती रयणी रंग रस भरे शुभ समय तणा कारज करे ।२४।
त्यां जोसी बेसाडया आदर करी समे सूचनने उलट भरी ।२५।
सुंदर जलसुं कुंडी भरी कुमकुम चरचीने घडी धरी ।२६।
समय साधे छे शुभ वेला तणो मनमां मनोरथ करी अति घणो ।२७।
वलतो हथेवालो छोडी अने वर कन्यानो हाथ ओडीने ।२८।
चणादाल चावल हलदी करी बेहुनी अंजुली तेणे भरी ।२९।
ब्राह्मण मंगलाष्टक भणे पछी ज्यां लगी स्फुरति अवकास छे ।३०।
शुभ समय ते वाघ राखी रहे सावधान रहो जोसी कहे ।३१।
हवे निकट आव्यो समे सावधान कहे सहुने गमे ।३२।
पल दसनो समय प्रथम लहे पछे पांच चार त्रण अेम कहे ।३३।
समयवर्ती समय कहे त्यांहां शुभ समय लगन होअे ज्यांहां ।३४।

पछी लगन वेला ज्यारे थई	सहुको थयुं आनंद मइ	।३५।
महा मंगल समय ज्यारे लह्यो	त्यारे जोतशीअे ते प्रथम कह्यो	।३६।
त्यांहां घंटानाद बजाडयो	शुभ सकल आनंद पमाडयो	।३७।
पछी अंतरपट अलगुं कर्युं	त्यारे काज उभयतानुं सर्युं	।३८।
सुंदर अक्षत अंगुली जे भरी	अेक अेकने मस्तके ते धरी	।३९।
अेम परस्पर मन सोंपीने	जुअे हरख भर्या ते हंसीने	।४०।
बेठा सनमुख मुख करी	अति आनंदे उलट भरी	।४१।
अति आतुर ने संकोचसुं	जुअे बहुजी लोचन लोचसुं	।४२।
नायक निरखे नयणे भरी	कांइ द्रष्टी दुरावी मिस करी	।४३।
अे समे वाजिंत्र वाजे घणा	अति विविध प्रकारे सोहामणा	।४४।
ठाम ठामे सहु मोद भर्या	महा मांगल्य गान प्रगट कर्या	।४५।
सुंदरी रही मलती पांतीसुं	गाये धोल परस्पर खांतीसुं	।४६।
मांहें मीठी गाल मिसे करी	ने मधुरा वचन रसे भरी	।४७।
मंडप महाले महा मोदसुं	अेम उत्सव होअे विनोदसुं	।४८।
त्यांहां आनंद वाध्यो रे अति घणो	जोवा मलीयो साथ सोह्यामणो	।४९।
जोड जोइ जोइ अति हरखीया	आनंद उभय रस वरखीया	।५०।
सोल वरसना श्री गोकुलपती	आठ वरसना बहु श्री पार्वती	।५१।
अेहोना रूप तणो पार ना लहुं	ते शोभा शी पेरे करी कहुं	।५२।
अेवी जोड जगतमां को नहीं	दीठी भाग्ये भूतलमां अे अहीं	।५३।
नव नेह नवल नव रस भर्या	नव रूची नव भाव भूषित कर्या	।५४।
श्री अंग ते झलकी रह्युं	महा कोटी प्रकाशे उमह्युं	।५५।
बेठा माहीरे पण चंचल घणुं	नयणे मन हरी ले सहु तणुं	।५६।
जेम रोकीये छे रस रासने	फेली चाले ते चंहु पासने	।५७।
महा नायक अे न्यामक कर्युं	पाणिग्रहण नाम अेहने धर्युं	।५८।
अे स्वकीय हिते करूणा करी	अेवी भूतल लीला आचरी	।५९।
अे सरखे सरखा बेहु जणा	अेक अेकथी अधिक सोहामणा	।६०।
मुख उपर चंद्र ओवारीअे	अंग कोटिक मनमथ वारीये	।६१।
उपमा कहेवा जोइ घणी	पण अेह सरखी अेहज बणी	।६२।
मृग नयणीनी मीट रसभरी	जुअे आडी द्रष्टी करी करी	।६३।
सहु जोवा आव्युं जोडने	मन मनोरथ प्रगट्यो कोडने	।६४।
अहीं गोकुलपती अति गुणनिधी	अहीं पार्वती बहु महानिधी	।६५।
महा कारण रूप कुंवरी तणुं	जोइ रीझया रसिकवर घणुं	।६६।
अे जोड उभय अभिनवी मली	जोइ जोइ सहुको पाम्या रली	।६७।
रूप रस लोभे लोभी रह्या	जाणे मोहक फंदे मन ग्रह्या	।६८।
टक अलगी न मटके अेक क्षणुं	जुअे उभय स्वरूप सोहामणुं	।६९।
धन्य समय सोहागी अे समे	अेम कही कहीने चरणे नमे	।७०।
वली द्रष्टी निवारण काजने	वारे सर्वस्व श्री महाराजने	।७१।

भामणां लेइ लेइ भामिनी आशीष दे मन अभिरामिनी ।७२।
कहे जुओ मुख लाडी तणुं महा सुंदर परम सोहामणु ।७३।
जोतां द्रष्टी म अलगी खेंचशो जोइ जोइ मनमांहां निवारसो ।७४।
अेहनी गुण गणना केम कहुं जो बुध्धि प्रमाणे नव लहुं ।७५।
तें पूजी गोर सोहासणी वर पामी श्री गोकुल घणी ।७६।
ससरा सम भूतल को नहीं तेहने हुं सराहुं शुं कही ।७७।
सासु पामी श्री पदमावती महा सुखद अने शुभमती ।७८।
महाभाग्य तमारूं सकल फल्युं तेह केणे नव जाअे कह्युं ।७९।
कन्या दिसना गाअे ते समे जेहवुं तेहना मनने गमे ।८०।
अेम जोड सराही सराहीने सहु गान करे छे उमहीने ।८१।
पहेला मंत्राक्षत मस्तके धरीने वेद संकल्प कर्म करी अने ।८२।
मांग मांहां उलेखन कुश मूलसुं करी स्थाप्युं सौभाग्य समूलसुं ।८३।
ते कुस लेइ उतर दिश धर्या दायजानी झारी जल भर्या ।८४।
अभिषेक करे मुद्रिका धरी वर वधुने वेद मंत्रे करी ।८५।
पधराव्या सुंदर बेहु ज्यांहां भीतर गोरी स्थापन त्यांहां ।८६।
कहे विवाह आदे सहु कर्म कर्युं अेहवे गौरी पूजन मन धर्युं ।८७।
अेम कही कुल रीते पूजा करे अे आश्रितने अंगीकृत करे ।८८।
अे ग्रहस्थने शुभ वांछे घणो आदर कर्यो प्रभुअे तेह तणो ।८९।
पांच सोपारी वरना घर तणी आवी ढांकी ते सोहामणी ।९०।
गोल हलदी चणादाले भरी आपी स्त्री जनने वेंहेंची करी ।९१।
वली सुपडवटी उघाडी घणी भरी तेह सामग्री तणी ।९२।
ते ज्ञातमांहां सहु अने वांटी आपे छे बहु अने ।९३।
वलता वरजी पोता तणा घरना आभरण ते अति घणा ।९४।
पोते बहुजीने धरावे छे नख शिख सृंगार करावे छे ।९५।
पीत साडी सिंदूर धरावीयुं मोड धरीने अति मन भाव्युं ।९६।
पछे जुक्त रजे कुशनी दोरडी बांध्या बहुजी कटी गोरडी ।९७।
पछे छेडा गांठी करी अने माहेरे पधराव्या फरी अने ।९८।
आसन बदलीने बेठा त्यांहां मांडया छे प्रथम आसन ज्यांहां ।९९।
पछे वर वधुने उभा करी वरनी पोस उपर वधुनी धरी ।१००।
दाल चावल थालमां छे जे त्रण मुठी अंगुलीमां मुक्या ते ।१।
वार चार तेहने मंत्रे करी पछे वरजीने मस्तक धरी ।२।
वली अेहज रीते विधी करी वधुने मस्तके महेले फरी ।३।
तन स्पष्ट मंगल अर्थ लहे कामना पूरण होअे अेम कहे ।४।
पशु पुत्र अने जज्ञनी कामना पूरण होअे अति अभिरामना ।५।
चोथी अंजुली तुस्मी करी बोल्याथी अति मनमां धरी ।६।
वर वधु बेसाडया आसने वींटया सूत्रे महासुख रासने ।७।
रघुवेद यजुरवेदे करी मंत्र जुत अति उलटसुं भरी ।१०८।

आप्या वरवधुने हाथमां	सनमुखे बेहु बेठा छे ज्यांहां	।१०९।
वर बहुजीने डाबे करे	बांधे छे अति उलट भरे	।११०।
पछे बहुजीअे वरजीने	जमणे करसुं बांधी अने	।१११।
मुसकाया हरख्या अति घणुं	अनुभवी जाणे सुख तेह तणु	।११२।
पछे चारे वेद ने ब्राह्मणों	आशीष दे मंत्रे सोहामणो	।११३।
करे होम विवाह समे तणो	तेह आगल विसद करूं घणो	।११४।

इति श्री ''गोकुलेश'' विवाह वर्णने मधुपर्क कन्यादान संकल्प वर्णनो नाम
।। प्रसंग नवमो संपूर्णम् ।। (मांगल्य २३)

प्रसंग - १०, मांगल्य - २३

राग ''जुओ मुख जुओ मुख लाडी द्रष्टी मा खेंचसो आडी'' अेम गवाशे।

विवाह प्रधान होमने काज	सिंहासने पधार्या महाराज	।१।
प्रथम रची चोरी रस भरी	परम विचित्र विवेक करी	।२।
मथनी मनोहर चित्रत भारी	रंग रंग रचना करी समारी	।३।
घाटे अेक अेकथी उतरती	धरी अेक अेक उपर अनुसरती	।४।
चारे खुणे ते लेइ धरी	निसेवासे रचना करीय	।५।
नौतन पल्लभ परम रसाल	ललकता बांध्या तोरण माल	।६।
चोक पूर्या चतुराइ करी	अचल सोहासणी उलट भरी	।७।
मध्ये मध्ये मोती केरी पांत	महा मांगल्य हित करी करी खांत	।८।
दीधां छडा ते कुमकुम केरा	दीसे सुंदर भांती अनेरा	।९।
चारे खुणे कर्या चित्र	वेदी रची ते परम विचित्र	।१०।
सुंदरी विविध सृंगार ते करी	आव्या अंग अंग भूषण भरी	।११।
मली मली गाअे सोहासणी	लागे छे अति सोहामणी	।१२।
कंठे कोकिला कलरव बोले	नहीं को गान तणे समतोले	।१३।
जोतां द्रष्टी न अलगी चाले	विवस थयां नहीं आप संभाले	।१४।
अगर उवेख्या उतम त्यांहां	श्री वल्लभ पधार्या ज्यांहां	।१५।
सुखद समीर जे वहे सुभावी	शोभा शोभा जोवा आवी	।१६।
पुलकित रोमांचित थई देखी	पोताने तृण वत करी लेखी	।१७।
वली वली भाग्य सराही नमय	कहे उपयोग हवो अेणे समय	।१८।
रचना रची रसिकवर काज	कीधां मांगल्यनां सहु साज	।१९।
पीढा मांडया आगल आवी	उपर साडी पीत बिछावी	।२०।
त्यां चतुर वर बहुजी संगे	चोरीअे आव्या अति रसरंगे	।२१।
सुंदर रूप अनुपम जोड	अे जोवानो सहु कोड	।२२।
अंग अंग सुंदर परम रसाल	कुंडल झलकता झाक झमाल	।२३।
धोती उपरेणो अंगी कर्यो	राजे छे केसर सोंधे भर्यो	।२४।
अंबोडो अति अनुपम ललके	जोतां जुवतीना मन ढलके	।२५।

कंठे मुक्ता मणीनो हार रवि शशी वारू वारंवार ।२६।
नयण नवल नाटक पेरे नाचे धीरा धीरज क्यां लगी सांचे ।२७।
अधर अरूण अनुपम रस भर्या दीठे मानिनीना मन ह्यां ।२८।
अंग अंग प्रगट रूप रस धार जोइ मन सोंपी रहे नरनार ।२९।
अेवुं स्वरूप सुभगता रास दीठे मनमथ पाम्यो त्रास ।३०।
श्री गुंसाईजी मन हुल्लास सभा पूरीने बेठा पास ।३१।
सगा संबंधी सहुको फिरता श्री विठलजीने अनुसरता ।३२।
कृष्णादासी आदि जे भक्त हरीवंशजी मुक्षे अनुरक्त ।३३।
अेतनमारगीनो सहु साथ निकट रहीने निरखे छे नाथ ।३४।
सहु को बेठा मंडप मांहां हर्ष भर्या जुअे छे त्यांहां ।३५।
चोरीअे होम उलट भरी वलता अग्नी स्थापन ते करी ।३६।
विवाह प्रधान होम कर्यो त्यांहां पछे लाजा होम करे छे त्यांहां ।३७।
सप्त पदीअे धर्या सात सात लाडु सोपारी रूपैया सात ।३८।
सप्त पदीनी जावद रीत ते सहु कीधी करी बहु प्रीत ।३९।
गौरी शिला इसाने धरी रीत ते तेहनी सहु करी ।४०।
तेहोने अंगुष्टे अनुसरी पूरव दिशे दक्षण व्रत करी ।४१।
आगल बहुजी ने पाछल वरजी आवी उभा आनंद भरजी ।४२।
कर अंगुलीअे कर बहुजीनो ते ग्रही लीधो छे रंग भीनो ।४३।
पान धर्युं उपर नागरवेल उपर सालो लाजा महेले ।४४।
ते वरजी बेहु अंगुलीअे सव्य करे होमे ते मन रलीअे ।४५।
आगल पाछल अेणी रीते अग्नी पाखल फरी ते प्रीते ।४६।
जुवतीजन उलट नहीं माय तेह समयना मंगल गाय ।४७।
महा मंगल निधी मंगल वरते जै जै कार हवो त्यांहां फिरते ।४८।
चोथा मांगल्यनो ज्यारे समय ते सहुकेना मनमां गमय ।४९।
सालके वरजीना ग्रह्या चरण मागे वस्त्र अने आभरण ।५०।
बहु मनोरथ करी धरी मन आस वेगे गौरी शिलाने पास ।५१।
मुक्ष भट ते लक्ष्मीनाथ जावदइक सालकनो साथ ।५२।
गोविंदमामे त्यांहां बहु मूल आण्या अति सुंदर पटकूल ।५३।
आप्या तेहोने तेणी वार कीधां प्रसन्न करी मनुहार ।५४।
महा मोद जुत अति रस भर्या वलता चारे मंगल फर्या ।५५।
पछे बहुजीनी बहेन जे कमला आदर करीने तेडया जमला ।५६।
साडी लाजा होमनी आपी सार होम पूरण कर्यो तेणी वार ।५७।
योकतर बहुजीने कटी जे राखी श्रीजीअे छोडी उतर दिस नाखी ।५८।
आसने बेठा अति सुख देन उलटे आवी चारे बहेन ।५९।
मंगल थाल आरती धरी महावर वरेन्द्रने त्यांहां करी ।६०।
जै जै जै जै बोले सृष्टी अमरे कुसुम केरी करी बहु वृष्टी ।६१।
देव असुर रंक ने राण आशीष दे ओवारे प्राण ।६२।

अे सहु आधिदैविक स्वरूपे तृप्ती कर्या श्री गोकुल भूपे ।६३।
उत्साहा आनंद मोद प्रसन्न उलट हरखने प्रगट्यो मन ।६४।
कर्म कर्मांत रे सृती समृति सर्व संतुष्ठ थया सहु अेणे पर्व ।६५।
अेणी पेरे हवुं ते चोरीनुं काज अतिसे हरख्या सर्व समाज ।६६।
मथुरानी पोंहोंची मन रली अलौकिक आश अेहोनी फली ।६७।
भक्तना भाव तणु शुं कहीअे जे मनोरथनो पार न लहीअे ।६८।
जेहनी पूरण कीधी आश तेथी अधिक हवो ते प्रकाश ।६९।
उठया वर वधु प्रेमे परणी ते शोभा नव जाणे वरणी ।७०।
अे शोभा सम शोभा जोइ पण पटंतर नहीं आवे कोइ ।७१।
ते उपमा अेहने सी दीजे नमी नमी भामणा सहु लीजे ।७२।
सुंदर उभय परस्पर वर्या उठया अति रसमस रस भर्या ।७३।
अेहवा जोइ बेहु रूप रसाल चरणे लागे दास गोपाल ।७४।
जमुनादास ते हरखे भर्या प्रभुअे मनोरथ पूरण कर्या ।७५।
पछे हरख जुत तेणी वारे ग्रह प्रवेश करवा पधारे ।७६।
वाजिंत्र अनेक प्रकारना वाजे छंद सहित अति सुंदर राजे ।७७।
गान ते समय सोहासणी गाय हरख भर्या अंग अंग न माय ।७८।
आव्या निज मंदिरने द्वार मंगल कलस करी सृंगार ।७९।
अनेक समाज सहित परवर्या श्री बहुजी संग अति रस भर्या ।८०।
सुंदरी सनमुख लाव्या ज्यांहां विप्रे अभिशेख कर्या त्यांहां ।८१।
बहुजीने साडी आपी सारी उपर दहीं चावल ओवारी ।८२।
बहेने आरती करी बहु कोड कह्युं जुग जुग जीवो अे जोड ।८३।
भामणा लेइ आशीष दीधी नयण सयण करी मानी लीधी ।८४।
भीतर पधारता रोक्या बहेने भावता भूषण आप्या तेहने ।८५।
भीतर पधार्या प्राण आधार डगले डगले धरी दिवानी हार ।८६।
अेक अेक सुहाली संग करी पधार्या ते उपर डग भरी ।८७।
कीधी कुल केरी सहु रीत दधि पकवान आरोग्या प्रीत ।८८।
बहुजीने मढीओ रूपा केरो डाबे कर पहेराव्यो अनेरो ।८९।
वेदीअे पधार्या करी खांत स्वस्ती वांचन कीधा उपरांत ।९०।
बहेने दूध घृते वधु वरना चरण प्रक्षाल्या आरत हरना ।९१।
अेह समय नेगनी पहेरामणी बहेनने आपी ते घणी घणी ।९२।
मथना पूरण भर्या ते ज्यांहां बहुजीनो कर महेलाव्यो त्यांहे ।९३।
अलौकिक लक्ष्मी लही सामथ पूरणता होअे अेणे अर्थ ।९४।
वलता तेहज रीते करी सासरे पधार्या छे फरी ।९५।
ग्रह प्रवेशनो होम ते कीधो अेम अग्निनो मनोरथ सीधो ।९६।
पछे वर वधुअे कीधुं अेहु मौन रह्या संध्या लगी बेहु ।९७।
श्री गुंसाईजी वेणाभट मन रंग सहु परिवारने लेइ संग ।९८।
भोजन पंगती केरे भावे ज्ञातमां नोतरा देइ घेर आवे ।९९।

वेणाभट घेर होअे पाक अनेक भोजन अर्थे करी विवेक ।१००।
जे करी जाणे रूडी रीत ते सहु तेडया धरी बहु प्रीत ।१।
विविध प्रकार विविध पेरे करी सिध्ध करे छे उलट भरी ।२।
श्रीजी संध्यावंदन आपुंकरीने अरूंधती देखाडी बहुजीने ।३।
वलतो होम संकल्प ते कर्यो बहुजीने हित अर्थे भर्यो ।४।
चावल घृतने करी संस्कार स्थालीपाक होम कर्यो ते वार ।५।
शेष हवी ते तणी भीक्षा अेणी पेरे होमनी कीधी रक्षा ।६।
भोजन पंगतीनी जे पेर आगल कहुं ते उलट भेर ।१०७।

इति श्री विवाह वर्णने चोरी मांगल्य वर्णनो नाम

।। प्रसंग दशमो संपूर्णम् ।। (मांगल्य २३)

वेणाभट घेर होअे पाक अनेक भोजन अर्थे करी विवेक ।१००।
जे करी जाणे रूडी रीत ते सहु तेडया धरी बहु प्रीत ।१।
विविध प्रकार विविध पेरे करी सिध्ध करे छे उलट भरी ।२।
श्रीजी संध्यावंदन आपुंकरीने अरूंधती देखाडी बहुजीने ।३।
वलतो होम संकल्प ते कर्यो बहुजीने हित अर्थे भर्यो ।४।
चावल घृतने करी संस्कार स्थालीपाक होम कर्यो ते वार ।५।
शेष हवी ते तणी भीक्षा अेणी पेरे होमनी कीधी रक्षा ।६।
भोजन पंगतीनी जे पेर आगल कहुं ते उलट भेर ।१०७।

इति श्री विवाह वर्णने चोरी मांगल्य वर्णनो नाम
।। प्रसंग दशमो संपूर्णम् ।। (मांगल्य २३)

तरंग -११, मांगल्य - २३

राग : "कुंके घोल्या रे कंकावटी पीयल काढोरे सहु केने ललाट" अेणी जाते गवाशे

भोजन पंगती तणा निहोतरा कांइ कीधा रे सहु केहेने घेर
के रंग तणा होअे रोल
भोजनने वेणाभट घेर परवरीया तेहनी कहुं पेर के रंग तणा ।१।
आंगणमांथी श्री महाप्रभु पधार्या बहुजीने लेइ गोद ''
स्त्रीय समाज सहित सहुने त्यां प्रगट्यो रे अति आनंद मोद '' ।२।
पीली साडी रे पीढे धरी त्यांहां बेठा रे बेहु अेकी ओल रंग
हलदी लेइ हरखे भर्या ते लगावे रे अेक अेकने कपोल '' ।३।
श्री गुंसाईजी सहित सहु को त्यांहां उभा रे जेको नर अने नार रंग
तेहो मनमां फूल्या अति घणुं कांइ उलट रे केरो नहीं पार '' ।४।
पदमावतीजी बहु आवीया तेणे हलदी ने सोपारी सोल सार रंग
वर बहुने न्यारा न्यारा त्यांहां आप्या रे आणी तेणी वार '' ।५।
उणा पूरायेणे खेलसे आगल हार जीत रे जणावाने काज रंग
वलतो दाव ते बांधीयो बेहु पालव ते प्रकारनो साज '' ।६।
लेइ छिपावीने राख्यो अेणे अलगी रे अलगी करी तेह रंग
रीत अेहोने छे चोरीनी कोण चोरे छे अेक अेकनो अेह '' ।७।
जे कोइ जे पासे थकी चोरी ले छे रे पहले तेणी वार रंग
दाव छोडामणी तेहने रे आपे रे भूषण सार '' ।८।
वधु अविवेक लहे नहीं चोरीनी रे अेहने नहीं हेर रंग
सात्वीक सुशील सुमति घणुं सुकुमारी रे शुं जाणे अे पेर '' ।९।
वर घरथी धीरज धरी हरी ले छे रे सर्वस्व रस पात्र रंग
उर अंतरमां थकी मन चोरे रे अेक ही क्षण मात्र '' ।१०।
तेहने दाव ते चोरता हरी लेतां रे विलंब नहीं लगार रंग
जाणी रसवस थई अने बहुजीनो कीधो परिचार '' ।११।

बहुजीअे लघु लाघव करी दाव छोडी रे लीधा तेणी वार रंग
दाव छोडामणी आपीया श्री गुंसाईजीअे रे भूषण अने हार ,, ।१२।
हार मनाइ ते हरखसुं बहुजीने रे आपी करी नेह रंग
पाछा लीधा ते प्रेमे करी मागीने रे हार चोरीअे तेह ,, ।१३।
वलता बहुजी श्री गुंसाईजीने मुखे रे हलदी लगावे छे आप रंग
तेथी ससुर मन मोदसुं उलटीया रे आनंद अणमाप ,, ।१४।
कुटुंब सगा सहु कोइने ते लगावी रे हलदी ते अंग रंग
ते जोइ मन प्रफुल्लित थया वाध्यो छे रे अतिसे रस ,, ।१५।
श्रीजीअे श्री हस्ते करी वेणाभटने रे पक्षे जे कोइ ज्यांहां रंग
तेहने हलदी हरखे भरी अने लगावे रे सहु केहेने ते त्यांहां ,, ।१६।
श्री गुंसाईजी स्त्री पुरूषने पछे पंगती रे लेइ बेठा अेकत्र रंग
मध्ये दुल्हे दुल्हनी बेठा ते निरखे हरखे रे सर्वत्र ,, ।१७।
पूर्व मुख वरजीनुं कन्याजीने रे उतर मुख थई रंग
थई बेठा छे अेकठा होअे मनमां रे अति आनंद मइ ,, ।१८।
श्री गुंसाईजी निकट बेठा मामा ने रे बांधव अति सार रंग
कुटुंब सगा सहु त्यांहां आवी मली बेठा रे जेहोना ज्यां अधिकार ,, ।१९।
हरख भर्या समधोरो कर्यो बेहु भेटया रे समधण मन भाय रंग
भूषण आपी मन भावता पछे लाग्या रे वर मातने पाय ,, ।२०।
समंधीना घरनुं पटोरडुं पहेरीने रे मनमांहां रीझीय रंग
वरमाता उलट घणो परोसे रे सहु केहेने ते धीय ,, ।२१।
सर्व परोसी रह्या पछी करे महाप्रभु रे कुल रीत समान रंग
करवावे बहुजीने ते त्यांहां घृतनुं रे आचमन अपोशन ,, ।२२।
ते जोइ महा मोदसुं रीझया रे ते अन्यो अन्य रंग
पंगते वेणाभट घेर करे छे सहुको भोजन ,, ।२३।
पकवान कपट तणा मांहे घणा छलबल रे कौतिकनो नहीं पार रंग
ते प्रकार प्रगट करी कांइ कहुं छुं रे तेहनो विस्तार ,, ।२४।
पीढो गुंदर्यो गिरधरजीने लेइ मांडयो रे जाणी वडचार रंग
उठता वलग्यो सणे तेहने जोइ हवी रे हांसी नहीं पार ,, ।२५।
काउ तणी मठडी करी लेइ पागी रे सुंदर पा मांहां रंग
बहु पकवान मांहे थकी लेइ महेली रे श्री गुंसाईजी छे ज्यांहां ,, ।२६।
श्री गुंसाईजीअे लइ अने भांजी पण रे भांजे नहीं कोर रंग
तेह जोइ संकुचाइ अने मुसकाया सहु को चंहु ओर ,, ।२७।
लेइ वनोरामां पागीआ ते कीधा रे बूंदी अनुहार रंग
तेह परोस्या गोविंदजीने पकवान मांहेरे मेली तेणी वार ,, ।२८।
गोविंदजीअे गमता करी लीधा पण रे चाव्या नहीं जाय रंग
मनमां संकुचाया घणुं ते जोइ जोइ हांसी नहीं माय ,, ।२९।

वस्त्र तणी पूरी करी गोविंदमामाने महेली लइ अेह रंग
लेवा समय अकुताइने ताणे पण रे तुटे नहीं अेह ,, ।३०।
छल पकवानमां जाणीने ते लेतां रे सहु आश्चर्य होय रंग
अेहवुं कपट गोपन कर्युं ते जोतां रे समजे नहीं कोय ,, ।३१।
lela popta
कर्युं मलोखा तणुं रायतुं लेइ मेल्युं रे बालकृष्णजीने घणुं रंग
ते लेता रे रस वाध्यो घणो हंसता रे समे हवुं सोहामणु ,, ।३२।
करी सृंगार सोहामणो वेणाभटनी रे परोसे बहु बेटी रंग
वर जोइ विहवल थया क्षणुक्षणु आवे रे कुल संकुल मेटी ,, ।३३।
खली तणुं शिखरण कर्युं गोबरनो रे गुडवो ते रसाल रंग
अच्युतमामाने रे महेल्यो स्वाद जोतां रे हंस्या बाल गोपाल ,, ।३४।
गाअे छे गीत सोहामणा अेह समयना ते निकट रही बाल रंग
नाम लेइ लेइ सर्वना हंसी हंसीने रे दे छे मीठी गाल ,, ।३५।
भाजी बबुरना पाननी ते छोंकी रे सुंदर विधी करी रंग
मुसकनीअे रूखाइरसुं सहु केहेनी रे पतलीअे ते धरी ,, ।३६।
गुंजामांहा घाली चीडुकली तेहनुं लीधुं रे कणके मों बीडी रंग
ते महेल्युं वर्णारक भटजीने भांज्युं त्यारे सद्य गइते उडी ,, ।३७।
ते हांसी थोभे नहीं सहु केहेने रे पटे वले खाली रंग
को लोटे को ताली दे ने सके नहीं रे ते कोअे आप संभाली ,, ।३८।
पकवान अनेक प्रकारना अने सखडी शाक पाक अनेक रंग
बहु भांते बहु भावसुं ते परोसे रे अति करी विवेक ,, ।३९।
केशुना रस मांहें पकवडी ते पागी करी रे रूडी भांत रंग
तेह परोसी सर्वने जे कोइ बेठा रे त्यांहां भोजन पांत ,, ।४०।
हस्य कौतुहल अभिनवो भोजन रे अेणी पेरे दिन चार रंग
हवो वाध्यो रंग रस अति घणो उलट्यो रे वेणाभट केरे द्वार ,, ।४१।
कौतुक हास्य अनेकसुं करी भोजन रे उठया तेणीवार रंग
विप्रे मंत्राक्षत करी अने दीधी आशीष त्यां विविध प्रकार ,, ।४२।
बीडां ते बहु संयोगना आपीने रे पछी करी विदाय रंग
मनोरथ अेह पूरण हवां वेणाभटने रे आनंद नहीं मांय ,, ।४३।
पछी वर वधु पोढे इकठा भोम सेजे रे चार दिवस पर्यंत रंग
Khakra
मध्ये समध पलासनी लेइ राखी रे मर्यादा निमित ,, ।४४।
प्रातः थअे पोढी उठया मंगल निधी रे मंगल हवा सार रंग
अेणी पेरे भोजन पंगतीनो हवो उलट रे अतिसे विस्तार ,, ।४५।
हवे आरंभ हलदीनां खेलनो आगल कहुं तेह विसद प्रकार रंग
जे मांहे रस अभिनवो ते कहेतां नव पामुं हुं पार ,, ।४६।

इतिश्री विवाह वर्णने भोजन पंगती वर्णनो नाम

।। प्रसंग अग्यारमो संपूर्णम् ।।

प्रसंग –१२, मांगल्य – २३

राग : " में तुं मालेण बारइ वार डोदमणो मराखे" अे जाते गवासे

हवे हलदीना खेलनो आरंभ करूं जे मांहां रस रीत वाध्यो रंग
रस भर रसियो ते रमे प्रगट करी बहु प्रीत अभिनवो ।१।
ज्यां रस त्यां रूचि अति घणी अेहोने अेहज बाण ,,
रसे करी रस वस होअे अेहज प्रमेय प्रमाण ,, ।२।
बीजुं कांइ रूचे नहीं रस मांहें रस रूप ,,
तेह रस परम अगाध छे जाणे गोकुल केरो भूप ,, ।३।
सर्व समाज मली मली श्रींगार करी बहु पेर ,,
उलटे आवे उतावला मंडप वेणाभट घेर ,, ।४।
मंगल द्रव्य हलदी तणो सुगंध रस बहु रंग ,,
केशर अबील गुलाल जे सोंधो उतम लेइ संग ,, ।५।
हलदी उवटणा ते अभिनवा तेल जे सुगंध राज ,,
सर्व सामग्री सोरभ तणी हलदीना खेलनो साज ,, ।६।
अनेक सोहासणी वाजते गाजते करतां गान ,,
आव्या ते अति हरखे भर्या मंडपे महा भाग्यवान ,, ।७।
स्त्रीजन वेणाभट तणे तेडया ते आदर करी ,,
बेठा बिछावणे सहु कोइ सामग्री त्यांहां धरी ,, ।८।
भीतर कुलदेव पासथी जोइ सहुने मन भाव्या ,,
श्रीजीअे बहुजी गोदे करी आगण मांहें पधराव्या ,, ।९।
उभा छे बेहु पासना गान करे बहु प्रीत ,,
परस्परे वर वधुने पाये लगाडयानी रीत ,, ।१०।
वरनी पास तणा अेम कहे कन्या लागशे पहेला पाग ,,
कन्याना कहे वर लागशे प्रथम करी अनुराग ,, ।११।
संवाद करे सनमुख रही कही कही उतर अेह ,,
को केहेने ते माने नहीं जोवा रह्या सहु तेह ,, ।१२।
शोभाजी सर्व थकी बडा आव्या श्रीजी केरे पास ,,
काने लागी समुजावीया सुंदर सुखनी रास ,, ।१३।
कह्युं बाबा अे तो तमने नित्य नमसे करी प्रीत ,,
पण हमणा ते तमो नमो अेवी छे आपणे रीत ,, ।१४।
मान्युं वचन वडचारनुं उठया ते लागव पाय ,,
बहुजी ते लागवा दे नहीं अे सुख कह्युं नव जाय ,, ।१५।
बहुजीने संग सहु कोइ सीखवे लागवा दो पगे आज ,,
चरण संताडे संकोचसुं धरे मनमां घणी लाज ,, ।१६।
श्रीजी ते स्पर्शी सके नहीं तेम तेम मन हुल्लास ,,
मली मली त्यां सहु को करे मोदसुं तेणे समे हास ,, ।१७।

केम केम करी श्रीकरे ग्रह्मा	बहुजी केरा जुग चर्ण	वाध्यो रंग	
नीचा थई चरणे नम्या	त्रिलोकनुं आभरण	,,	।१८।
वलतां बहुजी उठया लाजसुं	लाग्या वरजी तणे पाग	,,	
अंतर अनुमोदन थया	जाणी अे अचल सोहाग	,,	।१९।
पछे बेहु बेठा इकठा	परम अनुपम जोड	,,	
जोइ जोइ उर अति उल्लसे	सहुने जोवानुं कोड	,,	।२०।
बांधव बहेन मोदे भर्या	आनंद उर न समाय	,,	
स्वकीयने सुख अति घणुं	हैयडुं टाढुं ते थाय	,,	।२१।
जोड जोइने मेही रह्यां	शोभा प्रगट हवी भारी	,,	
भाग्ये बहुजी अे वर पामीया	अेहेवुं कहे नर नारी	,,	।२२।
निरखी निरखी जुवती सहु	भरे मांहों मांहें अंक	,,	
रसिक मनोरथ मन धरे	जुअे छे थई निसंक	,,	।२३।
भाव लेइ भामिनी तणा	चतुर करी चतुराइ	,,	
मुसकनी प्रेम कटाक्षसुं	सींचन करे सुखदाइ	,,	।२४।
हलदी आपी अति हरखसुं	वर वधु केरडे हाथ	,,	
सर्वने हलदी लगाडवा	बेहु जाण उठया साथ	,,	।२५।
बहुजीअे प्रथम प्रेमे करी	सासुने कर्यो सोहाग	,,	
हलदी लगावी अति हित करी	अंतरने अनुराग	,,	।२६।
सासर वेल सोहामणी	जावद स्त्रीजन जेहने	,,	
जे कोइ आव्या छे मंडपे	हलदी लगावी छे तेहने	,,	।२७।
लाडलडेती लाडकी	आव्या श्री गुंसाईजीने पास	,,	
तेडीने गोदे बेसाडीया	पाम्या ते सुखनी रास	,,	।२८।
हलदी लगावी जेणे समय	तेह समयनुं शुं कहीअे	,,	
आनंद सागर उलटयो	अनुभवथी तेह लहीअे	,,	।२९।
वलती लगावी देवर जेठ	ने सगा कुटुंब परिवार	,,	
सर्वने मन उत्साह हवो	उलटनो नहीं पार	,,	।३०।
अेक पासे प्रभु पालतो	हलदी लगावे छे हाथ	,,	
ससुर पक्षना सर्वने	जे कोइ स्त्रीजन साथ	,,	।३१।
रसिक वर रस भर्या	महा रसे मायमंत	,,	
हलदी लगावे सर्वांगने	रस तणा अंग परजंत	,,	।३२।
कर स्पर्शे कौतिक मिसे	रस भर परम सुदेस	,,	
आनंद पामे अति घणो	जे कोइ रसिक वरेस	,,	।३३।
को स्पर्शी परसावे छे	को सनमुख करे आल	,,	
गान करे तेह समयना	देइ देइ मीठी गाल	,,	।३४।
अंतर अभिलाषा जेहने	तेहनो हरे परीताप	,,	
वेणाभट आदी सहु पुरूषने	हलदी लगावे छे आप	,,	।३५।

हांसी करे मन भावती करे भदेसडा हार वाध्यो रंग
केहेने केहेने कंठे ते धरे हास्य तणो नहीं पार ,, ।३६।
अेक अेकने मस्तके भरे तेलने सोंधो संग ,,
ढोले केशर हलदी घणी ने वली केशुनो रंग ,, ।३७।
अबील गुलाल छिरके घणुं अगरजानो नहीं पार ,,
खेले छे बेहु पासना उनमत थया नरनार ,, ।३८।
महा कुतुहल अभिनवो रंग तणी होअे रास ,,
उत्साहा परम आनंदसुं सर्वनी पूरे छे आश ,, ।३९।
श्री गुंसाईजीना हरखनो मोद प्रगट थयो भारी ,,
तेह प्रकार विसद करी कहेवा न शक्य मारी ,, ।४०।
अेणी पेरे परम विनोदसुं होअे हलदी तणो खेल ,,
वधु सहित ते खेलमां खेले मोहन वेल ,, ।४१।
अेक खेल खांते करी खेले छे नवल कुमार ,,
रीत अेहोने छे सदा तेहनो कहुं विस्तार ,, ।४२।
स्त्रीजन समोवडी मली कहे हांसी कौतिक बहु बोले ,,
बहुजीने सहुको अेम कहे कंचुकीना बंध खोले ,, ।४३।
चतुराने चोली तणी तनी सुंदर महा सुख वेस ,,
गांठ गुणे पूरण करी दे पछे परम सुदेस ,, ।४४।
निपुण नायका मली खेंचे जेणी पेरे प्रांत न लाधे ,,
चीर चीर खेंची खेंची अने हंसी हंसी कसी कसी बांधे ,, ।४५।
गुडने पीठे अडदने मांहें ते तेल सबंध ,,
बल चतुराइसुं बांध्या कंचुकीना द्रढ बंध ,, ।४६।
पूर्व पश्चिम मुख करी सनमुख बेठा कोडे ,,
नव नायक नवोढा तणी कंचुकीना बंध छोडे ,, ।४७।
परस्पर चंचण पणे अति आदरसुं अेह ,,
निरखे छे द्रष्टी दुरावीने भाव भर्या करी नेह ,, ।४८।
ते जाणे कनक कमलमां मधु खंजन जल अने मीन ,,
उरस्या ते तलफे घणुं थई अे रस आधीन ,, ।४९।
पछी गोरी भोली गुणवंती गुणनिधीनो कर जमणो ,,
आरसी कर जुत आपणो ग्रही रह्या ते सोहामणो ,, ।५०।
चतुरवरे चंचल पणे परसी भुजा तणी संध ,,
वाम पाणे वाम तणा छोडे कंचुकी केरा बंध ,, ।५१।
कर परसे करने हवी कमलनी उपमा रसाल ,,
उभय रोमांचित थकी कमल सहित सनाल ,, ।५२।
कर स्पर्शेथी उभय उरे घन रूप उमंग्यो प्रेम ,,
प्रहसित वदने प्रगट हवी कुसुम वृष्टी अणनेम ,, ।५३।

दंत पंगति चलके घणुं विधुलता अनुहार वाध्यो रंग
अेहवी अमोघ वृष्टे थकी वाध्या ते पूर अपार ,, ।५४।

सुख सुवास समोहनो सागर भर्यो आनंद ,,
प्रेमनो पार न पामीअे क्षिते फेल्यो मकरंद ,, ।५५।

ते मांहें अेक अद्‌भुत हवुं असंभवीत दीठुं ,,
भावे जोता अेम भावीयुं सर्वने लाग्युं मीठुं ,, ।५६।

बहुजीनी अंगुलीअे आरसी तेमांहे बेहु जण जुअे ,,
तेथी शोभा जे प्रगट हवी वरणी सके नहीं कोअे ,, ।५७।

दीठे महा अति वृष्टी महा सूरजनो जे प्रकास ,,
तेह मंडप मांहें शोभीअे चंद्र चकोर बेहु पास ,, ।५८।

खंजन मीन मधुप तणा उभय जुग जुग रूप ,,
बाण धनुष मृग पारधी दीठा परम अनूप ,, ।५९।

अंबुज अलिकुल सुक जुग बिंब अरूण ने अनार ,,
सलिता त्रण सोहामणी दीठा बे नर नार ,, ।६०।

कर कमले वामा तणा जुग आननी जोत ,,
दीसे छे अनेक प्रकारनी आद्रस महा उद्योत ,, ।६१।

अेहवी अनुपम भांतनी शोभा प्रगट हवी भारी ,,
जोइ जोइ सहु को तेह समय आश्चर्य थया नर नारी ,, ।६२।

अेहवी अे जगत विमोहनी सार शिरोमणी जोड ,,
अेहने उपमा केहेनी दीजीये देतां लागे खोड ,, ।६३।

शोभा जोवा रही सुंदरी झुमी झुमी चोंहों पास ,,
तेहनी शोभा प्रगट हवी सुंदरताना रास ,, ।६४।

Thakorji मध्ये श्रींगार कल्पतरू ने कनकलता बेहु राजे ,, Parvatiji
पाखल फिरती सुंदरी कमलनी वाड बिराजे ,, ।६५।

के कनकने कोटे चंद्रना कंगुरा कमनीय सार ,,
जटित मंदिर केरा केसनी बांधी बंधन वार ,, ।६६।

श्रीमुख कोक नद उपरे इंद्रवर आदी जेह ,,
ज्यावद कमल ओवारे छे जाणे सुंदरी मुख अेह ,, ।६७।

पटंतरने कोअे नहीं मिथ्या उपमा सर्व ,,
प्रेमनो पुंज रसे भर्यो भर्या अलौकिक गर्व ,, ।६८।

लोक वेदातीत अभिनवी अनुदिन लीला करण ,,
ग्रथरछ वपु कारण मइ मोहक जगत आभरण ,, ।६९।

अेहने उपमा केहेनी दीजीये अे सरखी अे राजे ,,
शोभा शोभा पामे जेह थकी अेहवी अे जोड बिराजे ,, ।७०।

अेहवी शोभा अे सुशोभिती मंडपे महेमही गहेरी ,,
जाणे आनंद सर मांहें सरसीरूह जुत लहेरी ,, ।७१।

अेहवी सुभग मृगनयणीनी	भीड ते कहीय न जाय वाध्यो रंग		
सुखना समोह प्रगट होअे	सर्वांगे शीतल थाअे	,,	।७२।
अे आनंद बले थकी	कन्यानी पासना जेहवा	,,	
दुल्हाने गारी गुणे भरी	मीठी मधुर दे तेहवा	,,	।७३।
गूढ वचन गुण रस भर्या	कहे छे जे अे रस पात्र	,,	
तेह प्रकार विसद करूं	कांइ अेक छाह्या मात्र	,,	।७४।
सुंदरी अनेक समाजसुं	बुध्ध प्रमाण विचारी	,,	
रचना रची चतुराइसुं	वचन कहेवा पचिहारी	,,	।७५।
गाली गाअे सुख निधीने	वाणी विहवल मन भाये	,,	
अण उचित आवे नहीं	असद उच्चार न थाये	,,	।७६।
अेह तमारी छबी जोइ	अभिनवी ने पूरणताइ	,,	
जोइ जोइ पार न पामीये	कहीय न जाय वडाइ	,,	।७७।
गाली केम करी गाइअे	तमो छो गोकुल भूप	,,	
मोहक अंग सोहामणा	विठल कुंवर अनूप	,,	।७८।
मोटी गाल मही मंडले	तमने चतुर सुजाण	,,	
चित चोर्यो सर्वस्व हर्यो	अेह सदा लगी बाण	,,	।७९।
भोंह कटीली भावती	दीसे मन ललचाय	,,	
चितवनी चारू चंचल जोइ	गाली देइ नव जाय	,,	।८०।
लखण तारा लाडीला	छेल छबीला अंग	,,	
छलबल जाणे अति घणा	करे सुंदरी केरो संग	,,	।८१।
भावे भूषित भामिनी प्रीय	रूप जोबन होअे ज्यांहां	,,	
गाली क्यांहां लगी दीजीये	अरूझया रहो तमो त्यांहां	,,	।८२।
आचार वरण गिणे नहीं	न गिणे राजा ने रंक	,,	
पोतानी ढलनीअे ढल्यो	केहेनो नहीं भय शंक	,,	।८३।
रति जोरडो चित चोरटो	घूरत ने धुतारो	,,	
उनमत मदन मदे रहे	रति अहंकार निवारो	,,	।८४।
नीचने उंच करो तमे	गुण दोष कांइ न विचारो	,,	
गाल अेथी सी दीजीये	तेहनो शो पतिआरो	,,	।८५।
सहसुं सरखा थई मिलो	सहुना रसमां समाओ	,,	
मन लेइ मन मेलवो	रस विन वस नहीं थाओ	,,	।८६।
जोउं जगती तल मांहां सहु	अवतारा अवतारी	,,	
समोवड को आवे नहीं	तम तणी गति कांइ न्यारी	,,	।८७।
पुराण प्रसिध्ध पुराणना	जोया शास्त्र विचारी	,,	
श्रुती स्मृती जाणे नहीं	बुद्धि बले रह्या हारी	,,	।८८।
गाली गाइ तेहने शुं कहीअे	तेहना अनंत छे नाम	,,	
प्रतिक्षणु रूप ते अभिनवा	ने वली अनंत धाम	,,	।८९।

गुणवंत रूपवंत बेहुपेरे जसवंत रसवंत रूप वाध्यो रंग
गाल ते केम करी दीजीये सकल प्रकारे अनूप ,, ।९०।
अंग अंगे मोहे मोहनी माधुर्य परम रसाल ,,
धीरानुं धीरज खसे केही पेरे दीजे गाल ,, ।९१।
उभय कुल पावन कर्युं सुजस जगत सुणी जे ,,
कहेवा कांइ आवे नहीं शुं कही गाली दीजे ,, ।९२।
जगतना ईश जगत गुरू गोकुलनाथ प्रतिपाल ,,
जीवन धन जुवती तणा शुं कही गाउं गाल ,, ।९३।
मात तमारी साधवी गुण रूप शील सुजाण ,,
जेहेनी कुंखे तमो प्रगटीया धन्य ते कुंख प्रमाण ,, ।९४।
शोभा सिंधु शिरोमणी रूकमणी लाल उदार ,,
गुण गिणनाओ केम कहुं कहेतां नव आवे पार ,, ।९५।
रसिक समाजमां रही समधण चतुर सुजाण ,,
गाओ गाल ते सोहामणी मीठी मधुरी शुभ वान ,, ।९६।
ग्रंथी छोडावो गुण भरी अंतर अति अनुरागी ,,
कमल मुखी कौतुक करे हंसी हंसी रसमां पागी ,, ।९७।
छोडो लडेता दोरडुं कां उपरेणो भीनो ,,
अति सकुमार श्रमे भर्या परसता आव्यो पसीनो ,, ।९८।
अडकता अंग शिथील थयां स्वेदे सचीकण गात ,,
आरकत मुख अंग अंग हवुं अति आतुर अकुलात ,, ।९९।
छूटे नहीं छोडे थकी सीखवे सखीय समाज ,,
त्रोडो लडेता दोरडुं अेहवा दाव छे आज ,, ।१००।
समधण दिसना अेम कहे डहापण महेलोतमारूं ,,
छोडो कुंवर तमो दोरडुं कह्युं करोजी अमारूं ,, ।१।
नाम तमारूं सांभल्युं भुवन तणा बंधन छोड ,,
बंधन छोडो तनी तणुं अमने जोवानुं कोड ,, ।२।
अे गांठ छोडो सोहासणी वेगा वेगा थई आप ,,
जो तमथी छूटे नहीं तो तेडो श्री विठलजी बाप ,, ।३।
माता तेडो पदमावती के सहु बलवंत वीर ,,
के तेडो बुधवंत बहेनने जे तमने दे धीर ,, ।४।
शुं कहुं रूकमणीजी मातनेरे जेहनी सौभागी कूंख ,,
ज्यांहाथी अे रत्न प्रगट हवुं अनुपम परम अनूप ,, ।५।
बहु विधी सुभट शिरोमणी तमो वीराधिपती वीर ,,
कामग्रसितने मोचन करो दीठे रहे नहीं धीर ,, ।६।
नयण कटाक्षे वस करो मन हरो मुसकनी मांह ,,
अंग अंग मोहित करो तेह न चाले आंह ,, ।१०७।

अे नो हे मान छोडाववुं	छोडे जे मुसकनी मांह	वाध्यो रंग	
ते विद्या पूरण भण्या	केवा अटक्या छो आंह	,,	।१०८।
अेक काने लागी कहे	हंसी हंसी वचन रसाल	,,	
दांते करी छोडो तमो	तो छूटे ततकाल	,,	।९।
हांहां करी कर जोडीने	कुंवरीने लागो पाय	,,	
परम लडेती तणी तनी	तो अे छोडी जाय	,,	।१०।
कर बले रंच खसे नहीं	गांठ न जाय छोडी	,,	
सरकी सरकी जाअे अंगुली	कुंवरी हंसे मुख मोडी	,,	।११।
मोटा कहावो छो सर्वथी	वरसे नाना महाराज	,,	
मोटा थाओ त्यारे छोडजो	रहेवा दीयो आज	,,	।१२।
आंख लुहो पंखो करो	थाओ को स्वजन सहाअे	,,	
धीरज दीयो रे बेसी रहो	जेम अे तनी छोडाअे	,,	।१३।
कांइ अेक सुकृत कर्युं होअे	ते संभारो आज	,,	
तेथी गांठ अे छूटसे	रहसे तमारी लाज	,,	।१४।
सात परिक्रमा श्री बहुजीने	करी अेके पगे ज्यारे	,,	
डाबे पगे स्पर्शी रहो	अे गांठ छूटसे त्यारे	,,	।१५।
कृत्यम् अकृत्यम् अन्यथा	करण कहावो नित्य	,,	
ते बल आज क्यां गयुं	तनी छोडवाने निमित	,,	।१६।
अेम डसकाताइ कां रह्यां	धीर धरो कोनी आज	,,	
कोण गजु कंस छोडयानुं	करवा छे मोटा काज	,,	।१७।
छोडता तमने शिखवुं	जो तमो जोडो हाथ	,,	
कुंवरीनी सखी साहेलडी	ते सहुने नामो माथ	,,	।१८।
अेक उपाय अमो कहुं	तमने चतुर सुजाण	,,	
हार्युं कहो सहु आगल	जोडीने बेहु पाण	,,	।१९।
सुंदरी अति संकुचे घणुं	नीची द्रष्टे मुसकाय	,,	
तेह समय जे रस प्रगट हवो	वचने कह्यो न जाअे	,,	।२०।
कौतुक होअे अभिनवा	हांसीनो रस विस्तार	,,	
मोद परस्पर तेह समय	उलटनो नहीं पार	,,	।२१।
अे जोइ अने विसमय थया	देव देवाधि पति जेह	,,	
हंसी हंसीने हरखे भर्या	कौतुक भूल्या तेह	,,	।२२।
शुक्रजी आदी जे स्वमार्गी	जोइ जोइ वात रसाली	,,	
ज्ञान गुपीत करी तेह समय	ध्यान धारणा टाली	,,	।२३।
नायक नयण निश्चय करी	सरकावी ज्यारे दोर	,,	
आनंद वाध्यो अति घणो	जै जै हवो चहुं ओर	,,	।२४।
जेम जेम गांठ जाअे छूटती	ने वली वली प्रांत लाधे	,,	
तेम तेम दोर ते प्रेमनी	रसभर सत गणी बांधे	,,	।१२५।

गांठ अेहोने छोडता वार न लागे लगार वाध्यो रंग
अेह रस अनुभव हितने अर्थे विलंब कर्यो तेणी वार ,, ।१२६।
श्रीजीअे लघु लाघव करी छोडी ते गांठ सोहागी ,,
सर्व समाजने निरखता क्षण भरी वार न लागी ,, ।२७।
तेणे समय सनमुख रही गाअे गुजराती साथ ,,
उलटभर अेम उचरे जीत्युं जीत्युं व्रजनाथ ,, ।२८।
अेम कही कही गुण अभिनवा रसिक तणा रस रूप ,,
ठाम ठामे महा मोदसुं गाअे ते परम अनूप ,, ।२९।
कंचुकी बंध छोडया तणो अे रस परम अगाध ,,
तेह जोइ जुवतीने उपजी काम व्यथानी आद्य ,, ।३०।
पछी जोड रसीली जुजुवीने उवटणा अंगे थाय ,,
अंग अंगुछी अंगुछो करी शोभाजी फूल न माय ,, ।३१।
जमुनाजी आदी सहु मली विविध पेरे करावे सृंगार ,,
सुंदर वर सृंगारीया सृंगार सारनुं सार ,, ।३२।
सार समोवड सुंदरी सृंगारी अति राजे ,,
नवरंग साडीनो छेडलो कटी पाछल रह्यो भ्राजे ,, ।३३।
वेणी अनुपम ललकती झालकती चोली अनूप ,,
उपमा देवाने उद्यम करूं नावे को अेहनी तोल ,, ।३४।
अे जोडने उपमा अे जोडनी अे जोड सरखी अे जोड ,,
साम्यता शोभा सहु जगतनी वारूं हुं कोडा कोड ,, ।३५।
पछे परस्पर तेह समय रीझया छे अति मन भाई ,,
वात्सल्य करी अेक अेकने वार्या ते लूण ने राइ ,, ।३६।
परस्परे अेक अेकने तिलक कुमकुम तणा कर्या ,,
अेह वचन श्री गुंसाईजीना अनुभावे अहीं धर्या ,, ।३७।
परस्परे आरती करी लाग्या परस्पर पाय ,,
सहु को ठामे ठामथी जोइ जोइ वारणे जाय ,, ।३८।
सर्वने बीडां आपीने गंधाक्षत संयुक्त ,,
दीधा आशीर्वाद तेह समय जे जे वेदोगते उक्त ,, ।३९।
श्री गुंसाईजी केशर रसे हलदी गुलाले भर्या ,,
घेर पधारे छे शोभिता परिवारे परवरीआ ,, ।४०।
वेणेभटे विनय कर्या घणा पोंहोंचावी पाछा वलीया ,,
उलट अेहोना अभिनवा मनोरथ मन तणा फलीया ,, ।४१।
पदमावतीजी आदी थकी स्त्रीजन सहित समाज ,,
घेर पधार्या छे मोदसुं वाजते गाजते साज ,, ।४२।
अेणे प्रकारे हलदी तणो खेल खेल्यो ते अलौकिक रीत ,,
अलौकिक सागर रस तणो करी प्रगट बहु प्रीत ,, ।१४३।

वर नारी मध्ये राजता	महाराज राजेस वाध्यो रंग		
बहुजी संगे रंगे भर्या	हलदी खेली रसावेश	''	।१४४।
चार दिवस खेल्या अेणी पेरे	रंग रसे दिन रात	''	
नगरमां केणे जाण्युं नहीं	मांहे अस्त ने प्रात	''	।४५।
मनोरथ पहोंच्या सर्वना	सर्वनी पूरी आस	''	
अेणी पेरे खेल हलदीनो	खेल्या महा रस रास	''	।४६।
खेलथी पहोंची रह्या पछी	संध्या वंदन करी ज्यांहां	''	
होम कर्यो अति हरखसुं	बहेने आरति करी त्यांहां	''	।४७।
चार दिवस पर्यंत ते	होम करे बेहु वार	''	
आरती होअे अभिलाषसुं	समय समय तेह वार	''	।४८।
हवे नागवली रस रंग घणो	होअे छे अेहोने अेह	''	
कांइ अेक ते विसद करी	आगल कहीश तेह	''	।१४९।

इति श्री विवाह वर्णने हलदी खेल वर्णनो नाम

।। प्रसंग बारमो संपूर्णम् ।। मांगल्य २३ मुं.

प्रसंग - १३, मांगल्य - २३

राग : " चार जणी में आवती दीठी ते रायजी तोरण तम तणे अे "

हलदी तणो खेली खेल जे रंग रसे रीते करी अे

जेम अहींये छे कुलनो आचार ते सर्व कर्युं प्रीते करी अे ।१।

हवे कहुं छुं नागवली खेल ते खेले सोहामणो अे

तेहनो करूं कांइ अेक विस्तार जे जगत मोहामणो अे ।२।

पंचमी दिवसे संध्याअे श्री वल्लभजी ने बहुना अे

पीत वस्त्र प्रथमना धोइ मंडपे सूके ते भीना अे ।३।

श्री गुंसाईजी आदी सहु कोइ ते उठया अपर रातना अे

रंग रसे मल्यो परिवार अनुभवी सुख मात्रना अे ।४।

कीधा बहु पेरे साज मंगल केश अति घणा अे

चोक पूर्या चहुं पास साथीया सोहामणा अे ।५।

चार दिवसना रंग भर्या अंग अभ्यंग करी नाहे छे अे

जोइ जोइ सुखद समाज हो रसमां अवगाहे छे अे ।६।

परम सुवास्या आण्या फूलेल ते भरी कचोले करी अे

करे अभ्यंग घर तणा नाउ ते हरखे आनंद भरी अे ।७।

नाह्या छे तप्तोदके त्यांहां केसर रंग गेहेरीया

प्रथमना जे सुकवीयां वस्त्र ते आणी पोते पहेरीया अे ।८।

वस्त्र पहेला पहेरी नाया जेह तेह नेग नाउनो सदा अे

पे घणा नाउने आप्या तेह उलट भर्यो तेह सदा अे ।९।

अेणी पेरे बहुजी नाह्या त्यांहां खवासणीअे नवरावीया अे

वलती गांठ जोडी तेणी वार वेदीअे पधारीया अे ।१०।

करीने होम चतुर्थ कर्यो साज नागवली तणो अे
स्त्रीजने श्री गुंसाईजीने घेरथी मंडपे आण्यो अति घणो अे ।११।
पचरंग पील्या चोखासुं समंधीना आंगण मांहां अे
पुर्यो सुंदर चोक शोभा भर्यो ते त्यांहां अे ।१२।
वेदी केरे डाबे ते पास हाथी कर्यो लूणनो अे
जमणे कर्यो हाथी चोखा केरो भरी रंग चीहुंकुणनो अे ।१३।
चरूओ अेक रंग पचरंग जे आणी चोकमां धर्यो अे
गौरी शिला धरी चोक मांहें मनोरथ अेहनो सिध्ध कर्यो अे ।१४।
चोक पाखल कुलडीओ भरीने जुग्म बीडां जुत धरी अे
धर्या दीवा धरी सुहाली ने पीढा धर्या प्रेमे करी अे ।१५।
वर वधु पधार्या ते त्यांहां चरूओ ने शिला भणी अे
पूजा करी विद्योगते करी मांगल्यार्थ तेह तणी अे ।१६।
वरजीअे बहुजीने पोते सेंदूर चढावीयुं अे
अचल सोहाग केरे अर्थ ते अति मन भावीयुं अे ।१७।
सोहासणी मली सहु कोइ सिंदूर चढावे तेह वली अे
तेह सहु सूचक सौभाग्य बहुजीने मन रली अे ।१८।
पछे ते रजस्वलाथी रहित अेहवी जे सौभाग्यवती अे
नाग पस्पायण सहित स्त्रीय चार शुभ मती अे ।१९।
चरूओ ते धरी अने त्यांहां चोक पाछळ फरी अे
वर वधुने देइ आशीष ने शुभ वांछे प्रेम भरी अे ।२०।
वलती वरजीनी माता सासु चोक मध्ये रही अे
अवले हाथे जे जल पुष्प ते लेइ उफराती थई अे ।२१।
प्रेमसुं अभिशेख करी दीवा चोकना लेइ अे
थालमां धरी करे आरती अति पुलकित थई अे ।२२।
तेहने करे पहेरामणी समंधी सहु तेह तणा अे
धवल गाअे बहु नार वाजिंत्र वाजे अति घणा अे ।२३।
मोदे भर्या मन भावतां बेठा बेहु जणा अे
वींटी रह्या युवतीना यूथ ते राजे सोहामणा अे ।२४।
मध्ये मली अनुपम जोड समाज मांहां राजती अे
प्रगटी अेहवी शोभा त्यांहां ते जोइ शोभा लाजती अे ।२५।
अेहवा श्री वल्लभवर सुंदर पहेरी वागो जरकसी अे
लूणना हाथी पर आवी उभा रह्या हुलसी अे ।२६।
चावलना हाथी पर बहुजी वेगा थई आव्या अे
हांसी कौतुक तणो खेल जोइ मन भावीया अे ।२७।
मलीयो छे सर्व समाज ह्यां मन तेहना अे
अेह समयनी सुंदरता जोइ संधाण न देहना अे ।२८।

वलता बहुजीने शीखव्या सखीअे ते अेम कही अे
वरजीसुं बोल्या अेणी पेरे ते उलट भरी अे ।२९।
चावलको हाथी ले के लूणको लोंडा देगो मोहेकुं अे
अेहवुं रसालुं अति रस भर्युं कह्युं ते सोहतुं अे ।३०।
अेहवुं वचन मंद हास्य जुते कही लाजीया अे
श्रीजीअे आप्यो हाथी ते लेइ मनमां गाजीया अे ।३१।
बहुजी उभा रह्या लूणने हाथीअे जइ त्यांहां अे
वरजी आवी ते उभा रह्या चावलनो हाथी ज्यांहां अे ।३२।
वरजी विचारी मन बोलीया मेरो हाथी लेहींगो अे
हंसी मरकलडो करी कह्युं लोंडी तेरो देहिंगो अे ।३३।
अे जो हास्य न माय सहु साथने ते समय अे
सामा सामी सखी सहु हंसी हंसी अे कौतुक गमे अे ।३४।
फरी फरी जुअे नरनार ते अति घणुं हरखीया अे
रह्या लपटाइ नयण ते आनंदे वरखीया अे ।३५।
अेम कही बेय वार हाथी त्यांहां पलटीया अे
परस्पर हरख न माय अति उलटे उलटीया अे ।३६।
त्रीजी वार बहुजीअे अेम कह्युं वरजीने तेह समे अे
मेरो हाथी ले के तेरो दयेंगोरे राजा अे सहुने गमे अे ।३७।
वचन कह्या अेणी पेरे ते अति अनुरागीने अे
अेम कही प्रेमदाअे प्रेमसुं हाथी लीधो मांगीने अे ।३८।
हाथी आपी वरजीअे बहुजीने कह्युं तेणी पेरे अे
मेरो हाथी ले के तेरो देगी रे राणी अे उलट भरी अे ।३९।
अेम कही पलटी हाथी उभा रह्या सनमुखे अे
आपापणे हाथीअे तेणे समय सोहे ते अति सुखे अे ।४०।
अति अपार सुंदर वर बहुजीने ते भर्या कोडे अे
अनुपम अभिनवी जोड रह्या ते उभा जोडे अे ।४१।
वलता आवी बेठां चोक वरजी ते आनंद भरी अे
बीडा आप्या सहु विप्रने लीधा ते तेणे कर धरी अे ।४२।
वलता बहुजीने बीडां आपीने आप आरोगीया अे
परम चतुर वर राय सकल रस भोगीया अे ।४३।
अेणे प्रकारे कुल धर्मनी रीते नागवली करी अे
विधी पूर्वक विद्योगते शास्त्रे अनुसरी अे ।४४।
रंग रसे हवो ते विवाह परस्परे रंग रह्यो अे
अेहवो हवो अहीं न हवो कहीं तेह सर्व लह्यो अे ।४५।
अेणी पेरे हवी नागवली ते अतिसय उलट भरी अे
आगल पठवणी प्रकार ते कहीस विसद करी अे ।४६।

इति श्री विवाह वर्णने नागवली खेल वर्णनो नाम प्रसंग १३ मो संपूर्णम् मांगल्य २३ मुं

प्रसंग – १४, मांगल्य – २३

राग : "वेवाइ तारो मांडवडो संभाल रसिक वर रमी वाल्या अे " अेम गवाशे

श्री विठल सुत रस रूप ते सुखद सोहामणो अे
आनंद दायक मूल ने जगत मोहामणो अे ।१।
तेणे जगत हितार्थ काज अे लीला अंगी करी अे
पावन प्रगट्य प्रमेय रसिक महा रस भरी अे ।२।
तेहनो हवो रे विवाह उत्साह उलट घणो अे
केम थाअे ते विस्तार विसद करी तेह तणो अे ।३।
इच्छा तणे अनुसार महेद मनोरथ थकी अे
तेर प्रसंग करी प्रथम लीला कांइ अे लखी अे ।४।
दान सामर्थे करी मनमां उलट धरूं अे
जान वलावे छे घेर ते पेर विसद करूं अे ।५।
गडगडे निसाणे धाव ते परम सोहामणा अे
वाजिंत्रना निरघोष होअे छे अति घणा अे ।६।
अंगना अतिशे अनुपम ते परम प्रेमे भरी अे
गान करे गुणवंत अति सुखद सुरे करी अे ।७।
उठो लाडण वर लहुआ लाडी चाले वे हेलरी अे
सुंदर धाम देखाडुं आगल थयां पेहेलरी अे ।८।
अेम कही कही गुण अगण वल्लभजीना गाअे छे अे
तेह समय तणा वचन जेहवां मन भाअे छे अे ।९।
जान वलवानो समय ते महुरत सार छे अे
जोग्य शुभ दिन छठ अने सोमवार छे अे ।१०।
वेणाभटना उत्साह ने अति उलट घणुं अे
जान वलावे छे फूलसुं कहुं तेह तणुं अे ।११।
त्रिभुवन नाथनो नाथ ते सुंदर वर सदा अे
दायजानो घोडो बहु मोल त्यांहां स्वार थया तदा अे ।१२।
आगल परम उदार श्री पार्वतीबहुजी अे
संग बेठा सुख पामीया ते मन हरख्या बहु अे ।१३।
भाव भर्या बहु भक्त विगत क्यां लगी लहुं अे
जोइ रस भरीया नयण वयणे केही पेरे कहुं अे ।१४।
रज वारे त्रण तोडे अने ते उलट भरे अे
द्रष्टी न लागे केहेनी अे प्रार्थना करे अे ।१५।
जगत विमोहक जोडने जोइ जोइ तेह समय अे
प्राण न्योछावरी करी अने चरण नमे अे ।१६।

पछी श्रीजीना श्रीकर मांहे ते लेइ श्रीफल धर्युं अे
बहुजीनां करमां कंकावटी कंकु सोहाग भर्या अे ।१७।
लाडी कचोलानी साथे ते हाथ लाडु धर्यो अे
ज्यांहां त्यांहां जैजैकार सहु केणे कर्यो अे ।१८।
चहुं दिसे आनंद उत्साह बंदीजन जस भणे अे
समोवड गाअे सोहासणी जूथ आपापणे अे ।१९।
गुजराती गुणवंती नारी निपुण घणुं अे
सुखदा सदा अनुकूल सराहुं शुं हुं अेह तणुं अे ।२०।
धवल मंगल अति रस भर्या जे मन भाअे छे अे
सुर थया ते समयना शब्द ते गाअे छे अे ।२१।
तेह विसद करूं लौकिक अनुकरणे करीअे
जे मांहे रस नहीं पार उच्चार प्रेमे भरी अे ।२२।
वहेवाइ तारे घेर आछी रूडी पेर मंडप तणी अे
अखिल भुवन तणो नाथ पधार्या गोकुल घणी अे ।२३।
अमो आव्या छुं बहुजी लेवा ते जासुं लेइ अने अे
सर्वना करीअा सनमान अने सुख देइ अने अे ।२४।
समंधी सपराणो तुं आज सौभागी कोन तुं समो अे
कन्या वल्लभजी काज आपी चरणे नम्यो अे ।२५।
मांडवडानो महिमा अपार वल्लभ रम्या रस भर्या अे
मनोरथ सर्वना सकल प्रकारे पूरण कर्या अे ।२६।
कारण रूप कौतिक सहु केणे नव जाअे कह्युं अे
रम्यो रम्यो घडी बे चार रसीली लाडी लइ वल्यो अे ।२७।
भक्त कुटुंब परिवार सहुनो मनोरथ फल्यो अे
रूकमणीलाल अनूप नवल लाडी लेइ वल्यो अे ।२८।
श्री विठलजीनो कुंवर सुंदर जोइ मनमथ लाजीयो अे
महा नायक रति रसिक ब्रह्मांडनो राजीयो अे ।२९।
अभिनवो बलवंत धीर अे वीर शोभाजी तणो अे
परणी पधारे छे घेर ते समय सोहामणो अे ।३०।
स्वकीय सुजाती समाज ते अेणी पेरे करी गाअे अे
वेहेवाइ तारे मांडवे थकी श्री वल्लभ जीतिने जाये अे ।३१।
जीत्युं अने जीतावीयुं गांठ पटोले पडी अे
ओढी देसावरी घाट पधारे घोडे चढी अे ।३२।
जीत्युं जीत्युं जगत वंदितुं जगत मांहें जाणीयुं अे
जीती बहुजीने लेइ जासुं ते सकल प्रमाणीयुं अे ।३३।
बहुजीने अमो लइ जासुं तमो रहेसो जोइने अे
हम साथ नहीं चाले रहेसो आंख निचोइने अे ।३४।

वेणाभट तारो मांडव अति सोहामणो अे
श्री वल्लभ जीतीने जाये ते परम मोहामणो अे ।३५।
निरविधी रस रचना करी वचन करी करी अे
जान तणी जादरणी गाअे उलट भरी अे ।३६।
तलवटना मंडप मांहें समोवडे रही अने अे
गाअे बहुजीनी पासना वचन शुभ कही अने अे ।३७।
सोहासणी सासरे सिधारे तो पेर घणी कीजीये अे
सोहतो सहु मन गमतो सासरवारो दीजिये अे ।३८।
कन्या दीधी श्री गोकुलभूपने कांइ न विचारीअे अे
सकल पदारथ आपीने सर्वस्व वारीअे अे ।३९।
वेणाभटने वल्लभ घणुं मन कुंवरी वसे अे
नयण सजल थई आव्या अने उर उभ्रसे अे ।४०।
कुंवरी जुअे फरी फरीने पीयरने प्रेम धरी अे
जान सकल सोहासणी चाले ते रंग भरी अे ।४१।
द्रष्टि करी उर भरी अने नयणा भरे अे
सखीय विछोही सुंदरी भवन सूरती करे अे ।४२।
जेम जेम फरी जुअे पीयर परिवारने अे
ते जोइ धीर रहे नहीं - सहु नर नारने अे ।४३।
खेलती आपणे घेर सुख पेर सोहासणी अे
थई विदेशी बाल अे सासर वासणी अे ।४४।
आज लगी अहीं खेलती ढींगले पोतीअे अे
बेठी वर वल्लभ पास ते सुंदरी सोहती अे ।४५।
समधण तमने सोपुं छुं कुंवरी कोड भरी अे
दुभवशो नहीं क्षणु अेक राखजो प्रेमे करी अे ।४६।
खीजशो नहीं अेक लगार विनय कहुं वली वली अे
सासुजी तमो गाल ना देशो गाले थाशे गलीगलीअे ।४७।
अेहवा कह्यां कन्याजीनी बहेने ते वचन धीरज धरीअे
आगल चाले न वयण नयण आव्या भरी अे ।४८।
समोवडे करे अे विदाअ परस्पर ते मले अे
जान चाले जगमगती वेला ओल जलहले अे ।४९।
सामोवडे रह्या सहु सुंदरी बेहु पासा तणा अे
विविध प्रकारना गान ते गाअे सोहामणा अे ।५०।
धुरत अने धुतारो प्रथम अमो सांभलीयो अे
आव्यो हतो जगत ठगारो लाखेणी लाडी लेइ वल्यो अे ।५१।
सात्विक शील सुभावसुं वेणाभटने मल्यो अे
घर आवी घरनो थई कुंवरीने लेइ वल्यो अे ।५२।

आव्यो रसिक धुतारो धुतारो पाटण तणो अे
पार न पामे कोअे ते अेहना नाम तणो अे ।५३।
चित चोरे चंचल घणो खोटा मन तणो अे
दरसने सुखद स्वरूप ने परम मोहामणो अे ।५४।
सनमुख सुर थई थई अेणी पेरे गाअे छे अे
करी करी वचन विलास जे जे मन भाये छे अे ।५५।
हवे बहु बेटी सहु सहित ते चाले मलपता अे
धमधमता झमझमता डग भरे अे ठमकता अे ।५६।
स्वजन तणा बहु टोल ने साथ सोहामणो अे
आगल चाल्यो जाय ते जगत मोहामणो अे ।५७।
जुगत जुवतीना जूथ माने भर्या मद चढया अे
गाअे निज देशना गान वचन ते छेल्या घडया अे ।५८।
अेहवी शोभा जोइ जाननी लक्ष्मी लाजीया अे
त्रिभुवनमां अति आनंद शोभा गाजीया अे ।५९।
मुनीगण अमर अनेक आनंदे हरखीया अे
वधु सहित ते जोइ जोइ कुसुमे वरखीया अे ।६०।
नगर निवासी नर अने नार जोवा मली अे
वदन जोइ वर वधु तणु जोइ जोइ जुअे वली अे ।६१।
काज भूल्या सहु घरना ने हेते पागीया अे
स्वरूपे वेधाया सकल रसे अनुरागीया अे ।६२।
विश्व मोह्युं त्यांहां वल्लभजीने ते रूपे करी अे
श्री गुंसाईजी ते हरखसुं आव्या उलट भरी अे ।६३।
हरीवंसजीसुं हेते करी अतिशय उमहीये अे
आनंदनो अनुमोद केहेतां कारण लहीये अे ।६४।
बांधव बहेन पनोती परस्पर फूलीया अे
समताने कहेवा नहीं को समतोलीया अे ।६५।
कृष्णदासी ने दामोदरदासी सोहामणी अे
प्रेमे फरे उलसित आशीष दे अति घणी अे ।६६।
अमो जीवुं क्रोड वरीस अे जोड जोउं फरी फरी अे
अेम कही फूल न माय अे मागे मनोरथ करी अे ।६७।
त्यांहां रूडो वैश्नव साथ वर्णन करूं तेह तणुं अे
भाग्य कह्युं न जाअे वल्लभने वल्लभ घणु अे ।६८।
अेणी पेरे आव्या निज घेर परणी भला भावीया अे
मंगल कलस सोहामणी सनमुखे लावीया अे ।६९।
तेहनो करी सत्कार अने ते आदर कर्यो अे
श्रीजीने साले ते लेइ रूपैयो ते मांहां धर्यो अे ।७०।

वीप्रे कर्या अभिशेष विशेष मंत्रे करी अे
इंडी पींडी ते ओवारी बहेन उलट भरी अे ।७१।

मुक्ता फले वधावी ने आरती करी अे
प्राण वल्लभ वलता ते घोडे थकी उतरी अे ।७२।

जैजैकार सहु शब्द करे ते मोदे भर्या अे
मनोरथ मन गमता करी ग्रह प्रवेश कर्यो अे ।७३।

वलता वेणाभट पाछल थकी त्यां आवीया अे
पहेरामणी दायेजानी सामग्री लावीया अे ।७४।

त्यांहां परिवार सहित श्री विठलजी मंडप मांहां अे
पुन्याह वाचन ग्रह प्रवेशनुं करी बेठा त्यांहां अे ।७५।

वेणोभट विनय सहित ते करे पहेरामणी अे
वस्त्र भूषण बहु भांतीना ने परम सोहामणी अे ।७६।

चोली चीर अनेक अनेक प्रकारना अे
जरतारी जगमगता ने कसबी किनारना अे ।७७।

खीरोदक साडी सुखांबर अनेक भांतना अे
पीतांबर रंग रंग बहु ते नव नव जातना अे ।७८।

पामरी थीरमा सुपेत रंगीत कशमेरी घणां अे
धोती उपरेणा किनारीदार ते रेशम तणा अे ।७९।

खासा मलमल तनसुख बंधालक केम लहुं अे
सिध करी पहेरामणी विसद क्यां लगी कहुं अे ।८०।

श्री गुंसाईजी आदी देइ स्वजन कुटुंब सहु अे
बेटा अने वरमाता सकल बेटी बहु अे ।८१।

जेहने जेवा अंग शोभिता जेहने जेवा गमे अे
जेहने जेहवा उचित होअे कीधां ते तेह समे अे ।८२।

वरजीने वागो विचित्र ते अतिशय सोहतो अे
जरतारी कसब अनूपनो जगतने मोहतो अे ।८३।

भूषण विविध प्रकारनां नखथी शिख कर्या अे
वर वधु वेदी उपर बेठां ते रस भर्या अे ।८४।

आश्रित पूरोहित नेग नेगी जे अे घर तणा अे
करी पहेरामणी तेहने प्रसन्न कर्या घणां अे ।८५।

अेणी पेरे करी पहेरामणी भली पेरे भावसुं अे
वेणोभट विनय करी अने उभा रह्यां आवशुं अे ।८६।

श्री गुंसाईजीनी आगल कर जोडी अने अे
दिन वचन कही कही अने कीधो विनय अे ।८७।

चंद्र साहामो जे सूत्रनो तांतण कीजीये अे
तेमज कर्युं छे में आज राज मानी लीजीये अे ।८८।

बेटी आपी छे में राजना घर तणा काजने अे
मारी तो सकल प्रकारनी लाज ते राजने अे ।८९।
अेवुं कही गद गद थई आव्या उर भरी अे
सभा सकल अेणे समय ते भरी करूणा करी अे ।९०।
श्री गुंसाईजी मान देइ अने ते उचर्यो अे
समाधान सतकार विवेक बहु कर्या अे ।९१।
अे कुलवधु कुल मंडण भूषण घर तणुं अे
मारा कुलनुं तारण शुं कहुं घणुं घणुं अे ।९२।
सामग्री तो अनंत तमो आणी धरी अे
आज लगी अेणी पेरे तो केणे नथी करी अे ।९३।
अेहवा परम हितकारी वचन ते समय कह्या अे
वेणाभट थई प्रसन्न अने सहु अे लह्या अे ।९४।
वेणाभट केरूं भाग्य सराहीअे शुं कहीने अे
श्रीमुखे तेहनी सराहणा करी छे उमहीने अे ।९५।
आस्तिक परम सुशील अरूं अेसो शुभ मती अे
द्वादस स्कंद श्री भागवत को पाठ करे नित प्रती अे ।९६।
अेहवा वचन बहु वार श्री प्रभुअे कह्या घणां अे
भाग्य तणा निरमाण क्यां लगी कहुं तेह तणा अे ।९७।
अेहवा वेणोभट श्री गुंसाईजीअे मानीआ अे
अेहनी परम शुभ द्रष्टिथी जगत प्रमाणीया अे ।९८।
सहु कोइ सहीयर समाणी ते बहुजीने प्रीछवे अे
देइ शिखामण सार ने बहु पेरे सीखवे अे ।९९।
सासरे डाया थई हींडजो सासुनी रूची मांहां अे
सासु कहे ते करजो ने बेसजो कहे त्यांहां अे ।१००।
सांभलो अे उपदेश अमारो चित धरी अे
अेम कही गदगद कंठे आव्या लोचन भरी अे ।१।
साथ सहु ते समय तणो अनुभव करे अे
रूदन उर न समाय नयणे आंसु गिरे अे ।२।
समधणे शोभाजीने सोंपीया विनय बहु करी करी अे
वात्सल्य करी बोलाव्या ते लीधा उर धरी अे ।३।
अेह अमारूं सर्वस्व ने नयणनी पुतली अे
अेहने अमो केम दुभवसुं कहुं ते वली वलीअे ।४।
करी समोवड समाधान शिखामण देइ वल्या अे
नणंद छे परम सुजाण रहेजो तमो अेहो मल्या अे ।५।
पनोतो छे अे परिवार तो ससरानुं शुं कहुं अे
भाग्य तमारानो पार ते अमो क्यां लगी लहुं अे ।१०६।

अेहवुं बोल्यो कन्याजीनो भाई जे बाइ रूडा राजजो अे
सासरूं परम सौभागी सदा त्यांहां बिराजजो अे ।१०७।
लौकिक रीते ते अनेक प्रकार रुदे धरी अे
आशीष देइ सनमुख थई अने ते विदाय करी अे ।८।
ब्राह्मण मंत्राक्षत करी आशीरवाद दीअे अे
ज्ञातने बीडां आपीया ते शुभ शुभ वदे अे ।९।
ठाम ठामथी ब्राह्मण पंडित पूरोहित अे
कवी गुणी अनेक आव्या छे ते धरी चित अे ।१०।
तेहने आपे महादान श्री गुंसाईजी उलट भर्या अे
अष्ट महा सिधी नव निधीअे मनोरथ बहु कर्या अे ।११।
आगल आवी अने कर जोडी उभी रही अे
प्रभु महाउछव दान समय लही अे ।१२।
गुंसाईजी श्री महाप्रभु उत्साह रूपी गरजना करी अे
मागद जन तणी ते सृष्टी ते दान वृष्टी भरी अे ।१३।
हेम रजत मणी माणेक मुक्ता फल बहु अे
अस्व वस्त्र भूषण करी ने तेरे लागुं सहु अे ।१४।
अेणी पेरे करी विदाय ते आशीष देइ वलीया अे
ते जे आशाअे जे आवीया ते मनोरथ फलीया अे ।१५।
कुटुंबमां उत्साहे बहुजीने गोदे लेइ अे
निर्त करे नवली पेरे आशीष देइ देइ अे ।१६।
सुख पूर्या श्री गुंसाईजी ते मनमां राचीया अे
स्नेहे भर्या बहुजीने गोदे लेइ नाचीया अे ।१७।
वर वधु पर न्योछावरी बहु विधीसुं करी अे
मागद बंदी जनने आपे उलट भरी अे ।१८।
कंकण छोडी कुलदेवनुं उदवासन करी अे
मोड अंकुर सहु लेइ वर वधु चित्त धरी अे ।१९।
श्री यमुनाजीने पूजवा पधारे सहु मली अे
वाजते गाजते गान करता ते मन रली अे ।२०।
आदर करी श्री यमुनाजीने मान दीधुं घणुं अे
भोग बीडा ते समर्पे वात्सल्य हित तणा अे ।२१।
वर वधु छेडला गांठीने पधार्या सासरे अे
कुटुंब सहित पठवणी तणु भोजन करे अे ।२२।
भोजन करीने घेर पधार्या उलट भर्या अे
उचित्त आपी अनेक वाजिंत्र सहित विदाय कर्या अे ।२३।
श्री गुंसाईजीना सुख तणो पार ते नव लहुं अे
हरख ने मोद अपार ते क्यांहां लगीअ कहुं अे ।१२४।

श्री महाप्रभुअे प्रमोदे मथुराने मंडित करी अे
लीला अनेक प्रकार ते आनंद भरी अे ।१२५।
अेम नित्य नौतन नवल दुलह राजे छे अे
पतीव्रतानो पती ते प्रेमे बिराजे छे अे ।२६।
सासरूं महा सुख रास माहा मास लगी जइ अे
भोजन करे बे वार दसैयानुं सुख दइ अे ।२७।
सौभाग्य शिरोमणी सार श्री बहुजी ते सर्वदा अे
श्री गुंसाईजीने प्रिय परम रूचीसुं सदा अे ।२८।
मारग प्रवीण सेवा विषे सुखद शिरोमणी अे
सर्वे गुणे संपूर्ण सासरे रह्या रूची घणी अे ।२९।
गोणानी रीत वेणेभटे आवी करी अहींया अे
पधार्या नहीं सेवा मेली ने फरी पियर मांहां अे ।३०।
गोणानो प्रकार वेणाभटे कीधो उत्साह भरी अे
श्री गोकुलमां वस्या पछी कहीस विसद करी अे ।३१।
अेणी पेरे हवो विवाह महाराज राजेश्वर तणो अे
रंग रसे रस भरी उत्साह ते घणो घणो अे ।३२।
अेह रस महेद कृपा थकी इच्छाने अनुसरी अे
बुध्धि प्रमाणे वर्णन कर्युं तेह विसद करी अे ।३३।
अेणी पेरे अखिल भुवननो नाथ भूतल मांहां अे
लीला चरित्र प्रगट कर्युं प्रगट थई अे ।३४।
गृहस्थधर्म अंगीकार कर्यो अे ते प्रेमे करी अे
हरखे अनुभव अनुभव्यो अति उलट भरी अे ।३५।
अे रस जे को गाये ने सुणसे सुणावसे अे
अेतनमारगी सौभाग्यनुं तेहने फल हसे अे ।३६।
पछी विवाहनां अंगभूत मांगल्य जेह अे
वर्ष पर्यंतक रस उपर पर्वे तेह अे ।३७।
अषाय सुदी छठ थकी आरंभ सहु करे अे
दायेजा तणी रीत प्रकार करे ते उलट भरे अे ।३८।
आदर मान सहित भोजन ने पहेरामणी अे
बहु प्रीते हुल्लाससुं करी अति घणी घणी अे ।३९।
अेम करतां ते आवे वसंत तणो समे अे
महा रूतुराज रसात्मक रस भरने गमे अे ।४०।
सुंदर चतुर सुजाण रम्या ते रस भरी अे
लीला परम रसाल कहुं ते विसद करी अे ।१४१।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्‌भुत विचित्र रस व्यारांना गोपालदास विरचित पठवणी वर्णने नाम प्रसंग १४ संपूर्णम् मांगल्य २३ मुं संपूर्ण

मांगल्य - २४ - चोवीसमुं

राग : वसंत "केसुडा राता ने राती राती कोयलडी वनवास" अेणी जाते गवाशे

श्री विठल सुवन अति लाडको	महा नायक नवल अनूपजी	
नव जोबन मद छेल छबीलो	गोकुल केरो भूपजी	।१।
अंग अंग उनमत अनंग भर	रसिक तणा आधारजी	
मथुरामां नित्य नौतन लीला	करे नवल कुमारजी	।२।
त्यां महारूतु राज वसंतनी रूतु	आवी परम रसालजी	
रस उदबोध काम बल पूरण	सके न कोअे संभालीजी	।३।
वाधे रस रसना पूर अभिनवा	अनंग चढयो अति सूरजी	
गुल्म लता द्रुम वेली नवदल	प्रगट्या नव अंकुरजी	।४।
ठाम ठाम वन उपवन फूल्या	कुसुम तणो नहीं पारजी	
पान करी माता मकरंदे	मधुकर करे गुंजारजी	।५।
पीक परम रसमत थकी ते	बोले उनमत थइजी	
भांती भांती पक्षी मधुर स्वर	करे ते आनंद मइजी	।६।
अति मद गलित मदन मातानी	चहुं दिस करे पुकारजी	
त्रासे विकल विरह पीडाथी	आतुर विरहनी नारजी	।७।
ते सुणी बाहिर थयो विलास	रसिक सुभट महा वीरजी	
खेल मिसे सुख दायक मनोहर	काम दलण अति धीरजी	।८।
महा वसंत स्वरूप सुंदर वर	सृंगारात्मिक रस रूपजी	
खांते करी खेले नित्य लीला	नित नवल अनूपजी	।९।
वय समान सखा सुंदर बहु	साथे परम रसालजी	
अनेक समाज सहित सोहागी	राजे गोकुल पालजी	।१०।
ताल पखावज झांझ झालरी	डफ शहेनाइ ढोलजी	
अनेक वाध्य बहु पेरना बाजे	नहीं को अेहनी तोलजी	।११।
केशर केशुनो रस घोली	अरगजो उतम रंगजी	
अबील गुलाल अनेक पिचकारी	जडित अनुपम नंगजी	।१२।
अेहवा अनेक साज लेवरावी	अतिसय मननी रलीजी	
उलटभर खेलवा पधारे	सुखद सोहामणी गलीजी	।१३।
सोंधे भर्या सरस रस राता	अति अणीयाला नयणजी	
वांकी पाग वंक भृकुटी पर	वंक विमोहक वयणजी	।१४।
मुसकनीअे मन मोहे जगतना	काम रसे मद माताजी	
अविलोकनी अंतर आकर्षे	रसिक तणा रस दाताजी	।१५।
नगर निवासनी नार निरूपम	जूथ जूथ मली आवेजी	
निःसंकोचे सनमुख खेले	ते खेल परस्पर भावेजी	।१६।

केशर अबीर गुलाल समोवडे छिरके अति रस वाधेजी
अेणी पेरे सदा नित्य खेले ते कहेता पार न लाधेजी ।१७।
वर्णन विसद करवाथी अे उलट अे रस तणोजी
पण आगल श्री गोकुलमां खेल्या ते कहेवा मनोरथ घणोजी ।१८।
ते माटे संक्षेपे करी अने कहुं ते कारण काजजी
प्रहसित वदन करी श्रीमुखथी वचन कह्या महाराजजी ।१९।
अेक समय अेक खेल अनोखो हास्य तणो जे खेल्याजी
ते श्री गोकुलमां घणी वार श्रीमुखथी अेणीपेरे बोल्याजी ।२०।
श्री गुंसाईजीके आगे अेक खेल मथुरा मांहेजी
अेक खेल हम अेसो खेले ज्यां हम रसे ते ताहीजी ।२१।
नारायण भट अेक स्वामी हतो ते कर्यो रास भारूढजी
स्वामी तणो अहंकार जणावे वस्तु न समजे मूढजी ।२२।
श्री गुंसाईजीना घर साथे करे ईर्षा घणीजी
ते क्यांहां कोटी सूर्य प्रकाश ने गति खद्योत ते तणीजी ।२३।
श्री गुंसाईजी ब्रह्मणीक ते तेहने न कहे कांइजी
आंहांनो उग्र प्रताप जोइने प्रजले मन मांहांजी ।२४।
वसंत मिसे रघुनाथजीसुं तेणे ते हास्य कीधुंजी
बीजे दिवसे महा प्रभुअे वेर तेहनुं लीधुं जी ।२५।
ते पोते कह्युं हास्य रस वसथी थई थई अति रस रासजी
श्री मुख वचन तणे अनुसारे कांइ अेक करूं प्रकासजी ।२६।
वसंतके दिन सो हम सब मिली नित खेलनको जइयेजी
सामग्री फागु खेलनकी संग हमारे लइयेजी ।२७।
अेक दिन भीतर काज हतो सो में जाने नहीं पायोजी
सो रघुनाथ खेलनकुं मोपे आज्ञा मागन आयोजी ।२८।
तव में वरजो तुम मती जाओ तुमपे कछु न सरेगोजी
वे हरामजाधो हे ताते तुमसुं कछुं करेंगोजी ।२९।
मान्यो नहीं वचन मेरो अरू गअे अपुने भायोजी
समे पाय उन सब कछु कीनो तब ही हारी के आयोजी ।३०।
रघुनाथकी आंख आंजी के मोहोके कछु लगायोजी
अे सुनी के हांसी आइ अरू क्षोभ बोहोत हम पायोजी ।३१।
अगले दिन अेसी हम विचारी आज खेलनकुं जइयेजी
उनसुं उन जेसी कछु करीअे उनको बदलो लइयेजी ।३२।
तब हम नित्य फागु खेलनको साज लीधो सर्व संगजी
सोंघो अबीर गुलाल अरगजा अरू केशर को रंगजी ।३३।
तब उपेन्द्र मथुरीया बोल्यो सुनो हो सुनो महाराजजी
जो तुम यहु विचार कीनो हे तो इनको कहा काजजी ।३४।

तब हम उनसुं यों करी पूछयो संग आज कहा कीजेजी
भुंजे मठको चून कह्यो उन संग आपुने लीजेजी ।३५।
वे लीनो ओर ताल पखावज डफ शहेनाइ जांजजी
कीर्तन करत चले हम सबही सुंदर गली मांजजी ।३६।
पेंडेमों रासभ अेक ठाडो हतो सो देख्यो जबहीजी
जीवदाने आपु पकडी के संग लीधो वे तबहीजी ।३७।
में पूछयो कहा करीअे उनकुं कहा हे इनको काजजी
उन कह्यो उनको काज बोहोत हे चुप करी रहो महाराजजी ।३८।
सो हम सब खेलत खेलत उनके घर आगे आयोजी
पे ओउ सावधान हतो करी राखे सब उपायजी ।३९।
लोंडी जवान बडी कटीली विसेक सिध्ध करी मेलीजी
सबहीन अपने अपने वस्त्र बांधी भांगकी थेलीजी ।४०।
खडकीकी सांकली देइ राखी सबहीन मनमों धरीके जी
भीतर आपु रहे सब कोउ सामग्री सिध्ध करीकेजी ।४१।
आगे जो खिडकीमों आवे खेंच वाहीके लीजेजी
अेसो संमत कीनो भीतर ले के फजीयत कीजेजी ।४२।
जब खिरकी खोली जीवदान ले आगे कीनोजी
खिरकी के उकसने भीतर गधा ठेली के दीनोजी ।४३।
साथ सबे खिसीयानो हे के उलटयो घरमें भागीजी
पाछे ठेली दीयो गधासो चल्यो पाटीसुं लाग्योजी ।४४।
पकरवेकुं सिध्ध होइके रहे त्यां सब कोय जी
अेसेमों हाथमों आये कान गधा के दोय जी ।४५।
तब खिरकीमों पाछे हम सब कोउ भीतर धाअेजी
उपेन्द्र जीवदान और मथुरीया लोंद बोहोत संग आयेजी ।४६।
वे सब लोंडीनकुं जाली के वस्त्र काढीनके लीनोजी
जो कछु उनके मनमें आयो सो सब उनसुं कीनोजी ।४७।
उनकी कहा चली जो हमारे कृष्णराय के बापजी
हरीहर भटने उन लोंडीकुं सब कछुं कीनो आपजी ।४८।
लोंडी सब हांहां करी हारी अरू बोहोत ते अकुतातजी
अब छांडो अब छांडो हमकुं कहे सबनीसुं वातजी ।४९।
छांडे कोन घरमों कोउ कह्यो सुने काहुकोजी
जो जाकुं ले रहे सोउं तो सुने न बोले काहुकोजी ।५०।
अेसेमों नारायणभट स्वामी घर ते बाहर आयोजी
विलंब न कीयो पकरी वेगही ले के गधा पर चढायोजी ।५१।
अे कहा अे कहा कहेन लग्यो अरू सब कांपे देहजी
तब हम उनसुं उतर दीनो बोलो मती अे अेहजी ।५२।

पाछे हम बाहेर ले निकसे स्वार कीये ले साथजी
उलटो करी बेठायो तबही पूंछ गहायो हाथजी ।५३।
थोरीक दूर लों चढायो फिरायो ता पाछे ले उतार्योजी
राख्यो संग रातलों वांकु फिरी पाछे हम छांडयोजी ।५४।
उनके प्रतिस्पर्धी गंगलभट वेउ स्वामी न्यारोजी
दूजे दिना मिल्यो वे हमकुं मारग मांहें संभार्योंजी ।५५।
कहेन लाग्यो तुम असी कीनी हमने सुनी यह कहीअेजी
तब में हंसीके उतर दीनो हां हां करी तो सहीअजी ।५६।
तो भली करी भली करी कहीके बोहोते भयो प्रसन्नजी
अे वात श्रीमुखे कही छे रसावेस थई मनजी ।५७।
अेक फागु मध्येनी अे लीला हांसी कौतुक खेलजी
अेहवी अद्भुत असंभवित नित्य नौतन अनिरवचनीय रस वेलजी ।५८।
जे कहेवा शक्य नहीं मारी तै क्यां लगी करूं प्रकासजी
महेद कृपा करी समजाअे अति अगाधी रस रासजी ।५९।
संवत सोल पचीसेथी ते अठावीस पर्यंतजी
कहीश ते आगलनी लीला करी जे महा रस वंतजी ।६०।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्भुत विचित्र रस व्याराना गोपालदास विरचित मथुरा लीला वसंत खेल वर्णनो नाम

।। मांगल्य २४ मुं संपूर्णम् ।।

मांगल्य - २५ - पच्चीसमुं

राग : "सुहो" वृषभान भवन गइ हती त्यां राधा रमती हती " अेम गवाशे।

हवे वसंतना खेल उपरांत तणी
लीला महा सुखरास अति घणी घणी ।१।
श्री गोकुलमां श्रीमुखे कर्यो विलास
छाहा मात्रे कही तेहनो करूं प्रकाश ।२।
बाल लीला करे रस सूरते करी
कही स्वकीयने हेत उलट भरी ।३।

ते मांहे कारण अनेक प्रीछ्या न जाअे ते कांइ अेक कहु स्वकीयने बल सहाये ।४।
खेल हम बहुत खेले लरिकाइ मांहीं खेलकी कछु अवधी रही नांहीं ।५।
अेसे खेल खेले हे जो कहा कहीये सरो करत जब हम मथुरामों रहीअे ।६।
प्रथम पूरवमां हम सरो देखी तहां सब कोउ करे वाके संग सीखी ।७।
वहां सीखेथे मथुरामां बहुत कीयो हमारी बराबर कोउ करे नवीओ ।८।
सरको गुन बोहोत द्रढ सारा रहीअे जेसे फेरीये त्यां फिरे साधे सोअे ।९।
भूख बहुत लागे सरो कीये पाछे दाल चणाकी भिंजाय लेत हे हम आछे ।१०।
अरू कबहुंक भेंसको दूध पीते पाछे नाहके आवत समय वीते ।११।
अेहवा खेल बहु भांती सांध्य विचारी शिक्षा आसन भेदकी विगती न्यारी ।१२।
गुण पूरण सकल विद्या निधान जेहना गुण तणो पार न पामे आन ।१३।
अेहवो गुण रत्न शास्त्र साधना प्रवीन साधना तणा खेल खेले नवीन ।१४।
ज्यां जेहवी लीला करे प्रभु अनूप त्यांहां सिद्ध सामग्री लीला अनुरूप ।१५।
लीला अनेक आचरे पोताने सामर्थ लीला तणी रसालताने ते अर्थ ।१६।
रस भोक्ता रसिक वर करे आचरण धरे सर्व लौकिक तणुं अनुकर्ण ।१७।
अे आचरण रसात्मीक करे कृपाल जे लीला प्रभु आचरे ते रसाल ।१८।
भगवद कृत्य अलौकिक कारण रूप दीसे लौकिक लोक भावानुरूप ।१९।
रस लीला रस भरी अति आमोदे मथुरामां करे छे महा प्रमोदे ।२०।
दैवी सृष्टी अनेकने शरण आणे कहेने स्वरूप बले कहेने मार्ग प्रमाणे ।२१।
तेहना अनेक प्रकार छे नहीं निर्माण पण मुक्षे मारग बल करे प्रमाण ।२२।
मर्यादा टाली नहीं प्रथम कोअे मारग प्रणीत आचार्य द्वारा तेहोअे ।२३।
अंगीकार करे होअे स्वरूपानंद अनुभव योग्यता होअे सिध्ध सबंध ।२४।
पछे स्वरूपानंद रस अनुभव करावे पोते अंगीकार करवा असामर्थ जणावे ।२५।
अे प्रकार अनुभव सिध्ध कहुं तेह श्रीमुखथकी स्वकीयने कह्यो छे जेह ।२६।
अेक वेर आमलखेडा गाम महां ते स्वामी सनोडीया ब्राह्मण आयो व्हांते ।२७।
यात्रा अर्थ उन आयके मथुरा लेइ वांकु भगवद आज्ञा अेसी भइ ।२८।
कह्यो जा तुं श्री गुंसाईजीके शरण ताही जानी स्वप्न उन आज्ञा मानी नांहीं ।२९।
हमारे चार आज्ञा प्रमाण कीनी अेक प्रभुअे साक्षात आज्ञा जो दीनी ।३०।

दुजे स्वप्ने और त्रीजे आकास वानी भगवदी कहे अे चार्यों प्रमाणी ।३१।
आज्ञा अनुज्ञा अरू आज्ञा विशेष सामान्य आज्ञाया मांहें सलेस ।३२।
तारतम्य हे वात चार मांहीं अेक उलंघीअे अेक उलंघीअे नाहीं ।३३।
रसमांहें उलंघे अे आज्ञा चारो वे कछु भिन्न प्रकार को मारग न्यारो ।३४।
भगवद विषइ स्वप्न मिथ्या न होअे वाकुं सत्य करी मानी लीजिअे सोअे ।३५।
पाछे ओ तो यहांथे चल्यो सवारो कोस तीन तवीसामों रह्यो न्यारो ।३६।
वहां फेरीके स्वप्नमों आज्ञा दीनी कह्यो क्योंरे ते में कही सो न कीनी ।३७।
फिर जा श्री गुंसाईजीके शरण धाम अरू जायके फेरी पैये नाम ।३८।
यों कही मारके मोहो तोयों सो सवारे श्री गुंसाईजीके आयो दोयों ।३९।
करी विनती मोहेंकु शरण लीजीये करूणा करी वेग ही नाम दीजीये ।४०।
तब श्री गुंसाईजीने कह्यो अेसो तुम बडे स्वामी तुमकुं नाम केसो ।४१।
बोल्यो आपुते में कहेत कछु नांहीं मेरो मोंहों देखीयो यों स्वप्न मांहीं ।४२।
तब आदीथी प्रांत वृतांत कह्यो पायो नाम अरू प्रसन्न भयो ।४३।
अेम वचन कह्या ते उलट भरी रघुनाथदासे त्यां विनती करी ।४४।
जो अे आपुथे जो इतनी कृपा कीनी तो अे नामकी काहेकुं आज्ञा दीनी ।४५।
इतनो श्रम करीके क्यों पठायो श्री गुंसाईजीपे नाम केसे पायो ।४६।
कहा आपते इतनो कर सकते नांहीं कोन काजकुं वे पठायो आंहीं ।४७।
त्यारे कह्युं तुमारे लौकिक मांहीं महाराजा की रीती हे के नांहीं ।४८।
जाके हाथ भंडार अरू सब वस्तु कीनी जब चहीये तब पइये उनकी दीनी ।४९।
देवावे तब वाही पे ते देवावे जो अे आपु चहिये तो वापे मंगावे ।५०।
जेसे लौकिक तेसे हमारे मांहीं जाकुं सोंपी है ता विना पैये नांहीं ।५१।
माटे प्रभुने अंगीकारनुं ज्यारे चित आवे त्यारे मारग प्रवर्तनो सबंध ठरावे ।५२।
सेवा योग्य करे शरीर हेला मांहीं आचार्य विना योग्यता होअे नहीं ।५३।
अे सिध्धांत छे मारग उक्त रीत प्रभुने अेह मर्यादा नित्य ।५४।
ते माटे अे विविधी रस उक्त दाता स्व सामर्थे सुख आपवा रंग राता ।५५।
आग्रह करी आकर्षीने शरण ले छे अंगीकार करी स्वतःथी सुख दे छे ।५६।
प्रभु तो कृपा नाथ छे कृपा पूर भक्तनुं कष्ट सहेज ही करे दूर ।५७।
पण देह मनथी ने स्वभाव थई सहेज दोष उपजे छे तेहना दंड देइ ।५८।
अे तो दंड नोहे कृपा अपार सनमुख करी दान दे परम सार ।५९।
पोते स्वकीयने हित दइ शिक्षा सुध करी करूणा बले करे रक्षा ।६०।
अेहवा अनेक जे कोइ जीव दैवी तेहनुं कारण भोग योगे सदैवी ।६१।
भोगवस थकी अवतर्या नीच हीन जात दुष्ट बहिरमुख असुरसंग नाना भांत ।६२।
स्वदेशे प्रदेशे अने अनार्य देशे प्रगट्या छे जे भोग जुत नाना भेषे ।६३।
वली नीच योने प्रगट हवा जेह स्व सामर्थ बले खेंची लीधा छे तेह ।६४।
अे सिध्धांतने काज लखुं अेक प्रसंग हवो छे पंचोलीने महाप्रभु संग ।६५।
आगरामां असुर जीव अेक हवो ब्राह्मण तेहनो कहुं छुं विवेक ।६६।

तेहने घेर दैवीजीव कारण भावी अपराधना भोगे प्रगट्यो आवी ।६७।
वर्ष अग्यारनो थयो निवर्त्यो भोग त्यारे भगवद इच्छाअे मल्यो संयोग ।६८।
आप ओट कर्युं प्रगट प्रमाण द्वार प्रबल बले प्रभुअे कर्यो अंगीकार ।६९।
त्यारे स्वप्न द्वारा अेहने दर्शन दीधुं आरत प्रगट करी अेहोनुं कारज सीधुं ।७०।
जाग्यो त्यारे कह्युं तेह मुहने पमाडो स्वप्ने स्वरूप दीठुं छे तेह देखाडो ।७१।
आरत अतिसे प्रगटी कांइ रह्युं न जाय त्यारे गुरूजने तेहनो कीधो उपाय ।७२।
जोडी वाहेणी ने लाव्या मथुरा मांहीं केशवराय देखाडया कह्युं अेतो नांहीं ।७३।
वृंदावन जइ देहरा देखाडया जेह ते सर्व जोइ कह्युं न होअे अेह ।७४।
पछे लाव्या तेने श्रीनाथजी द्वार देखाडया तेहने श्रीनाथजी तेणी वार ।७५।
जोइने कह्युं स्वप्नमां दीठा जेहवा संतुष्ट थइने बोल्यो चोखा तेहवा ।७६।
उठाडयो पण पछे उठे न त्यांथी पिताने कह्युं हवे क्यां जाउं अहींयाथी ।७७।
भीतरीया ब्रह्मचारे समजाव्यो मली हवडा जा तुं फरी ल्यावशे वली ।७८।
बाल वस थकी वचन मान्युं अेहनुं साथे थई चाल्यो कह्युं कर्युं तेहनुं ।७९।
पछे घेर आगरे लइ गया फरी वली त्यांहां लइ जाओ कह्युं आरत करी ।८०।
पिताअे कह्युं हवे त्यां केम जवाशे सुनियो ज्यारे अेहनो अेह आसय ।८१।
त्यारे फरी पूछयुं लेइ न जाओ अेह कही ना त्यारे सद्य छांडयो देह ।८२।
अे सुणी पंचोलीजी आश्चर्य पामी पूछयो प्रश्न प्रभुने त्यां शीष नामी ।८३।
महाराज अे वैश्नव नोहे आप नाम निवेदन नहीं नहीं स्नेह ताप ।८४।
संगत्य नहीं मारग न जाणे समूल भगवद जस जाणे नहीं प्रतीकूल ।८५।
तेहने अेह प्रकार केम करी जणाव्यो अे सघ अेणी पेर केम शरण आयो ।८६।
त्यारे श्रीमुखे कह्युं वली अति उल्लास कारण अेहो पोते करी कर्युं प्रकाश ।८७।
प्राचीन भगवदीय हतो तेसो अपराध के भोग ते भयो अेसो ।८८।
कोउ दिवस दुष्टमों रहे भोग दूर कीनो पाछे अपनो आप प्रभुअे खेंची लीनो ।८९।
वली प्रमाण अर्थ कह्युं मनने रंग महाप्रभुजी साथे थयेल छे प्रसंग ।९०।
अेकवार गोधरा तणो सवजीभाई मोरठीयो मेवातो जाते अे कहेवाइ ।९१।
भाग्यवान भगवदी वल्या ज्यारे श्री महाप्रभुजी सुख सेज्या पोढया छे त्यारे ।९२।
अेकांतनो समय हवो त्यारे सवजीभाई सनमुख आव्यो ज्यारे ।९३।
विनती करावी मन महेली लाज मुहने मनोरथ छे सुणीअे महाराज ।९४।
अेकवार श्रीमुख थकी अेम उचारो करूणा करी अेम कहो तुं अमारो ।९५।
अेह विनती सुणी मनमां हरख्या पोढया थकी बेसी अने कृपाअे वरख्या ।९६।
कह्युं सुनरे आगे आव करी हेत तुं ज्यांहां रहेत त्यांहां वसे लोक केत ।९७।
वे सब क्यों न आये तुं ही आये केसे हमारो हमारे घर आयो अेसे ।९८।
हमारे विना केसे को आवे अेसो हमारो तुं हे आमो संदेह केसो ।९९।
अेम जे ज्यांहां थे त्यांहां थकी लीधा स्वतः सनमुख करी शरण लीधा ।१००।
पोते स्वकीय विज्ञापन अर्थे प्रगट कर्यो अेणे प्रसंग अे अर्थ सिद्ध कर्यो ।१।
अेतो केवल शरण छे पुष्ट पुष्ट ज्यांहां आप करूणा करी थई संतुष्ट ।१०२।

अहीं अे कार्य कारणरूप आप प्रति करे सर्व पोते पण राखे नीत ।१०३।
आचार्य प्रणीत मर्यादा धर्म राख्यो नाम निवेदन अंगीकार करी दाख्यो ।४।
पछे दान स्वरूपानंदे करवुं जेह अे मारग मर्यादा पाली छे तेह ।५।
अेहवुं कार्य करे कोण प्रभु पाखी सदा सर्वदा अे पोते रीत राखी ।६।
नाम निवेदन आचार्य कान कीधुं पोते स्वतः स्वरूपे रसदान दीधुं ।७।
अेतनमारगी भक्तनी कृपा होअे तो अे कारण प्रगट समुजे ते कोअे ।८।
नहीं तो बडानो आसय अति निपटगूढ बहु अर्थ साधक ते समजे न मूढ ।९।
अे कार्यमां बे अर्थ सहेज थाय गोप्य रस ने मर्यादा प्रगट कहेवाय ।१०।
अेवी परम लोकोतर लीला धरी सर्वांग सुख जनक प्रगट करी ।११।
दैवी सृष्टीने अनेक प्रकारे त्यांहां लीला अर्थ ते शरण लीधी छे अहींया ।१२।
ते छे भांत अनेकनी बहु प्रकार महातम दरसी अेक मारग प्रणीत सार ।१३।
अेक स्वरूप बल सबंधी मारगी प्रपन लीला उपयोगी अंतरंग अति अनन्य ।१४।
ठाम ठामथी दर्शन अर्थ आवे श्री महाप्रभुने प्रेम सहित ते भावे ।१५।
उत्कर्ष आचरण कृत्य क्रिया जेह श्रीमुखे श्री गोकुलमां कह्या तेह ।१६।
अेक समाजनी अेक समाज साथे करी वार्ता स्वकीय हित प्रगट नाथे ।१७।
ते वातमां टेक अनन्य धर्म नेम नीत मर्यादाना अनेक मर्म ।१८।
अनुकूल प्रतिकूलता जीवनी जे सर्वतोधिक उतकर्ष मारगनो ते ।१९।
आश्रय ने अनाश्रय सूचन थाअे मारग कर्तानुं प्रगट प्राबल्य जणाअे ।२०।
स्वरूप उत्कर्ष ने अनेक सिध्धांत श्रीमूखे प्रगट कर्या ने करे अनंत ।२१।
ते श्री गोकुल लीलामां विसद थाशे त्यांहांने प्रसंगे करी ते कहेवासे ।२२।
अहींया मथुरा लीलामां सूचन दीधुं स्वरूप सामर्थे जे प्राबल्य कीधुं ।२३।
अनन्यता अने नीत मर्यादा तेह मारग करतानो पक्षपात कर्यो जेह ।२४।
ते कहुं कांइ विसद करी प्रकार जेहनो श्रीमुखे कर्यो छे विस्तार ।२५।
अेक समय राजा बीरबल ते त्यांहां आवी बेठा श्री गुंसाईजीनी बेठक मांहां ।२६।
गिरधरजीसुं बहिरमुखतानी वात बोल्यो तेह समय प्रगट थई वचन प्रात ।२७।
कह्युं अेक तमो मा करो अेकत्र अे वात श्री गुंसाईजीने कही अेणी भांत ।२८।
साष्टांग दंडवत करवा मा देशो त्रीजु सर्वने कह्यो चरणामृत मलेशो ।२९।
त्यारे गिरधरजीने सुफर्यो न कोइ हां हां करी जाणी रह्या मन मांहीं ।३०।
कुल दीपक सपूत वल्लभजी त्यांहां सहु सांभल्युं आप बेठा छे त्यांहां ।३१।
अमर्याद असहन धर्म धरण सत्व श्री आचार्यजीना हरदयनुं गूढ तत्व ।३२।
स्व प्रगटित प्रतापीक महा वीर्यवान अमर्यादानुं वचन ते केम सहे निदान ।३३।
स्वरूप प्राबल्यथी पक्षपात कीधो तिरस्कार करी अने त्यांहां उतर दीधो ।३४।
अे होअे तुम कहा कहेत हो अेसे श्री गुंसाईजी कहा आपुते कहेत तेसे ।३५।
हमकुं कोउ कहे बोलाओ गुंसाई कहाअेहु ते कोउ अेसो कहेत नांहीं ।३६।
कोउ ओर कहेवाय देखो काहे नाहीं जो कोउ कहे ओरकुं जगत मांहीं ।३७।
चरणामृतकी तुम कहेत तेसे सोतो श्री गुंसाईजीके सेवक अेसे ।१३८।

चरणामृत विना जलपान न करे	न मिले तो आठ दस उपवास करे	।१३९।
न मिले कहुं संकट पडे गाढे	असे सेवक हे जो वे देह छांडे	।४०।
वे चरणामृत लीये विना रहे न रंच	असे स्वामी धर्म नीवहे प्रपंच	।४१।
साष्टांग दंडवत न करे तुम कहेत हमसुं	उनको समाधान कहे तुमसुं	।४२।
उनकी कहा चली वे ईश्वर हे बडे	पे हमहुं कहुं निकसत हे घोडा चढे	।४३।
जन्म स्थान अरू जात विश्रांत जांहीं	पेंडेमें घोडाकु चलाय सकत नांहीं	।४४।
सब कोउ धाये आयके गिरत आगे	जहां हम रहे तहां संग लागे	।४५।
उनकुं कहां हम कहेत हे आगे गिरो	हमकुं साष्टांग दंडवत तुम करो	।४६।
असे वचन सुनीके खिसीयानो भयो	फिरी बोलीके उतर दीयो न गयो	।४७।
तब दादा कहे असे काहेकुं कह्यो	में कह्यो मोंपे मिथ्या जात न सह्यो	।४८।
अे कोन इनकी वय कहा इत रानी	असो इनको वचन सहे तितनी	।४९।
अे स्वरूप प्राबल्य भाव करीने	श्री गुंसाईजीनो उतकर्ष आगल धरीने	।५०।
पोतानो उत्कर्ष प्राबल्य प्रताप	असाधारण स्वरूप सामर्थ आप	।५१।
अे ईश्वर निरूपाधी कह्युं सहेज मांहीं	जे हम घोडाकुं चलाय सकत नांहीं	।५२।
अेहनो भाव सो मनने मन पूछे	सेवक नमन करे त्यां आश्चर्य सूं छे	।५३।
स्वरूप देखता रहे नहीं अनुसंधान	सहु दंडवत करे ते राणो राण	।५४।
सुर असुर ज्ञाता अज्ञाता मर्म	अेहनुं नाम ते सहेज अैश्वर्य धर्म	।५५।
अेणे प्रसंगे अे धर्म प्रगट कर्यो	असाधारण स्वरूप सामर्थ भर्यो	।५६।
हवे आगल स्वतंत्र इच्छा प्रधान	अनुग्रह न्यामिक भाव कहुं निधान	।५७।
श्रीमुख कह्युं शरण को आवे त्यारे	समर्पे तो जो प्रभुनी इच्छा हो ज्यारे	।५८।
इच्छा विना जीवकुं हे सबे अशक्य	जीवकुं आपथे कछु न अे शक्य	।५९।
नमन पर्यंत प्रभुके मनमों जो आवे	तबही जीवथे नमन कीयो जावे	।६०।
प्रभुके मनमों जो आवे अे मोहेकुं जाने	तो अे जीव जाने अे निरधार मानो	।६१।
आपुथे तो इन कछु कीयो न जावे	करे तबही जब प्रभुके मन आवे	।६२।
अेक दिवस फिर बीरबल आयो आंहां	आय बेठो हमारे जु आंगन मांहां	।६३।
तब वोहोरत दादासुं कह्यो विरसी कीने	अहंकारको पक्ष मन मांहें लीने	।६४।
हमारे घर हे इतनी संपति	अरू सबनकुं देत हे अपरमित	।६५।
पे असी कछु उपजी अे नांहीं	जो समर्पीअे आन कछु अे इंहांइ	।६६।
जो हम दीनो उतर दादा बोले नांहीं	तुमको नांहीं तेसे इंहां इच्छा नांहीं	।६७।
जो विचार इंहां होअे उंहां उपजे तेसे	हमारे मनमों नांहीं तो होअे केसे	।६८।
अेहनो भाव जे इच्छा ज्यारे होअे	द्रव्य आदी जावदीक समर्पे सोअे	।६९।
अंगीकार करवो ज्यारे प्रभुने आवे	त्यारे भक्तने समर्पवुं मन आवे	।७०।
अंगीकारनी इच्छा जो उपजे अहींया	त्यारे आवे छे भक्तना मन मांहां	।७१।
समर्पवुं शरण आववुं महा निधी	प्रभुनी इच्छा विना केम थाअे सिधी	।७२।
पुष्टी मारगे अनुग्रह न्यामिक अेह	स्व सिध्धांत सामर्थ करी कह्या तेह	।७३।
तिरस्कार पूर्वक तृण तुल्य कीधुं	स्वरूप बल अतुल बले उतर दीधुं	।१७४।

दादा कह्योबडेमनुष्यसुंअेसी नांहीं कहीये तब में कह्यो अेसी सुनी चुप क्यों रहीये ।१७५।
अेहनो भाव जे प्रभु इच्छा प्रधान अेहवा भावनुं स्वरूप को कहे न आन ।७६।
मर्यादा रक्षक प्रभु अति निधान नित्य पालक कोन हो अे समान ।७७।
पण बडा भ्रातनो रंच न सोच कीधो मर्यादा मुकीने त्यांहां उतर दीधो ।७८।
दादा रहे उनसुं हिलमिल मांहीं मोकुं अेसे अेसेनसुं कछु रूचे नांहीं ।७९।
अेक दिवस में अटाली पर बेठो अेसे अे आगे मेरे नीचे होय के निकस्यो तेसे ।८०।
में गेहेनार्यो नांहीं चितयो ओर मेरी वे चल्यो चितवन मोंपे चितयों फेरी ।८१।
चारण हतो त्यां अेक उनके संग उनसुं कह्यो बीरबलने प्रसंग ।८२।
अे मोहेसुं सदा रहेत हे टेढे भाव तब उन कह्यो इनको हे यह सुभाव ।८३।
अेहनो अर्थ ते स्वाभाविक धर्म स्वतंत्र निरंकुश सदा अेह मर्म ।८४।
जे बीरबल लौकिक मोटो अेहवो जेहने मान्य ने मित्र भूपति जेहवो ।८५।
इच्छाने अनुसरी शरण आव्यो अहीं प्रपन्न भाव सानुकूल विन भाव्यो नहीं ।८६।
सुजसवान ने घेर वैभव अनेक तेहनो विसद करी क्यां लगी कहुं विवेक ।८७।
जेने बिछाबणे बेठी सके न अन्य त्यांहां पाउं कोण धरी सके बीजो अन्य ।८८।
तेहवो गुणी तेहवो चतुर दाता दान तेहवो समजु देसाधिपतिनुं मान ।८९।
ते दातुर्य ने ते चतुराइ ने राज्यमान करूं विसद जो अे होअे मारगवान ।९०।
अलौकिकमां कांइ समुजे न मूल पाम्यो नाम पे अे सदा रहे प्रतिकूल ।९१।
जेहने अेतनमारगसुं विरूध्ध श्री गुंसाईजीना घरसुं रहे दुष्ट बुध्ध ।९२।
तेहने जस लीलामां विसद करीअे ग्रंथ वांचतां अेहोने सूं वचे धरीअे ।९३।
जेणे स्वरूपथी बहिरमुख धर्म आण्यो महा फलात्मीक मारग कांइ न जाण्यो ।९४।
तेहना दान चातुर्य ने नेम धर्म सत्यगुण ज्ञाता अनेक मर्म ।९५।
तप त्याग जस वैभव मान्य राज्य वृथा सर्वको नहीं आवे काज ।९६।
जे कल्याणभट खंभालीअे ठाकोरद्वार ज्यारे विनती करी ते बहु प्रकार ।९७।
महाराज आ मारग मोटो अथाही श्रीमुखे कह्युं भट अे तो मारग नांहीं ।९८।
अे तो केवल फल अनुभवही लहीअे फल आगल होय ताकुं मारग कहीअे ।९९।
अे तो फलको अनुभव करत इहांइ इहां फल अरू मारग भिन्न नांहीं ।२००।
त्यारे भटे कह्युं राज महाराज राज अे तो फल ज पण अमो शुं जाणुं राज ।१।
आंख उघाडया विण अेवुं केम जणाय राजना कह्या विण केम जाण्युं जाय ।२।
अे सुणी प्रभु बोल्या अेणीभांत भाव पुष्टीने कही अेक बीजी वात ।३।
वात तबलों अपनी मनमों रहे छानी बाहिर निकसी वात तब वे भइ वीरानी ।४।
अेहनो भाव जे तमो कह्यो तेह सत्य जे ज्यां लगी में कह्युं नाहीं हतुं करी निमित ।५।
ज्यां लगी अेहनुं फल हमारे पास कह्युं आप्युं तमने महा सुखनी रास ।६।
अेहवा फूलनो अनुभव करो मन विचारी अे केवल फल जाणसो संदेह निवारी ।७।
अेवो स्वकीय वत्सल मारग फल अनूप अेहवुं बीरबले जाण्युं नहीं अे स्वरूप ।८।
तेणे करीय जे महत्व ते सर्व व्यर्थ विमुखनो वैभव ते आवे न अर्थ ।९।
अेहना द्रव्यनो अहींया नहीं अंगीकार प्रभु प्रसन्न नहीं अे उपर लगार ।२१०।

अेहनो पूर्व पक्ष मनमां आण्यो	जेनो गुण ते प्रगट प्रभुअे वखाण्यो	।२११।
अे पोते श्रीमुखे कह्युं अे निमित	आधुनिकमों भलो इनको कवित	।१२।
कवी धर्म जाने ओर बोहोत समजे	भलो कवित सुने त्यांहां बोहोत रीझे	।१३।
कहे पुतामइ सरस्वती आपु केसी	मेरे मुख ते क्यों निकसी न अेसी	।१४।
काहुको आछो कवित होअे मोल लेवे	ताको मोल मांगे सो वाको तबही देवे	।१५।
अेक कवितके पांचसो रूपैया दीने	ओर रीझी के कवित पे मोल लीने	।१६।
ओर जनमते आप बोहोत उदार	अेहवा वचन श्रीमुखे कह्या बहुवार	।१७।
ते व्यर्थ केम थाअे गुण भाग्यवान	त्यांहां कहुं छुं तेहनुं करी समाधान	।१८।
लौकिक कह्युं प्रभुअे अे सर्व अेहनुं	अे मध्ये अलौकिक नहीं अंसे तेहनुं	।१९।
लौकिक अभिलाष जस अरथ कीधुं	अे उपाध्य सहित अेणे दान दीधुं	।२०।
दुसंगे ते सर्व थयुं अेहनुं अेहवुं	ताता तवा पर बूंद जल पडे तेहवुं	।२१।
श्रीमुखे करी कही छे अेहनी बीजी वात	हुं कहुं छुं जे मांहां भाव छे नाना भांत	।२२।
बढयो बीरबल श्री गुंसाईजीके प्रताप	दुसंगे बगडयो बहिरमुख थयो आप	।२३।
अेसी प्रगटी बहिरमुखता समूल	जो जाके विषे भयो प्रतिकूल	।२४।
श्री गुंसाईजीसों कबहुं मोह करी	कह्युं समर्पतहुं कछु आगे धरी	।२५।
पे श्री गुंसाईजीके मनमें कछु न आयो	तब बोल्यो में तो हुं तुमारो बढायो	।२६।
श्री गुंसाईजी कह्यो कहा भयोया मांहीं	अपनेकुं कह्यो प्रभु करत नांहीं	।२७।
अेहनो भाव जे पोतानो अंगीकार	तेनी काणे कर्या रे प्रभु सहु प्रकार	।२८।
तेहनी वस्तु अंगीकार करे ज्यारे	कृपा ने अपणायत होये त्यारे	।२९।
सर्वात्मना भाव विन कृपा नावे	भावे सनमुख होइ तेहनुं सर्व भावे	।३०।
नहीं तो केणे कांइ समर्प्युं न जाये	अंत:करण प्रतिबंधनुं विघ्न थाअे	।३१।
स्वकीयनी सामग्री आवे ज्यारे भोग	त्यारे स्वकीयना फलित होअे संयोग	।३२।
रक्षा करवा माटे फलितार्थनो हे	रक्षा तो स्वकीयनी सहेजे होअे	।३३।
वस्तु सोइ जो उपयोग आवे	कृत्य सोइ जो अपने प्रभुकुं भावे	।३४।
अेहवुं वचन प्रभुअे कह्युं भर समाज	स्वकीय सर्वने ज्ञापित करवा काज	।३५।
अेनी बहिर्मुखताअे अेहना गुण ने द्रव्य	प्रभु प्रसन्न नहीं तेणे अेहनुं व्यर्थ सर्व	।३६।
अेहनी सी छे जो बीजो कोन होअे केहेवो	सेवक ने अणसेवक प्रताप अेहवो	।३७।
मार्ग उपदेस जो गुरूथी प्रतिकूल	ते उपर प्रभु नहीं सानुकूल	।३८।
कृष्णदास अधिकारी आदि प्रसिध्ध	अेहना कृत्यथी अेहोने नहीं संबंध	।३९।
जेहने श्रीमुखे कह्युं हास्य करी वचन	अधोगछती तामसा अेह वचन	।४०।
जद्यपी सेवक आचार्यजीनो हतो तेह	श्री गुंसाईजीनो द्रोह करतो अेह	।४१।
माटे श्री महाप्रभुजीने दीठो न भावे	अेहना कर्या पद ते चितमें न आवे	।४२।
पोतानी कृत्ये ज्यारे पडयो कुंआ मांहां	ते समाचार सांभल्या प्रभुअे आंहां	।४३।
अेणी रूचे प्रभुअे कह्युं आणी मन	अधोगछंती तामसा अे वचन	।४४।
कृत्यना तारतम्यने अेह कीधुं	महेद द्रोह कीधे नहीं काज सीधुं	।४५।
प्रभुअे सर्व स्वकीय रक्षाने हेत	जो अे दंड न दे तो अे रहे अचेत	।२४६।

भाव कृत्यनो सांप्रत्य भय पमाडी	निदाने अंगीकार अे मर्यादा देखाडी	।२४७।
पण स्वरूप रसमां तारतम्य अेहने	अंगीकार होसे पण रस न तेहने	।४८।
अने जेणे अहीं सनमुखे मन आण्युं	जेणे अे मारग फलात्मीक स्वरूप जाण्युं	।४९।
तेहो उपर करे करूणा संपन्न	सदा सर्वदा रहे प्रभु अति प्रसन्न	।५०।
राजा रामचंद्र ने टोडरमल समान	राय मुकुंददास ने वली आसफखान	।५१।
मोहोबतखान इत्यादिक छे अनेक	अेहनो समय आवे कहीश विवेक	।५२।
राम रामचंद्रनी सनमुखता जेहवी	अडेल मध्ये लीला कही छे तेहवी	।५३।
सोलमें मांगल्ये वेद आरंभ छे ज्यांहां	तेमां सहु विसद कर्युं छे त्यांहां	।५४।
आफसखान ने वली राय मुकुंददास	अेहनी प्रपनता आगल थाशे प्रकाश	।५५।
मालोधार लीलाअे कहीश ते रंगे	विसद करीने कश्मीरने प्रसंगे	।५६।
टोडरमलनी अंतरमुखतानी वात	जन्माष्टमी निर्णय नाना भांत	।५७।
श्री मुख वचने करी कहीय अेह	अने वली अहींया कहुं सुणजो तेह	।५८।
राजा हमारे घरसुं बहु प्रपन्न	कहा कहीये कछु आपु ते करे ना भिन्न	।५९।
पटणे दाउद पादशाह उपर धायो	मुखीया करी जब इनकुं पठायो	।६०।
तब हमारे घर आयो विदा कीनो	गुंसाईजीने पीतांबर वस्त्र दीनो	।६१।
जब युध्धकुं चढयो तब राख्यो साथ	समे युध्धके पटवस्त्र बांध्यो माथ	।६२।
इच्छा भगवद ते भइ इनकी जीत	जेसो विश्वास अेसो फल अेसी रीत	।६३।
त्यांहांनी हांसी प्रभुअे कही थई प्रसन्न	तेणे कारणे कहुं छुं आणी मन	।६४।
ते कटकमां आमेरनो मानसंग	जेम टोडरमल तेम हतो ते संग	।६५।
तेहने देशथी सदा बाजरी आवे	देशाचार माटे अेणे घणी भावे	।६६।
अेक वारने त्यां बंगाल देश	आव्या भटीनो राजा मलवा उदेश	।६७।
कायस्थ ज्ञाते नाम केदारराय	मानसींग राजाअे तेहने कह्युं जाय	।६८।
अमारा देशनो अन्न उतम अेह	आणी भांते करी तमो लेजो तेह	।६९।
जेसे मानसींगे कह्यो तेसे कीनो	मुखवास उठी पाछे मुख न दीनो	।७०।
अे केसे लीयो जाअे कह्यो देखो भैया	वे देवजीर चावलको खवैया	।७१।
दुजे दिन मानसींगने पूछी अेसे	वे अन्न लीये तुमको लागे केसे	।७२।
तब उन कह्यो सुनह राजा गुंसाइ	अे तो घास हे कुदन कछु अन्न नांहीं	।७३।
अे मनुष्य केसेके जात लीनो	यह भांति करी के उन उतर दीनो	।७४।
तब मानसींग हस्यो कहे देखो भाई	हमारे मुक्ष अन्नाकुं यों कहाइ	।७५।
हवे अे करी नथी केवल हांसी	अे मांहे सिध्धांत करी कह्युं प्रकासी	।७६।
अेहवुं प्रभुने समर्पवुं नहीं कदन	जे साधारणने नहीं आवे मन	।७७।
प्रभु तो अंगीकार काणे आरोगे	तस्मात न समर्पीअे जे राजभोगे	।७८।
अन्य उपदेस करी ने अे जणावे	जेम स्वकीयने शुभ हेत काज आवे	।७९।
प्रभुना वचन तो सहु कारणवंत	हांसी वात वचनमां बहु सिद्धांत	।८०।
कृत्ये भावे वचने करी करे दान	अंगीकृत भाग्यवान ते करे पान	।८१।
ते माटे ते ग्रंथे करी विसद कीधुं	जेणे समय प्रगट करी दान दीधुं	।२८२।

पछी पूर्वथी आवीने अेक वार टोडरमलनी परोक्ष सेवा अपार ।२८३।
कीधी तेह कहुं छुं विसद करी तेह असाधारण सनमुखता छे जेह ।८४।
श्री गुंसाईजीनो सेवक अेक बुचो शाह आवे दरसनने करी अति उमाहा ।८५।
ज्यारे आवे त्यारे विनती भाखे सत मोहोर सुवर्णनी भेट राखे ।८६।
देशाधीपतिनो द्रव्य हे अेहोने हाथ लेखे निकली बाकी ते अेहोने माथ ।८७।
त्यारे राजाअे पूछयुं ते द्रव्य क्यांहां कागर खरचना लावज्यो होअे ज्यांहां ।८८।
राजा वांचवा कागल लाग्या अेह सो मोहोर भेटनी निकली तेह ।८९।
जोइ राजाअे संमत कर्यो सुदेश जो अे देखे नरेस तो होअे कलेश ।९०।
प्रथवी पति देखता वात करी आडी श्री गुंसाईजीना हित अर्थ नाख्या फाडी ।९१।
दिल्लेशे पूछयुं राजाजी कहा कीनो त्यारे भेदसुं तेहनो उतर दीनो ।९२।
अे वाणीयो कुटिल अमने सीखावे लेख घर तणा खरचनुं ते दिखावे ।९३।
तेल हींग मिरच अने लख्युं लूण ते फाडी नाख्युं अेहवुं वांचे कोण ।९४।
अेहवे खरचे अे खजानो घटे कहीं सुणी भाव भूपाल अे बोल्या नहीं ।९५।
पछी बुचोशाह तेडी पोताने घेर अेकांत शिक्षा करी बहु पेर ।९६।
अेम कही शिखामण घणी दीधी तेहवी अंतरमुख थई सेवा कीधी ।९७।
कह्युं अेहवुं कोण अनुचित करे कर्म पादशाह महा मलेछ ने आवे मर्म ।९८।
कदाचित अेहने हाथ अे पत्र जातुं फरी द्रव्य मांगत त्यारे शुं थातुं ।९९।
सावधान सेवा काज गिण्युं न रंच स्नेह भाव महातम रहित न प्रपंच ।३००।
देशपती आगल रखे कांइ कहेवाय श्री गुंसाईजीनो वैभव बाहाज्य थाअे ।१।
फरी कोण मांगे जत कृत पोते बीजो कोइ नहीं अेहवो अेह जोते ।२।
भूपतीअे कह्युं अेहने सर्व स्थापी रोटी खाउं छुं हुं अेहनी आपी ।३।
देशपती रह्यो जेहने सर्व आपी सके कोण कीधुं तेहनुं उथापी ।०४।
तेहने भक्ति मार्गी अेहवी दीधी शिक्षा वस्तु बाहाज्य करीअे नहीं करवी रक्षा ।०५।
अेहवो प्रतापवान जे कांइ कह्युं न जाय न करे ते न थाय जे करे ते थाय ।६।
अेकवार अकबर ते अति रीझयो मन कृष्णामंगल ते उपर थयो प्रसन्न ।७।
कह्युं मांगतुं ते मांग थई प्रसन्न त्यारे कृष्णामंगले विचार्युं मन ।८।
जे हुं मांगीस राजाना संमत पाखे तो आप्युं अेहनुं द्रढ नहीं करी राखे ।९।
राजासुं अेहने हतो अहंकार ते माटे नहीं मांग्युं ते करी विचार ।१०।
हुमाउनो ते कृष्णामंगल करोडी पछे धर्मने काज अहंकार छोडी ।११।
राजा पास आयो मनमां घाली राजा सुणी ने आव्यो सनमुख चाली ।१२।
त्यारे कृष्णामंगले राजा कही बोलाव्यो राजाअे चौधरी कही करी तेडाव्यो ।१३।
प्रथम अेक अेकनुं लेता न नाम अहंकार मेल्यो ते धर्मने काम ।१४।
राजाने कह्युं देशाधीपति प्रसन्न मारे मांगवुं छे आव्युं अेक मन ।१५।
तो मांगुं जो तमो थाओ सहाय तमो अपावो तो मुने आप्युं जाय ।१६।
प्रथम हिंदुनुं बहुर परणे ज्यारे देशाधीपतिने नमन करे ते त्यारे ।१७।
अे वात हिंदुने भली न भावे मांगुं अेह जो तुं मने अपावे ।३१८।

ते वार राजाअे कह्युं आव्युं मन	तुं मांग हुं अपावीस कह्युं वचन	।३१९।
मारे पण आवश्यक करवुं अेह	विचार अेहवो हतो नि:संदेह	।२०।
ते समय पामीने मांग्युं ते ज्यारे	पृथ्वीपतिअे राजा सामुं जोयुं त्यारे	।२१।
राजाअे कह्युं आपीअे विशेष	भली नहीं अे वात सुणीअे दिलेश	।२२।
त्यारे आप्युं कृष्णामंगलने अे दान	अेवो राजा उत्कर्ष अने भाग्यवान	।२३।
अे सर्व प्रताप ने राज्यमान	वैभव आस्तिकताअे निदान	।२४।
ते माटे अेहने सर्व सिद्ध थाअे	गुंसाईजी विना जाणे न अन्य उपाय	।२५।
अहीं सनमुखथी गुंसाईजी प्रसन्न	अने आंतरिक धर्म नहीं भाव भिन्न	।२६।
जे करवुं ते श्री गुंसाईजीने पूछे	ते श्रीमुखे प्रगट करी कह्युं छे	।२७।
अेक वेर मथुरामों जमुनाजी सार	विश्रांतके घाट वे सहामा पार	।२८।
अलमस पिसाचे देखा देइ रात्र	अटाली चढी देखे सबे प्राणी मात्र	।२९।
कारे कारे स्त्री पुरूष लिये दीवी हाथ	इत थे उत दौरे अरू खुले माथ	।३०।
जब सब कोउ मिले होवे इक ठोरी	तब दीसे मानो जरी उठी हे होरी	।३१।
फिरी दौरे चोंहोंपास वे न्यारे न्यारे	छोटे बार फरहरे निरतेज कारे	।३२।
नग्न रोम पर्यंत वे नर अरू नारी	हम देखीअे अपुनी चढी अटारी	।३३।
तेसेमों टोडरमल्ल राजा आयो	उने श्री गुंसांइजीकुं यों पूछायो	।३४।
अे कहा अरू उनको कर्तव्य केसो	अद्‌भुत सागर देखी कह्यो अेसो	।३५।
अे उतपात सूचक प्रथवीपतीकुं	राजा शांत कीये चहीये अे अशुभकारी	।३६।
शांत कोन करे अे तो मलेच्छ राज	श्री गुंसाईजीने कही अे तुमारो काज	।३७।
राजा तुल्य हो तुमे कर्यो चहीये	पछी शांत कीनी जो विधोक्त कहीये	।३८।
वे दोष रह्यो मास छे पर्यंत	सद्य भर्यो निवर्त जब कीनो शांत	।३९।
श्री गुंसाईजीना अेम अे माने वचन	श्री गुंसाईजी सानुकूल ने अे प्रपन्न	।४०।
अे द्वारा वचने दोष कर्यो दूर	अेहवा स्मृति शास्त्र मर्यादा पालक सूर	।४१।
करे आपु ईश्वर दे बीजाने माथ	अे मारग तणी पीढिका अेहोने हाथ	।४२।
ईश्वर वक्ता करता सहु पोते कहीये	ज्ञाता आप ने ज्ञापके आप लहीये	।४३।
पण मार्ग उतकर्षताने प्रमाण	समूल वेदार्थे कही करी निर्माण	।४४।
मारग पीठीकाअे महाप्रभु पोते	महा लीला पर्यंत दुरावे ओटे	।४५।
अन्य उपदेशे कही करी देखाडे	मोटो ते जे बीजाने मोडम पमाडे	।४६।
जेम जेम अे पोताने देखाडे नीचुं	तेम तेम भूमी बीजवत थाय उंचुं	।४७।
जेम बीज नीचुं ने फल उंचुं होय	तेम अन्य उतकर्षे जस अेहोने सोय	।४८।
ते माटे श्री गुंसाईजीने निर्णय देखाडयो	आज्ञा सामर्थे उतपात हत पमाडयो	।४९।
शास्त्र प्रणीतथी दोष निवृत थाय	पण जोनी पिचासनी अे केम मुकाय	।५०।
मुक्ती क्षेत्रमां आवी मुकाया नहीं	ते गुंसाईजीना वचने मुक्त पाम्या अहीं	।५१।
अे भगवद पराक्रम न मानस कर्म	हतीत पतीत तेनी गती अे प्रसिध्ध मर्म	।५२।
अेहवा श्री गुंसांइजीना वचन आणे	राजा अेहोने ईश्वर करी जाणे	।५३।
साचु अेह ने बाकी सहु वृथा अन्य	अेहवो श्री गुंसाईजी विषे प्रपन्न	।३५४।

त्यां को पूछसे अेवो कां न आव्यो शरण सेवक थयो नहीं तेहनुं शुं कारण ।३५५।
तेहनुं कहुं छुं करी अने समाधान अे प्रकारना जावद जे अे समान ।५६।
ते पोते प्रभुनी इच्छाने सामर्थ परकीय सेवा अनुभवने अर्थ ।५७।
सेवक थइने सेवा करे अे आदी रीती तेमां स्वकीय सेवा रसनी ते नीती ।५८।
अने सेवक विनु जे सेवकनी पेरे सेवाने विषे तत्पर उलट भेरे ।५९।
अे परकीय सेवा रसनो प्रकार स्वकीयथी परकीयमां रस अपार ।६०।
स्वकीयनो तो अे धर्म जे करे सेवा पण अेमां रस अनिरवचनी कहेवा ।६१।
निरूपाधी सहेज अैश्वर्य प्रगट कीधुं सेवक विनुं अल्प संबंधे मानी लीधुं ।६२।
दरस मात्रे सुर असुर वली नर ने नार अे सर्व तत्पर सेवा करे संसार ।६३।
को अेक भिन्न रस अे अनुभवनी इच्छा माटे मार्ग रीत न आवी ते इच्छा ।६४।
नाम निवेदन करीने सेवक न थया अेहने स्वरूप सामर्थे कीधी ते मया ।६५।
भाव द्वारा मानसी निवेदन करावी अंगीकार अेम करवानी इच्छा आवी ।६६।
ज्यां स्वरूप बले ते निरोधे मन अंगीकार करीने करे प्रपन्न ।६७।
अे स्वरूपनो प्रबल प्रताप अेहवो त्यां निवेदन नामनो नेम केवो ।६८।
नवधा भक्ति तेमां सात ते जीव साथ सख्य आत्मनिवेदन प्रभुने हाथ ।६९।
अे पोतेथी जीवे कर्युं न जाय स्वतः करूणाअे प्रभु करे तो थाय ।७०।
अने ते प्रभुअे अेहनी सेवा द्वारा पोतेथी कर्यो भावनो अंगीकार ।७१।
त्यारे निवेदनमां रह्यो सो संदेह नवरत्नमां गुंसाईजीअे कह्युं अेह ।७२।
निवेदनना अधिकारी त्रण भिन्न भिन्न उतम मध्यम अने अधिकारी हीन ।७३।
अेहवा करी तारतम्य कर्युं आन भावे करी साधकने भावज प्रधान्य ।७४।
कोअे पूछसे भाव प्रधान्य सत्य भावसुं करे जो निवेदन वीण निमित ।७५।
समाधानने कर्युं सिध्धांत सार निवेदन सिध्ध थाअे पांच प्रकार ।७६।
मुक्ष भाव ते अे सर्वनुं मूल भावे प्रभु समान थाअे समूल ।७७।
तेथी निवेदन कहो सिध्ध केम न थासे ते भाव लीलामां आगल कहेवासे ।७८।
ज्यां प्रभुअे स्वतंत्र द्रष्टि करी त्यां कहीस अे कारण विसद करी ।७९।
त्यां मुक्ष छे भाव तणु आधिक्य जेणे भावे सेवा करी थाअे अैक्य ।८०।
राजा आदी सेवा करी जेणे जेह निवेदन विना कृत्य कृत्य थया तेह ।८१।
हवे सेवा ते जे जेनी अपेक्षा होय ते करीअे तेहनुं नाम सेवा सोय ।८२।
माटे अहीं अे सेवानी हती अपेक्षा, सेवाअे अंगीकार करी करी रक्षा ।८३।
अेणे भाग्ये प्रभुने विनियोग आवी सेवा तेह जे प्रभुने मन भावी ।८४।
त्यां श्रीमुख वचन तणुं प्रमाण जे अपेक्षीताही सेवा भवती जाण ।८५।
चाहे अे कछु करे कछु सो तो सेवा नांहीं पदारथ सो जो आवे विनियोग मांहीं ।८६।
कृत्य सोइ जो प्रभुकुं रूचे अेह ते अेहोने हवा कार्ज प्रकार बहु ।८७।
माटे अे राजा आदी अेणे प्रकार तेह स्वरूपने अनुसरी सेवा तत्पर जेह ।८८।
हवे होय छे ने वली हसे सेवा तेहने नाम निवेदन विना कृतारथ अेहने ।८९।
अने अे तो केवल इच्छाने सामर्थ परकीय सेवा अनुभवने अर्थ ।३९०।

त्यां को पूछसे अेवो कां न आव्यो शरण सेवक थयो नहीं तेहनुं शुं कारण ।३५५।
तेहनुं कहुं छुं करी अने समाधान अे प्रकारना जावद जे अे समान ।५६।
ते पोते प्रभुनी इच्छाने सामर्थ परकीय सेवा अनुभवने अर्थ ।५७।
सेवक थइने सेवा करे अे आदी रीती तेमां स्वकीय सेवा रसनी ते नीती ।५८।
अने सेवक विनु जे सेवकनी पेरे सेवाने विषे तत्पर उलट भेरे ।५९।
अे परकीय सेवा रसनो प्रकार स्वकीयथी परकीयमां रस अपार ।६०।
स्वकीयनो तो अे धर्म जे करे सेवा पण अेमां रस अनिरवचनी कहेवा ।६१।
निरूपाधी सहेज अैश्वर्य प्रगट कीधुं सेवक विनुं अल्प संबंधे मानी लीधुं ।६२।
दरस मात्रे सुर असुर वली नर ने नार अे सर्व तत्पर सेवा करे संसार ।६३।
को अेक भिन्न रस अे अनुभवनी इच्छा माटे मार्ग रीत न आवी ते इच्छा ।६४।
नाम निवेदन करीने सेवक न थया अेहने स्वरूप सामर्थे कीधी ते मया ।६५।
भाव द्वारा मानसी निवेदन करावी अंगीकार अेम करवानी इच्छा आवी ।६६।
ज्यां स्वरूप बले ते निरोधे मन अंगीकार करीने करे प्रपन्न ।६७।
अे स्वरूपनो प्रबल प्रताप अेहवो त्यां निवेदन नामनो नेम केवो ।६८।
नवधा भक्ति तेमां सात ते जीव साथ सख्य आत्मनिवेदन प्रभुने हाथ ।६९।
अे पोतेथी जीवे कर्युं न जाय स्वतः करूणाअे प्रभु करे तो थाय ।७०।
अने ते प्रभुअे अेहनी सेवा द्वारा पोतेथी कर्यो भावनो अंगीकार ।७१।
त्यारे निवेदनमां रह्यो सो संदेह नवरत्नमां गुंसाईजीअे कह्युं अेह ।७२।
निवेदनना अधिकारी त्रण भिन्न भिन्न उतम मध्यम अने अधिकारी हीन ।७३।
अेहवा करी तारतम्य कर्युं आन भावे करी साधकने भावज प्रधान्य ।७४।
कोअे पूछसे भाव प्रधान्य सत्य भावसुं करे जो निवेदन वीण निमित ।७५।
समाधानने कर्युं सिध्धांत सार निवेदन सिध्ध थाअे पांच प्रकार ।७६।
मुक्ष भाव ते अे सर्वनुं मूल भावे प्रभु समान थाअे समूल ।७७।
तेथी निवेदन कहो सिध्ध केम न थासे ते भाव लीलामां आगल कहेवासे ।७८।
ज्यां प्रभुअे स्वतंत्र द्रष्टि करी त्यां कहीस अे कारण विसद करी ।७९।
त्यां मुक्ष छे भाव तणु आधिक्य जेणे भावे सेवा करी थाअे अैक्य ।८०।
राजा आदी सेवा करी जेणे जेह निवेदन विना कृत्य कृत्य थया तेह ।८१।
हवे सेवा ते जे जेनी अपेक्षा होय ते करीअे तेहनुं नाम सेवा सोय ।८२।
माटे अहीं अे सेवानी हती अपेक्षा, सेवाअे अंगीकार करी करी रक्षा ।८३।
अेणे भाग्ये प्रभुने विनियोग आवी सेवा तेह जे प्रभुने मन भावी ।८४।
त्यां श्रीमुख वचन तणुं प्रमाण जे अपेक्षीताही सेवा भवती जाण ।८५।
चाहे अे कछु करे कछु सो तो सेवा नांहीं पदारथ सो जो आवे विनियोग मांहीं ।८६।
कृत्य सोइ जो प्रभुकुं रूचे अेह ते अेहोने हवा कार्ज प्रकार बहु ।८७।
माटे अे राजा आदी अेणे प्रकार तेह स्वरूपने अनुसरी सेवा तत्पर जेह ।८८।
हवे होय छे ने वली हसे सेवा तेहने नाम निवेदन विना कृतारथ अेहने ।८९।
अने अे तो केवल इच्छाने सामर्थ परकीय सेवा अनुभवने अर्थ ।३९०।

भावनो ते प्रबल्य उत्कर्ष काज अेणे कारणे राख्यो ते अे समाज ।३९१।
राजा आदि इत्यादी मारगनी रीते सेवक विनु थाअे अंगीकृत कर्या प्रीते ।९२।
सेवा कृत रूच्युं छे अेहनुं ज्यांहां ते प्रसन्न थई कह्युं छे सभा मांहां ।९३।
अेहवी सेवा प्रिय मन विचारी मथुरामां अनेक कारणे पधारी ।९४।
भांति भांतिनी अपरमित करे लीला महा सुखद मनोहर अती रसीला ।९५।
तेह प्रभुनी लीला गुण जस चरित्र अति अद्‌भुत अनुपम नहीं अन्यत्र ।९६।
अे सहुने सराहुं छुं हुं मनमां रीझी पुलकित थई अनुभवी रसे भींजी ।९७।
के मारी रसना सराहुं सुदेश ज्यां केनो गम्य नहीं त्यां कर्यो प्रवेश ।९८।
वेदादिक जेहने नित्य नेति कही लेखे वचने कोन कहे द्रष्टि कोन देखे ।९९।
अेहवुं कोण अगम्य स्वरूपने जाणे ते कहेवाने उद्यम मनमां आणे ।४००।
मुने प्रगट प्रमेय अनुभव करावी लीला परम लोकोतर अे जणावी ।१।
अे रसनानुं सामर्थ न मारूं गात्र हुं द्वारा स्वतः प्रगट करे इच्छा मात्र ।२।
मारी रसनाना उद्यम उपदेष्टा जेह अने उद्यमना अधिष्टाता तेह ।३।
तेहने नमन करी कह्युं लीला सार अग्रमनीय आनंदभर करूं विस्तार ।४।
प्रभु ज्यारे अनाद्य लीला करतां मांहां अंग प्रगटित नित्य रमण श्रष्टी त्यांहां ।५।
संयोग रसनी पूरण पुष्टतानी लीधी विप्रयोग रस दाननी इच्छा कीधी ।६।
विप्रयोग श्रींगार रस अनुभव अर्थ सृष्टी आगलथी प्रगटी पोते सुखार्थ ।७।
पछे पोते प्रगट कर्युं जे प्रकार पहेले मांगल्ये छे विशेष विस्तार ।८।
बीजे मांगल्ये कली ४१ मांहां मांगल्य सतरमें कली ५१ छे त्यांहां ।९।
मांगल्य अढारमें कली ६९ जेह मांगल्य वीसमे कली त्रीजीये लख्युं अेह ।१०।
मांगल्य अेकवीस ज्यां छे कली ५० अेणे अेणे स्थले सूचनीका करी प्रकास ।११।
श्री गोकुलने विप्रयोग रसदान दीधुं अनुभव करावा मथुरा गमन कीधुं ।१२।
अेकवीसमे मांगल्ये अेनुं कारण जेह प्रगट कर्युं छे त्यां विस्तारे तेह ।१३।
हवे आगल बीजुं कारण छे जेह ते हुं विसद करी कांइ अेक कहुं छुं तेह ।१४।
श्री महाप्रभु भूतल प्रगटीने ज्यारे गृहस्थाश्रमनो विचार रूची हवी त्यारे ।१५।
मुक्ष रमण रस स्थले विवाह नोहे व्रजने विषे पुष्ट लील ज सोहे ।१६।
मुक्ष रस ने केवल ज्यांहां भजनानंद ज्यांहां प्रछन रस विहित आनंद कंद ।१७।
रसात्मिक पुरूषोतम त्यां रस प्रकास लीला करी नहीं करीने गोकुलवस्त्र ।१८।
विवाह रस विधी ते व्रजथी न्यारी मथुरा रह्या कारण अेह विचारी ।१९।
त्यांहां रही प्रकास रस अर्थ सीधो मर्यादा हित प्रगट विवाह कीधो ।२०।
प्रभुजी पोते ते प्रागट्य धरी मथुरा पधारी त्यांहां वास करी ।२१।
त्रीजुं कारण मथुराने सदा आस पुष्टी लीला रसात्मिकनो उल्लास ।२२।
अे स्वरूपनी अभिलाषा मनमां रहेती अंतरमां आरत ते केहेने न कहेती ।२३।
मथुराना मनोरथ पूरण कीधा विविध भांतीना अेहना अर्थ सीधा ।२४।
अखिल धर्मरक्षकेअनेक विधी विधोगते धर्म स्थापन अर्थ प्रति वर्ष पोते ।२५।
नवमीअे नवमीअे परिक्रमा द्वारा स्थल स्थलांतरनी लीला करी प्रकार ।४२६।

महातम प्रबल कर्युं पोते विचारी   अेम आद्य मथुराना उरनी निवारी ।४२७।
महा पुष्टि लीलानुं दर्शन करावी   अतिसय सौभाग्यनी दशा आवी ।२८।
महा पूरण प्रागट्यनुं कारण अेह   पोतानुं परम लीला स्थल मुकी जेह ।२९।
अभिलाषा पूरण करी सर्व केरी   ज्यांहां पधार्या त्यांहां त्यांहां घणेरी ।३०।
बीजे प्रागट्ये लीला भेदे स्वरूप भेद   स्थले भेदे स्वरूप भेदे वाक्य भेद ।३१।
पूर्ण सर्वत्र अे सर्वदा समान   निवास संक्षा कर्युं पूर्णता प्रमाण ।३२।
थया छ वरस त्रण मास दिवस अगियार   मथुरामां लीला कीधी ते सार ।३३।
तेहवुं कारण छ वरस पछी अनूप   रसात्मीक परम धरमी केवल रूप ।३४।
त्रण मास ने गुणातीत ने ११ दिवसे   सर्वेन्द्री आस्वाद अति रस विवसे ।३५।
अेहवे स्वरूपे मनोरथ सर्व अंगे   अधिकार परत्वे पूरण कर्या रंगे ।३६।
को कहेशे अे ज्ञापन कर्युं ते सत्य   गोकुल तो केवल स्वरूपने निमित्त्य ।३७।
संबंधी फल मारगी नित्य संयोग   तेहने अेवडो केम कर्यो विप्रयोग ।३८।
केम संभवे त्यांहां करूं समाधान   विलंबे करी अने करे प्रभु दान ।३९।
असाधारण आतुरता अे करावे   तेथी ताप प्रगटे प्रभुजीने भावे ।४०।
श्रीमुखे करीने कह्युं छे अे अनूप   ताप परिवस्राइ हे मारगको स्वरूप ।४१।
अति कष्ट करी जब कोइ वस्तु पावे   अति स्नेह आदर सहित बहु भावे ।४२।
बोहेत प्यास करी जलकी होअे प्राप्ती जेसे   बहु पेय अरू स्वाद वामो हे तेसे ।४३।
पूर्ण ताप प्रगट करवेकुं विलंब करे   विलंब कीये ते काज सर्वे वेग सरे ।४४।
त्यां कहे छे जे विलंब घणो हवो ज्यांथी   कदाचित अन्यथा थाअे त्यांहांथी ।४५।
समाधान तेहनुं करूं समय पाये   अेम भगवद दत भाव अन्यथा न थाअे ।४६।
करी दान जे भाव प्रभुने भाव्यो   पोता विषे प्रविष्ट जेहने कराव्यो ।४७।
ते भाव दिन दिन प्रते वृध्धी पामे   अति रसिकने स्पर्श्युं ते बीज जामे ।४८।
अंकुरीत पल्लवीत कुसुमीत फलित थाअे   अन्य वासना रहित रसमां समाअे ।४९।
कामावेसने काम सुधी सबंध   पछे अन्यथा थाअे त्यारे रहे न गंध ।५०।
ज्यांहां रस त्यां अन्यथा केमे न होइ   जेमबीजने अग्नी सबंध छोहे ।५१।
तेणे करी अंकुर प्रगट्यो न जाय   तेम प्रभु सबंध भाव अन्यथा न थाअे ।५२।
उपजे भाव विगाढ आनंद कंद   प्रथम जेणे अनुभव्यो स्वरूप आनंद ।५३।
तेहने साधनादिक बीजुं बाधक न होअे   अे विलंब केवल फल रूप होअे ।५४।
विप्रयोग अनुभव होअे जेहने शेष   समागमथी अे मांहे रस विशेष ।५५।
ते महा पूर्ण फलनो अनुभव करावी   अे भाव अे लीला प्रभुजीने भावी ।५६।
हवे अनन्य गोकुल स्वामी मथुराथीय   पधारे गोकुल गोकुलना प्रीय ।५७।
अे आगलने मांगल्ये कहीश तेह   लीला अग्रमनी ते विस्तार जेह ।४५८।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्‌भुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित मथुरा लीला वर्णनो नाम
।। मांगल्य पचीसमुं संपूर्णम् ।।

मांगल्य - २६ - छव्वीसमुं

राग : "सुहो" साथीयडो कांइ कमणसनो धरवार तो कोण पनोती अे पूरीयोरे, अेम गवाशे ।

श्री गोकुल पधारे छे श्री गोकुल केरो भूप अनूप अपरमित अेहवो
न भूतो न भावी को अेह समान नहीं को अे जेहवो अे ।१।
रूकमणी लाल ते परम उदार सकुमार ते सुखद सोहामणो अे
श्री गोकुलपति श्री गोकुलनो आधार जग वंदित जगत मोहामणो अे ।२।
गोकुल प्रीय गोकुल आत्मा अभीराम गोकुलनां काम पूरण करे अे
गोकुल प्रीतिकारक गोकुलनुं जीवन धन सर्वस्व रस पोषण करे अे ।३।
गोकुल गुण विनोद कारक आप ताप हारक श्री गोकुल तणो अे
गोकुल अनुमोदन गोकुल केरो नाथ अति सुंदर परम सोहामणो अे ।४।
ज्ञान दाता ज्ञाता गोकुलना सुदेश गोकुलेश गुणोदय गुणे भर्या अे
गान करतां वक्ता गोकुल केरा अेह संदेह सहु केहेना हरया अे ।५।
श्री गोकुलनुं मंडण परम निधान श्री गोकुलनुं महा सुखदाय अे
श्री गोकुलना रसिक रस दाता रस भोक्ता रस भर रस मय अे ।६।
सुखे सुखी श्री गोकुल केरे अर्थ सामर्थ सहित रस पूरवा अे
रसमाता गुण राता गोकुलने काज समाज सहित दु:ख चूरवाअे ।७।
श्री गोकुलने प्रेमे रस भर आप प्रगटाव्यो ताप ते मन धरूं अे
अेहवा पूरण सुख दाता ते अेह तेह वात कांइ अेक सूचन करूं अे ।८।
जेणे जेणे कारणे मथुरा पधार्या ते काज कर्या सोहामणा अे
अहींया श्री गोकुलने विप्रयोग रस सुर अने वाध्या पूर विरह तणाअे ।९।
ते विरह ज्वर जलण प्रजल अति ज्वाला जनित ताप प्रगट अेहवो अे
अेवो महा असही रंच नहीं सहेवाय कह्यो नहीं जाय तेहवो अे ।१०।
ताप अनिरवचनीय छे स्वरूप सके नहीं को अे कही अे
अेहनो अे स्वाद अनुभवे समजाय विण अनुभव को तेह जाणे नहीं अे ।११।
जेहने अे स्वरूपनो पूरण अनुभव होअे तेह कांइ अेक मनमां लहे अे
स्वरूप सबंधी अंतरंग पुष्ट पुष्ट निरदुष्ट रहे ते अेह ग्रहे अे ।१२।
अंतरनी अवस्था ते वचने न आणी जाय कहेवाय नहीं ते मुखे करी अे
अेहने अनुकरणेथी कांइ अेक आशे जणाअे पण नहीं थाअे विसद करी अे ।१३।
प्रभु अंतरगत व्रत जाण प्रवीण श्री गोकुलनां अंतर आत्मा अे
तेणे करी अने सद्य जाण्यो पोते परीताप आप समुज्या ते मननी वातमां अे ।१४।
अेहवा मांहां त्यांहां त्यारे अगनीनी वृष्टि आकासथी उठी ते श्रीमुखे कही अे
जब हम मथुरामें रहीये तब अेक वार अंगारकी वृष्टी वहां भइ अे ।१५।
सो बुझी बुजाअे नहीं उपर ते गिरे ते अंगार रहे जरी अे
पछे वाही वरसमों हम श्री गोकुल आये अेहनो आसय कहुं विसद करी अे ।१६।

जे को द्रढ संबंधी स्वरूपात्मीक परम सुजाण विरही जनने विनती कहुं अे
अे सांभलजो तमो अेतद सर्व समाज कहुं भाव जे मनमां लहुं अे ।१७।
अे उभय स्वरूप जे अनिरवचनी अेहने अेहनो ताप प्रबल हवो अे
जे श्री गोकुल सर्वदा स्वरूप रसे सबंधी ते विछुडेथी हवो अेहवो अे ।१८।
महा ज्वाला जलण ते उठी अतिशे त्यांहां ते प्रलय थयो जलनिधी तणो अे
उच्छलित थयो ते लहेर तरंग ते संग आकाश मारगे घणो अे ।१९।
जे ज्वाला वाधी इंद्रलोक पर्यंत तेहनां सात ते मेघ आवीया अे
तेहने लागी अग्नीनी ते झाल तत्काल अग्नी सम भावीआ अे ।२०।
अे अलौकिक अग्नी तणु आधीक्य अे अैक्य करे संगम बले अे
असाधारण अेहनुं अेहवुं प्राबल्य जे आप समान करी मले अे ।२१।
परमा विधी अलौकिक अग्नी अेह नेह जाणीने मेघे मन धर्युं अे
मान मुकीने ज्वालाथी अे थई भयभीत दुःख निवेदन प्रभुने कर्युं अे ।२२।
ते वृष्टी मिसे आवी करी पुकार तेहवा मथुरामां वरसीया अे
दीठा ते सुंदर शीतल कारक ज्यारे त्यारे सद्य बुझाइने हरखीया अे ।२३।
सर्वात्म प्रकारे अेहवो पूरण ताप प्रगट हवो त्यारे सद्य प्रभुअे चित्त धर्युं अे
भगवद स्वरूपात्मीक व्रजनो परीताप जोइ लीला रमण रस भर्युं अे ।२४।
महा भाग्य स्थले केवल धर्म संयुक्त ते मुक्त वा रस उदबोध घणो अे
पधारवानी करी इच्छा पोते त्यारे प्रगट्यो ते प्रकार निमित तणो अे ।२५।
श्री गुंसाईजीना घरनो अलौकिक प्रताप अने सृष्टी अनुग्रही अति घणी अे
ठाम ठामथी उलटी आवे अेणे घेर ते पेर न केणे जाअे गणी अे ।२६।
ते जोइ अने मथुराना जे मथुरीआ सर्व गर्व जुत इर्ष्या करे अे
सही सके न तेहनो प्रताप प्रबल आप लौकिक सहु मनमां धरे अे ।२७।
अे मथुरीआनी दुष्टता तणी जे अपार बहु वात ते श्रीमुखे कही अे
अे मथुराके जु मथुरीया कीच समान अेणे आन बहिरमुख को नांहीं अे ।२८।
पण श्री गुंसाईजी परम ब्रह्मणीक ते तेहने कांइ नहीं कहे अे
जाणीने ते सहु केहेना अपराध सहेन थई अने मनमां सहे अे ।२९।
ते सहेन बले कांइ कह्युं तो नहीं जाअे सहेवाय नहीं वैभव अेह तणो अे
श्री गुंसाईजीनो तो त्यांहां अनेक समाज जल काजनो वावर अति घणो अे ।३०।
गताश्रमने टीलेथी विश्रांतना घाट लगी त्यांहां जल वहे अे
ते कीचनुं मिस करी खुणस करे अेहो साथ ते वात सहु केहेने कहे अे ।३१।
अमो दुःख पामुं छुं फरी न सकुं लगार अपार शेरीमां जल वह्युं अे
महा दुष्ट रहे अेक काजी तेणे ठाम दुष्टे नाम सहित तेहने कह्युं अे ।३२।
पछे तेह कहेथी लइ अने आव्या धोस बहु रोष कलेश घणा कर्या अे
तेहनुं चांपाभाईअे कर्युं समाधान ते मान सहित पाछा फर्या अे ।३३।
कह्युं सौकर्ज सर्वने थाशे जेणी रीत ते नित करसे उक्त मली अे
अेहवा वचन सुणी चांपाभाईना निरधार तेह वार ते प्यादा गया वलीअे ।३४।

अहीं अे तो इच्छा शकितअे अे वात बहु भांतीनी सहु मनमां धरीअे
अे गमन तणा कारण जाणी मनमां त्यांहां अेणे सेवा करी अे ।३५।
अेहवे सेदवदन ते रहे महावन आप पश्चाताप मन उपज्यो घणो अे
प्रथमे जे श्री गुंसाईजी सूं कीधो छे अपराध सोच ते मनमां ते तणो अे ।३६।
मारे अपराधे श्री गुंसाईजी पधार्या त्यांथी अहींया चौधरीओने अेम कहे अे
सहु जइ मनावीअे श्री गुंसाईजीने अेम जेम सदा निरंतर रहे अे ।३७।
सहु मलीयने आव्या ते श्री गुंसाईजीने पास घणी आस मनमां धरी अे
अपराध निवारण करवावी जेह वार मनुहार भरी विनती करी अे ।३८।
त्यांहां पधारीअे प्रेमे करी महाराज ते स्थल छे उचित राजने अे
कुटुंब सहित लेइ सकल परिवार सहु नरनार समाजने अे ।३९।
इच्छा अनुकरणे श्री गुंसाईजीने मन वचन ते तेहनुं भावीउं अे
सर्वात्म प्रकारे पधारवुं निरधार अे सहु केहेने मन आवीउं अे ।४०।
वलता सवंत १६२८ मां सर्व अति हर्ष ते मन मांहें धर्यो अे
फागण वदी सातम श्री गोकुलमां वास आवी अचल निवास सदा कर्यो अे ।४१।
विजय कर्यो मथुराथी जेणी वार श्री गुंसाईजी सहित गोकुल घणी अे
जेणे जेणे प्रकारे पधारे निज घेर ते पेर विसद करूं ते तणी अे ।४२।
पछी भक्ते अनेक सामग्री केरे काज बहु साज ने नाव ते सिध्ध कर्या अे
सेव्य स्वरूप सहित बहु बेटी परिवार तेह वार सहु को परवर्या अे ।४३।
मर्यादा रक्षक श्री गोकुलना भूप श्री गुंसाईजीना वचनने अनुसरी अे
जेणे प्रकारे मथुरा पधार्या प्रथम ते प्रकारे पधारे वली फरी अे ।४४।
उदबोध रसे आवर्या थका सुख रास हुल्लास विविध सोहे छे अे
उथापने ते विजय कर्यो महा सुख धाम ठामठाम जैजैकार होअे छे अे ।४५।
ठाम ठाम सुकन होअे सुभग अनेक सुभगाना यूथ उभा रह्या अे
भामडाना लेइ लेइ कर चटके छे आशीष दे छे अति उमह्या अे ।४६।
होअे श्री गोकुलने महा रस मंगल रूप शुभ सूचक भांति भांति तणा अे
बोले पक्षी सुंदर सरस ते नाना जात बहु भांतना शब्द सोहामणा अे ।४७।
अेम सहु केहेने आनंदना प्रगट्या चिन्ह भिन्न भिन्न उत्साहे सहु भर्या अे
मांगल्ये कर्या बहु मांगल्य केरा साज प्रभु काज मनोरथ सिध्ध कर्या अे ।४८।
अेहवे परम रमणीय रस योग्य स्थले रस भोगने रमण रसे भावता अे
अति अहेलाद कारी करूणा निधी कल्लोल निरविधी सुख दायक आवता अे ।४९।
वय क्रमे रस सर्वदा रस अभिलाषी अेह रस क्रीडा विषे सदा रति घणीअे
अंतर दु:ख हरण स्वकीयनो सृंगार आधार श्री गोकुलनो घणी अे ।५०।
रस पर रसदायक नायक नवल अनूप सर्वांग विरहनुं दु:ख हरे अे
रस मोद उत्साहक फल दायक अनुरक्त भुव भक्तना भाग्य उदय करे अे ।५१।
शुभ रात्र प्रथम घडी अेक उपरांत रजनी मुख्य रस समे रस भरे अे
मुक्ष रस रमण स्थले रसिक गुणे संयुक्त रस भक्तने प्रेमे प्रवेश कर्यो अे ।५२।

त्यांहां प्रवेश समये अेक हरणी भावे संयुक्त सुंदर सनमुख उभी रही अे
मोदे भरी विकसित नेत्र ने उभा कर्ण पूछ फरकते सगुन समे लही अे ।५३।
श्री गुंसाईजी जोइ प्रिय पुत्रने कह्युं अेणी पेरे सदाअे सगुन उलट भरी अे
यमुनाजीने उपर पीपल केरे पास बहु आस अनुपम मन धरी अे ।५४।
अे हरणी तमारे सनमुख आवी अहींया शुभ सूचक ने सनमुख रही अे
पिता वचन पालक मानी मन माहें हरणीनो भाव मन लही अे ।५५।
सगुन वाधी त्यांहां प्रेमे पूरण काम तेणे ठाम अश्वे थकी उतर्या अे
कह्युं मंदिर उठवावोने तेणे ठाम श्रीमुख वचने उचर्या अे ।५६।
पछे सर्व केणे कीधो ते त्यांहां निवास श्री गोकुलनी आस पूरण थई अे
परमानंद पुलकित रोमांचित थई अेह नेह भरी अति आनंद मइ अे ।५७।
प्रथमेथी अधिक प्रगट्यो मनमां अति नेह देह सूरती रही नहीं आपमां अे
विप्रयोग तणो अनुभव कीधो दुःखमां पाम्युं विरहानल ताप मांहां अे ।५८।
तेवामां करूणाब्धी तणु करूणाल ततकाल जे दरसन पामीउं अे
ते उलटनो क्यां लगी करीअे विस्तार तेवार सहु दुःख वामीउं अे ।५९।
कह्युं अेणे प्रकारे पूरण रसने काज परिकर जुत श्री गोकुल तणुं अे
करवाव्यो अनुभव विप्रयोग संयोग उपयोग कर्युं सहु अेह तणुं अे ।६०।
गायुं बहु दिवसे आवी ते निज स्थल ज्यांहां त्यांहां जोइने हींसेरा अे करे अे
वार वार ते अेम अविलोके अे भूमी आनंद ते मनमां धरे अे ।६१।
तेणे समय महावनने चौधरीअे त्यां आवी मन भावीने अति हरखे भरीअे
कर्णविघणी बाग फूले फले संयुक्त मन उक्ते आवी भेट करी अे ।६२।
पछी सिध्ध थया त्यां पाक परम रूची वाधी अर्धी रात्रे फरी भोजन कर्या अे
सुख सेजे सुरति रस रंग करी अंग अंग विप्रयोगना त्यां दुःख ह्यां अे ।६३।
पोढी उठी सेवा रस रसिक चरित्र स्वकीय हित आरंभ हवा अे
प्रतिक्षणु अति नौतन नौतन नाना भांति होअे छे ते अहीं नित्य नवा अे ।६४।
मथुरीया विना जे को मथुराना नरनार ने निवासी जे को छे नगर तणा अे
विछोहेथी अेहवुं स्वरूप सुदेश महा क्लेश ते उपज्या अति घणा अे ।६५।
ते क्लेशातुर थकी आरत जुत मन मांहें श्री गोकुल सूरती धरे अे
आवे छे ते सहु मली मली वारंवार सुचार सुभग दर्शन करे अे ।६६।
हवे प्रथम गढेथी पधारी श्री गोकुलमां त्यां अल्प सबंध करावीयो अे
महा संयोग रसने अनुभव केरे काज विप्रयोग विरह उपजावीयो अे ।६७।
ते विरह उपजावी कर्युं महा रस दान भाग्यवानने भाग्ये रस ढल्यो अे
जेजे चरित्र करे छे ते आगल कहुं विस्तार अपार मनोरथ जे फल्यो अे ।६८।
वलता मंदिर कराव्या ते अनेक ते विवेक तेहनो केम लहुं अे
भांति भांतिना सेवा मंदिर बेठक ठोर चंहुंओरनी रचना शी कहुं अे ।६९।
बहु बेटीना सेन मंदिर ने पाकशाला परचारक स्थल बाल भोगना अे
भोजनशाला अने वैश्नव तणी रसोइ रहेवाना स्थल संयोगना अे ।७०।

जलघर पानघर दूधघर फूलघर अति सार भंडार ते त्रणय सोहामणा अे
मणी माणेक द्रव्य ने वस्त्र तणा बहु रीत कण घृत ने वली प्रसाद तणा अे ।७१।
चौक आला गवाखा ते खासा खरचुना ने नाह्याना ठाम विचारीया अे
ठाड संचा अने परनालानो नहीं पार विस्तार करी ते समारीया अे ।७२।
छजा जाली अटाली राजे छे बहु भोम रमणीय सुरम्य विचारीया अे
चित्रशाला विचित्र करी छे ते ठोरठोर अति मनोहर मोहोल समारीया अे ।७३।
गाय भेंसना खरिक ने वछ तणा त्यां ठाम कारीगर जे जे काजना अे
अश्वशाला अने रथ छकडाने जे काज सहु कर्या ते बहु सहु साजना अे ।७४।
बहु भांति अनुपम नाना विधीनी रीत अमीत अनेक प्रकारना अे
लोकवत अने लौकिक सरखा ते भाव्या करवाव्या लोक अनुसारना अे ।७५।
तेहने पूर्व पक्ष जे संपूर्ण व्रजनी सामग्री जे महा निधी छे अे
श्री आचार्यजी श्री गुंसाईजीअे लखी छे तेहवी ते प्रगट प्रमाण सिध्ध छे अे ।७६।
तो कराव्या करी कह्युं तेहनुं कारण शुं लोकवत कर्युं ते आशय कहो अे
त्यांहां कहुं छुं तमो कह्यां ते तो सहु अे सत्य पण समाधान कहुं तेह लहो अे ।७७।
सिध्ध छे पण जेम पोतानुं प्रागट्य नित्य अेमां अेह यथार्थ सहु कर्युं अे
लौकिकवतनो आसय कहीये छे जेह जे सदा संसारीथी ओट धर्युं अे ।७८।
तेम प्रगट कर्युं ते संसारने समग्र द्रष्टे लौकिक न्याये देखाडीयुं अे
माटे लौकिकवत कह्युं तेहनुं कारण फरीय द्रढ करी अने विचारीयुं अे ।७९।
तेह कहुं छुं लौकिकवत कहेता सांप्रत्य नित्य वस्तु जेहवी कही तेवी अे
सिध्ध प्रगट छे पण लौकिकथी कीधी ओट प्रगट ते लौकिकवत जेहवी अे ।८०।
लोकवत पद कह्युं पण परम अलौकिक अेह संदेह रहित आनंद भर्युं अे
श्री महाप्रभुजीअे जगतनुं हित विचारी सांप्रत्य ते सर्व गोपन कर्युं अे ।८१।
रसमय रसात्मीक श्री गोकुलनुं स्वरूप गोवरधन वन उपवन सहु अे
आवर्ण रहित योग्यता विना ज्यारे देखाडे त्यारे रस उदबोध उपजे बहु अे ।८२।
संसारीने छे ते संसार तणो सबंध अेहवे दरशनने भावे थाअे अन्यथा अे
अन्यथा भावे थाअे लीलामां रसाभास गोपन कर्युं न देखाडयुं इच्छाअे ।८३।
अे वस्तु देखाडवी संसारीने जोग्य नोहे तेहनुं कारण श्रीमुखथी कह्युं अे
श्रोता सावधान पंचोली परम प्रवीन त्यां दिन सहित सहुअे लह्युं अे ।८४।
अलौकिक पदारथ योग्य संसारी जीव नांहीं अेक वेर आंधी आइ इंहां अे
सो अेसोमों अेक गुजरकी हती नार ते वार बाहेर निकसी त्यांहां अे ।८५।
वाकी द्रष्टी पदारथ सर्व पडयो सांप्रत्य मनव्रत्य विकलता सम भइ अे
घर आयके सासके आगे कहेन लगी बेन चलेन देह छांडे दइ अे ।८६।
अेणे कारणे सर्व पदारथ लोकथी ओट करी राख्या छे इच्छाने बलथी अे
बाकी छे अलौकिक स्वरूपात्मिक संयुक्त प्रति युक्त सर्वोपर सर्व थकी अे ।८७।
अेहवुं श्री गुंसाईजीअे विध्वन मंडणे विसद करी कह्युं छे तेहवुं तदा अे
अेकवीसमें मांगल्ये प्रगट कर्युं छे जेवुं सामग्री जुत तेहवुं सदा अे ।८८।

अने तेहवा रत्न जडित जमुनाजीना बेहु कूल कराडे ते बहु नंग जडया अे
भांती भांतीना पक्षीअे मंडीत मनोरथ ठाम बहु नामना कमल त्यां अडया अे ।८९।
धातु मणीमय श्री गोवरधन परम अनूप भगवद स्वरूपात्मीक जेहवुं अे
वन उपवन जेहवुं स्वरूप श्री आचार्यजीअे आप कृष्ण चैतन्यने कह्युं अेहवुं अे ।९०।
वृक्षे वृक्षे वेणु धारी सांप्रत्य छे प्रति ठाम पत्रे पत्रे चतुर्भुज त्यां रहे अे
अेहवुं अलौकिक सहु सामग्रीअे संयुक्त तेने विसद करी को केम कहे अे ।९१।
जेने अनुग्रह विन नथी यथारथ ज्ञान अविश्वासी मूरख लोक छे अे
तेह कहे छे अलौकिक अलगुं छे रस धाम पण भ्रामिक ते सहु फोक छे अे ।९२।
महा लीला जुत प्रगट प्रसिध्ध प्रकार महा सार तणु अे सार छे अे
अेह अेहवा अलौकिक तेने लौकिक करी जाणे तेह ते बुध्धी हीन अपार छे अे ।९३।
तेहनो दोष नहीं ते शुं जाणे अेक लगार जेथी ते अलगुं कहे अे
जे अगम्य अनुपम परम निगूढ तेहने मती मूढ ते शुं लहे अे ।९४।
जेहनी जेवी द्रष्टी तेहने तेवुं पडे छे द्रष्ट ते कारण छे साचुं सही अे
सदोष द्रष्टे भासे छे सहु विपरीत तेनी रीत श्री महाप्रभुजीअे कहीअे ।९५।
अति हास्य रसे करी प्रगट कर्युं सिध्धांत वेदांत न जाणे जेहनो अे
अेक कौतुकमां बहु कारणनो नहीं पार ते सार कहुं छुं अेहनो अे ।९६।
को अेकनी द्रष्टे दूजो अेहवो दोष अेक वस्तुनी बे द्रष्टी पडे अे
तेणे कारण ते गयो वैद्य केरे पास करी आस जे औषध जडे अे ।९७।
ते वैदने छे अेहनाथी द्विगुण तेहने दोष कह्यो पोता तणो अे
ते सांभली वैद ते बोल्यो अेणी भांत थोरी वातने आव्या शुं चार जणाअे ।९८।
ते सांभलीविचार्यो अेह विवेक हुं अेक ने चार कह्या अे
ते अेथी सो थासे ते मारो अर्थ व्यर्थ आव्यो अेहवा कह्या अे ।९९।
अेणे वचने करी कह्युं अेहने अे निरधार जेवी द्रष्टी तेवुं द्रष्टे पडे अे
जे को अलगा कर्या छे तेहनी पडे जो द्रष्टी अनिष्ट तेहने सांपडे अे ।१००।
जे को अेतनमार्गी अेवानो करे संग संभ्रम उपजे सहु विषेरे अे
श्रीमुखे कह्युं छे विजाती तणी जे वयार लागे तेहने बाधक करे अे ।१।
माटे गोपन कीधुं लोक तणे हित अर्थ सामर्थ लोकवते करी अे
जे पोते अलौकिक आनंद कंद केवल आनंदमय रस भरी अे ।२।
पूरण रस रूप लीलानी रसालता अर्थ भाग्यरास मनिशमा भलीअे
केवल रस दान हिते कामात्मा रूप रस मानुष विग्रह धरी मली अे ।३।
मनिशाकृत ने वली मनुष्यनो स्वभाव अने मनुष्य प्रकृत अंगीकृत करी अे
लौकिक जीव तो स्वभाव तणे आधीन सदा सर्वदा अे रहे आचरी अे ।४।
प्रभुने आधीन तो छे अे सर्व स्वभावने आधीन प्रभु नहीं अे
मंदिर आदे सहु प्रगट कर्युं करे छे नित्य लोकवते लौकिक ग्रही अे ।५।
अने सर्व भवन रूप लीला प्रगट कर्युं अेणी रीते लोकवते अलौकिक भोक्ताअे
लौकिक न्याये अे भोक्ता छे ते आप अेणे प्रागट्ये करी सहु योग्यताअे ।१०६।

वृजनी आधिदैविक सामग्री जे सदपात्र ते भक्तत्वे करे अे
मनिशाकृति करी अने भरी रसमांहें संग रंग प्रभुसुं लीला करे अे ।१०७।
जे को अलौकिक अेतद रस उपयोगी लीला संयोगी ते तदा अे
रमण मध्य पाती जेह छे अेहवीसृष्टि तेहने द्रष्टी गोचर छे सदाअे ।८।
अलौकिक अे पदार्थ अलौकिकने अे जाण जेहने अेह स्वरूपनुं ज्ञान छे अे
तेहने लीला सामग्रीनुं अे छे अे अति ज्ञान लौकिकसुं जाणे अजाण छे अे ।९।
जेहने नहीं भूतल स्परस जुत ज्ञान ते अज्ञान न देखे अेहने अे
श्रीमुखे कह्युं छे मूल ज्ञान अति गूढ साखा ज्ञान ते छे सहु केहेने अे ।१०।
जेहने जेहवो छे अंतरंग भाव तेणेज तेहवा अनुभव लह्या अे
अे सांप्रत्य छे सहु प्रतिक्ष प्रमाण कारण लौकिकवते कह्यां अे ।११।
केवल द्रढ विश्वास ते दर्शन थाअे के महेद अनुग्रह देखीअे अे
अे प्रमाण करवा प्रगट प्रसिद्ध श्रीमुखना वचन विसेखीअे अे ।१२।
कृष्णरायराजा अेक विद्यानगरनो जेह तेह भगवत नेष्टिक अति घणो अे
तेहना भक्ति मारगीय भाव तणो अे प्रकार श्री प्रभुअे कह्यो छे तेह तणोअे ।१३।
तेहनी आज्ञाथी मंत्रीअे समरावी सार अेक पावडी राजाने पहेरवा अे
तेहने फिरता मणी माणेक हीरानी ज्योत उद्योते रंग रंग गेहेरवाअे ।१४।
उपर खुंटीअे हरडे केरे ठाम आमला प्रमाणे मोती करी अे
शुभ मुहुरत जोइ उत्साहा भरी मनमां लइ राजानी आगल धरी अे ।१५।
ते जोइने राजा रीझयो अति मनमांहें त्यांहां भाव अलौकिक आवीयुं अे
अे पावडी तो भगवद उपयोग हुं योग्य न अेहवुं भावीयुं अे ।१६।
पछी लइ चढावी पोता केरे माथ साथे ते भगवद स्थल ज्यांहां अे
दंडवत करी अने वलीयो ते वेगे आपुं ते पावडी समर्पी त्यांहां अे ।१७।
तेहवा राजानी सभाअे त्यांहां अेक पंडित त्यांहां नित्य कथा कहे अे
व्रजनुं वरणन करे ते भांत्य अनेक विवेक सहु राजा लहे अे ।१८।
कह्युं श्री गोवरधन धातु मणीमय सर्व गोविंद कुंडमां पय भर्युंअे
साधारण पक्षे जे करे त्यांहां स्नान तेहने मुक्ति अेहवुं वरणन कर्युं अे ।१९।
ते सांभलीने अेक बोली उठयो दुष्ट मिथ्या छे अेम राजाने कह्युं अे
राजा धर्मीष्ट अने विश्वासी आप पूंछू ते मिथ्या केम लह्युं अे ।२०।
तेणे कह्युं जे जोवा मोकलीअे केहेने अेहने राजाअे आज्ञा करी अे
तुंह जे जइने जोइ आव्य ते उठीने ठाम ते आव्यो अेहवुं मन धरीअे ।२१।
आवीने जोयो परवत परम वरेस पण द्रष्टे न अेहनी कांइ पडयुं अे
जेहवो पोते तेहवी सहु लौकिक शोभा पण अलौकिक अेहने नव जडयुं अे ।२२।
श्री गोवरधनथी मृतिक कांकर लइ गोविंद कुंडमांथी जल भरी अे
दुष्टता अे देशाधीपतिने देखाडवा काज सहु साज लेइ आव्यो फरी अे ।२३।
कह्युं जोइ आव्यो छुं मिथ्या छे अे सर्व लाव्यो छुं निशानी तेहनी अे
पंडित कहे गोवरधन ते मणीमय स्पष्ट बुधी भ्रष्ट थई छे अेहनी अे ।२४।

पछे सभा मांहें चौकी पर राखी थालमां सामग्री परवत तणी अे
जोइअे तो माटी सहु कंचन केरी जोत अने काकंर हू माणीक मणी अे ।१२५।
जल जोयुं तो मांहें सद्य सफीण दूध बुद्धी हीन मन संकुच्यो घणुं अे
राजाना मनमां रीझ तणो नहीं पार कह्युं तेहवुं दीठुं सोहामणुं अे ।२६।
त्यारे दुष्टे कह्युं अहींयातो दीसे छे सर्व पण त्यांहां तो दीठुं नहीं अे
पंडित बोल्यो तुं शुं जाणे महा मूढ अति गूढ ते केम जाणे लही अे ।२७।
अहींया राजा केरे विश्वास तणे अनुभावे संगतथी दीठुं अेहवुं अे
पछे राजाअे ते गोवरधन पठव्युं सर्व जेहवुं आण्युं फरी तेहवुं अे ।२८।
श्री गोवरधननी सामग्री जे फल रूप अनूप अपरमित मन लही अे
अन्यत्र अन्य स्थले राखी ते नव जाअे विनु गोवरधन बीजे कहीअे ।२९।
अेहवुं कारण विश्वास तणुं ते अेह हवे अनुग्रहनुं कह्युं तेह कहुं अे
उज्जनमां कृष्णभट कहे श्री भागवत ते वैश्नवे मनमां लह्युं अे ।३०।
ते भटजी साथे आयो गोवरधन जोयुं पण दीठुं नहीं अे
कह्युं भटजी तो जूठ नाहीं बोले रंच ते गोवरधन बीजो कहीं अे ।३१।
पछी श्री गुंसाईजी पर्वत पर पधारे पाछल भटजी कसेडी धरी अे
त्यारे ते वैश्नवे पूछयुं तेणीवार अति हरखे मनमां भरी अे ।३२।
तमो श्री भागवतमां श्री गेवरधननुं स्वरूप कह्युं छे तेहवुं तो दीसे नहीं अे
तमो मणी माणीक कह्युं छे जे आज ते आ के बीजुं छे कंहींअे ।३३।
अे कहेता सुणीयुं श्री गुंसाईजीने त्यांहां फरी जोइने पूछयुं तेहने अे
भटजीअे त्यांहां वृतांत सहु तेणी वार कह्युं जोवा मनोरथ अेहने अे ।३४।
सुणी श्री गुंसाईजी पधार्या भीतर आपु तेहने अलौकिक सहु दर्शन हवुं अे
भटजीने दंडवत कीधा त्यांहां कह्युं दीठुं तमो कह्युं तेहवुं अे ।३५।
त्यारे भटजीअे कह्युं भाग्य तमारूं आज गिरीराजे दरशन आप्युं अे
महा महेदतणा अनुग्रह केरो अनुभाव तेणे भाग्य अचल करी स्थापीयुं अे ।३६।
मुक्ष अनुग्रह के पछे होअे विश्वास तो आस पूरण होअे तेहनी अे
सुमती सुवृती द्रढता सर्व ठाम संवलित संमती होअे अेहनी अे ।३७।
केवल अनुग्रह होअे त्यांहां केहेनुं नहीं काज ते केवल निसाधन फल अे
माटे अे मंदिर आदे जावदिक जे वस्तु कीधी कारणने बले अे ।३८।
जेहवुं प्रागट्य तेहवी सामग्री सर्व पण अेणे प्रकारे देखीअे अे
जेहने प्रभु जणावे ते जाणे अे रूप तेहने क्यां लगी विसद विसेखी अे ।३९।
अने उतरोतर प्रागट्य लीलानुं स्वरूप अवाग विषय ते छे सदा अे
वाग वेहेवारे कांइ लख्युं न जाअे मननुं मन ते जाणे तदा अे ।४०।
वाग वहेवारे करी सिध्धांत कह्युं छे जेह ते प्रागट्य अलगा भिन्न छे अे
ते पूरण रसात्मीक स्वरूपनी विभूती फरी फरी प्रगटे ने आधीन छे अे ।४१।
आतो मूल स्वरूप नौतन अे प्रागट्य प्रगटित थी जे प्रगट कर्युं अे
जेम बीजथी फल अने फल थकी बीज होअे तेम आप थकी आप मन धर्युं अे ।१४२।

उतरोतर आनंद भर्युं अछुतुं अेह विचित्र प्रकारे रस भर्युं अे
अेहवुं न होसे शुध्ध रसात्मीक अेह भक्त तणे भाग्ये कर्युं अे ।१४३।
अेसो प्रागट्य न हुओ न होइगो संसार श्री मुखथी कह्युं छे अेहवुं अे
पुरूषोतमने पुरूषोतम जाणे आप अेह वेदे कह्युं छे तेहवुं अे ।४४।
'अेहमो वाहमजानी ते इति' श्रुतिना वचन भागवत वचने करी अेम कह्युं अे
प्रभु कहे छे जे महा गूढ छे मारूं स्वरूप मारा स्वरूपने ते हुं ज लहुं अे ।४५।
अे प्रकार सहु प्रागट्य प्रमाणे प्रथम लख्युं तेह विसद करी अे
अे अछुतुं प्रागट्य अछुता जेहना भाव अे भगवदी जाणे चित धरी अे ।४६।
जेहनुं मन बुधि अने चित अंतःकरण वाक्य प्राण देह इंद्री रहे अे
अेहवा ते अछुता होअे जेहना सर्वते अछुतु अेहवुं प्रागट्य लहे अे ।४७।
जेहनी अगाधीता पोते कही छे अेकवार कल्याणभट पूछयुं समयतकी अे
राजश्रीनुं स्वरूप तो श्री भागवत अने वली गीताना संमंत थकी अे ।४८।
तेणे अनुमाने कदाचित समुजाअे अने कांइ अेक उरमां आणीअे अे
पण राजना सर्वात्म भावी जे भक्त तेहना स्वरूपने केम करी जाणीअे अे ।४९।
प्रभु महा गंभीराकृतसुं बोल्या हांहां सत्य छे अे पेर कही अे
वेसे भक्तको स्वरूप तुम कहां ते जानो जो हम वाकु जानत नहीं अे ।५०।
जे को जानत हे ताके निमित्य प्रागट्य सोइ महेद जो जाणे चित धरी अे
महेद मनमें धरे सोही सत्य प्रमाण कर्युं प्रगट श्री वचने करी अे ।५१।
अेणे वचने पोतानी वरी छे जेहवी सृष्टी तेहवुं प्राबल्य प्रगट करी कह्युं अे
अेहवो भक्त होअे ते जाणे अेह प्रकार यथारथ स्वरूप तेणे लह्युं अे ।५२।
सर्वात्माना जेहनुं हरदय होअे अति स्वच्छ विगाढ अनन्य भावे करी अे
आरसीवत थई संगम शराणे चढयुं होअे पदरेण समाजे करी करी अे ।५३।
अतिसे ओप्यो चक्षचाक्ष कर्युं होअे जेणे तेणे स्वरूप यथारथ देखीअे अे
अेम अेकताअे स्परस पण तेहने थाअे बीजाने नहीं अे पेखीअे अे ।५४।
द्रष्टांत तणे हित लौकिक जेह अनुकरण उपत्यने काजे लखीये अे
जेम सूची असूचीने छुहे नहीं लगार तेम अेह प्रकार विसेखीये अे ।५५।
तेम परम अछुतुं अलौकिक अे प्रागट्य ते अछुता भावी अनुभवे अे
वस्तुने ते छुहे जे ताद्रस होय छे वस्तु बीजाने नहीं अे संभवे अे ।५६।
ज्यारे श्रीमुख वाक्य महा रसधारा करी भरी होअे सुमति तेजेहनी अे
अेहवी योग्यता विण अे स्वाद न जाणे कोइ अेहवी बुध्धी न बीजा केनी अे ।५७।
जेहने भाव विषे स्थिरता होअे मनमां त्यांहां यथा अनुभव लखीअे अे
जेम स्वच्छ जल स्थिरता होअे जेणीवार तेणीवार प्रतिबिंब देखीअे अे ।५८।
अने मारग पोते प्रगट कीधो छे जे तेनुं स्वरूप यथारथ जेहवुं अे
तेह पण जाणे नहीं को निरधार सांप्रत्य जेहवुं छे तेहवुं अे ।५९।
अेहनुं स्वरूप जे श्रीमुखथी कह्युं छे जे ते विसद करी कहुं छुं मन धरी अे
श्री महाप्रभुने पंचोलीअे अेकवार समय पामीने विनती करी अे ।१६०।

महाराज पुष्टी मारग ते शुं अेम कही अने पूछ्युं ते प्रेमे करी अे
तारतम्यनी इच्छाथी करवाव्युं ते प्रश्न ते सांभली रीज्या मन धरी अे ।६१।
मुसकाइने मधुर वचन कही बोल्या अेह तुम जानत नहीं अे कहा अेम करी अे
अमो शुं जाणुं जाणुं जे कहो राज जणावो जे करूणा भरी अे ।६२।
त्यारे पंचोली उपर प्रहसित थई कह्युं अेह जे पुष्टी हे तीन प्रकारकी अे
सो कपिलदेवे निरूपण कीनी हे आपु समजी बोहोते विस्तारकी अे ।६३।
अे अति पुष्ट पुष्टता पुष्टि मारग नाम वे लेखनमां कहुं नांहीं अे
लेखनमां सो तो सबे मर्यादा त्यारे पुष्टि ते केम आवे मन मांहीं अे ।६४।
कह्युं वे कछु कहेते न जान्यो जाय राज तो कही पेरे जाणीअे अे
ज्ञापित विनु स्वकीयनुं कारज केम सिध्ध थाअे अर्थ सिद्ध थयो केम प्रमाणीअे ।६५।
कह्युं अे जानीवेको प्रकार ही हे कछु भिन्न वे अनुभवीही जाने अबे अे
महाराज ते अनुभव केही पेरे थाअे जाके हाथ हे सो देवे तबे अे ।६६।
अेह उपर महाप्रभुअे कह्युं द्रष्टांत अेक कन्या होत हे काहुकुं अे
ताको विवाह कीने पाछे रसवात कोउ मध्या सीखवे वाहुकुं अे ।६७।
अपने भरथारकुं अेसे करी यहु भांति होअे कटाक्ष शिखावती अे
शिक्षा उनके मनमों कछु आवे नांहीं रस योग्य भइ नथी आपथी अे ।६८।
जब होवे वाकुं रसको प्रवेश तब आपहुं विन सीखाअे सीखे अे
जेसे वे तेसे ही हे अेह प्रकार सो वचन कहेके केसे लिखे अे ।६९।
अेहवो अे प्रगट कर्यो छे मारग पुष्ट जेहनी स्तुति श्रीमुख पोते करे अे
शरण मारग ना स्नेह मारग हे हमारो सानो अरू सुगंध रस भरे अे ।७०।
निरालंब विहंगम मारग अेह निराश्रय फलात्मीक आत्मीक रूप अे
साधनवत् अे पीपलिका मारग नांहीं कह्युं छे अेम गोकुल भूप अे ।७१।
निरालंब निराश्रयनो आसय छे अेह पंथ निश्चे न थाअे केहेने वते अे
केही पेर पाम्या छे तेहवुं न लहीअे अे फल अनुभवी जाणे स्वतः अे ।७२।
शुक आवीने पाधरो बेसे छे साहकारे सद्य साखने ले मुख मांहीं ग्रहे अे
पण आणे मारगे आव्यो छुं, तेह मारगनी सुरति ते नवी लहे अे ।७३।
कृम कृम चालता कुशल होअे मार्ग प्रणित अे मर्यादा केरी नित्य छे अे
अहीं पक्ष ते प्रभु अनुग्रहनुं सामर्थ अे केवल पुष्ट पुष्टि रीत छे अे ।७४।
अेतनमारगे फलपरवसान ते अेक भाव भेदे भेद दान तणो अे
पुष्ट पुष्टेने मर्यादा पुष्टे भिन्न भिन्न अहां सद्य ने तहीं विलंब घणा अे ।७५।
तेहवे अे विहंगम मारग परम रसाल जेहना रसनो पार न पामीअे अे
महा रसिक रसात्मीक पूरण रसनुं रूप अेहना अनुभवथी न विरामीअे अे ।७६।
वली अेक वार संप्रदायनी चाली वात त्यारे कल्याणभटे विनती करी अे
महाराज आ मारग मोटो परम अथाह प्रभु सांभली बोल्या चित धरी अे ।७७।
सुनो भटजी अे तो कछु मारग नांहीं अे तो केवल फल अनुभव जेह अे
मारग सोइ जाको फल आगे होअे अे तो परम फलात्मीक रूप अेह अे ।१७८।

अेवो अन्य संप्रदातीत अे मारग प्रीय महेद अनुग्रह प्रगट करावीयो अे
महेद अनुग्रह अे असाधारण आधिक्य ते भक्त प्रभु मन भावीयो अे ।१७९।
सर्व त्याग ने सर्वात्मना भावे होअे प्रिय अे प्रसिध्ध प्रमाण उचित सदा अे
आणे मारगे महेद तणो अंगीकारज मात्र अे प्रभु ने अे मारग प्रीय तदा अे ।८०।
अे असाधारण अंगीकार तणु कृत्य सर्वोतम मांहें प्रगट कर्युं अे
अंगीकृत्य त्य गोपीस वल्लभीकृत मानवी गोपी अे अनाध वचन धर्युं अे ।८१।
गोपनी स्त्री माटे गोपी नहीं कहेवाय गोपीनुं कारण भिन्न छे अे
आचार्यजीअे अेहनो अर्थ लख्यो छे आप ते भावने सहु आधिन छे अे ।८२।
तेथी वचन नहीं ने दुराव नहीं लवलेश तेहने सीखववुं कांइ नहीं पडे अे
प्रभुना रसने हारंद्रने हितने जाणे रस सिध्ध थाअे छे जेह वडे अे ।८३।
तेहने संपूर्ण रसनो अनुभव छे नित्य श्री अंगेथी प्रगट्यो ते सोहामणो अे
शुध्ध भावापन्न सर्वात्मना संयुक्त ते अति उक्ते परम मोहामणो अे ।८४।
तेहना इस जे शुध रसात्मीक मूल स्वरूप विठलेश कुमार गोकुल घणी अे
अेहने मानवी प्रीय स्वकीय जे समाज रस काजने रसिक शिरोमणी अे ।८५।
बीजो अर्थ जे गोपालनी सबंघणी गोपी गो जे इन्द्रीय पा जे रक्षक मुदा अे
ल जे अनुग्रह करतां ते माटे गोपाल अेहवो अर्थ अहीं सिध्ध होअे अे ।८६।
भक्तना समोहनी इंद्रीयादिक जे सर्व तेहना पालकनी सबंघणी अे
नित्य रमणीक गोपी तेना जे छे ईश श्री वल्लभ सकल मुगट मणी अे ।८७।
तेहने मानवी वल्लभ होअे अे अनुभव सिध्ध अेणे मारगे जे अंगीकृत कर्या अे
ते अे प्रभुने होअे परम प्रिय रूप रस काजने जे स्वत: वर्या अे ।८८।
जेने पोते कह्या छे इंहांको अे प्रागट्य स्वतंत्र जे पोते धर्यो अे
केवल लौकिक सबंध दूर करवा काज अपनो सबंध करवेकुं कर्यो अे ।८९।
अेहवो केवल फल रूप रसात्मीक जे अन्य संप्रदातीत पुष्टि पुष्टि अे
शुध्ध भक्ति मारग विषे महेद अनुग्रही जे ते उपर प्रभु छे अतिसे संतुष्ट अे ।९०।
अेणे प्रकारे मारग ने अे स्वरूप ज्यारे प्रगट यथारथ आणीअे अे
ज्यारे अेहवा महेद पाछल कही आव्यो तेह ते कृपा करे तो अे जाणीअे अे ।९१।
अेणे समय अेहवी सृष्टी रसात्मीकसुं श्री गुंसाईजी सहित लीला करे अे
महा भाग्य स्थले श्री गोकुलमां प्रागट्य दशानी प्रगट लीला करे अे ।९२।
सर्व करण सामर्थनुं महा अमर्याद चरित्र अमर्याद दान केम सकुं कही अे
अमर्याद वैभव ते कांइ गिण्यो न जाअे जेहनो पार नावे परमित नहीं अे ।९३।
महादान विषे समे विहित अविहित पात्रापात्र तणो ते विचार नहीं अे
अेवुं मर्यादा रहित ते अेह स्वरूप अमर्याद लीला करे उमही अे ।९४।
अेम सर्व समाजने करी मनोरथ अंत सहु भांते सर्व ते रस भर्या अे
बीजे प्रागट्ये विहित जेह प्रकार मर्यादा अे सहु कारज कर्या अे ।९५।
ब्रह्म शरीर विना मुचकुंदने मुली न आपी गूढ भाव छे प्रीछजो अेह थकी अे
जेटला प्रयोजनने प्रागट्य तेटलुं थाय अधिक न थाअे तेह थकी अे ।१९६।

ने अहींया ब्राह्मणने आप्युं छे दासत्व वरणावरणनुं कारज सर्युं अे

ब्राह्मण आरंभीने जे कोउ जात तेहने भजनानंद महा दान कर्युं अे ।१९७।

अहीं मुक्तिनी वासना नहीं लगार संभावना को जाणे नहीं अे

स्वतंत्र स्थापन कीधुं पोते सर्व केवल पोताने बल अहीं अे ।९८।

अे स्वतंत्र प्रागट्ये अंगीकार स्वतंत्र जे सार सुखद घणो अे

सत्कार स्वतंत्र प्रभुनो माने सर्व गर्व नवी माने कोइ तणो अे ।९९।

केहेने केहेनो न्योरो न होय लगार पितानो पुत्रने स्त्रीने भरथार तणो अे

पूरण प्रागट्य तणु अे लक्षण अेह कर्यो स्वतः वर्ण ते सोहामणो अे ।२००।

अेहवुं स्वतंत्र चरित्र अगाध ते चित तणा चित ने हरे अे

ने स्वतंत्र अेह प्रभु तणा अे छे भक्त अनुरक्त थई अने विचरे अे ।१।

आगल स्व अनुग्रही रसिक समाज राज राजेश्वर सृष्टि जेह वरी अे

ते उतरोतर लीलानो भरभाव भाव कहीश ते विसद करी अे ।२।

अे पुष्टि सृष्टि दिन दिन वाधती नवीन फरी चार प्रकारनी प्रगटशे अे

पण तेमां जे केवल प्रभु परायण परम पुष्टि पुष्टि श्रीअंग सेवा रसे अे ।३।

रमण उपयोगी स्वरूपात्मीक अंतरंग परम अनुग्रही पात्र ते भिन्न छे अे

पात्र भेदे भाव तणो लहीये छे भेद भाव भेदे रस भेद चिन्ह छे अे ।४।

जेहना रसनो प्रकार अति छे अगाध सर्वोधिक सर्वथी न्यारो धर्यो अे

ते रस भेद समज्यो न जाअे फल भेद स्वार्थ अलगो कर्यो अे ।५।

तेहनो संवत सोल छेतालीसथी विस्तार राजे अनुदिन लीला स्वतः करीअे

तेहना परीकर सर्व समाजनी साथ स्वतंत्र जे महारस भरी अे ।६।

ते गुजरातने महा दान करी पधार्या पछी गूढ रसदान पात्र जे रस भर्या अे

ते विसद कहीसे परम रसाल प्रभुजीअे जेह प्रगट कर्या अे ।७।

हवे हवडा अहींया पुरूषोतम परमानंद अग्रणी अनेक प्रकारनी अे

भांति भांति लीला चरित्र करे छे अनेक विवेक करी करी विस्तारनी अे ।८।

त्यांहां श्री गुंसाईजी रूपाधिक स्नेह युक्त महा मोद सहित वात्सल्य भरे अे

प्रिय पुत्र परम रसरास रसाल सुख सार तणो अनुभव करे अे ।९।

प्रमेय गोपन गूढ वात्सल्य महत्व अनेक जे प्रगट करे ते सहु मन धरूं अे

आगलने २७ में मांगल्ये तेहनी अनुसारे विसद करूं अे ।२१०।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्‌भुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित श्री गोकुल लीला या श्री गोकुल द्रढ वासनुं वर्णनो नाम
।। मांगल्य २६ मुं संपूर्णम् ।।

मांगल्य – २७ – सतावीसमुं

राग : 'धनाश्री' मारे मांडव कोण कोण आव्या ने कोण कोण आवशे '' अेम गवाशे।

श्री रूकमणीजीना लाल ते लाड लडेतो करे
श्री गुंसाईजीना नेत्र उत्सव सर्वांग अति सुख भरे ।१।
अवतारा अवतारी वरेन्द्र वर स्वतंत्र सर्वथी
भक्त जीवन अेहवुं स्वरूप न भूतो भावी नथी ।२।
जेहनुं मीठुं नाम स्वरूप मीठुं सदा
शील मीठुं मीठी वात चरित्र मीठुं सदा ।३।
मुख मीठुं मीठी जीभ लावण्य मीठुं घणुं
मान मीठुं मीठुं दान दातुर्य ते अेह तणु ।४।
वचन मीठुं मीठी वात मीठी वय सर्वदा
वाणी मीठी मीठुं गान मीठा गुण अे सदा ।५।
अेहवो श्रीमान रस तणु मूल ने रागनुं मूल छे
स्नेहनुं मूल सुख मूल ने सर्व अनुकूल छे ।६।
सकल परीपूर्ण मंगल गुणे गुण अलंकृत कर्या
वात्सल्य वत्सल सेवा रस प्रिय रस भर्या ।७।
सेवा स्थापन अे तत्पर भक्ति मार्ग द्रढ कर्यो
विवर्धना भक्तना धर्मनो ने सोच संदेह हर्यो ।८।
आचार्य नित्य कृत्य सर्वदा लेखनाशय विचारी
सर्व संसयना विध्वंसक दोष परिहार कारी ।९।
पितुना वाक्य प्रपालक सत्य संकल्प आप
सत्य वक्ता सत्य करण सत्य कृत्य महा प्रताप ।१०।
गूढ अति गूढ आसय महा गूढ कारण अनूप
गूढ संकेत रस गूढ अति गूढ गोकुलनो भूप ।११।
भक्त वस भक्त चिंतामणी भक्त प्रीय भक्त गम्य
भक्तने भावे विभूषित भक्तनुं परम रम्य ।१२।
शरद चंद्राधिक सुखद ने जगत अेहेलाद कारी
सौभाग्य वर्धन भक्त हित प्रगट लीला विस्तारी ।१३।
भक्तना भाग्यने अर्थ ने भूमी जे भाग्यवान
लोक वेदातीत चरण सबंध करवा दान ।१४।
भूतल मध्ये प्रगट थई स्वरूप लीला चरित्रे
त्रिविधानंदे करी भौमी जुत भावे भरी विचित्रे ।१५।
भक्तना भाग्य विस्तार्या अे प्राग अडेल थई
गढागढ ने जे श्री गोकुल मथुरामां ते रही ।१६।

वय कृस वीस वरसने उपर थया अढी मास
अेह स्थले रही दिन दिन अधिक भक्तनी पूरी आस ।१७।
गोकुलमणी मन अभिलाषीत जे रस मन भाव्यो
तामसादी लीलानो ते अनुभव करीने कराव्यो ।१८।
पछी मथुराथी पाछले मांगल्ये कह्युं छे तेणे प्रकारे
श्री गोकुल फरी द्रढ वास कीधो ते जीवन आधारे ।१९।
श्री गोकुल उत्सवकारी श्री गोकुलमां बिराजे
श्री गोकुलाधीश गोकुल रसिक नित्य नौतन राजे ।२०।
अेटला पर्यंत अहीं अेनी लीला इच्छाअे भरी
सूचवी कारण सहित छवीस मांगल्ये करी ।२१।
हवे सवंत सोल ओगणत्रीसेथी श्री गोकुलमां जेह
ते सतावीसमें मांगल्यथी कहीस चरित्र तेह ।२२।
श्री गोकुलपति अति प्रतापी महा मुक्ष रसना जे रसीया
रसरास केलीकलादिनदिन प्रते अति उल्लसीया ।२३।
उतरोतर वाधती अेकथी अेक जे अधिक नित्य
हित सहित ते अंगीकृत करी प्रमेय गोपन सहित ।२४।
सदा सर्वदा नित्य लीला श्री गोकुल करी प्रगट वास
ते कांइ प्रगट करी कहुं हुं मनमां धरी आस ।२५।
स्नेह भरे श्री गुंसाईजी रहे सदा प्रेमे पाग्या
आत्मानुं अभिराम जग वल्लभसुं अनुराग्या ।२६।
आनंद दायक पुत्रने जोइ शीतल करे नेत्र
जे लोकोतर अभिराम आनंद दायक चरित्र ।२७।
जोइ जोइ मोद न माय आनंद उपजे घणो
विसद करी अेह प्रकार क्यां लगी कहुं तेह तणो ।२८।
श्रीजीसुं श्री गुंसाईजी उतकर्ष ज्युत स्नेह धरे
असाधारण अभिलाष वात्सल्य प्रगट करे ।२९।
भोजन करवा बेसे त्यारे श्रीजीने प्रेमसुं
निपट निकट ते बेसाडे श्री गुंसाईजी नेमसुं ।३०।
श्री गुंसाईजीनो जोइ अनुरोध अलगा ते बेसे नहीं
बीजा बालक आसपास बेसे ते भावे तहीं ।३१।
अने जे जे उतम होअे वस्तु पोताने मन भावती
ते ते महेले श्रीजीने जेम रूची आवती ।३२।
अे तो मारग प्रणालिका जगत प्रसिध्ध लही
पण रूचतुं घणुं आरोगे अे वात श्रीमुखथी कही ।३३।
मोहेकुं मिठाई भावे खटाइ मोहेकुं न भावे
घृत चुचुतो लीओ जाअे रूखो में लीओ न जावे ।३४।

अेह पोतानी प्रकृति स्नेहात्मीक रूप कही अे
भक्तने ज्ञापनार्थ ते सर्व सनमुखे लही अे ।३५।
मिठाइ ने खटाइ सचीकण ने वली कही रूक्ष
ज्ञान ने रस कह्यो अेह महातम ने स्नेह मुक्ष ।३६।
अेह वातनो अेह आसय माटे रसात्मीक रस स्नेह
महातममे रूची नहीं ते अेहनो भाव अेह ।३७।
अने तेहवुं कर्युं श्री गुंसाईजीअे तेणे करी रूचे सर्व
अेहवो श्री गुंसाईजीनो स्नेह सौभाग्य मद तणो गर्व ।३८।
वली जे वस्तु मिष्ट मधुर स्वादिष्ट होअे ते जेह
रूचती जाणी परोसावे आरोगे स्नेह करी तेह ।३९।
ते प्रबल स्नेह करी श्री गुंसाईजी आप ज्यारे
चातुरमासनी अेकादसी निराहार करे त्यारे ।४०।
श्रीजीने कहेबाबा तुम जाय भीतर करो फलाहार
धर्म रक्षक अने पित्रु भक्त प्रगट ते करणहार ।४१।
मर्यादाना प्रतिपालक नीत चातुरी प्रवीन
पिताना वचननो भंग करे नहीं रहे आधीन ।४२।
भोजनशाला पधारीने करी अेक नवल उक्त
अेकादसी निराहार फलाहार तेह जुक्त ।४३।
तेहनी वात श्री मुखथी कही छे बहुवार
भक्तने मोद रंजन करी चातुरी महा सार ।४४।
अेकादसी चातुरमास श्री गुंसाईजी करे निराहार
तब हमसुं कहे बाबा जायके तुम करो फलाहार ।४५।
पाछे हम भीतर जायके अेक कण द्राक्ष लीजे
नेक दांतसों दाबीके सद्यही डार दीजे ।४६।
रात आज्ञा करे दूधकी सो हम अेसे करी
दूधमों अंगुरी महेलीके बूंद मोंहमां धरी ।४७।
जब हमकुं श्री गुंसाईजी पूछे फलाहार कीनी
हांजी कहा करी तब कहे दूध अरू द्राख लीनी ।४८।
श्री गुंसाईजीसत्य करी माने मिथ्या बोल्यो न जाअे
अरू मिथ्या केसे करी बोलीअे जानी आपुने भाये ।४९।
अेहवो सत्य वक्ता सत्य संकल्प सर्वने नित्य सोहाअे
मिथ्या बोल्या तणी अेहने नहीं संभावना अे ।५०।
पित्रुना वाक्या प्रपालके आदर्यो अेम धर्म
जेहनुं अे कारज ते साधक छे अखिल धर्म अे ।५१।
पछे बीजी अेकादसी ते सबंध आधिक्ये करी
श्री गुंसाईजीअे सहेज सत्याजीने पूछयुं फरी ।५२।

श्री वल्लभे फलाहार कीनो अेम पूछयुं ज्यारे
कह्युं वे कब करत फलाहार अेम दीधो उतर त्यारे ।५३।
मेरे आगे आय कहेत हे फलाहार कीनो अेसी
वलतुं सत्याजीअे सर्व वृतांत कह्युं प्रकासी ।५४।
सांभली अेहवी वात अेकवार मन रह्या सोची
कर्यो कोण प्रकार वात्सल्यभर रह्या लोची ।५५।
पछे गुंसाईजीअे श्रीजीने माटे निराहार करवी महेली
उपज्यो अति पश्चाताप जे निराहार करी पहेली ।५६।
पछे बेसी करे संग फलाहार अेहवो प्रबल प्रणय जेह
श्री गुंसाईजी धर्मधुरंधर मर्यादा रक्षक तेह ।५७।
स्नेह करी धर्म मर्यादा बेहुनो उपमर्द कीधो
अेक प्रबोधणी निराहार करवी अेहवो नेम लीधो ।५८।
अने श्रीजी गुंसाईजीथी अेक पल अलगा रहे ते ज्यारे
जोया विना श्री गुंसाईजीने चेन पडे न त्यारे ।५९।
अेकवार श्री गुंसाईजी आप पधार्या मथुरा मांहां
श्री गोकुलथी गोविंद स्वामी पाछळथी ते गया त्यांहां ।६०।
श्री गुंसाईजीअे गोविंद स्वामीने श्रीजीनी कुशल वात
पूछवाने मनोरथ भर्या मन मांहें नाना भांत ।६१।
उदे मांहें आरंद्र थई उर भरी आव्या घणुं
हरखे हरखांसु हित भरे हुं शुं कहुं तेह तणुं ।६२।
अेटलुं कही शक्या जे श्री वल्लभ नीके आप
नाम लेतामां अंतर प्रगट्यो अधिक ताप ।६३।
वाणी लपटाइ अंतरगति श्रीजीना स्वरूप साथ
ते बाहेर निसरी सके नांहीं पूछवा विसद वात ।६४।
अेह अवस्था गुंसाईजीनी देखीने मन भावी
गोविंद स्वामिनी अेह समय छाती ते भरी आवी ।६५।
उतर कशो न दिवायो अेहवुं स्नेहात्मिक स्वरूप
सहेजे प्रेम परिपूर्ण उत्कर्ष अेह अनूप ।६६।
नहीं तो बालक बीजा मोटा छोटा हता तेणी वार
पण अेक अे कारण रूप प्रिय पुत्रना पूछ्या ते समाचार ।६७।
पछे श्री गुंसाईजी मथुराथी पधार्या जेणी वार
पोतानो भाव दुरावीने बोलीया तेणी वार ।६८।
गोविंद स्वामीने उदेशे करी कही अेह वात
न जानीअे तुम गोविंददासके भावसुं कोन भांत्य ।६९।
अंत:करणसुं प्रगट स्वतंत्र सबंध करवायो अेसो
अेम कही सूचव्युं सर्व कह्युं कह्यो नहीं जाय तेसो ।७०।

अने श्री गुंसाईजीने सहेज निरंतर व्यसन अेह
श्रीजी कनेथी जे को आवे घणुं पूछे तेह ।७१।
श्री वल्लभ कहा करत हे बेठे कोण भांत
केसी चलत त्यां वात अरू कोन बेठे हे पांत्य ।७२।
अेक समय उथापने श्रीजीअे सौभाग्य सभा मांहां
श्री गुंसाईजीना हित तणी वात ते आप कही विसद करी त्यांहां ।७३।
अेक दिन खीरा मेरे पासते गयो श्री गुंसाईजी आगे
तब श्री गुंसाईजी मेरो नाम ले के वाके पूछन लागे ।७४।
श्री वल्लभ कहा करत हे खीरा सनमुख चही रे
अेह हवडा कथा करी रह्या कहा कथा आज कही रे ।७५।
तब इने उतर दीनो सनमुख महाराज कही
आनंद सागरमां मग्न थयो हुं तो कांइ समुज्यो नहीं ।७६।
अे सुनीके श्री गुंसाईजी बोहोत भये प्रसन्न
मोद संकोचे कही वात ते समजे अनुभवीनुं मन ।७७।
अे कहेता समयनी कोइ विलक्षण अनिर्वचनी शोभा
भाव सहित वचन चातुरीना ने उतरनी ओभा ।७८।
ते कहेता कह्युं न जाअे जाणे जे सनमुख निहाले
करूणानुं बल होअे ते अे वचन रसने संभाले ।७९।
अनुभव तणो अनुभाव बाह्याज्य केम निसरे
स्वादे करी सहु स्वाद अनुसंधान विसरे ।८०।
अने भक्त पोषण अर्थ कहे कथा रसिक जीवन प्राण
अेहवो तो रस प्रगट होअे केनु रहे नहीं अनुसंधान ।८१।
निज अनुभवी नित्य रमण तणा गूढ गोपनीय भाव
प्रगट करे तेथी पोते भावाधीन थाअे स्वभाव ।८२।
आप कहेतामां आपने रहे नहीं अनुसंधान
तो सांभलनारने केम रहे जे सुणे मधुरी वाण ।८३।
हवे अेहवी वातो श्री गुंसाईजी वैश्नव द्वारा सुणे ज्यारे
छाना श्री वचन माधुरी सांभलवाने आवे त्यारे ।८४।
ते सांभली श्रीजी संकोच करी खरिकमां पधारे
त्यांहां जइ कहे कथा सार निज रसिकना मन वधारे ।८५।
रसे अकर्ष्या श्री गुंसाईजी सांभलवाने अहींया आवे
स्नेहे गीधा दूरी सांभले तेह मनमां भावे ।८६।
अति प्रीय परम माधुर्य मनोहर शुभ वचन
सांभलवाने अहो रात्र अभिलाख रहे अेहोने मन ।८७।
ते करता श्री महाप्रभुनुं स्वरूप मनमां ग्रहीने
प्रागटनी प्रगट अनुकृतीनुं ते कारण लहीये ।८८।

अतिसे अनुपम असाधारण उत्कर्ष मन विचारी

तेणे करी मननो अे विचार जे जोइअे सुंदरकारी ।८९।

श्री वल्लभ कोण प्रकारे केवा भाव प्रगट करे

ते सांभलवाने आवे गुंसाईजी उलट भरे ।९०।

अे वात श्रीजीअे कल्याण भट खंभालीयाने जेह

करूणा करी कही आपते विसद करी कहुं तेह ।९१।

अेहो उपर सदा श्री प्रभुजी आपुथी अति प्रसन्न

अे बेसे सनमुख पूछे वात वात्सल्ये धरी भाव मन ।९२।

अेक दिवसे कल्याणभटे श्रीजीनी आगल शीष नामी

करी विनती विनय वचन कही प्रभुनो समय पामी ।९३।

महाराज में सांभल्युं जे कथा ज्यांहां कहो राज

श्री गुंसाईजी हित सहित छाना आवे ते सांभलवा काज ।९४।

अे सुणी मुसकाया हांहां करी आवे ते सत्य ज्यांहां

अेक वेर खरिकमों कथा कहुं आय ठाडे सो त्यांहां ।९५।

अेक वैश्नवने ठाडे देखे सो वे भयो ठाडो त्यांहां

उनकुं ठाडो देखीके में कह्यो बेठीये बेठु नांहीं ।९६।

मेरे कहे वैश्नव वे बेठो नांहीं तबही में जान पायो

अे बेठत नांहीं यातेजु इंहां श्री गुंसाईजी आये ।९७।

वार दो वार अेसे कह्यो हमकुं मनोरथ आवे

हमकुं वो कथा सुनावे पे कोन हमकुं सुनावे ।९८।

अेसे कही कहीके अेसी भांत्ये मोहेकुं सुनाये

पे में तो श्री गुंसाईजीके आगे संकोचथे कह्यो न जाय ।९९।

श्री गुंसाईजी अेसी करे बोहोत प्रेम मोहेकुं संकोच आवे

श्री गुंसाईजी आगे कथा मेरे कहेतो कही न जावे ।१००।

त्यारे कल्याणभटे कह्युं जे राजने तो संकोच

श्री गुंसाईजीने तो अे सुणवा मनोरथनी लोच ।१।

ज्यांहां राजश्री वचनामृत करो भावनी वृष्टी होय

ते सांभलवानो मनोरथ श्री गुंसाईजीने से न होय ।२।

आवो कोडामणो कुंवर ने ते वली कथा बोले

तो अे नहीं सांभले तो बीजुं कोण अेह तोले ।३।

वली पूछ्युं राज तो श्री गुंसाईजीनुं स्वरूप सम्यक जाण्युं

राजनुं स्वरूप श्री गुंसाईजीअे जाण्युं के नहीं जाण्युं ।४।

त्यारे मुसकाइ मोद संयुक्त कह्युं जे कहा कहीये

कहेवेमें संकोच आवत हे मनकी मनमां लहीये ।५।

अरू वात मोहोते जितनी काढीअे तितनी होवे पराइ

अेम कही अने कही अेक वात मनमां उलट भराइ ।१०६।

अेक वेर श्री गुंसाईजी बीडा आरोगे में बेठे पास
में तष्टी मांगी निकट ठाडो हतो भट राघवदास ।१०७।
उन जायके तष्टी राखी अरू दीठ कुजात अेसो
तेह समय श्लोकको अर्थ श्री गुंसाईजीसुं पूछयो अेसो ।८।
शब्दोही धूमवल्लो के अे कारीकानो जे भाव
राज श्रीमुखथी कहीअे सांभलवानो चाव ।९।
तब श्री गुंसाईजीने मोसुं पूछयो में सुन्यो हे अेसो
या श्लोकको तुम यासुं समुजाय कह्यो हे तेसो ।१०।
तब में कह्यो हाजी याकुं में सुनायो हे करी विस्तार
तब उनकुं पूछयो क्योंरे कह्यो हे हांजी कह्यो अेकवार ।११।
गुंसाईजी बोले इनके कहे आयो नहीं चित तेरे
समज्यो नहीं याके कहे सो कहा समुजेगो कहेमेरे ।१२।
त्यारे कल्याणभट खंभालीयाअे कह्युं राज राज
वारणे जाउं अे वातनी मिठाई उपर हुं आज ।१३।
पिता पुत्रनो स्नेह ने अे जाणपणु जे महा सार
ते उपर हुं घोली नाखु ने ओवारूं वारंवार ।१४।
अमने ते वात तणो रस आवो मीठो लागे छे लही
श्री गुंसाईजीना अनुभवनी मिठाई कोण सके कहीय ।१५।
पुत्रवंत तो श्री गुंसाईजी जेहनेराज सरखो ते पुत्र
श्री गुंसाईजीनुं ते महा भाग्य अे स्वरूपनुं जाण्युं सूत्र ।१६।
वस्तुने वस्तु जाणे मनव्रत ते होअे ज्यांहां
राजने विषे मनव्रत नोहे तो होअे ते क्यांहां ।१७।
अेहवी घणी घणी वात मनोहर कीधी ते अति विनय मांहीं
श्रीमुखे कह्युं श्री गुंसाईजीने हमसुं कछु राख्यो नांहीं ।१८।
अेकवार कह्युं श्री गुंसाईजी जब कथा कहे समय पाये
तब दादा आदि सहु कोअे हम पासे बेठे सो आये ।१९।
अेक वेर में कह्यो कछु काजकुं मोहेकुं भयो विलंब
तब दादा ने कह्यो श्री गुंसाईजीसुं कथाको करो आरंभ ।२०।
श्री गुंसाईजीने हंसी के कह्यो श्रोता आवे तो कहीये
श्रोता विना कासो कहीये अरू स्वाद केसे के पैअे ।२१।
श्री गुंसाईजीना वचननो आसय तो अेहोनी करूणाथी लहीअे
मर्यादा हित श्रोता कह्युं पण कारण भिन्न कहीअे ।२२।
वस्तुना भोक्ता आव्या विना वस्तु केम प्रगट करीअे
अपरमित वस्तु विनियोगनी ते कोण आगे ते धरीअे ।२३।
कहेनार त्यारे श्री गुंसाईजी केहेवुं त्यारे फल प्रकर्ण
अेहना भोक्ता आव्या विना केम करे अर्थ सहसा विवरण ।१२४।

भोक्ता ज्ञाता अे स्वरूप अे वस्तुअे स्वरूप भोग्य
परम रसाल अति रसिक समर्पवा रहे जोग्य ।१२५।
अे प्रकार श्री गुंसाईजी जाणे के प्रभु करे दान जेहने
महेद अनुग्रहथी प्रीछे ने अनुभव होअे तेहने ।२६।
पछे श्रीजी सभाअे पधार्या त्यारे कथा कही मन भावी
श्री गुंसाईजीअे भाव प्रगट करी आप आरत समावी ।२७।
वली स्वरूपना उत्कर्ष उपरे कही छे अेक वात
श्रीजीअे श्रीमुखे करी अने विसद ते नाना भांत ।२८।
अेक वेर भोजन उपरांत विश्राम करी बेठक मांह
बालकृष्ण अरू रघुनाथ मेरे पास बेठे त्यांह ।२९।
बहुधा अेमेरे पास रहे समय समय सहु
आपुने काजकुं समे न्यारे होवे न अे कबहुं ।३०।
चतुर बिहारी और गौरी नाइक आये मेरे पास
सनमुख बेठीके गान करे मनके हुल्लास ।३१।
श्री गुंसाईजीने अपनी बेठकथे सुन्यो सब दे के मन
रागनी सुनीके भरी आयो भअे सात्वीक भावापन्न ।३२।
छीत स्वामी वहां बेठे हते श्री गुंसाईजी पास
अेसी वस्तुको देखीके पूछयो प्रगट प्रकाश ।३३।
समजवैया बालकमों कहो कोन महाराज
आवेसे श्री गुंसाईजीअे छोडी उसास कह्यो के समजत हे सबे ।३४।
छीतस्वामीअे श्री गुंसाईजीको हारंद्र समुजो वेसो
अे तो कछु व्यंग वचन कह्यो तब फिरी पूछयो अेसो ।३५।
श्री वल्लभ बोहोत समजत हे श्री गुंसाईजीसुं पूछयो वेइ
बोहोत ओर थोरो कहाजु समुजत हे समजे अेइ ।३६।
अेहनो अेह भाव जेहनी वस्तु ते समजे पोता संजोग
लीला मध्यवर्ती छे गान अे पोतानो रस भोग्य ।३७।
अंग अंगने विषे राग अनुरागसुं रहे लग्न
अे प्रभुनुं आधिक्य जोइ स्वाधीन थई थया मग्न ।३८।
सकल विद्या गुण चातुरी चतुरने चरणे लाग्या
प्रमेयनुं प्रगट प्राबल्य जोइ रहे नित्य अनुराग्या ।३९।
ते भोक्तानी आगल पोतानुं स्वरूप प्रगट करे छे
आधिदैविक स्वरूपसुं आप आगल धरे छे ।४०।
अेनुं अेह प्रमाण जे वस्तु विनुं नावे मन
अेहवो रस हवो प्रगट जे गुंसाईजी थया प्रसन्न ।४१।
अेभोग्य भोक्तानुं स्वरूप श्री गुंसाईजीने थयुं रूदयारूढ
तेणे करी अे भाव उछल्लित थई बाहाज्य प्रगट थयो गूढ ।१४२।

अे गान रस लीला मध्यवर्ती ते सुख तणु महा सार
अे वस्तु अेहोनी अे भोक्ता दाता ज्ञाता अपार ।१४३।
अे मारगनी साथे जावदिक लीला उपयोगी वान
लीला मध्यवर्ती सामग्रीनी साथे प्रगट्युं ते गान ।४४।
अेहनुं स्वरूप यथारथ समजवानो नहीं अधिकार केहेने
अने भाव मार्गी कोउ वस्तु होअे जाणवा योग्य अेहने ।४५।
अे प्रकार श्रीजी जाणे अन्यथा कोइ जाणे नहीं
अेहवुं स्वरूप श्री गुंसाईजीअे जाण्युं जे जावदिक वस्तु अहीं ।४६।
अेहवुं लहीने श्री गुंसाईजी श्रीजीने नाना भांति
भावनुं तारतम्य प्रगट करवाने पूछे ते वात ।४७।
अेकवार तनसुखनो परकालो पठव्यो गोड नारायणदास
श्री गुंसाईजीअे सर्व बालकने पूछयुं मन हुल्लास ।४८।
न्यारो न्यारोते देखाडयो मनमां जाणीने अेहवुं
परीक्षा हित प्रमाणने जोइअे कोण केहेवुं ।४९।
सर्वने कह्युं तुम देखो वहां उपयोग आवे केसे
सर्व कह्युं बहोत आछो हे ठाकुरके लायक जेसे ।५०।
अे सांभली श्री गुंसाईजीअे कीधो ते मन विचार
अेहनी द्रष्टि पहोंची नहीं जेह छे महासार ।५१।
वस्तु जे भोग्य अधिक जाणे छे अेह
पण भोक्तानुं आधिक्य ते अेह शुं जाणे तेह ।५२।
पछे सर्व देखता परकालो देखाडयो श्रीजीने आणी
देखो बाबा अे केसो हे त्यारे बोलीया मधुरी वाणी ।५३।
अेसी तो वस्तु कहां हे जो वहां उपयोग आवे
तथापी हे भलो याहिते अपुने मन भावे ।५४।
श्री गुंसाईजी सुणी मुसकाया ते थई प्रसन्न
पण हारंद्र को अे समज्या नहीं अेहनुं भावापन्न ।५५।
वस्तु समूल उतकर्षता परम सगर्भ लही अ
अेमां सर्व सिध्धांत समजाव्याअे वचन कहीअ ।५६।
अेहवा छे अनेक प्रकार ते जाणे अनुभव छे जेहने
श्री गुंसाईजीने सुणवा मनोरथ भाव सहु पूछे अेहने ।५७।
श्री गुंसाईजी ज्यारे स्वरूपानंदे भर सूचवे महा अलोक
द्विदल रस भाव लेखन करे ग्रंथ वा छूटक श्लोक ।५८।
त्यारे मन धरे भावेष्ट वर श्री वल्लभने देखाडुं अेह
अेह प्रमाणे ते सत्य पूछे पूछे करी नेह ।५९।
बाबा तुम देखो अे लेखन जो तुमारे मनमों आवे
उचित होय तो राखीअे जो अे भाव तुमकुं भावे ।१६०।

त्यारे धर्मनी सेतु मर्यादा रक्षक कहे अेह वचन
ज्यांहां आप विचारत हो तहां कहां देखेको अन्य ।१६१।
अेहवुं कही अने जुअे त्यारे थाओ मनमां प्रसन्न
करे प्रसंसा त्यारे सत्य जाणे श्री गुंसाईजी मन ।६२।
कदाचित मनमां ना आवे त्यारे कहे न घणा वाना
आपु लेखन विचारी करत अेम कही रहे छाना ।६३।
त्यारे श्री गुंसाईजी संदेह जाणीने विचारे फेरी
ते जोइ कहे बोहोत नीको हे अेम श्रीमुख वचन करी ।६४।
वली को समय सहेज आवेसथी श्रीजी कंइ लखे भाव
ते आप लेखनमां लखे श्री गुंसाईजी करी चाव ।६५।
अे श्री मुखे कह्युं अेकवेर हम सहज ही लीख्यो योंहीं
श्री गुंसाईजी अे देखीके लिख्यो आप लेखन मांहीं ।६६।
अने श्री गुंसाईजी यमुनाष्टकनी टीका करे ज्यारे
पूरण टीका श्री वल्लभ करे अेहवुं विचार्युं त्यारे ।६७।
भाव तारातम्य अर्थ श्रीजीने कह्युं बाबा अे तुम विचारो
पछे पितानुं वचन मानी अने लेखन करे न्यारो ।६८।
ते महा अद्‌भुत असाधारण जे अश्रुत ने अद्रष्ट अर्थ
अेहवा भाव प्रगट करे सांप्रत्य स्वतः पोते सामर्थ ।६९।
जे मुकुंद रति वर्धनी मुकुंद विषे रती केम वर्ध पामे
मोक्ष दाता मर्यादा मुकुंद अे तेह नामे ।७०।
संगे करी रति वर्ध होय अे स्वभाव फर्यो तुमारे संगे
जे फेरे ईश्वरनो स्वभाव ते कां न फेरे मनिस अंगे ।७१।
जीव स्वभावने फेरता तेहने सो विलंब
आश्चर्य शुं अे वातनुं अेहनो सो अचंबो ।७२।
अेहवा अनेक भाव विचारी श्री गुंसाईजीने उलट भेर
कह्युं उचित होये तो राखीअे ना तो विचारो फेर ।७३।
ते भाव प्रकार जोइने श्री गुंसाईजी रीझया मन
पछे उलटसुं कह्युं ते आप आनंदी अति थई प्रसन्न ।७४।
प्रगट करीके श्री वल्लभ पास इतनो हम श्रम करवायो
इनको स्वरूप जनायवेकुं अेसो मनमों आयो ।७५।
जो कोइ महा भाग्यवान होयगो सो जानेगो भावी
अे पूरणता प्रगट करवाने टीका अे पूरण करावी ।७६।
अे प्रमाण करवाने श्रीमुख थकी कह्युं छे ते करूं प्रकाश
श्री गुंसाईजीने टीका पूरण करवाय हमारे पास ।७७।
त्यारे क़ल्याणभटे कह्युं महाराज अे टीका नथी पूरण कीधी
अे राजश्रीनी जे पूरणता ते प्रगट करी प्रसिध्धी ।१७८।

अे सांभली मोदे मुसकायने वचन भटनुं प्रमाण्युं
तेह समय जे भक्त सनमुख रह्या तेणे अे सर्व जाण्युं ।१७९।
अेहवा असाधारण भावथी गुंसाईजी थया भावापन्न
उपज्यो अधिक आनंद ने मनोरथ प्रगट्यो मन ।८०।
ते अेक समय श्री गुंसाईजी मनसुं कीधो विचार
उमंग्या विना भाव प्रगटे नहीं उमंग्याना बे प्रकार ।८१।
स्व इच्छाअे के वादे कहेवाये तो वाद तहां नहीं थाय
प्रीय पुत्रसुं वाद केम थाअे वलतो ते कीधो उपाय ।८२।
सर्व बालक पासे बेठा छे तेहसुं मन भावी
सुबोधनीनी तेहो पास ते धर्म चर्चा करावी ।८३।
त्यारे गिरधरजी ने गोविंदरायजी तो मृगराज रीते
गाढ उचारसुं उचरे शास्त्र सिध्धांत नीते ।८४।
अषाढ मासनी नदीना पूर चाल्या जाय ते सर्व
उमडया अति आंदुलमान थई टाले पंडितना गर्व ।८५।
त्यांहां बालकृष्ण श्रुति तणी साक्ष दे रघुनाथजी बोले
अमुक पुराणे विक्षात छे अेम आंतरिक खोले ।८६।
पुराण अष्यादसनी उपपत्य आणे सुदेश
पण गुंसाईजीअे स्वसिध्धांतमां दीठो न केनो प्रवेश ।८७।
त्यारे श्रीजीने कह्युं श्री वल्लभ तुम कछु कहत नांहीं
प्रथमे न बोल्या स्पष्ट वक्ता जाणी रहे मन मांहीं ।८८।
पिता समक्ष आज्ञा विनु केम बोले मर्यादा टाली
आज्ञा उपर मेघ गर्जना वदे वाणी रसाली ।८९।
लीला रस सहित स्वरूपात्मीक भक्ति मार्गे उक्त
स्वसिध्धांत स्थापन करी वक्ता वरेन्द्र ते बोल्या जे जुल ।९०।
त्यांहां मुहुर्तवंता भाव प्रगट थया परम माधुर्य मिष्ट
ते सांभळीने श्री गुंसाईजी थया ते रसाविष्ट ।९१।
पछे सभा उठया उपरांत गुंसाईजी कह्युं अेह वचन
गिरधर शास्त्र पढयो बोहोत अेसो आयो मेरे मन ।९२।
ताते याकुं सुबोधनी पढाइये पे यामों नांहीं प्रवेश
अे परम महा रस गूढ सो अन्य समजे न लेश ।९३।
अेह जेनी वस्तु तेहज लहे अन्य केम उरमां आणे
बीजा बीजी विद्या विषे कुशल पण सुबोघणी शुं जाणे ।९४।
कुलमंडन कुल तणु छत्र कुल ढाकण सुखद सार
वारताने ते प्रसंगे करी कह्युं छे बहु वार ।९५।
श्री गुंसाईजीके मुर्ख तो को नहीं सकल बेटानी मांहीं
दादाकुं शास्त्रनो ज्ञान ते सोतो काहुको नांहीं ।१९६।

राज्य शास्त्र ओर व्याकरणादि ज्ञान हे समग्र
बालकृष्णकुं वेदमों गम्य व्याख्यानकुं महा उग्र ।१९७।
अरू रधुनाथकुं पे व्याकरण पुराण ओर उप पुराण
सूरती ऐसी जे जहां पूछीअे सो कहे महा जाण ।९८।
वैदिककुं तो नहीं ओर को जदुनाथके समान
धनवंतरकुं तो नहीं होयगो सम्यक अेसो ज्ञान ।९९।
जो विद्या जाहीकुं आवे सो असाधारण आवे
प्रागट्य सांप्रत्य स्फुरणा सहित अेसी कछु कही न जावे ।२००।
सुबोघणी मनसुं स्पर्श करण सो तो माहा दुरापास
कृपा साध्य हे शास्त्र व्याकरणथे होअे नहीं अे प्रकास ।१।
अेहनो अे आसय जे पोताना अनुभव तणी वस्तु जेह
जेहने कृपा पोते करे तेहने थाय ते स्पर्श अेह ।२।
अे प्रमाणने जैदेवजीअे अनुभव करी आणी मन
रघुनाथजीनो अे पुत्र अेणे कह्या जे वचन ।३।
अेक समय गिरधरजीना नातीनुं नाम जे विठलराय
गोवर्धन भाणेज पास सुबोघणी भणवा जाय ।४।
ते जोइ जैदेवजीअे पूछ्युं दामोदर भटने ज्यारे
शुं पढे कह्युं सुबोघणी जैदेवजी बोल्या त्यारे ।५।
भणावी तारे त्यां सुबोघणी ने गोवर्धनभटने पास
अहीं पढेथी सुबोघणीनुं ज्ञान खरूं थाशे प्रकास ।६।
अक्षराअर्थ भले कहो पण जे कांइ छे प्रकार
ते अे शुं जाणे महा गूढ छे अेनो बहु विस्तार ।७।
पढावा माटे शुं थाय अमो पढावीअेज छे तां
पण सुबोधीनीनुं जे कहेवुं ते तो महा दुरबोध कहेता ।८।
श्री गोकुलनाथकाका पास पढया विना वस्तु जेहवी
स्पर्श थवो नथी केहेने यथार्थ छे तेहवी ।९।
अेनो अहंकार मुकीने अेहो पास पढवाने आवे
तो अेकज श्लोकना पढयामां मार्गसुं सबंध करावे ।१०।
ते ईश्वर छे तेहोने तो कोसुं इर्षा न कहीं
व्यर्थ मूर्ख रहे छे तेमां अन्य प्रवेश नहीं ।११।
जे अेनो अर्थ कही सके प्रीछवे मधुरी वाणी
जैदेवजीअे अनुभव करीने कह्युं अेह प्रमाणी ।१२।
अने जे जे बालक श्रीजी पासथी जेटलुं पढया जेह
तेने तेटलो वस्तुसुं स्पर्श थयो सद्य तेह ।१३।
अने जे को कुलने अभिमाने अहंकारे नहीं पढया सार
तेनो ते समय ते प्रसंगे कहीस विस्तार ।२१४।

सुबोधणी सर्व को भणे जे परस्पर देखा देखी
पण सुबोधीनीनू जे सुज्ञान ते सर्वने लेखा लेखी ।२१५।
अेणे अभिप्राये गुंसाईजीअे चर्चा करावी जाणी
स्वतंत्र भाव श्रीजी पासेथी सांभळ्या मधुरी वाणी ।१६।
पछे श्री गुंसाईजीअे वात्सल्यसुं ते मनुहार करी
बाबा तुमकुं श्रम भयो अेम कही आव्या ते भरी ।१७।
ये तुम विना अे भाव कोन प्रगट करी कहे अेसो
सलुणो सकुमार मुसकाइ बोल्या यामो श्रम केसो ।१८।
अे तो तुम अनुग्रह करीके जब आपु करवायो पान
अे तो तुमारेइ कीअे होअे लीला महा रस दान ।१९।
अे लीला मध्यवर्तीनी कृपाअे लीला रस महा निध्य
अे महादान थकी अे पान प्रगट अनुभव सिध्ध ।२०।
वली को समय को अेक प्रकारे पूछीने मन तणो आसे
प्रगट करावे गुंसाईजी ते कहुं जे प्रकासे ।२१।
अेक दिवसे श्री गुंसाईजी श्री द्वारथी पधार्या ते वार
सेव्य गोकुलचंद्रजीने रघुनाथजीअे कर्यो सृंगार ।२२।
श्री गुंसाईजी बोल्या नीके करत हे सृंगार रघुनाथ
ते सर्व को सांभली रह्या पण बोल्या नहीं हता साथ ।२३।
गूढ ग्राहक तत्व जाणी श्रीजी त्यांहां हता पास
बोल्या श्री गुंसाईजीना वचननो मनमां लइ आसय ।२४।
सृंगारात्तीक कछु नांहीं जे कछु हे सो भावात्मीक
सो तो तुमसुं में कहां कहुं तुम तो जानता हो नीक ।२५।
अे अनुरागीणी भक्तनुं स्वरूप कह्युं प्रकास
ते सांभली श्री गुंसाईजी पाम्या मन अति उल्लास ।२६।
साभिप्राये सहित ईश्वर तणु वचन ते मन भाव्युं
विसद करी कहीने सेवानुं रूप प्रगट कराव्युं ।२७।
भाव पूर्वक करी करे तेनुं नाम सेवा कही
भाव विनानी जे सेवा ते कोइ सेवा नहीं ।२८।
सिध्धांत मुक्तावलीअे कह्युं सेवा प्रगट करवा
स्वरूपे विषे चत तत्पर होअे तेहनुं नाम सेवा ।२९।
अे श्री गुंसाईजीअे भाव द्वारा मन जाणी आप
सिध्धांत मुक्तावली पर ते श्रीजीनी करावी छाप ।३०।
अेवी जे भावात्मिक सेवा भाव सहित अनूप
जन शिक्षा अर्थ पोते करे तेनुं कहुं स्वरूप ।३१।
जे सेवानो उद्देश करतामां सद्य कृत्यकृत्य थाअे
श्री आचार्यजी सर्व निबंध निर्णय करी लिख्यो उपाय ।२३२।

जीव कहे हुं सेवा करूं अेटलुं मन धरता वार
सर्वथा कृत्यकृत्य थाअे तेमां कांइ नहीं विचार ।२३३।
त्यांहां पूर्व पक्ष कर्यो छे जे कृत्यकृत्य थाअे जेह
वली पछे फरी से प्रयोजने सेवा आदरे तेह ।३४।
त्यांहां कहुं छुं अन्य ते उपाय सो करे अे स्वकीय संसार
अेतोधिक वस्तु बीजी नथी अेवी अे सेवा सार ।३५।
अे केवल भक्तना भाग्यने अर्थ अे प्रगट कीधी
अे सुख भक्त जाणे जे भक्तार्थ मानी लीधी ।३६।
अे उपर श्रीजीअे वात अेक कही अेकांत ज्यांहां
अेक दिवस संध्यावदन करी बेठा ते जलघरा मांहां ।३७।
प्रभुनी उदारता उपर वात चाली ते ज्यारे
अेक स्वामीअे मनमां उदेस धरी प्रश्न पूछ्यो त्यारे ।३८।
महाराज प्रभु सर्व दान करे छे जे भक्त तेहने
पण पुरूषोतमता जे पोता तणी तेतो नहीं आपे केहने ।३९।
त्यारे महोदारता कैम थाअे अेटलुं तो न्युन भासे
अे विसद करी कहीअेजी अेहनो कोण आसय ।४०।
श्रीजीअे कह्युं पुरूषोतमता तो इच्छत न भक्त
अपनी सेवा रस केरे रहत हे अनुरक्त ।४१।
अेतोधिक ओर पदार्थ हे अेसो कछु जानत नांहीं
वली कह्युं यों न समजेंगो समजाउं द्रष्टांत मांहीं ।४२।
जेसे कोउ स्त्री नेम धर्म करी इच्छे सौभाग्य पांउं
काहेते जे अपने विषे स्त्रीत्व रस जनाउं ।४३।
याहीथे ओर पदारथ अधिक कछु नांहीं जाने
पुरूष विषे अनुभवकी इच्छा भाव मन न आने ।४४।
जो इच्छा करत नांहीं भक्त तो प्रभु काहेकुं देवे
पुरूषोतमता ते अधिक रस दीओ तो ओर कहा लेवे ।४५।
अेसो रस अेसो पदारथ ओर अन्यत्र नांहीं
ओर रस याते अति तुच्छ जाने यों मन मांहीं ।४६।
ताते भक्तकुं न्युनता नहीं और प्रभुकुं न्युन नांहीं
भाव अधिक दोउ ओर उभय रस याही मांहीं ।४७।
माटे अे तो छे रस अहीं कृतार्थता तो छे कीहीं लेखे
कृतार्थता तो अेक भगवद नाम करे ते बहु विशेखे ।४८।
श्रीजीअे कह्युं अेक ब्राह्मण वृध्धने प्रगटी आध्य
पुत्रने कह्युं तुं मारी वती करीआव गया श्राध्ध ।४९।
पितानी आज्ञा लेइ चाल्यो ते विवेक वितपन
त्यांहां शुध्ध वैदिक को मले नहीं खेद पाम्यो ते मन ।२५०।

अेक मल्यो ते वैदिक पण ब्रह्महत्या ते जेहने
अेसो भगवद नाम बेवार कही हत्या उतारी तेहने ।२५१।
वलतो आसन बेसाडीने कर्युं अति गया श्राध
गाम आवी पिताने कह्युं श्रादनी टाली आद्ध ।५२।
पिताने पुत्रे कह्युं ब्राह्मण मल्यो पे ब्रह्महत्यारो
भगवद नाम बेवार कहीने कर्यो शुद्ध न्यारो ।५३।
पछे तेह आसने बेसाडीने तेहसुं श्राद्ध कीधुं
अे सांभली कह्युं पिताअे पापी तें अे शुं कीधुं ।५४।
भगवद नाम उपर विश्वास आव्यो न भार
अेक वार कहे कृतार्थ थयो नहीं जे कह्युं बीजी वार ।५५।
तु मारी आगल थकी जा ने रहीस मां द्रष्ट मारी
तुं न होअे मारो पुत्र अेहवी बुध्धी थई तारी ।५६।
अे कहीने श्री मुखथी कह्यो श्लोक अेक कहुं तेह
नामनो स्थीयावती शक्ति पाप निर्दहने हरे अेह ।५७।
पातकी अेटलुं पाप करी सकता नथी ते व्यक्त
जेटली भगवद नाम ने छे बोल्यानी शक्ति ।५८।
त्यां कह्युं छे जे अलौकिक नाम तो लौकिक मुख छे जेह
तेहने केम करी होअे सबंध समाधान कहुं छुं तेह ।५९।
नाम उच्चारने आरंभ अलौकिकता होअे छे मुखने
तेणे मुख नाम उच्चार करे छे सहु वामी दुखने ।६०।
ज्यांहां नामनी अे गति त्यांहां आचार्य प्रगटित सेवा
अे मार्ग स्थिति करीने करे तेनो स्वाद नहीं शक्य केवा ।६१।
अेहवी सेवा रसाधीन थई आदर करी
परम रसात्मिक रूप रसिक महा रस भरी ।६२।
त्यांहां पूर्व आचार्यजी गुंसाईजीनुं प्रागट्य जेह
अे मारग प्रगट करावाने अर्थ प्रगट कर्युं तेह ।६३।
अेहने तो जाणे पोतानी प्रमेय लीला दुरावी सोही
जन शिक्षार्थ सेवा रसे रसाधीन थयुं जोइअे ।६४।
पण श्री प्रभुजीनो प्रागट्य तो लीलाने अर्थ नित्य
ते अहीं राजे जन शिक्षा पद कह्युं तेनुं शुं निमित्य ।६५।
अने साथेथी आप सेवा रसे स्वाधीन थइने पोते
सेवा करे तेहनुं कारण शुं अे सिध्धांत जोते ।६६।
तेह कह्युं प्रभु प्रतापैक स्व मनोरथे भक्त हेत
भूतल मध्ये पधार्या कारण करी संकेत ।६७।
आचार्य प्रगटित सर्व पदार्थ भोग काज
अतिसे गंभीर रचना करी करी सुखद साज ।२६८।

त्यांहां प्रथम सेवा सुख पामी आदरसुं आदरी पोते
तेहनो अेह आसय श्री आचार्यजी द्वारा जोते ।२६९।
सेवा मारग महा रसाल केवल अे आनंद मइ
अने सुखदायक जे मध्ये विविध रस स्वाद लइ ।७०।
अेवो अनुपम रस जाणी अनुभवने प्रगट कराव्यो
तेहनी द्रढ पुष्टताने अर्थ अति मन भाव्यो ।७१।
तेनी करवी प्रति पालण पोते उत्साह करी
आदर्या विना द्रढ थाअे नहीं सेवा महा रस भरी ।७२।
बीजुं कारण सेवा रस अभिरामीअे सेवा विषे अे
परम प्रियत्व देखाडीयुं अेह मिशे अे ।७३।
सेवा करण आवश्यक स्वमार्गनुं निज तत्व भर्युं अे
हेत भूत सर्वतोधिक कारण अे प्रगट कर्युं अे ।७४।
सेवा करणने विषे वचन न साध्य ते निराकरण करीने अे
कृत्य साध्य केवल प्रमाण्युं महा जाण मन धरीने अे ।७५।
त्रीजुं कारण सेवक्ताअे सेवा प्रमाणे प्रमाणी
प्रभु पोतानुं प्रमेय महातम दुरावे छे जाणी ।७६।
प्रमेय दुराव्या विना सवा रसनो आस्वाद नहीं
माटे लीलानी रसालता अर्थ सत्य संकल्पे मन लही ।७७।
सर्वात्मभावे स्नेह रीते तदैक्य थई अेक चित
श्री गुंसाईजीना मननी अनुवृते अनेक समाज सहित ।७८।
सेवा रस लीला रसे रसाधीन थई लीला ओटे
भक्तने दासत्व दइ दान अभिलाषीत मन मोटे ।७९।
परम महा पुष्ट अंतरंग लीला करे छे ते अहीं
ओट विनु पुष्ट लीलानो रस सिंधु होअे ते नहीं ।८०।
रूप लीला जे बाहाज्य रमण ते प्रगट करे जो पोते
रस शास्त्र ने लोक विरूध्ध पडे ओटे करे अेह जोते ।८१।
रसशास्त्र विहित छे जार जार रस दुर्यो सोहे
अेणे कारणे मन कर्म वचने करीने सेवाअे मोहे ।८२।
चोथुं महातमे भक्तसुं लीला करता रस पुष्ट नोहे
पुष्टी लीला ते स्नेहात्मीक लौकिक भावे होअे ।८३।
अलौकिक तहां नहीं स्नेह लौकिक तहां होअे स्नेह
श्रीजीअे श्री मुखथी ते बहुवार करी कह्युं अे ।८४।
महातम सहित जो होअे तेहने सूख स्नेह लहीअे
महातम रहित स्नेह होअे तेहने स्नेह सरस कहीअे ।८५।
माटे मनिस्य नाते स्नेह पुष्ट ने लौकिक तणे भावे
मुक्ष रस अनुभवार्थ प्रमेय महातम दुरावे ।२८६।

अने पांचमुं कारण अेह जे जगतना हितने अर्थ
भगवत कारण विषे ते करी पोते सामर्थ ।२८७।
भगवद आविर्भाव वस्तु अंगीकार द्रढ धरीने
भगवदीने भगवदाकार विषे ते स्नेह करीने ।८८।
भगवद आविर्भावे सर्वथा सद्य अनुभव ते होअे
अेवने भगवद आविर्भाव स्थल ते समजे न कोअे ।८९।
सिध्धांत मुक्तावलीअे लख्युं फलीतारथ थाअे त्यारे
पोते स्नेहे करी सर्वदा सर्व आदरे ज्यारे ।९०।
माटे जगतनुं हित विचारी कृतारथताने अर्थ
प्रमाणे सेवा ते प्रमाणी प्रमेय बल तणे सामर्थ ।९१।
छठुं कारण जे स्व सबंघणी वस्तु सेवाने जोग्य
देश परदेशे समर्पे छे तेह आणवा भोग ।९२।
अंगीकृत सृष्टीने सेवा स्थापन कर्युं सुद्रढ करी
श्री पादुका पत्र आदि देइ आप्या करूणा भरी ।९३।
सातमुं कारण अेह जे जेहने प्रमेय स्वरूप
लीलानो अधिकार नहीं दातव्य अे रस अनूप ।९४।
अे प्रकार जोइने अे स्वरूप अलगा थाअे ते लग्न
प्रमेयने प्रगट अनुसरे नहीं प्रमाणे होअे मग्न ।९५।
हवे आठमुं कारण कहुं जेमां छे सूचन सार
श्री अंग प्रगटितने अंगीकृत करवानो जे छे प्रकार ।९६।
ते जे श्रीअंग प्रगटित सृष्टी मध्येनो अेक समाज
न्यारो हतो मानाभिमानथी रस तारतम्य काज ।९७।
ते दुष्टने संगे प्रभुने विसरी गयो हतो जेह
तेहनो संग समान विनु न छूटे तेह जेम रस समाये ।९८।
वस्तुने पोषण वस्तुत्वे वस्तु पूरण थाय
जेम सुवर्णमां सुवर्ण मले अने रसमां रस समाय ।९९।
तेम स्वजाति पोषण स्वजातिनुं माटे ते दैवी सृष्टी
दैवीने संगे संबंध करी अेकत्र करी अमीष्ट ।३००।
दुष्टनो संग छोडवानेप्रगटी जे श्रीअंग
ते सृष्टीनो भावनाअे करी निरोध करवा संग ।१।
पोते सेवादिक करे छे ते मनमां धरीने
जे स्वरूपांतर कार्यने अनुसंधाने करी ने ।२।
पोते विषे निरोध थाअे नहीं अन्य अनुसंधान करी
व्यासंगता गंघणी सेवा द्वारा दूर करी ।३।
पोताने विषे जे स्वरूप उपयोगनी सृष्टी सार
निरोधे छे भाव सहित अेम भक्तने वारंवार ।३०४।

अे सुखद सेवानुं कृत्य सीखवा जे छे रसना पात्र
तेहने हास्य कौतिक गोप्य उपजे जोइ रस चरित्र मात्र ।३०५।
अेहवा अनंत कारण माटे प्रमेय रसने ते गोपन करीने
पोते साथे सेवा रस लीला करे आनंद रस भरीने ।६।
ते गोपन प्रकार प्रसंग कहुं हवे कांइ विसद करी
जे राजनी ते स्नेह जुते सेवा करे रस भरी ।७।
त्यांहां सेवा मंदिर अनुसंधान ज्युत प्रतिक्षणु वारंवार
रात्रे जोवाने पधारे छे रसिक जीवन आधार ।८।
अभिसारणीओनी आस पूरक भीतरना ते काज
गूढ गोपनीय अनेक करे करीने बहु साज ।९।
ईश्वर सत्य संकल्पनुं कृत्य सर्व ते सत्य
ते सेवा मध्ये अेणी भांत तत्पर रहे हेत निमित्य ।१०।
जाणे रखे को बीजे करी सके अेम सेवा करे आप
श्री गुंसाईजीना अंतरगति तणो हरे ते परीताप ।११।
अने ज्यारे आंधी मेह होये त्यारे पोते पधारीने
काज करे त्यां सर्व अेकांत मन वधारीने ।१२।
पोहोरूआने कही राखे जे मेह आंधी जो आवे
नेकुं संभावना जानीके वेगे मोहीकुं सुनावे ।१३।
पोहोरूओ कहे अेटला वचे श्री गुंसाईजीथी पहेलां
पधारीने ते पोंहोंची रहे आगल थकी वहेला ।१४।
फरी फरता श्री गुंसाईजी मिले आंगण मांहां
को समय जगमोहन मांहां मिले त्यारे पूछे छे त्यांहां ।१५।
अे कोण श्री वल्लभ अेहज नाम लइ बोले अहीं
अेहज हसे अेणी वेळा बीजो तो को हशे नहींय ।१६।
बाबा तुम काहेकुं उठत हो तुम क्यों न पोढो सुखसुं
अे काज तो हम करत हे वात्सल्ये बोले सुखसुं ।१७।
पण मनमां अद्‌भुत प्रसन्न ने मोद पामे ते घणो
हरख उच्चार हरीवंशजीने कहे तेह तणो अे ।१८।
श्री वल्लभ मोहेथे अधिक बोहोत सावधान
अेहनो आसय हरिवंसजीने कहे तुं सावधान ।१९।
श्री वल्लभ मोहेथे अधिक अेम कहीने सुणाव्युं
स्वकीयने ज्ञापन अर्थ उत्कर्ष अेहोनुं जणाव्युं ।२०।
अने अे उत्कर्ष आधिक्यनी वात श्रीमुखे कही
समय समय सनमुखे रही भाग्यवाने ते लही ।२१।
अेकवार राजद्वार सबंधी कांइ अेक प्रगट्यो मतोअे
असाधारण उपद्रव तेह समय उठयो हतो अे ।३२२।

ते श्रीजीना वचन बलने प्रतापे हवो अेम प्रसंग
जेम वाये वादळ थाअे दूर तेम अे गयो थई भंग ।३२३।
ठामठामे ठाकोरजीनो जस बोलाये ते अेह
त्यारे रतनजीभाईअे श्रीजीने विनती करी कह्युं अेह ।२४।
राजश्रीने प्रतापे थयुं सर्व कहे अेणे समय
नहीं तो अेहवी वात टालवानी क्यारे अे नहोती क्यमय ।२५।
त्यारे पोते कह्युं हां हां यों होयगो श्री गुंसाईजीको
प्रताप अेसोइ हे प्रगट अति सुखद सर्वदा नीको ।२६।
श्री गुंसाईजीने सर्वत्र अेह संसार मांहीं
मेरोइ जस प्रगट करीवेते कछु राख्यो नांहीं ।२७।
आपथे मोहेकुं अधिक कीयो मेरो सब मानी लीनो
नहींतो ओर सबहुंते ये वाहीकुं क्यों न कीनो ।२८।
अेहवुं सर्वतोधिक मूल स्वरूप ते श्री गुंसाईजी संग
सेवा रस लीला करे छे ते प्रतिक्षण अधिक रंग ।२९।
अने अेणे प्रकारे बहु वार पधारे नाथजीद्वार
पिता ने पुत्र बेहु संग त्यांहां करे ते बहु प्रकार ।३०।
विशेष भाव जुत भोग रागे भरी करे सेवा
अेमांहें कारण ते अनेक छे स्वकीयने सुख देवा ।३१।
अे विशेषतामां स्वरूप मार्गीने तारतम्य ज्ञापन कीधुं
हवे प्रमेय गोपन स्वकीय विश्वास हित जेम सहु कारज सीधुं ।३२।
अनुभाव प्रगटी करणे ते अनुभव प्रगट करी
अे मांहें छे कारण अनेक ते कहुं कांइ चित धरी ।३३।
प्रभुनुं लेइ नाम जे को कहे स्वकीय जोइ अे प्रमाण्युं
प्रमाण निसंदेह करवाने अेह मन मांहां आण्युं ।३४।
श्रीनाथजीना अनेक भांत्यना अनुभाव प्रगट करे
अनुभव मांहेनी सृष्टि ते अनुभावे अनुसरे ।३५।
को समय को सेवकने कहे गुंसाईजीसुं कहो आवे
अमुक वस्तु ओर अमुक पकवानकी इच्छा हे वेग लावे ।३६।
ते सर्व श्री गुंसाईजी आज्ञाने प्रमाणी
सर्व सामग्री लइ जाय ते आप मनमां जाणी ।३७।
अेकवार श्री गुंसाईजी सेवामां भीतर राजभोग
देवजी बबुरीअे आवी कह्युं हतो अेहवो संयोग ।३८।
श्री नाथजी वहां ठाडे हैं अरू तुम पे मांगत हे खीर
श्री गुंसाईजी विवस थया घणुं रह्युं ते नहीं धीर ।३९।
त्यांहां पधारीने अेणे स्थले भोग समर्प्यो आवी
अेहवा अनुभव देवजी द्वारा अे छे अति घणा भावी ।३४०।

ते देवजीथी अेकवार गीतगोविंदनी पोथी
तेहनुं पत्र फाटयुं ते श्री गुंसाईजी खीज्या पोतेथी ।३४१।
भगवद जस स्वरूपात्मीक वाको ते फांटयो पत्र
ताते गोवरधन मति रहे जाय रहे कछु अन्यत्र ।४२।
श्री गुंसाईजीनुं वचन प्रमाणी अेणे ते चढाव्युं शीषे
रात्र जइ पेठे रहे दर्शन करे आवी दिवसे ।४३।
अपराधना दंड दीधा तणो अेह आसय
प्राये अेहने सानुभाव विषे अनुभाव भासे ।४४।
अने श्री गुंसाईजीने सहु जीवनी रक्षा करवी
अपराध अभिमान बाधक बेहु दंड दइ चिंता हरवी ।४५।
अे देवजी घणा अनुभाव कहे ते गुंसाईजीने आवी
तेह मांहांन्युन अधिक अक्षर कहेवायो हसे ते सुभावी ।४६।
तेहना अपराधनो दंड देइने दोष सहु दूर कीधो
अेणे प्रकारे करी शुध्ध ने गुण सहु मानी लीधो ।४७।
वली आगल स्वकीयने शिक्षा अर्थ प्रगट कीधुं
अेहना कारण जणावा थकी अग्रम कांज सीधुं ।४८।
स्वप्न मांहें वां सांप्रत्य श्री प्रभुनुं लेइ नाम
न्युन अधिक वचन कहे तेहने नहीं ठाम ।४९।
जेको स्वरूप जसनी अविज्ञा करे मूढ अज्ञानी कोअे
तेहने स्वरूपसुं होअे अंतराय के फलमां विलंब होअे ।५०।
अेक वार अेक नरसिंघदासने नाथजीअे कह्युं अेह
घीअ बूरा ओरकोरो वडा नीके लागत हे तेह ।५१।
त्यारे तेणे कह्युं राज मारे तो अेटली संपति नहीं
पण कहो तो सहु अे करावुं श्री गुंसाईजीने ते कही ।५२।
कह्युं में तो कह्यो हे उहांहीं कहायवेके निमित
श्री गुंसाईजीअे भोग ते सर्वदा चालतो कर्यो नित्य ।५३।
वली को समय श्री गुंसाईजीने आप अनुभव होअे
अेकवार सृंगार समय अचानक समजे न कोअे ।५४।
श्रीजीअे कह्युं त्यांहां जइअे सिध्ध कर्यो रहेवाल घोडा
ठाकुर द्वार पधारीअे ते वेगे थई ने सजोडा ।५५।
भंडारीने आज्ञा करी जे चावल वडी दीजो
खवासने कह्युं अे सामग्री तुम अपने साथ लीजो ।५६।
आवी पहोंच्या ठाकुर द्वार ते अण अवसरने समय
पिता पुत्रे कीधो ते विश्राम पण निद्रा आवे न केमे ।५७।
रंचक नेत्र मल्या श्री गुंसाईजीना कारण काज
त्यारे निद्रामां नाथजीअे कह्युं में तो भूख्यो हुं आज ।३५८।

सद्य उठया श्रीजीने कह्युं कछु लीनो हे साथ
जीनवा चावल अरू वडी दीनी खवास हाथ ।३५९।
प्रसन्न थई अने श्री गुंसाईजी बोल्या बाबा मन धरीओ
उपर जायके वेग ही पाक सब सिध्ध करीओ ।६०।
जईने वडी घी मांहें ते प्रथम मूंजी लीधी
वलती चावलमां भेलीने भात ने वडी कीधी ।६१।
उथापन करी अने भोग समर्प्यो ते मन भावी
भोग समर्पीने त्यांहां तिबारी मांहां बेठा आवी ।६२।
भीतरीआ जलधरीआ परचारक रसोइआ जेह
पासे बेठा सहु आवी गुंसाईजीओ पूछयुं अेह ।६३।
आज कहा हतो रे नाथजी आरोगे नहीं राजभोग
कछु अपवित्र भयो हतो कोन बन्यो संजोग ।६४।
भाउ भीतरीओ कह्युं महाराज अपवित्र हतुं नांहीं
राजे बांधी छे मर्याद तेणी भांते थाओ छे अहीं ।६५।
पण थाल लेइ जाता कृष्णदास अधिकारीनी दासी आवी
तेहनी द्रष्टि अे थाल उपर ते पडी सुभावी ।६६।
त्यारे श्री गुंसाईजी अेम कह्युं तुम जानत अेसे
ठाकुर हमारे कहुं द्रष्टी पडी वस्तु आरोगे केसे ।६७।
आज्ञा दीधी राजभोगकी सामग्री करो वेगे
फिरीके भोग समर्पो जेसे होत नित्य नेगे ।६८।
वडी भातनो भोग सरावीने ते लेइ अलगो कीधो
ते मांहेथी बे डबरा भरी श्रीजीओ आप लीधो ।६९।
पर्वतथी उतरता श्री गुंसाईजीओ दीठा ज्यारे
बाबा इतनो काहेकुं लीओ अेम बोल्या ते त्यारे ।७०।
पिता वाक्य स्थापन करी अेम कह्युं तब अटकर न पाइ
वलती बेउ थाल पूरीने भोजन करे सुखदाइ ।७१।
हंसी हंसी स्वाद सराही सराही भोजन करे छे
डबरामांथी पोते लेइ श्रीजीनी थाले धरे छे ।७२।
आरोगी रही कह्युं यामों स्वाद पाये जु केते
पहेले तो बोहोत जान्यो हतो पे होतो तो ओर लेते ।७३।
स्वाद तो अेसो भयो जु अेसो भयो नहीं कबहुं
लीओ तो बोहोत ओर बोहोत सो लीओ जानत न अबहुं ।७४।
अेसी मीठी सोज जो कहा कहुं अेसी अबलों न देखी
सर्वे मिठाइ समोह ज्यांहां अेकत्र करी विशेखी ।७५।
अेक जोग मीठो भोग मीठो वली मीठो समय साज
कर्ता मीठो मीठा कर घणुं मीठुं कारण ने काज ।३७६।

पोते मीठा मीठा भात ने भाव मीठा ते बहु

मान मीठुं मीठी महानस मीठी मीठास सहु ।३७७।

अे मिठासनुं आश्चर्य शुं ज्यांहां समोह मीठासनो अे

श्री गुंसाईजीने हर्ष घणो प्रिय पुत्रना पासनो अे ।७८।

अेवडी मिठास अेकत्र ते मले नहीं बीजे कहींय

जे मिठाई श्री महाराज पास ते वचने कही आवे नहीं ।७९।

अे मिठाई सर्वनो स्वाद ते पाने करी पामीअे अे

अनुभवे होअे आनंद ते मने मन जाणीये अे ।८०।

अेहवा सानुभाव अनेक प्रगट करे घणुं ते वैश्नव द्वार

जे सर्व प्रसिध्ध जाणे ने भक्तनो आणे भार ।८१।

अेक वार जाट जलभरीओ मोहनदास नाम ज्यांहां

विरक्त अेकाकी अे आप ने सुअे नित्य खरिक मांहां ।८२।

श्रीनाथजी तेहने पासे स्वप्नमां सुता आवी

अेणे कह्युं भिया तुं कोण वैश्नव हे अेहवुं सुभावी ।८३।

त्यारे नाथजीअे कह्युं उपर जाडो लागत हे मोहेकुं

ताते में आय सोयो इहां अरू वात कहेत तोहेकुं ।८४।

त्यारे अेहने पहेचान्या ने जाग्यो अे सद्य ज्यारे

श्री गुंसाईजीने अेह वृतांत ते सर्व जइ कह्युं त्यारे ।८५।

श्री गुंसाईजी उपर जइ सुपेती ओढाडी सद्य

रूतु विषे सेवा सावधान रहेवुं अे जणाव्युं गद्य ।८६।

अेमज अेक वार नाथजीअे मोहनदासने आज्ञा दीधी

श्री गुंसाईजीसुं कहे जो सेज्या मंदिर मेरे लीअे करे सिध्ध ।८७।

तेणे आवीने कह्युं त्यारे श्री गुंसाईजी हांसी कीधी

हमारो बोहोत सौकर्य विचारीके आज्ञा दीधी ।८८।

भंडारमों तो संकोच अरू आज्ञातो दीनी अेसी

आज्ञा तो यहु करी चहिये देखीअे बने केसी ।८९।

अेणे समय इच्छा अेहवी जेह असौकर्य भंडार तणुअे

श्री गुंसाईजी तो महा उदार ने दान आपे ते घणुं अे ।९०।

अेक ब्राह्मणने रूपैयो कह्यो ने अधेली अपावी

तेणे भंडारीनो दोष काढी गुंसाईजीने कह्युं आवी ।९१।

श्री गुंसाईजीअे हाथनो फेरूवो सद्य आप्यो उतारी

ते सांभळीने तेहो पास गया रूपैयो लेइ भंडारी ।९२।

कह्युं रूपैयो लइने मुद्रिका अमने तुं आप फरी

श्री गुंसाईजीअे सांभळीने कह्युं लीजिअे केम करी ।९३।

हवे केम लीधी अे जाय जो मुद्रिका अेहनी कीधी

पछे मोल करी द्रव्य आप्युं भंडारीअे पाछी लीधी ।३९४।

अेम दान नित्य अपरमित होअे भंडारी करे सोच
उक्ताअे मनमां अति घणुं भंडारनो जोइ संकोच ।३९५।
अेक दिवसे श्री गुंसाईजीने कह्युं दक्षण हुं चालु छुं राज
पूछयुं काहेकुं चलत हे भंडार हित द्रव्य काज ।९६।
संकोच द्रव्यनो घणो ने खर्च ते अनंत थाअे
तेहनो सोच मनमां ने राजने कह्युं न जाअे ।९७।
अे सांभली रात्रे तेडाव्यो भंडारी पोताने नेरे
कह्युं वा पावडा लेके तुं आव अकेलोइ संग मेरे ।९८।
जसोदा घाटथी दक्षिण दिशे देखाडयुं चरण धरी
स्थल बताव्यो कह्युं खोद तुं अहीं अे पावडे करी ।९९।
पावडा वैचार मारता निसरी महा निध्ध
ते जोइ भंडारी प्रसन्न थयो देखी सांप्रत्य सिध्ध ।४००।
भंडारी पास ते उपरे वलती रेती नखावी
चांपाभाईने कह्युं कारण गुंसाईजीअे घेर आवी ।१।
तुं इतनो काहेकुं करत हे लक्ष्मी तो ठाकुरके चरण
लोटत हे अरू लोटत नहीं पावत याही शरण ।२।
अे सांभळीने भंडारी घणुं प्रसन्न थयो ते अहीं
सवारे जइने जोयुं तो त्यांहां कांइ दीठुं नहीं ।३।
अे वात श्रीमुखे कही अने वली अेक कही बीजी
अे सांभली भक्त सहु कोअे ते मनमां रह्या भींजी ।४।
अेक वेर अडेलमों अेकने द्रव्य पठाव्यो इंहांही
सो गंगा के पार रहीके विनती इहां कहे पठाइ ।५।
श्री गुंसाईजी आयके आप करे द्रव्यको अंगीकार
तब हम यहुं द्रव्यकुं सोंपीके आवे गंगा पार ।६।
तब हरिवंशने आय के वेगीही सूरती दीनी
अण अवसर भअे विना गुंसाईजीसों विनती कीनी ।७।
राज अबही चलो वेग गुंसाईजी खुणसाअे मन
सद्य सेवा छोडी चले राख्यो इनको वचन ।८।
बेठीके नाव गंगामां ज्यांहां गंभीर वारी
थेली उठाअे उठाअे गुंसाईजीने मध्य डारी ।९।
तब हरिवंशने कह्यो अे कहा करत हो थई दिन
तब कह्यो द्रव्य आधीन के द्रव्यके हे हम आधीन ।१०।
जे तुम आयके सेवामां मेरो मन विग्न कीनो
अे कही अने श्रीजीअे कह्युं द्रव्य तो हे अधीनो ।११।
पावन सेती धकेले ओर फिरी फिरी लागे पाउं
अे पोतानी पूरणतानो कह्यो प्रागट्यनो प्रभाव ।४१२।

पण अेणे समय जे भंडारे असौकर्जनो जे आशे

संकोचनुं जे कारण छे ते सर्व आगल कहेवाशे ।४१३।

हवे पाछलो कहुं प्रसंग ते सांभलजो चित धरीने

आग्या उपर श्री गुंसाईजीअे द्रव्य उधार करीने ।१४।

सवंत १६३० ते सेज्यानुं मंदिर कराव्युं

पछे को अेक दिवसे जगमोहन करी ने मन भाव्युं ।१५।

श्रीजी पोते ते व्योत समरावता मिशे श्रीजीद्वार ज्यांहां

अधिष्टाता थई काज करावतवाने रह्या त्यांहां ।१६।

अे श्रीमुखथी कही वात ते सहु कोअे सुख पायो

जब श्री गुंसाईजीने नाथजीको जगमोहन करायो ।१७।

तब मंदिर के लीअे काज पर बहुत दिन रह्यो मेंइ

अरू सिरीआने जो मसालो कह्यो लिख्यो तेइ ।१८।

जो लिख्यो सोतो योंही रह्यो मसाली लाग्यो दूनो

जो चहीअे सो सिद्ध कीओ कछु नेक रह्यो नहीं उनो ।१९।

तब सिरियाराजे कह्यो कहोतो अे काज बतावासों कीजे

कहो तो सोने बराबर करूं तेसी मोंहे आज्ञा दीजे ।२०।

तबे में कह्यो सोनेकी कहा चली उतीम कीजे सोइ

सो अेसो भयो जु अेसो जगमोहन नांहीं कोइ ।२१।

चुणावटकुं मजूर आवे सो सब कोअे पूरवीया आवे

दिवसकुं तो मजुरी करे रात वसंत गावे ।२२।

तेसे डफ झांझ बाजे अरू तेसे वे आप गावे

तेसे मुखचंगकी भांत्य अरू वीच मुरली बजावे ।२३।

अपनी अटारी पर सुनीअे हम संपूर्ण रात गावे

उनको प्रकार कछु भिन्न हे ओर सुन्यो न भावे ।२४।

वसंतको गायवोतो पूरबीया सम ओर नांहीं

अे वात श्रीमुखथी कही अने बीजी कही उलट मांढी ।२५।

शाहाजादपोरना माधवदास छीपानी कही वात

विद्याना उतकर्षनी मंदिर विसइक जे भांत ।२६।

श्रीनाथजीको जेह समय मंदिर सिध्ध भयो जबही

सोमा जोशीकुं महुरत श्री गुंसाईजीने पूछो तबही ।२७।

सोमो जोशीअे विचारीके उतम महुरत दीनो

तब माधवदासे वे देखीके कह्यो अे कहा कीनो ।२८।

महुरत मांहे बहुत दोष हे सहसा कोन माने

अेसी फिरी वाहीकुं पूछीओ जेसे मोहेकुं न जाने ।२९।

तब जोतशीसुं कह्यो मुहुर्तमों कोउ काढत हे दोष

अे सुनीके सतरायो अरू मनमां कीओ रोष ।४३०।

अेसे को जो मोर दिने महुरतमां दोष जान्यो
फेरी के लगन विचारीके आपको दोष मान्यो ।४३१।
अस कोन हे जिन यहु दोष जान्यो सो कोन हे इहाही
तब श्री गुंसाईजीने वाहे दिखायो ले सेन मांहीं ।३२।
तब उनकुं कीनो नमस्कार गुंसाईजीने वरज्यो तबही
कह्युं शुद्र हे को हे छीपा हे वैश्नव भयो हे अबही ।३३।
होउ जरथे करीआकरे तिन ते कहां न होअे
अे हास्य करी अने श्रीमुखथी कह्युं प्रसन्न थया सर्व कोअे ।३४।
अे मंदिरको तो आरंभ आचार्यजीके आगे लीनो
पूरणमलने जब आज्ञा ले सिध्ध कीनो ।३५।
मुहुरत कीनो गुंसाईजीने अडेलथी आअे पाछे
जगमोहन अरू सेन मंदिर गुंसाईजीने कीओ आछे ।३६।
अे सर्व में लख्युं छे श्रीमुख वचन तणे प्रमाणे
अज्ञातथी अे अज्ञात पण अनुभवी सर्व जाणे ।३७।
अेणे प्रकारे मारग रक्षक मारगना रसीला
प्रमेय दुरावी जन शिक्षा अर्थने सात्विक करे लीला ।३८।
जेणे करी यथारथ स्वरूप ज्ञापन केहेने नहोअे
अंतरंग विन अेह स्वरूप सम्यक समजे न कोअे ।३९।
अे प्रमाणत्वे सानुभाव लीलानो कर्यो अंगीकार
प्रमाणे प्रतीत उपजावी जेहनो प्रमेये नहीं अधिकार ।४०।
अे द्रढ ओट अेहवी करी जे जेहने को जाणे न लेश
पोताना रस लगी भीतर को न करे प्रवेश ।४१।
तेथी सर्वको त्यांहां ज आसक्त थाअे छे ते रही अहीं
पण प्रमेय विशे प्रवेश को करी सके ते नहीं ।४२।
माटे सानुभावनो अंगीकार करीने मन भाव्युं
आदर करीने वेगे थई सेन मंदिर कराव्युं ।४३।
त्यांहां द्रव्य संकोचना कारणनो ते कह्यो प्रकार
अने प्रथमे वात्सल्य तद अनुकर्ण गूढ आसय अपार ।४४।
उत्कर्ष सहित सार कह्युं सेवा रस रसाधीन
जग विदित करे छे ते प्रयोजन कह्युं भिन्न भिन्न ।४५।
आगले मांगल्ये कह्युं आगलनो प्रकार
मारग द्रढतानुं हेत ने मांहे कारण अपार ।४४६।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्‌भुत विचित्र रस व्याराना गोपालदास विरचित स्नेह बोधक, सेवा सिध्धांत, वात्सल्य सबंध अने रस अंगीकृत उत्कर्ष लीला वर्णनो नाम

।। मांगल्य २७ मुं संपूर्णम् ।।

मांगल्य – २८ – अठ्ठावीसमुं

राग : ''वडनगरने नीकट पोहोता थयुं सहुने जाण'' अेम गवाशे।

श्री गोकुल अचल निवास करी कह्यो जेह प्रकार
सानुभावनो आदर करी ने कर्यो अंगीकार ।१।
अग्नि कुमारे वात्सल्य कर्या अनेक
प्रमेय गोपन लीला करी ते कही करी विवेक ।२।
सेन मंदिर कराव्युं नाथजीनुं अति सार
पाछले मांगल्ये करी कीधो छे विस्तार ।३।
हवे कहुं धर्म चरित्र ते अेमज अेणे प्रकार
पिता वचन अनुकूलथी संग लीला करे सार ।४।
मारगनी द्रढता हित आरत रहे अहो रात्र
लक्ष रहे गोवरधन उपर नाना भांत ।५।
को समय उठी पधारे अचानक मन रंग
ज्यारे पधारे त्यारे पिता पुत्र होअे संग ।६।
अेक समय श्री द्वार पधार्या आव्या पार
पारना खरिक मांहेंथी अश्वे थया अस्वार ।७।
श्री गुंसाईजीअे आरंभी अनुभव केरी वात
परम गोप्य महा गूढनी श्रीजीसुं नाना भांत ।८।
आरंभ मांहां अचानक ते समे अेके संग
श्रीजीना अस्व तणा त्यांहां छूटी गया बेहु तंग ।९।
श्रीजी दुतंगे घोडे चढे सदा निरंतर अेह
असावधानी अस्वक तेणीअे छूटया तंग जेह ।१०।
अे तो ईश्वर सद वस्तुनो भोगी रसिकवर राय
थोभे तो वारतानो रस रसाभास थई जाय ।११।
थोभ्या नहीं श्री गुंसाईजीनी वारताना रस मांहे
द्रढ आसनी आसन द्रढे राखीने चाल्या त्यांह ।१२।
चाबुक स्वार शिरोमणी चार कोस पर्यंत
राग बले न पलाण खस्युं अेहवा साधकवंत ।१३।
अेहवो वात तणो रस लुब्धक प्रगट करण पित्रु भक्त
असवारी विन आनोरे पोंहोंच्या अति अनुरक्त ।१४।
थनवारनुं हित विचारी श्री गुंसाईजीने कह्युं मन भाये
तुम पधारो आगे ते में पोहोंचत हुं आये ।१५।
परम दयाले विचार्युं दुःखासे गुंसाईजीनुं मन
अस्व रक्षकने अनिष्ट जे थासे सद्य संपन्न ।१६।

श्री गुंसाईजी पधार्या पछी थनवारने तेडया पास
बेहु रकेव ग्रहावीने उतर्या सुखरास ।१७।
देखीओरे दोउ तंग छूटे जबते भये असवार
मुसकनी मधुर वचन कह्युं रीस करी न लगार ।१८।
आनंद रूप स्वरूपने क्रोध होये नहीं लेश
आनंदनो आलय अति सदा प्रसन्न वरेस ।१९।
स्वकीयने शिक्षा हित कारक जणावे जेत
तेह मंदिर समीपे लइ बोल्या न मन धरी हेत ।२०।
पाछेथी पोते पधार्या हरवाने परीताप
सेवानो रस अनुभव करीने करवाव्यो आप ।२१।
अने मारग प्रणीत ओच्छव करे अनुसंधान रहित
रसावेस थई तदपर तेहना रूप सहित ।२२।
मन सर्व विस्मारक ते अहेलादनुं धाम
सर्वतोधिक मारगमां अे उत्सव सुख नाम ।२३।
मुक्ष उत्सव ते प्रागट्य समय प्रगट कर्यो महाराज
पोताना प्रागट्यनो ते उत्साह जणावा काज ।२४।
जन्माष्टमीनो उत्सव करे पोते करी उत्साह
महा प्रागट्य उत्सव तणो अेणी पेरे करी उमाह ।२५।
अेहवा भाव प्रगट हवा करे पोते जेह
श्रीजीअे श्रीमुखथी कह्युं छे प्रगट करूं छुं तेह ।२६।
जन्माष्टमीकुं श्री गुंसाईजी उत्सव करे ते वार
को को समे सो उंहा करे श्री ठाकुरके द्वार ।२७।
पहेले कीर्तन होअे सो मंदिर भीतर होअे
प्रागट्य भये पाछे नंद उत्सव करे सर्व कोअे ।२८।
बडे कुआकुं पास लींब तले करी बहु साज
सिध्ध होअे सामग्री सब उत्सवके काज ।२९।
जसोदाजीको ओर नंदरायको वेस
बहु भांत्य करी सृंगार धरावे परम सुदेस ।३०।
गोपी ग्वाल संभारे अने वाद्य सहु गान
खेल बोहोत रंग बाढे विप्रने दीधुं दान ।३१।
तब लों खेल होअे ओर अति बाढे रस रास
उपर अन अवसर करीके आवे हे रामदास ।३२।
पोहोर डेढ चढे तेलों होअे उत्सव गान
भोजनकुं घर आइये रूद्र कुंड करी स्नान ।३३।
दधी छीरके इतनो घुटणलों होअे कीच
तोऊ घडा दधीको कितने रहेते घर बीच ।३४।

कितनो दधी हमारे घरहीको तो होअे
कितनो आसपास गांमनसों लावे सब कोय ।३५।
गोधन जमुनावत गांठोली अे सब गाम
नौतन वस्तु लेइ आवे ते पहेले येही हुं ठाम ।३६।
गाय व्याअे अरू वलोवे तब जब लावे दूध
गांठोलीके गौअेहुंते अेसे मनके शुध्ध ।३७।
उत्सवकुं तो सबे मिली सर्वथा आवे अहीं
उनकुं हम नंद उत्सवके दिन भरते दहीं ।३८।
अेक वेर उंहां को मलेछ अेक ठाडो आयो
पे में दंही भर्यो गुंसाईजीने देख्यो याहे ।३९।
कह्यो कोन हे जानत हो में कह्यो जानत नांहें
पे इंहां ठाडो देखीके भर्यो उत्सव मांहें ।४०।
गुंसाईजीअे कह्यो मलेछ पे उत्सवमों कहा भेद
ज्यांहां उत्सव होअे त्यांहां केसो विधी अरू निषेध ।४१।
अेहनो अेहज भाव जे उत्सव होअे ज्यांहां
स्परसास्परश ने पात्रापात्र विचार न त्यांहां ।४२।
पूर्व पक्ष जे ज्यांहां प्रभु स्वत: लीला करे सार
अन्य प्रवेश त्यां केम होअे जेहनो नहीं अधिकार ।४३।
प्रभुअे अे ज्युग अंगीकृत कर्यो माटे थयो वरेस
जुग मर्यादाअे करी कदाचित होअे प्रवेस ।४४।
पण प्रभु श्री हस्तनी छींट जे केवल चैतन्य रूप
ते उपर तो पडे नहीं अेहवी छींट अनूप ।४५।
अेहनुं समाधान जे जात असुर छे तेह
पण कोइ अेक दैवी जीव छे असुर जीवनो ते अेह ।४६।
अपराधने भोगे करी अवतर्यो आसुरी मांहें
उत्सव मिसे छिरकीने कृतारथ कीधो त्यांहां ।४७।
त्यांहां पूर्व पक्ष अेक उपज्यो अे दैवी होअे
तो पिता पुत्र सत्य वक्ता छे मिथ्या केम कहे सोअे ।४८।
श्रीजी जानत नहीं वचन अेह केही पेरे कहे तेह
गुंसाईजी जाणे तो पूछे नहीं कृतार्थ केम थयो अेह ।४९।
त्यांहां कहुं छुं ईश्वरनो आसय छे गूढ
ते कारणमां तुं कांइ समज्यो नहीं महा मूढ ।५०।
प्रभु मनुष्य नाट्य लीला करे माटे थई अज्ञान
उतर दीधो कारणे ते तुंहने नहीं ज्ञान ।५१।
त्यांहां प्रमाण मार्गी धर्मशील उभो बहु साथ
मर्यादाने अर्थे रक्षा करवी नाथ ।५२।

तेणे कारणे पूछयुं प्रगट करी तेणी वार
पूर्व पक्षनो उतर जाण अे निरधार ।५३।

श्री गुंसाईजी तेहने भाग्ये भर्यो जोइ हरख्या मन
पूर्वनी पहेचान लइ कह्युं अेह वचन ।५४।

बाबा जानत हो अे कोन हे दैवी अेह
श्रीजीअे कह्यो में जानत नांहीं ठाडो देखी भर्यो तेह ।५५।

ते वर्तमान पक्ष भर्यो नथी तेह
उतर कह्यो प्राचीन पक्ष जानत नहीं अेह ।५६।

प्रबल कर्यो ठाडो हे अेह प्रतिक्ष
सोतो दैवी जीव हे सांप्रत्य अेह समक्ष ।५७।

गुंसाईजीअे कह्युं जे उत्सव त्यांहां विधि निषेध कहा काज
अेहनो आसय उछवस्य रूप अे श्री महाराज ।५८।

तेह करे पोते त्यांहां शुं होअे विधी निषेध
श्रीजीअे कह्युं में जानत नांहीं पात्रापात्रनो भेद ।५९।

शरणागतिने भरूं माटे छिरक्यो अति उत्साहे
तेणे करी तेहने सो रह्यो संदेह कृतारथ मांहें ।६०।

जीवने कृतारथ करवाना छे अनेक प्रकार
पण पुरूषोतम ते स्वरूप बले करीने करे सार ।६१।

स्वरूप बलनुं अे कारण पोतानी कीर्ती प्रताप
लीला चरित्र प्रगट करे विस्तार करवा आप ।६२।

भक्तने ज्ञान अर्थ गुण प्रगट्या जीवन रूप
स्वरूप संवलित रूदया रूढ थवाने परम अनूप ।६३।

नहीं तो इच्छा प्रभावथी शुं छे जे सिध्ध न थाय
पण अन्य प्रकार करे नहीं अे कारण समुदाय ।६४।

स्वरूप बल थकी भक्तने कृपा अधिक जणाय
स्वरूप मार्गी जेह तेने स्वरूपे ज शरण अणाये ।६५।

शुध्ध रसात्मीक पुरूषोतमनुं कारज अेह
करवुं अेज स्वरूप बले अे मांहें निःसंदेह ।६६।

माटे अे स्वरूप जाणी भर्यो भाग्यवान
प्रभुने अज्ञान कांइ नहीं ईश्वर छे सहु जाण ।६७।

जाणे नहीं तो ईश्वर अे नाम थाअे व्यर्थ
श्रीजीअे श्रीमुखथी कह्यो अे नामनो अर्थ ।६८।

अेक समय भाग्यवान भगवदीय सुख रास
रतन जनक विश्नुजीभाई कपडवणजमां वास ।६९।

सुंदरदास तेहनो सुत भाव बले बहु भांत
उध्धव त्रिवाडीने कहे अेक मननी वात ।७०।

मारे मन अेक प्रश्न उपज्युं परम सुदेश
ठाकुरजीना अनेक वैशनव देश परदेश ।७१।
कोउ पांचसे कोस ने कोउ कोस सो सात
गाम गाम सहश्राविधि रहे छे नाना भांत ।७२।
राजस ने को रंक असंख्य वसे छे तहीं
लोक रीते को अेकने ठाकुर जाणे नांहीं ।७३।
गाम दीठा वे अेके जाणे ने चार समाज
ते सहु को प्रभुना करे पोताने घेर काज ।७४।
अनेक प्रकारे ठाकुरनुं स्मरण भजन करे त्यांह
पोताने मले अेकांत कमाड भीडी घर मांहें ।७५।
को अेक भोग समर्पे छे को पंखा बहु पेर
कोअे वात्सल्य बहु करे भाव सहित हित भेर ।७६।
ठाकोर तो अहींया बेठा छे केम आवे सहु भोग
अे सर्वनी सेवा ठाकुरने थाती हशे विनियोग ।७७।
ठाकुरजी जाणता हशे के नहीं अे सहु वात
वलतो त्रवाडीअे उतर दीधो अेणी भांत ।७८।
ठाकुरजी जाणे सहु नहीं केम तेह
वलतो त्रवाडीने उतर अेणीपेरे दीधो तेह ।७९।
लक्षेक वार तमो कहो जदपि सत्य वचन
पण श्रीमुखथी नहिं सांभळ्युं त्यां लगी नावे मन ।८०।
अे त्यां जइ तमे पूछो समय जोइ अेक वार
समाधान थाअे मन तणुं जाण्यो जाअे विचार ।८१।
ते दिवसे जलघरामां बेठा प्राण आधार
संध्यावदन करे ते त्यांहां अेकांत अपार ।८२।
भक्तो निकटवरती जे ते उभा छे पास
पंखो करे छे ते समय भइयो सुंदरदास ।८३।
त्रिवाडी सामु जोइ मुसकाया मन मांहें
कहा हंसत हो अेम कही श्रीजीअे पूछयुं त्यांहां ।८४।
अटींगा अटींगा पूछवा भाईं आना महाराज
सांभलीने हसवुं आवे छे कहेता आवे लाज ।८५।
आज मारे थै आवीने पूछयुं अेणी पेर
सांभलीने श्रीजी बोल्या अतिसय उलट भेर ।८६।
यामों अटींगो कहा रे प्रश्न भलो हे अेह
अरे सुंदर सुनि यामों तुं मति करे संदेह ।८७।
ठाकुर सब जानत हे सब काहुको चित
ईश्वर नाम धरायो हे सोतो याही निमित ।८८।

जो जानत नहीं तो ईश्वर काहेके अेह

घाट बाढ जाने तो ईश्वरतामां पडे संदेह ।८९।

अहीं न्युन कछु नांहीं तु जानी अपने मन

अेह वचन सुणी सेवक मनमां थया प्रसन्न ।९०।

वली अंतरंग अेकांती अनुपम रसनुं द्वार

अंकित लहे प्रभुना मनमां मुदित अपार ।९१।

अेहवा लक्ष्मीदास दोशीअे प्रश्न कर्युं अेकवार

जीव जे सेवा कृत्य करे प्रभु जाणे ते विचार ।९२।

त्यारे श्रीजीअे अेम कह्युं भक्ताधीन रस मांहें

जाको कीयो क्यों न जाणे ठाकोर तो कृतघ्नी नांहें ।९३।

कृतघ्नी होअे सो न जाणे सब जाने ठाकोर

ठाकुर सब जाने नहीं तो को जाने और ।९४।

वली अेकवार ताराचंद स्वरूप नैष्टिक सार

स्वरूप विषे रस अभिनवो जाणे भाव प्रकार ।९५।

स्वरूप लहीअे श्रीजीअे तेहोना हितने अर्थ

मार्गोकत शिक्षा करी पोताने सामर्थ ।९६।

ताराचंदे विनती करी दया सिंधु महाराज

में कहुं सो सुनिये काहु कही मिथ्या काज ।९७।

त्यारे भक्तना अंतर आत्मा बोल्या अेणीपेर

कहा रे हुं जानत नहीं अेम कह्युं हित भेर ।९८।

काहुको कह्यो सुनेगो में कछु जानत नांहीं

में तो सब जानत हुं जो सबके मन मांहीं ।९९।

में जो कहेत हुं सो तो रक्षा के लीये आज

अपने जानी कहुं नांतर मेरे कहा काज ।१००।

ता तो तुम अपनी मर्यादासों रहो नित्य

में तो सब जानत हुं कहेत हो याही निमित ।१।

अेकवार अेक क्षत्री नाम वृंदावन दास

मथुरा मांहें आव्यो गयो मथुरीआ पास ।२।

तेहने कह्युं तुम मने जाओ श्री गोकुल लेइ

तेणे कह्युं जे श्री गोकुल तुं शुं करसे जइ ।३।

वृंदावनदासे कह्युं तुं आवे मारे साथ

मारे श्री गोकुल जावुं जोवा श्री गोकुलनाथ ।४।

त्यारे मथुरीअे अेम कह्युं सेवक विन भेट

जद्यपि कोअे समर्पे राखे नहीं ते नेट ।५।

अने राखे तो तुं जो अेम कहे सेवक छुं अहीं

त्यारे तो अे राखे नहीं तो राखे नहीं ।१०६।

वलतो श्री गोकुल आव्यो मनमां करी विचार
पांच रूपैया श्रीजी आगल राख्या तेणी वार ।१०७।
श्रीजीअे पूछ्युं सेवक छे हा सेवक छुं महाराज
कहाको हे यहां को अेम कह्युं सहित समाज ।८।
जाण शिरोमणी बोल्या श्रीमुख वचन सुचार
भेट न राखी कह्युं तुं वार सिकायो कै वार ।९।
वलतो ते रेणुका जइ वस्यो ते तेणे ठाम
स्वप्न द्वारा ते जइ अने तेहने आप्युं नाम ।१०।
पूर्व पक्ष ते समीप थकी रेणुकाने वाट
त्यांहां लागी जावा केम दीधो शा कारण माट ।११।
त्यांहां कहुं छुं अेणे प्रथम मथुरीयानो कर्यो संग
तेणे करी अेहनो मूल भाव ते थयो सहु भंग ।१२।
प्रभु आगल मिथ्या बोल्यो तेनो अपराध
ते दोष करी प्रभु विसेक रही नहीं साध्य ।१३।
तेणे करी गयो पण प्रभुजी परम कृपाल
मूल भाव अंगीकृत करी अने कीधी संभाल ।१४।
अनुभावे तेडावीने कीधुं सनमान
कारूणीक करूणा करी ने कीधुं महा दान ।१५।
अेहवा अनेक प्रकार छे बहु विधि नाना भांत
सर्वनुं कारण ने मन केरी जाणे वात ।१६।
माटे अे जाणीने छिरक्या छे ओछव मांहें
अेणे प्रकारे मारग प्रणित उत्सव करे त्यांहां ।१७।
अे कह्या कर्यानुं कारण प्रमेय गोपनने काज
ने अे स्वरूपे वरी छे सृष्टि जे पुष्टि समाज ।१८।
तेहने शिक्षा अर्थ ने जेहनुं जेह समाधान
अे स्वरूपने कृत्यथी होअे अन्यथा नोहे आन ।१९।
अन्य अनुसंधान स्वरूपे न होअे निरोध
माटे प्रभुजीअे सहु कर्युं करवाने ते प्रबोध ।२०।
अेम सात्विक लीला करे श्री गुंसाईजीने संग
श्रीनाथजी द्वार पधारे गुंसाईजी सहित मन रंग ।२१।
ते अेक समय अेकला पधार्या गुंसाईजी वीच
चातुर मासनो समय ने मारग मांहां मेह कीच ।२२।
जमुनाजी जल पूर विचारी कारण अनेक
वात्सल्यसुं श्रीजीने कह्युं ते करी विवेक ।२३।
बाबा अबके तुम इहां रहो अपने घर
अरूं कोयल पुष्पके रंग को वागो पठयो कर ।१२४।

अेहवुं कहीने गुंसाईजी पधार्या वेगे पार
श्रीजीअे श्री हस्ते वस्त्र समार्या सार ।१२५।
वागो व्योत करी कतर्यो पोते ते अेह
कांइ दाबी कतरायो छोटो थयो घणुं तेह ।२६।
त्यारे विचार्युं जे भलुं पठये तो सही सोइ
जेसो होनो होयगो तेसो रहेगो होइ ।२७।
बंटा मांहे धरी अने पठव्यो रातो रात
शंखनादने समय पहोंच्यो आवी प्रभात ।२८।
अेह रंग प्रगट्या तणो जेह छे मूल प्रकार
पोते प्रगट कर्यो छे ते कहुं करी विस्तार ।२९।
अेक समय श्रीजीने बालकृष्णजी पधार्या बागमां
कोयलना पुष्प जोइने ते लीधा करमां ।३०।
उपरेणांसु भींडी प्रगट कर्यो नौतन रंग
ते लेइ देखाडयो गुंसाईजी फूल्या अंगो अंग ।३१।
वलता आज्ञा देइ पधार्या गोवरधन
श्रीजीअे ते वागो सिध्ध कीधो आणी मन ।३२।
त्यांहां सृंगार धरावा गुंसाईजीअे लीधो तेह
जुअे तो घणुं छोटो मनमां थयो संदेह ।३३।
श्री वल्लभे तो विचारीने पठव्यो हशे ते अहीं
देखीअे छे तां छोटो पे. धरावीअे तां सही ।३४।
धराव्यो तो पूरो भयो बेठयो ते जोइ रीझया मन
श्रीजीने पत्र लख्युं गुंसाईजीअे थई प्रसन्न ।३५।
तमो मारा मननां ते दूर कर्या संदेह
भावे करी संदेश श्लोक लख्यो करी नेह ।३६।
अे श्लोकनो अति घणुं उतर कहेवाय
प्रभु तो घणुं मोटा ते तेमां केम समाय ।३७।
ते अे कंचुकी करी अने थयुं सहु समाधान
जे गोकुलके जन जीवन महुरत सदा लगी बान ।३८।
स्वकृपाअे करी अने कृपालु समासे मन
अेहनो उपाय बीजो नहीं अेहनुं समाधान ।३९।
श्याम कंचुकीनुं दर्शन करी लख्यो श्लोक
आगल ते संस्कृत लख्युं ते कहुं भाव अलोक ।४०।
आज श्याम कंचुकी पहेर्यानी शोभा छे जेह
दीठेथी बनी आवे वचने न आवे तेह ।४१।
संदेह दूर भयो तुमारो कारज पाये
जो मनुहार करी मानो तो देखो आये ।१४२।

अे पत्र श्रीजी भोजन करी बेठा सुख सेज
तेह समय आप्युं जाण्युं लीधुं करी बहु हेज ।१४३।
पत्र लइ आवनारने वधाइ आपी तेणी वार
श्री जग वल्लभ जेह समय सद्य थया असवार ।४४।
शंखनादथी पहेला आवी पहोंच्या आप
दरसन करी कराव्युं हर्यो उभय परीताप ।४५।
सात्विक राजस तामस हवो त्रिविधि संतोष
श्री गुंसाईजी सहित व्यालुं करी रात्रे थई रस पोष ।४६।
स्व प्रगटति सेवा रस लीलानी भांत अनेक
अनेक प्रकारनी वारता करी ते करी विवेक ।४७।
तेहवो पुत्र ने तेहवो पिता उभय अनुपम जोड
अे सुख स्वादनुं रूप अनिरवचनीय संघोड ।४८।
अेम श्री गुंसाईजीने घेर पुत्रत्वे सेवा निमित्त
स्नेह सहित सबंध सगर्भ लीला करे नित्य ।४९।
अने अहीं अेना सबंधीनुं सुख पामी करे सनमान
स्नेहीना सबंधसुं सबंध प्रगट करवाने निदान ।५०।
सबंध प्रगटी करणे श्रीमुखथी कही अेक वात
श्री गुंसाईजी यहांको सबंध धरे बहु भांत ।५१।
अेक वेर बबुआजीकी अे पोखर आये
सो अडेल आयो श्री गुंसाईजी भेटे तांअे ।५२।
अेक वेर जल वाहेणीके संग श्री गोकुल
उहांको कूकर आयो तासुं होय अनुकूल ।५३।
गुंसाईजीअे पतली परोसीके पठइ उनके काज
अे सबंध सूचन कर्युं पोते श्री महाराज ।५४।
जे जल वाहेणी लावे तासुं करी बहु हेत
स्थलको सबंध विचारीके उनकुं अति सुख देत ।५५।
अरगजा उतम ले के सुंदर सोंघो संग
चंदन अरग लगायो श्री गुंसाईजीअे उनके अंग ।५६।
पर्ण तो अवस्य लेवावे ते उनसुं जानि सबंध
सबंध स्फुर्यो चाहिअे कृपाअे स्फुरे सबंध ।५७।
पे वेसी कृपा तब होइ जब होअे सुसंग
संग विना कृपा होअे नहीं कृपा विना न होअे संग ।५८।
अेह परस्पर हे संग कृपाको साधन
अरू कृपा संगको साधन उपपति कहीअे अेक मन ।५९।
जेसो नागवली हे अरू तामो नाहीं संयोग
तब तो रंग चढे नहीं क्यों करी आवे भोग ।१६०।

केवल संयोगहुंथे नहीं होवे न्यारो रंग
नागवली संयोग मले रंग बाढे संग ।१६१।
ताते मुक्ष कृपा और संग होओे जो गूढ
तब होवे अेह सबंध वाही के रूदयारूढ ।६२।
अन्न सबनकुं प्रिय हे पे जाके ज्वर होअे
ताकुं अरूचि उपजे रूचे नहीं वाये सो अे ।६३।
ताते प्रभु कृपा विना अरूचि उपजे त्यांहां
नांहीं तो सबंध पदार्थ अेसो पैअे क्यांहां ।६४।
अेम त्यांहांनो सबंध करी सबंधी पदारथ जेह
स्वकीयने सबंध जणावीने शिक्षा दीधी अेह ।६५।
अने वली प्रमेय गोपन हित अखिल धर्म प्रतिपाल
वृज मंडल मध्ये स्थल स्थले करे ते लीला रसाल ।६६।
मुख्य अवांतर कारणे गोप्य प्रगट करी प्रीत
लीला स्थल जोवा पधारे छे राखवा प्रीत ।६७।
ते मांहे प्रगट अवतारनुं कारण ते अेह
पोते आचरी महातम प्रगट करे छे जेह ।६८।
अने स्वकीयने पोतानी लीला स्थलनुं अनुसंधान
आवश्यक कर्तव्य अे स्थापन कर्युं निदान ।६९।
अने बीजुं मुक्ष गोप्य कारण प्रभुअे आंहां
भूतल मध्ये प्रागट कर्युं ते क्षणेथी व्रज मांहां ।७०।
शैल ने कानन पुलिन भौमी अे विविध प्रकार
अेहने विषे अनेक भांति लीला करी सार ।७१।
त्यांहां रमण उपयोगी वृक्ष लता स्थावर रूप
स्वकीय जे नित्य छे ते अति परम अनूप ।७२।
विरहातमे आतम थकां व्याकुल करी खेद
ते विरह कलेश नासन प्रभु योग्यता अधिकार भेद ।७३।
दर्शने स्पर्शे करी स्वरूपानंदे भरी विशेख
अेहनो कलेश दूर करवो वन यात्राने उदेश ।७४।
प्रीयत्व सहित उत्साहे पधारे वन मांहां
अे लीला हुं कांइ अेक कहुं आणी मन मांहां ।७५।
श्री गुंसाईजी प्रिय पुत्रने पधरावीने जे संग
जन्माष्टमी उपरांतनी द्वादशीअे मन रंग ।७६।
संबंधने संकोचे कोअे न जाणे त्येम
सेन आरती पाछे श्री गोकुलथी विजय कर्यो अेम ।७७।
राते मथुरा जइ रह्या प्रात प्रगट थयो ज्यारे
पिरोहित उजागर चौबे तेडाव्या त्यारे ।१७८।

धर्म स्थापनने अर्थे तेहनुं लेइ वचन
स्वमत पूर्वक परम विधोगते आणी मन ।१७९।
प्रथम ते विश्रांतेथी संकल्प कीधुं स्नान
स्नान करी पछे पधार्या जन्म स्थान ।८०।
चौबेओ कह्युं हुं साथे आवुं श्री महाराज
श्री गुंसाईजीओ ओम कह्युं त्यांहां तुमारो कहा काज ।८१।
तुमारो वचन लीयो चाहीओ सो लीनो आये
तुमकुं काहेकुं निस्वार्थ श्रम करवाये ।८२।
वलतुं ओणे ओम कह्युं राज्य कह्युं छे ओम
प्रथम भूतेश्वर जइ अने वन पधारो तेम ।८३।
इंहांई ते भलो मानेंगे भूतेश्वर कहां तां जाओ
वलता त्यांहां न पधार्या चौबे कर्यो विदाय ।८४।
वलतुं वनने विशे ते प्रयाण कर्युं तेह वार
प्रियने आगमने स्थले मनोरथ कर्या अपार ।८५।
स्थलांतर वन उपवन खरिक पोखर बहु नाम
फूल्या फल्या प्रसर्या पुलकित थया ठामे ठाम ।८६।
भौमि हरित कोमल क्यां भर्या छे झील
क्यांहुं गहेरा जल राजे क्यांहुं राजे छे छील ।८७।
को समय वरषे मेह ने को समय घटा अपार
को समय घाम सुखद अति शोभानो नहीं पार ।८८।
मयूर मधुर सुर बोले पक्षी करे विनोद
स्थावर जंगम तेह समय प्रगट्यो सहुने मोद ।८९।
साथे थोडा अेक सेवक सेवा उपयोग
तेहना नाम विसद करूं जे आव्या विनियोग ।९०।
हरीवंशजी हरध्या पितांबरदास खवास
भंडारी कहानो महेतो रहे अहींया निज पास ।९१।
पबो त्रिवाडी प्रेमे गोपीनाथदास छे संग
कहानदास बोडो कुंभनदास मनने रंग ।९२।
केशवदास विशलनगरी रूपो रजपुत
मोरारदास ग्वाल ते काज करे अद्‌भूत ।९३।
वैश्नवनी रसोइ करे नाम लीलाधर दास
नारायणदास ने प्रागा पांडेनो आनोरे वास ।९४।
कृष्णदास वनमाली ने त्रिजो जसरथ
श्री गोकुलनां कीरतनीया अेहेनो सरीयो अर्थ ।९५।
रामदास ने नारायणदास मथुराना संग
जाट तरंगीयो हसारू तेह वधारे रंग ।१९६।

साथे केशव भट झंझामारूतनो पुत्र
दरजी भगवानदास तेहनुं अभिनवुं सूत्र ।१९७।
गोरा ने भवानी बे तिलंग भाग्यवान
मनिको ने गोविंदी मथुरणी गाअे गान ।९८।
मेना गुजरात तणी अे गाअे सरस सुदेश
सांभले गान तणा वेधी व्रजपती नरेस ।९९।
छकडो पोठी अश्व ने जीवंदो थनवार
पांच पोहोरूआ साथे ते अेकी अनुहार ।२००।
अेह समाज सहित आनंदे विना चरण त्राण
जे जे वने पधार्या व्हालोजी जीवन प्राण ।१।
अनाघने अवतारे अंकित लीला स्थल ठाम
तेहना क्रमे करी कहुं छुं प्रगट करी नाम ।२।
प्रथम मधुवन पधार्या त्यांहां कुंडे कर्युं स्नान
सत्कार करी सनाथ कीधा अति कृपा निधान ।३।
अतिसय मोटम दइ अने कीधुं भाग्य प्रकाश
कार्य अनुसार नामांकित स्वरूपनी पूरी आस ।४।
त्यांहां पधारी प्रसिध्धता पोते कर्युं दर्शन
पण तेहने करवाव्युं अेहनो भाव छे भिन्न ।५।
ज्यारे अे वृज भोमे थई छे दैताक्रांत
त्यारे वृजनो भय हरवा ते आदिथी प्रांत ।६।
पोताने अवतार रूपे दैत्य हण्या ते वार
परिश्रम बोहोत ते दर्शन दाने कर्यो निवार ।७।
वनपति वने परिक्रमा करे पोते इच्छा भेर
अे परिक्रमानुं कारण कोअे न जाणे पेर ।८।
असुर जनित अपवित्रता अेणी पेरे कीधी दूर
के जाणे दश दिशानो रोकायो महा रस पूर ।९।
के निर्मित पदार्थ प्रगट करी मेंड करी आसपास
रमण स्थले रसदानने फिरती वाली रास ।१०।
अे गूढ आसय गोकुलपतिनो निरधार न थाय
अेणे प्रकारे मधुवन करी ताल वनमां जाअे ।११।
त्यांहां अेटलुं करी कुमुद वनना पूर्या काम
लइ पराग पछे फरी मधुवन आव्या ठाम ।१२।
पाक कर्यो प्रेम जुते वली पधार्या प्रात
सतुअे सांतन राजाने सुख आपी बहु भांत ।१३।
कुंडे स्नान कर्युं करी संतायननी कामना सिध्ध
कामना सिध्ध करी अने आपी अलौकिक निध्ध ।२१४।

बहुला वन महा बहुला गायनुं ते स्वरूप
त्यां गौदान पूजने तेहनो कर्यो सत्कार अनूप ।२१५।
असंभावित भय त्रास हरीने जे हरि अमीष्ट
स्थल अरिष्ट आव्या कीधी करूणा द्रष्टि ।१६।
अहिं राधा कुंड कृश्न कुंडे कीधुं स्नान
श्यामवटने पास आरोग्या दहीं पकवान ।१७।
वलता कुसुमोखर नारद कुंड थई अने त्यांहां
गोधन थई अने पधार्या गोवर्धन ते ज्यांहां ।१८।
अहीं अे अेणे दिवसे घणो सूर्य तणो बहु ताप
घाम असाधारणथी श्री गुंसाईजीने थयो परिताप ।१९।
श्रीजीअे प्रथम घेरथी विचारी मनने रंग
धर्मादिताप शांत ते चूर्ण कर्युं छे संग ।२०।
घाणा जीरू आंबला सोंफ ने जेठीमध
मिसरी सर्व समाने अेम कर्युं छे सद्य ।२१।
ते लेवराव्यो गुंसाईजीने पोते लीधो तेह
ताप शांती तेणे करी लेता चूरण तेह ।२२।
पण सूर्ये अनुचित कीधुं श्रीजी पाम्या द्विगुण कष्ट
अंतर सूर्य तेजस्वी अेजे स्वरूप स्पष्ट ।२३।
प्रभुना सुखने शुं जाणे आणे क्यांथी स्नेह
पोताना अधिकारज उपर वाध्यो अेह ।२४।
निरदयनो ते ताज तेहनो छे जम पुत्र
वात्सल्यने शुं जाणे जेहनुं अेहवुं सूत्र ।२५।
नहीं तो सेवाने शीतल थयो जोइअे आप
त्यांहां अतिशे आतप्त थई कीधो परिताप ।२६।
अहीं समाधान अेक उपज्युं अेहनी सेवा अेह
ते मोदसुं मन धरी अने कीधी कारण तेह ।२७।
अेहनो दोष नहीं जे गर्भ पोषक छे अेह
अेहनी उष्णताअे ते बीज अंकुर थाअे तेह ।२८।
प्रभु आगमने सकल बीज उतपनने काज
सेवा अर्थे उत्साहे आवर्यो सहित समाज ।२९।
पोताने धर्मे अति आतप्त थयो छे जेह
ने जे सोंप्युं होअे तेह समर्पे तेह ।३०।
अेहने पास शीतलता होअे तो समर्पे तेह
नहीं तो क्यांथी समर्पे प्रभुने आणी अेह ।३१।
अेह अभिप्राय लही कारण कीधुं पूर्ण
धर्मादी दोष शांत प्रभु ते लेवा चूर्ण ।२३२।

पछे गुंसाईजीने निद्रा आवी पोढया ते भोमी सेज
श्रीजीअे पाक तणो आरंभ कर्यो करी हेज ।२३३।
अेकत्र थई भोजन करी अहीं रह्या ते रात
स्नान सेवन करी अने ते वली पधार्या प्रात ।३४।
मंदिर सनमुख पर्वतथी कीधो आरंभ
दक्षण वर्त गोधन आव्या मर्यादा खंभ ।३५।
मानसी गंगा चक्र तीर्थ ब्रह्मकुंड देइ मान
हरदेव थई संकर्षण कुंडे कीधुं स्नान ।३६।
गंधर्व कुंड गोविंद कुंड अपसरा कुंड रूद्र कुंड
नाही धोती धरी अने तिलक कर्या उर्ध पुंड ।३७।
वलता निज मंदिर पधार्या सहित सद पात्र
भोजन करी अने जइ वास्या गाठोली रात्र ।३८।
पछे अपर रात्रे उठी परमथरे थई
सेउ धवारी घघाटतुं स्थल छे त्यांहां जइ ।३९।
पर्वत सुगंधि शिला ने दाहिनो परवत सेत
बद्रीनारायण बांये मुंकीहिंदोला हेत ।४०।
रूद्र कुंड थरस्या इंद्रोली हथीओ गाम
दाहिनो मुकीने पायोधार्या वनज काम ।४१।
चंद्रसेन कायस्थ सामो आव्यो सनमुख
धर्मकुंडे डेरो कर्यो त्यांहां पाम्या अति सुख ।४२।
पाक सामग्री चंद्रसेननी आवी सार
करूणा करी कीधी प्रभुअे ते अंगीकार ।४३।
बीजे दिवसे कामवन तणी परिक्रमा कीधी
विमलकुंड धर्मकुंड अने सूर्यकुंड कारज सीध्धी ।४४।
काम तीर्थ ज्यांहां ज्यांहां भोमी परिक्रमा ठाम
कामना सर्व पूरण करी तेहना पूर्या काम ।४५।
महोदधी रत्नाकर जोइ रामेश्वर सेत बंध
लंका जोइ दुक मींचणी जोयुं ज्यांहां सबंध ।४६।
नंद गोपनो वट व्योमासुरनी गुफा लइ मन
खिसलनी शिला थाल कटोरा जे शिला भोजन ।४७।
सुरभी कुंड कृष्ण कुंड चोरासी नाम
पोताने अवतार रूपे आचरण कर्यो ते ठाम ।४८।
ते जोइ मनने उपजे अतिसय हुल्लास
नंदजीना घर जोइ अने आव्या डेरा पास ।४९।
ब्रह्म भोजन करवावी भोजन कर्युं ते त्यांहां
छठे दिवसे आव्या सुनेरा गाम ज्यांहां ।२५०।

टेर सुनी छाकहारी ते थई आव्या अटोर
स्नान कर्युं अदेह कुंडे मेघ घटा चहुं ओर ।२५१।
रेवती बलदेव थई आव्या वृषभान पोर
भानोषर दोहोनी कुंड पर्वत सांकरी खोर ।५२।
गाम चिकसोली थई अने दानगढ ने गढमान
रतन कुंड नौवारी चौबारीने दीधुं दान ।५३।
पीरी पोखर कुंड सघन गहवर जे समेत
लीलाअनुं वर्तन करी अने पधार्या संकेत ।५४।
संकेत वट तले रासनो चोतारा छे अहीं पास
त्यां पोते पधारी बिराज्या महा सुख रास ।५५।
बहुला कुंडे कृष्णकुंडे जसोदा कुंडे कर्युं स्नान
स्वरस परसे शरण आपी कीधुं सनमान ।५६।
नंद यसोदा दाऊ कृष्णदेवने दर्शन
त्यांथी पछी पधार्या आगल आणी मन ।५७।
ललिता कुंडने वृजवारी कुंड अनूप
त्यांहां रूची करी नाह्या श्री गोकुल केरो भूप ।५८।
छछीहारी दावरी अने गोपेश्वर त्यांहां थई
अक्रूर उतर्यानो स्थल तेणे ठामे जइ ।५९।
वैरागीनी क्यारी जे आसरानी पोखर
त्यांहां उध्धवजीने ज्ञान उपदेश कर्यो छे धर्य ।६०।
मधुसूदन कुंड जल विहार ने कदम खंडी
अेहवे अनेक स्थले सैस महीमा कही ।६१।
वलता आवी पाक कर्यो पावनसर ज्यांहां
रात्रे सयन कर्युंआवी क्षिद्रवने जे ज्यांहां ।६२।
प्रभाते कृष्ण कुंडे राधा कुंडे कीधुं स्नान
परिक्रमा करी अने कीधुं नागवल्लीनुं दान ।६३।
पिसायो करेहला आंजनोखर अंजनो ठाम
अे कल्पित रास तणा स्थल मेल्या दाहीना वाम ।६४।
जाव जसोदाजीनुं पीहर पधार्या ज्यांहां
मोरवारी तलाव मोती उग्या छे त्यांहां ।६५।
विलास वट पक्षी बेठता नथी ते जोइ
बडे ने जसोदानंदने जोइने गाय स्थले होइ ।६६।
बलभद्र कुंडने चरण स्पर्श करी आप्युं शरण
चरण पहाडीअे अवतार अंकित जोया चरण ।६७।
पछे दधि गामे वृजभूषण कुंड परसी त्यांहां थई
कोटान शंखचूड वध स्थल छे त्यांहां जइ ।२६८।

सेख सांइने पधार्या मेहेली डाबे हाथ
वात्सल्य हेत श्री गुंसाईजीनुं समाधान कर्युं नाथ ।२६९।
सेखसांइ वनमों नाहीं में जानत हुं वात
और समय देखेंगे वचन कह्या अेणी भांत ।७०।
वलता सेइ पधार्या त्यांहानो भोमीओ जेह
वछल गोरो जे अलीखान आव्यो त्यांहां तेह ।७१।
प्रणपति अनेक करीने कीधा बहु प्रकार
दूध ने गोरस लाव्यो कीधी अति मनुहार ।७२।
गोरस खासी रसोइअे राख्युं श्री महाराज
दूध वैश्नवनी रसोइअे लीधुं खीरने काज ।७३।
भोजन करी अने अचव्या श्री गुंसाईजी श्रीजीने जेह
तेहवे झुमी आव्यो उपर बहु मेह ।७४।
श्री गोकुलमां श्री मुखथी कही छे अे वात
श्री गुंसाईजी अचवी उठे तबही आयो वरसात ।७५।
हम तो वे भोमीयाकी अटारी उपर चढे जाय
पहेली सिध्ध करी राखी उन आपु लिवाय ।७६।
वैश्नवने डबरा भरी राखी खीर संभार
मेह भयो अेसो जो खीर वही गही ते वार ।७७।
खिचडी और रोटी रही सोइ लीनी तेह
त्यांहां मेह वरष्यानुं कारण अेकज अेह ।७८।
अेसो मेह भयो जब कछु कह्यो न जाय
हम क्योंहुं क्योंहुं के उंहांलो पोंहोंचे आये ।७९।
खीर रसोइआने कीधी वैश्नवने अर्थ
ते वेहेवरावी रक्षा करी पोताने सामर्थ ।८०।
सांप्रत्य प्रभु न आरोग्या ते केम आवे काज
स्वकीयने बाधक माटे अेम कीधुं महाराज ।८१।
नहीं तो मेह सदा लगी इच्छाने अनुसार
आज्ञा विना केम वरसे आवी तेणी वार ।८२।
अेक समय अेम गुंसाईजी पधार्या वृंदावन
मेह उने आव्यो त्यांहां गुंसाईजीअे कह्युं वचन ।८३।
देखीओरे आन्योर के अेम बोल्या गद्य
सांभली मेघ दशो दिश थइने गयो ते सद्य ।८४।
अहीं अे अेणे कारणे वरज्यो नहीं लगार
ते माटे आवीने वरस्यो तेणी वार ।८५।
वलता आठमे दिवसे सवारे सेइथीअ
रासोली बहुला वन नैरूत्य मुकी अ ।२८६।

ईशान दिशे पधार्या भैगाम जे नंदघाट
वलता बलवने थई आव्या ते तो रामघाट ।२८७।
ज्यांहां बलदेवजीअे यमुनाजी उनमत थई
उलटा वेहेवराव्या छे ज्यांहां अक्षय वट जइ ।८८।
बलदेवजीअे प्रलंब ग्रह्यो छे ते जोइ वाट
कात्यायनी चीरघाट थई अने फरी नंद घाट ।८९।
जमुनाजी उतरीयाजोवा वन ओर वार
प्रथम भद्रवननुं ते आचरण कीधुं सार ।९०।
नाही मधुसुदन कुंड आव्या भांडीर वन
गामनुं नाम विजालीअे सहु थया प्रसन्न ।९१।
सह्य सोत भांडीर कुंड पछे वट भांडीर
ते जोया जुगते करी शोभाजीनो वीर ।९२।
स्पर्श परीकृमा करीने पाक कर्यो संपन्न
भोजन करी रात्रे आवी रह्या ज्यां वेलवन ।९३।
अेम भोजन करी अने ज्यारे होअे ते सहवार
आगले स्थले पधारे अेहवो करी विचार ।९४।
ते स्थलनी प्रविधि प्रातः करीने करे प्रयाण
आगल विजय करे पाछल चतुर शिरोमणी जाण ।९५।
भोजन कर्या उपरांत पधारे जेणी वार
श्रीजीने आग्रह करी अने घोडे करे असवार ।९६।
श्री गुंसाईजीनुं वचन प्रमाणी बेसे आप
अेक स्थले घणुं घामनो मारग थयो परिताप ।९७।
श्री गुंसाईजी त्यांहां रह्या चरण क्षालणने काज
श्रीजी पण त्यांहां उभा छे सहु सहित समाज ।९८।
छायाअेक हती लीधी रूपे रजपुत
राखी श्री गुंसाईजीने घाम लही अद्भुत ।९९।
श्री गुंसाईजीअे नेत्र चढावीने जोयुं त्यांहें
रूपो कांइ समज्यो नहीं अेहोना हारंद्र मांहें ।३००।
अे कहा धरीरे अेम खीजी कह्युं तेणी वार
उनकुं क्यों न धरे जो अे सबको मूल आधार ।१।
सकल सृष्टि निस्तारको कारण जिनके हाथ
अेम परस्पर वात्सल्यसुं वन यात्रा करे साथ ।२।
त्यांथी प्रातः पधारीने कीधुं जमुना स्नान
मानिक सिला जोइ अने जोयुं सरोवर मान ।३।
पीपडो लींबडो रास सारस्वत कल्पनो जेह
पधारीने ते स्थल जोयो करी बहु नेह ।३०४।

वात्सासुर वध वछु रोडी रही डाबे पास
लोहवन पधारी पूरी तेहोनी आस ।३०५।
कुंड स्पर्श दर्शन करी पधार्या महावन
ब्रह्मांड यमलार्जुनना काज कर्या संपन्न ।६।
मथुरानाथ जोइ नंद कुंड उखल जइ
श्याम मंदिर ने रोहिणीनुं सत्य समुद्र के थई ।७।
उतरेश्वरने घाटे स्नान करी महाराज
भादरवा सुदी छठे आव्या सहुना करीने काज ।८।
नवमे दिवसे लीला स्थले पधार्या सुखधाम
श्री गोकुल रही भोजन करी कीधुं पूरण काम ।९।
वलता ते जइने वस्या आंहांथी मथुरा रात
कल्पित वृंदावन छे त्यांहां पधार्या प्रांत ।१०।
दशमे ते स्नान करी आव्या अक्रूर घाट
भथरोंडने कली दहनी पास कदंबनी वाट ।११।
दुसाहे वे मदन मोहनजीनुं करी दर्शन
चीर घाट केसी घाट बंसी वट आणी मन ।१२।
ब्रह्म कुंडे वेणुं कुंडे थई आव्या गोविंद देव
फरी मथुरा पधार्या ते पोते ततखेव ।१३।
सातमें सहु वन उपवननो ते करी सत्कार
श्री गोकुल पधार्या जीवन प्राण आधार ।१४।
आठमे रावले जइ श्री स्वामिनीजीनो उत्सव कर्यो त्यांहां
अेकादशीअे दान घाटीअे दान लीला करी ज्यांहां ।१५।
अेणे प्रकारे वनयात्रा करेते उदेश
लीला स्थल पधारीने हरे सर्वनो विरह कलेश ।१६।
दूर करीने कीधुं सहुनुं सुख संपन्न
वली प्रमेय गोपन लीला करी ते आणी मन ।१७।
गान रसे रीझया ने गाननो जे उत्कर्ष
तेह प्रकार कांइ अेक कहु आणीने मन हर्ष ।१८।
अेक समय रावल पधार्या सहित समाज
त्यांहां लक्षमां लोहोरनो ने गोकुलीओ आव्यो कीर्तन काज ।१९।
नृत्य सहित श्री गुंसाईजी आगल कीधुं कीर्तन
श्रीजीअे श्रीमुखथी कही वात अे थई प्रसन्न ।२०।
अेक समय श्री गुंसाईजी रावल पधारे अपने भाये
गोकुलीआने कीर्तनमों ये पद कह्यो बनाये ।२१।
चलोरी मिलवुं मदन गोपाले यहुं पद जोअे
वाको अभिनय देखायो सो कहा कहीअे सोअे ।३२२।

अेसो दिखायो जो श्री गुंसाईजी रीझे मन
अति प्रसन्न थई पूछयो मोअेसुं अेह वचन ।३२३।

कहुं सीख्यो हे इन केसे विद्या पाइ
में कह्यो सीख्यो कहुं नांहीं इच्छाथे बनि आइ ।२४।

मोकुं गुंसाईजीने यों कह्यो जो दीजे कछु याही
भंडारी तो कोउ संगमो आयो नांहीं ।२५।

खवास के हाथ पितांबरको माखी निवार
उनते लेके उनकुं हम दीनो तेही वार ।२६।

अे प्रसंग श्री महाप्रभुजीअे गोकुलीआनी वात
सुंदरतानी सराहणा कीधी छे बहु वार ।२७।

गोकुलीआ देखतको भव्य रूप परम सुचार
वागो पहेरे ठाडो रहे मानो काम अवतार ।२८।

काहु जाअे कीरतनकुं अपुने मनके भाये
कीरतन करे नित्य ज्यांहां त्यांहां लखमां संग जाअे ।२९।

न्योछावरी पाये सो लखमां लेवे आप
लोक पूछे ये कोन हे कहे याको अे बाप ।३०।

हांसी करे सब कोउ ओर कोउ माने नांहीं
देखीके बेटाकुं सब को संकुचाहे उत मांहें ।३१।

गोकुलीयाकी महेतारी हसाउ सुंदर गात
पंडया भीतरीया उनसुं हंसतो दिन रात ।३२।

लखमादे लखमो कालो ने विरूप छे तेह
गोकुलीयो तो सुंदर केहेनो जायो छे अेह ।३३।

पाछे वे कहे पंडयासुं विसर्या अे तो तमारी पेर
ते दिवसे तो तमोज आव्या हता मारे घेर ।३४।

अरे हुं क्यारे आव्यो छुं बोथरीनी अे मारूं नोहे काज
तमोज आव्या छो तमारो अे भुली गया छो आज ।३५।

श्रीजीअे महा मोद जुत रस वस तद आधीन
श्री अंगनी फूले कर्युं हास्य ते परम नवीन ।३६।

अे हास्य तणो रस अभिनवो महाप्रभुने घणुं प्रीय
स्वरूप अनुसंधान रहित केवल तदाविष्ट तेथीय ।३७।

अे हास्यमां स्वरूपना अनुभवी हतां जे महा भाग्यवान
अविक्त कलरव माधुर्यनुं कर्युं तेणे पान ।३८।

श्री गुंसाईजीनी रीझने उदेशे पोते रीझी
अेह प्रसंग कह्यो छे हास्य रसे भींझी ।३९।

ते गोकुलीओ वलतो गुण अभिमान भरी
बिगडयो श्री गुंसाईजीनुं वचन उलंघन करी ।३४०।

अकबर पास जतथी कह्युं तुं वहां मति जाओ
तोकुं जंजाल लगेगो जानो उचित नांहीं ।३४१।
कह्युं न कर्युं ने गयो वलती निकली शीतला
जावा त्यां पाम्यो नहीं विरूप थयो दुःख पाये ।४२।
श्री गुंसाईजी प्रसन्न थयानुं फल हवुं अेणी भांत
हीन रूप करी राख्यो नहीं तो जातथी जात ।४३।
अेम गान रसे करी रीझयानो कह्यो अेह प्रकार
गान तणा रसनो रस कह्यो छे बीजी वार ।४४।
अेक वेर श्री गुंसाईजीके आगे कह्यो पद अे
हरि तेरी लीलाकी सुधी आवत अे सुनायो गाअे ।४५।
श्री गुंसाईजी भरी आये धीरज रही नांहीं
अेसे भये रसाविष्ट जे संभार्यो नहीं जाय ।४६।
घडी चार पाछे सावधान भये तेही वार
अे वात गान रस उपर प्रभुअे कही बहुवार ।४७।
अेहवो गान तणो रस उतम परम नवीन
सांभल्यो न गयो श्री गुंसाईजी थया रसाधीन ।४८।
अेणे वचने अेह रसनुं प्रगट करी कह्युं रूप
अेहवे अनेक प्रकारे गुंसाईजीने गोकुल भूप ।४९।
धर्म चरित्र सहित गोपन लीला करे अनुरक्त
श्री गुंसाईजीने श्रीजी विषे रहे निरूपाधी स्नेह अव्यक्त ।५०।
अने स्वरूप ज्ञान बेहु उभयता स्नेह महातमनो अभाव
वस्तु ज्ञापनने अर्थे प्रगट्यानो अे स्वभाव ।५१।
स्वरूप ज्ञान अे शा माटे जे प्रागट्य अेतद अर्थ
तेणे करी स्नेह निमग्न ने स्वरूप ज्ञान सामर्थ ।५२।
ते बेहु प्रकारनी परम काष्ठा अलौकिक तर
माटे अे स्वरूप विषे उतकष्टताअे ईश भर ।५३।
ज्यारे श्री गुंसाईजी भोजनने पधारे नित्य
श्रीजी पासे बेठा होअे कहे रूचिसुं धरी चित ।५४।
बाबा उठो भोजनकुं जइअे होत अवार
अेक दिवस उतर दीओ अेम कही तेणी वार ।५५।
गोविंदमामा के घर हमारे जानो आज
पूछयुं श्री गुंसाईजीअे वहां कहा हे काज ।५६।
श्राध्ध हे कह्युं ते सांभली गुंसाईजी रूखा थई
गोविंद भटने कह्युं अेकांत तेडावी लइ ।५७।
गोविंद तुम श्री वल्लभकुं करावत श्राध्ध भोजन
अे स्वरूपकुं श्राध्ध निमित क्यों नोहोतत देखो मन ।३५८।

आज पाछे मति नोहोते तेरे हे ओर भाणेज
तार्कुं न्योत जीमाओ इनसुं छांडो अेमज ।३५९।
श्राध्धको भोजन इनकुं देनो उचित नांहीं
आजथे अेसी मति करो समुजो याही मांहीं ।३६०।
श्रीजीने दीधी श्री गुंसाईजीअे आज्ञा अेह
श्राधको भोजन आजथे तुम कबहु मति लेह ।६१।
वात अे श्रीमुखथी कही गोविंदमामा के घर
भोजनकुं हम जाते जब उनके अवसर ।६२।
कछुक विचार गुंसाईजीअे जब आन्यो मन मांहें
श्राध्ध के भोजन की हमकुं तब ते कही नाहें ।६३।
ओर दिना जाते मामी मों पर करे स्नेह
जब जइअे तब पूछे बाबा तुम कछु लेह ।६४।
ना कही तो जाय नहीं कछु लीजे विन भुख
हमकुं आये देखिके वे पामे बहु सुख ।६५।
गोविंदमामा के घर धोडाकुं ख्याल निमित
पानी प्यायवेके लिये हम जाते नित्य ।६६।
स्वार भये ले गयो अेक दिन ओसारा मांहें
ओसारेको वांस अटक्यो फैटासुं त्यांहां ।६७।
देखीके मामीकुं मूर्छा आइ तेही वार
में कह्यो मोहेकुं कछु भयो नहीं स्वस्थ भइ जेही वार ।६८।
अेक दिवस गुंसाईजी सकल परिवार सहित
श्रीजी निकट बेठा छे भोजन करे नित्यनी रीत ।६९।
अेवुं मोहामणुं रूप श्री गुंसाईजी प्रगट करे जेह
जेहनुं भाग्य ते जाणे दुर्भागी न जाणे अेह ।७०।
द्वारकेश्वरजी आवी बेठा श्रीजीनी थाल मांहें
श्री गुंसाईजीने तेह गम्युं नहीं त्यारे बोल्या त्यांहां ।७१।
द्वारकेश्वरजीने शुं कहे अे तो निपट छे बाल
श्रीजीने कह्युं अे उछिष्ठ करत हे तुमारी थाल ।७२।
वहां ते तुम लेत हो तुमकुं उचित नाहीं
श्रीजीअे कह्युं कहा करूं बालकृष्णजी दिस चाहे ।७३।
त्यारे श्री गुंसाईजीअे अेम कह्युं मनमां धरीने भाओ
बालकृष्णको बेटा तो कहा न्यारो क्यों न बेठाओ ।७४।
काहुकी अेसी योग्यता जोबेठे तुमारी थाल
श्रीजीनुं महत्व प्रगट करी आसय जणाव्यो रसाल ।७५।
अेम उत्कर्ष कही अने करी देखाडे भांत
श्री गुंसाईजी ज्यारे जग्या कर्या उपरांत ।३७६।

दर पूर्णमासीअे ते लेवरावे केश
उथापने बेसे ते बांधी पाग सुदेश ।३७७।
श्री गुंसाईजीने नित्य पाग बांध्यानो अभ्यास नहीं
पोते कही बंधावे पाग ते श्रीजी पास ।७८।
श्रीजी घुंटण बांधीने महेले तकीआ पर
श्री गुंसाईजी ते मस्तके मेले उत्थापने उलट भेर ।७९।
अेक दिवस श्री गुंसाईजीअे दीठा अति अनुराग
घुंटण उपर बांधता पोताने हित पाग ।८०।
अेसे कहा बांधत हो मस्तके बांधी के देहु
मस्तके बांधीके तुमकुं केसे दीजे अेह ।८१।
श्री गुंसाईजी कह्यो तुमारे मस्तक बांधो तुम हाथ
ता पाछेवे पाग में मोहेलुं अपने माथ ।८२।
याहीथे ते में तुमपे बंधावट होय प्रसन्न
नहिंतर पाग बांधिवेको हे कहा प्रयोजन ।८३।
वलता आग्रह जोइ बांधे मस्तक निज हाथ
तेह लइ अने पछे श्री गुंसाईजी मेले माथ ।८४।
अेहवो परस्परे वात्सल्य अने बहु प्रेम
तेहनी परमित नावे थाअे नहीं कांइ नेम ।८५।
लीला सामग्री सिध्ध करवा वारंवार
जीव उद्धारने अर्थ गुंसाईजीअे कर्यो विचार ।८६।
गुजरात छ वार पधार्या तेहनो समय कहुं सार
अडेलथीसोलसे ने तिहोतरे बीजी वार ।८७।
त्रीजीवार ओगणीसे गढे थकी कर्यो विचार
त्रेविसे मथुराथी पधार्या चोथी वार ।८८।
पांचमीवार अेकत्रीसे गोकुलथी वरेस
छठीवार अडत्रीसे छ वार कर्यो अेम परदेश ।८९।
प्रथम ते वार चार गुजरातनो कर्यो प्रदेश
पांचमी वार सवंत अेकत्रीसे विचार वरेस ।९०।
श्री गुंसाईजीने तेह समय श्रीजीअे कह्युं अेह
अबके चलीवेकी आज्ञा मोहेकुं देह ।९१।
आप तो बेर बेर पधारत हो सब ठाअे
गुंसाईजीअे कह्युं बाबा तुम बेठ रह्यो इहांअे ।९२।
तुमकुं उचित यह स्थल सदा सर्वदा नित्य
संतुष्ठ थई अे वचन पर रीझया स्नेह निमित ।९३।
श्रीजीनुं वचन उलंध्युं भक्त मारगी भाव
वात्सल्यथी अतिक्रमण कर्युं हित केरे चाव ।३९४।

श्रीजीनुं वचन श्री गुंसाईजीने सदा अटल अनिवार
ते वचननुं अविधारण करीने ते करे सत्कार ।३९५।
अेकवार घोडो सुंदर गुणवंत अने बहु मोल
प्रिय घणुं प्रभुजीने नावे तेहनी तोल ।९६।
अेह प्रियत्व गुंसाईजी जाणे नहीं ब्राह्मणने कर्युं दान
सर्वे कह्युं गुणवंत घोडो हतो भाग्यवान ।९७।
हांहां बोहोत आछो हतो श्रीजीअे कह्युं तेणीवार
अे सांभली श्री गुंसाईजीअे मनमां करी विचार ।९८।
चांपाभाईने कह्युं ब्राह्मणपे घोडो लेहु
फेरि मंगावो आपने वे मांगे सो देहु ।९९।
श्रीजीनी रूची ने श्री गुंसाईजीनी आज्ञा भेर
ब्राह्मणनुं मन रीझवी घोडो आण्यो घेर ।४००।
श्रीजी ज्यारे सहेज पायोधारे घोडानी घुडसार
घोडो देखीने तेडी पूछ्यो थनवार ।१।
घोडा तो ब्राह्मणकुं गुंसाईजीने दीनो दान
तो पाछे अे कोन करी किन बांध्यो हमारे थान ।२।
त्यारे ते थनवारे कह्युं सघलुं वृतांत
जेणी पेरे फेरी मंगायो ते सहु आद्यथी प्रांत ।३।
अे वात सुणी श्रीजीअे पिताने कह्युं सुख पाअे
में तो सहेज कह्यो क्यों लीनो फेरी मंगाअे ।४।
त्यारे पुत्रवान बोल्या श्रीमुख अेहवुं वचन
में हुं सहेज मंगवायो आयो अेसो मन ।५।
घोडो गुंसाईजीअे आप्या उपर जे सराह्यो खांत
तेहनो आसय लही अने कहुं छुं ते वृतांत ।६।
पोतानी वस्तु अंगीकृत तेहने करे केम भिन्न
आप्या उपर इच्छा करी जावा दे केम अन्य ।७।
प्रगट करवा श्री गुंसाईजीनोआभ्यंतर जे स्नेह
दान कर्युं गुंसाईजीअे फेरी मंगाव्यो तेह ।८।
प्रेमनी परम काष्ठा प्रगट करी सर्वथी आद्य
स्नेह होअे ज्यांहां त्यांहां रहे नहीं को मर्याद ।९।
सहेज स्वरूप तणो प्रभाव कह्यो नहीं जाय
पुत्रत्वथी अधिक वात्सल्य करे सुख पाय ।१०।
आगल बेसे त्यारे श्री गुंसाईजी करे मनुहार
श्री अंगे कर फेरवे हित करी वारंवार ।११।
परस्परनुं हित वात्सल्य जोइ मन लही
अग्रज अे उतकर्षता तेह सके न सही ।४१२।

को आगल कहे काकाकुं बेटा श्री वल्लभ आहीं
अेकही अे हे ओर बेटा सो बेटा नाहीं ।४१३।
अे वात वली को श्री गुंसाईजीने कहे आवी
संभालीने कहे अे कांइ जाणे नहीं भावी ।१४।
विष्णुदास पांडे आनोरने आवी कह्युं अेक वार
श्री वल्लभजी तो बोहोत प्यारे तुमकुं निरधार ।१५।
पूछयुं ते तुं ही कहते हे अरू कहेत हे कोये
हां राज हुं कहुं छुं ने बीजा कहे सहु कोये ।१६।
त्यारे श्री गुंसाईजीअे श्रीनाथजी सामा कीधा हाथ
उनकुं प्रिय सो हमकुं प्रिय अेम कह्युं तेहो साथ ।१७।
अेणे वचने कही स्वरूपनो अमित कह्यो उत्कर्ष
दुविदा दूर करी विष्णुदासनी पाम्यो हर्ष ।१८।
गूढ आसय अंत:करणनो प्रगट कर्यो स्वकीय अर्थ
जणाव्यो जे अेहवी वस्तु छे स्वरूप तणु सामर्थ ।१९।
अे सांभली गिरधरजी ते बेल्या घणुं खुणसाये
अेहेनो अति उत्कर्ष ते मन मांहां सह्यो न जाये ।२०।
अेक समय श्री गुंसाईजीने अेकांतमां पामी दाव
गिरधरजीअे हंसीने आणी विपरीत भाव ।२१।
कह्युं श्री वल्लभ पर तुमारो अतिसय नेह
त्यारे श्री गुंसाईजी कहे हमारो कहा स्नेह ।२२।
इनके स्नेह ते सबनको स्नेह मली रह्यो छे आय
अेह वचननुं हारंद्र को बीजो केम करी समुजाअे ।२३।
समजे तो जो अे स्वरूपसुं सादर मन
स्वरूपनुं कारण सनमुख थया विन नहीं संपन्न ।२४।
श्रीजीअे श्री गुंसाईजीने प्रसन्ने थई प्रसन्न
अेह प्रकार कह्यो छे कहुं छुं आणी मन ।२५।
अेक दिवसे श्री गुंसाईजी बेठा उथापन
पास श्रीजी अने बीजा बालक बेठा भिन्न ।२६।
श्रीजीना रूपामृतनो अनुभव करी रस पोष
वारंवार जोइ श्री मुखने पामी संतोष ।२७।
गिरधरजी सामु जोइ पूछयुं अेणी भांत
अब ठाकुर कहा करत हे श्रीजीअे कही अे वात ।२८।
अेक दिना श्री गुंसाईजीके में बेठो हुं पास
दादा अरू सब कोउ बेठे हे आसपास ।२९।
तब श्री गुंसाईजीअे पूछयो दादे सामो देखी
अब ठाकुर कहा करत हे इनको कहो विसेखी ।४३०।

सब कोउ चुप थई रहे बोले नहीं कोइ अेह
तब में दादासुं कह्यो कछुक उतर देह ।४३१।
पाछे जेसो होयगो आप कहेंगे सोइ
दादा कहे यहां बोलीके कहा फजीयत होइ ।३२।
विन समुजे केसे प्रगट करूं अज्ञान
भावसुं भाव मिले नहीं करी माने विज्ञान ।३३।
तब श्री गुंसाईजीने यों कह्यो यहु कहा जाने कोय
वस्तुमां जब कोउ पेठे तब यहु जाने सोय ।३४।
अेसी वस्तु जाही के होवे रूदया रूढ
वस्तु के धर्म तबे स्फुरे समज परे रस गूढ ।३५।
अेहवां कह्यां श्री गुंसाईजीअे वचन सगर्भ सुदेश
हवे प्रगट करीने प्रकार स्वरूपनो कहुं वरेस ।३६।
बालक सर्व कथा कहे समे आपापणे स्थल
अेक समय गोविंदराय कहे ते थई प्रबल ।३७।
त्यांहां कह्युं पधरावा लाव्या सुतने वसुदेव
त्यारे जमुनाजीअे मारग आप्युं ततखेव ।३८।
रघुनाथजीने जेमसमुद्र थई भयभीत
तेम जमुनाजीअे मारग आप्यो कहीअे नित्य ।३९।
अे कथा सांभली सहु गोपीनाथ दास
सांभलीने त्यांहांथी आव्या श्रीजीने पास ।४०।
कहांते आवत हो श्रीजीअे पूछयुं अेह
कहुं सर्व वृतांत कथानुं मांडी तेह ।४१।
श्रीजीअे कह्युं डरे कहा यमुनाजी रस मांह
अपने भरथारको स्वरूप कहा जानत नांह ।४२।
अपने प्रभुको देखी संकुचाया करी लाज
ताते मारग दइ गया पधारे सुख काज ।४३।
वसुदेवजीअे जान्यो नहीं यामो कछु ओर उपाय
अेसेइ आप चले आये अपने सहेज सुभाय ।४४।
अे वात गोपीनाथदासे श्री गुंसाईजीने पास जइ
गोविंदराये अेम कही वल्लभजीअे अेम कही ।४५।
त्यारे श्री गुंसाईजीअे अेम कह्युं गोविंदने कही वात
जेसी लेखनमों लिखी हे कहेत हे तेसी भांत ।४६।
अरू श्री वल्लभ कहेत हे सो अपनो देखी स्वरूप
जानिके अपनो अनुभव कहेत हे परम अनूप ।४७।
श्री गुंसाईजीअे अपनो अनुभव पद कह्युं ते सहु कारण बंध
अे समयनो अनुभव ना होअे अनुभवपूर्वक सबंध ।४४८।

अे समय वसुदेव तो लाव्या व्युह स्वरूप
तो अे श्री गुंसाईजी केम कहे अनुभवनुं अे रूप ।४४९।
माटे श्री जमुनाजी ने श्रीजीनो मूल प्रकार
ते अनुभव करी अने श्री गुंसाईजीअे कर्यो विस्तार ।५०।
श्रीजीअे जे प्रभु पद कह्युं तेहनो अेह प्रकार
जेहवुं स्वरूप तेहवे अंगे जमुनाजीअे कर्यो सत्कार ।५१।
अथवा पोते रसावेस थी बोल्या परम अनूप
जमुनाजीनो पोता विशे सबंध तणुं कही रूप ।५२।
तो हे केहेना मनमांहां न आव्युं अेह वचन
तो आवे मनमांहां जो प्रभु करे संपन्न ।५३।
अने अेणेज प्रकारे आचार्यजीने सेवके कह्युं सिध्धांत
तेह प्रसंग कहुं छुं जे तेणे कह्यो अेकांत ।५४।
ज्यारे श्री गुंसाईजीने श्रीजी होअे सेवा त्यांहें
त्यारे वैश्नव सर्व ते बेसे आगण मांहें ।५५।
अे वैश्नव अेहवा जेह स्वरूप विन रहे न निरथ
भगवद चर्चा विना ते काल खोअे नहीं व्यर्थ ।५६।
दरसनने अण अवसर करे ते भगवद वात
स्वरूपना अनुसंधान सहित वीते दिन रात ।५७।
अेक दिवस कारण भूत आव्या गणेश व्यास
गोविंद दुअेने पूछयुं अेकांते रही पास ।५८।
श्री गुंसाईजी तो महा वस्तु छे अेथी वल्लभराज
तो आवडो विस्तार कर्यो ते जे साहाने काज ।५९।
बीजा बालक कोण ते प्रगट कर्या भिन्न भिन्न
तमो श्री आचार्यजीना सेवक तम विन कहे नहीं अन्य ।६०।
कृपा करीने भांजो हमारो अे संदेह
गोविंददुवे बोल्या त्यारे करी बहु नेह ।६१।
अे आसय अेहोना मन तणो ते तो थाअे नहीं निरधार
बुध्धि अनुसारे करी कहुं छुं अेह विस्तार ।६२।
अैश्वर्य आदि छय धर्म होय तो होअे तेह
अेहवुं कदाचित संभवे पण निश्चे थाअे न अेह ।६३।
ने वली विभूति विना प्रभुनुं प्रागट्य न होअे
माटे अे मूल प्रागट्य ने वली अे विभूत सहु कोअे ।६४।
विभूति करी महा वस्तु दूर रहे अनुपम सार
ते माटे बंधु वर्गनो कर्यो हसे विस्तार ।६५।
अे वात गिरधरजीअे सांभली ते त्यांहां
तेणे करी ते घणु अेक खुणसाया मनमांहां ।४६६।

कह्युं अे सब श्री गुंसाईजी कहावत मोहे
नांतर वैश्नव अेसे करी कही सके न कोअे ।४६७।
वैश्नव अेसी कहेत हे अरू या वरजत नांहें
उनकुं सब चाहत हे को हमकुं नहीं चाहे ।६८।
गुंसाईजीअे कह्युं अे आचार्यजीके सेवक हे जे कोय
वे जे कहेत हे तो सत्य वरजुं तो मिथ्या होअे ।६९।
उन कह्यो प्रमाण तो कहा वरजु या मांहें
नियंता उनके आचार्य में तो नियंता नांहें ।७०।
गुंसाईजीअे दुवेने विषे आणी भर भार
आचार्यजीना सबंधनुं प्रगट कर्युं विस्तार ।७१।
तेहोना अंगीकृत होये तेह कहे ते निरधार
अेणे वचने वैश्नव सहुनो आण्यो अति भार ।७२।
त्यांहां कहुं छुं जेह प्रमाण्युं गुंसाईजीअे ते निरधार
पण मन मांहें अेक उपज्यो छे ते विचार ।७३।
कहेने दुवेना अेह वचन उपर उपजे अविश्वास
श्रीजीने आठ सहोदर अेक विमात छे पास ।७४।
अेम करतां भाई नव हवा हवे अे कह्या छे केम
अे वचनना पूर्व पक्षनुं समाधान कर्युं अेम ।७५।
आठ भ्रात नव भगिनी श्रीजीने हवा अेणी भांत
सत्रह सहोदर अेम हवा अढारमों अेक विमात ।७६।
अने ओगणीसमां पोते कुल मंडन अे उदित भाण
पण अेणे समय छ भ्रात हता ते प्रतिक्ष प्रमाण ।७७।
अेक गोपाल अेहवे नामे चार वरसना थई
अेक चार मास ने अेक अेक मासनो लइ ।७८।
पांच बहेन अेणेज प्रकारे प्रसव उपरांत
को अेक कारणथी प्रथुक प्रथुक थयां छे शांत ।७९।
माटे तेहोनी गिणना करी नहीं प्रगट प्रकार
बेननुं ते कारण कहुं छुं करी विस्तार ।८०।
मुक्ष तो गंगाधर सोमयागीथी पूरव जइ
जग्य नारायणथी आरंभीने कुल मधेअ ।८१।
संतती पुत्र तणी पण केहेने पुत्री नहीं
पण प्रभुअे भूतल मध्ये प्रागट्य कीधुं अहीं ।८२।
त्यारे आदे शोभा प्रगटी जोइअे ते सहित परकर
श्रीयां कीर्त्यादी त्यांहां प्रगटी उलट भर ।८३।
वात अे श्री मुखथी कही छे रस मांहें
हमारे तो कुलमों काहु के बेटी नांहीं ।४८४।

आचार्यजीकी मेहेतारीने कह्यो अेक मोहेकुं दु:ख
गृहस्थाश्रमको सुख तो जो बेटी होवे मुख्य ।४८५।
जब कब काज प्रस्तावकुं आरती उठायवेके काज
चहिये तब ओर काहुकुं बोलीके कीजे साज ।८६।
बहेन बेटी विना आरती कोन उठावे आये
अेसो देखी आचार्यजीकी मेहेतारी दु:ख पाये ।८७।
सो पाछे वेणी कामना तीरथकुं जान
बेटी हित प्रार्थना कीधी मनमां आन ।८८।
तब वेणीने कह्यो तुमारे बेटाकुं नहीं होअे
बेटाके बेटाकुं होयगी बेटी सोय ।८९।
श्री गुंसाईजीके भइ आचार्यजीके भइ नांहीं
आचार्यजीने हवी नहीं कारण छे अे मांहें ।९०।
वरदतने प्रार्थना देवांतरनुं ध्यान
ते निराकरण कीधुं अहीं अे इच्छानुं प्रधान ।९१।
देवने सामर्थे होअे तो आचार्यजीने होअे
माटे अे बेटा ने बेटी कुल सहु कारण कोअे ।९२।
जावद सामग्री जे को छे कारण मइ
पोताना सौकर्जने प्रगट्या साथे लइ ।९३।
माटे अे धर्म कह्या पण अे धर्म छे कांइ आन
अे प्रभुनाते जे धर्म छे ते तो छे स्वरूप समान ।९४।
रस विसइक गुण विसइक चरित्र विसइक अनंत
छय धर्मनो ते नेम सो अहीं अे गिणना नहीं अंत ।९५।
अने अेह स्वरूपना धर्म जे छे स्वरूप समान
ते स्वरूपथी न्यारा होअेज नहीं अति महा भाग्यवान ।९६।
ते अे स्वरूप विषे बाहाज्याभ्यंतर छे प्रवेष्ट
अे मूल स्वरूपना धर्म ते रमण सृंगार वरेष्ट ।९७।
ते मध्ये थई अैश्वर्यादिक ते अे स्वरूपना धर्म
ते रमण विसेक रसात्मिक भिन्न छे तेहनो मर्म ।९८।
ते पृथक कहुं धर्म रसात्मीक भाव अनुसार
अनुकरणे सूचन अे षट ते धर्म प्रकार ।९९।
जे सहेज स्वरूप सामर्थ वर्णावर्ण
विवेक रहित ज्ञाता अज्ञाता आव्या शर्ण ।५००।
महत्व पूर्वक रस विसेक महा रस रूप
सहेज सर्व अनुसर्या रसात्मीक भाव अनूप ।१।
स्वत: थकी आपी पोतानो रस आवेश
रमण करे छे अेणी पेरे अे अैश्वर्य सुदेश ।५०२।

अने स्वरूपाश्रित सहुने कर्युं रसनुं अवारी दात
त्यांहां प्रबल महा रस पुष्ट प्रगट कर्यो करी सनमान ।५०३।

सहु रसिक सृष्टिने तृप्त करी अने करे अति संतुष्ट
अे वृज तणी परमाविधि पोते अति रस पुष्ट ।४।

अे आचरण तणो जस ते जस प्रगट प्रसिध्ध
जगतमां फेली रह्यो रसिक तणी महा निध्ध ।५।

कीर्तन स्मरणे करी अने भक्तना देहनो धर्म
तेहने निवृती करे सद्य अे जसनो अे मर्म ।६।

निवृत करी अने तेसुं उतरोतर आधिक्य
रसे करे रस रूप जस मांहां परम सम्यक ।७।

अने पोताने विषे उनमत रसे तदासक्त जे भक्त
अे गर्भथी उपजी जे शोभा ते शोभा अति अव्यक्त ।८।

ने रस विलस्यानुं ज्ञान अन्य नहीं अनुसंधान
अेह रसे पाग्या रहे अेहनुं अेहज ज्ञान ।९।

रस सबंधी वितरे केण इतर सहुनो त्याग
संभावना बीजी नहीं रस विन सहु वैराग्य ।१०।

अे परम पुष्ट पुष्ट अैश्वर्यादिक धर्म अनूप
अे छय धर्म ज्युत महा रस रसिक स्वरूप ।११।

अेहना धर्म ते जे धर्मने आप आधीन
ते केवल शुध्ध भावापन स्वात रंग छे भिन्न ।१२।

तेहना रसने वस प्रभु ते प्रेम सहित मन रंग
रसाधीतथी अर्थ सिध्ध थाअे अंग अंग ।१३।

फल प्राप्ती छे प्रभुने अेहज धर्म फल रूप
तेह धर्मना अे धर्मी केवल रसिक अनूप ।१४।

जे भक्तने विषे पोताना अैश्वर्यादिक धर्म
अेहना कार्य प्रगट कर्या धर्म रूप जे मर्म ।१५।

ते जोवाने पोते मन करे रूचि मान
जे धर्मरूपी कारज पोता विषे रमण समान ।१६।

अे उत्कर्ष सहित प्रगट कर्युं सहेज अैश्वर्य
अने प्रभुसुं रमण पराक्रम अे परमाविधि वीर्य ।१७।

पुरूषोतम रस वस थई लीलानुं करे ध्यान
अे भक्त तणा अद्‌भुत जस अन्य न अेह समान ।१८।

ज्ञान वानसुं अज्ञात ने रमण होअे रसाभास
ते प्रभुसुं रसाधिक्ये केम करे ते रमण प्रकास ।१९।

अने जेहने रमण करता प्रतिक्षणुं कला अधिक होअे
अे श्रीजीनीपरम उत्कर्षता जाणेज विरला कोअे ।५२०।

अे परम लोकोत्तर ज्ञान प्रगट कर्युं अेणी पेर
अने पूरण वैराग्य वानने विषे सहु विस्मृति भेर ।५२१।
मोह पामीने राग उपजे अे महा वैराग्य
अेवा धर्म प्रगट अनुभव सिद्ध अे अनुराग ।२२।
अे धर्मे सर्व रस अनुभवी धर्मी संतुष्ट थाअे
तो स्वरूपना धर्म बंधुने केम कहेवाय ।२३।
ज्यारे अे स्वरूपना धर्म नहीं त्यारे व्युह केम होइ
व्युहनी तो संभावना नहीं त्यारे कहे क्येम कोइ ।२४।
व्युह कहेता विभाग तो अे रस रूप स्वरूप
अहीं अे अंग विभाग रसात्मिक परम अनूप ।२५।
तो अन्यने अे स्वरूपना व्युहनी उपमा देइ
अे असंगत्य कही मारी रसना केम करूं लांछन मइ ।२६।
अे शुद्ध रसात्मिक पूरण पुरूषोतमना विभाग
अे नोहे अने जे छे ते भिन्न छे जुत अनुराग ।२७।
पण ते प्रभुनी भावात्मिक कृपा विना अे प्रकार
प्रीछो जाअे नहीं महा गूढ तणुं जे सार ।२८।
शुध्ध मूल रसात्मीक स्वरूप लहे जे कोय
ते अे कारण सहित भेद सम्यक लहे सेय ।२९।
माटे हुं अे प्रभुनी कृपाने सामर्थे नामी माथ
जे को कृपा तणा पात्र छे तेहने जोडी हाथ ।३०।
प्रणपतिपूर्वक नमन करी यथारथ कहुं व्यक्त
अे स्वरूपना अंग पण लीला मध्य पाती छे भक्त ।३१।
जेहनुं मुक्ष त्यां अेहज प्रगट प्रसिद्ध प्रमाण
मुखाविंद रूपे तो श्री आचार्यजी निर्माण ।३२।
अने बीजा अंग तो जेहने विठलेशकुमार
श्री वल्लभजीअे पोते प्रगट कर्या निरधार ।३३।
तुम सब मेरे अंग हो आंख हाथ पाओ
माटे अे स्वरूपना अे अंग अेहोने अेहज भाओ ।३४।
अेह विवेक नथी कर्यो करी समूलता सिध्ध
अेहवा स्वरूप नेष्टिक प्रगट करी कह्युं प्रसिध्ध ।३५।
अेणे वचने स्वरूपे भक्तनो टाल्यो संसय परिताप
तेणे कारणेअे स्वकीयने स्व अंग कह्या आप ।३६।
पुष्टि सृष्टि श्री अंगथी प्रगटी कहे वेद पुराण
ते अे श्री अंग विसद कहुं प्रगट प्रसिद्ध प्रमाण ।३७।
अने ते सृष्टि प्रगट कही जे प्रगटी श्री अंग
सत्य संकल्पे सत्य वचन कह्यो तुम मेरे अंग ।५३८।

अेमां स्वरूपने भक्तनुं कारण जेह समूल
श्री मुखे प्रगट करी कह्युं ते जाणे स्वरूपनुं कुल ।५३९।
ते स्वरूपना आसक्त बाण भगवदी जाणे जेह
।४०।
अहीं केने उपजसे पूर्व पक्ष संदेह
अंग तो द्वादश अंगने कहीये छे तां तेह ।४१।
अने स्वकीय समाज तो अनंत छे तो सर्व अंग केम थाअे
अेहनासमाधानने कारण कहुं समुदाये ।४२।
प्रभुजीअे ज्यारे लीलाना कारज कारण अर्थ
अंग प्रगट कर्या सहित पोताने सामर्थ ।४३।
त्यारे अनेक अंगनी प्रार्थना सायकनी पेर
अनंत भक्त अंगत्वे रसमय अति रस भेर ।४४।
महा पुरूषारथ रूप प्रगट हवा ठामे ठाम
ते प्रगट थई स्वरूपात्मीक कार्य कर्या बहु नाम ।४५।
अहीं मुक्ति मार्गादिकनी तो संभावना नहीं
ते अन्य अवतारना व्युहना कारज छे सहु तहीं ।४६।
अहींया जेहवुं पोतानुं स्वरूप तेहवा स्वरूप समान
अेहवा कारज सोंप्या अतिशे करी सनमान ।४७।
माटे अे निरधार करीने उपपत्य सहित अनूप
प्रगट प्रमाण पूर्वक कहुं छुं अेह स्वरूप ।४८।
अे बंधु स्वरूपना व्युह नहीं अने धर्म पण नहीं
अे कारजने अवतारादिकना प्रागट्य होअे छे तहीं ।४९।
ते अे स्वरूपने प्रागट्ये सहु सांप्रत्य कारण काज
साथेथी प्रगट्या छे पोतानो करी साज ।५०।
ने अगाधि वस्तुनुं अगाधि कारण न्यामिक नहीं थाव
प्रभुनो आसय निश्चय करी जाण्यो नहीं जाय ।५१।
पण रसिक स्वरूपना रसिक धर्म जे अनन्य होअे
रसिक स्वरूपना अनुभवी ते अेह विचारी जोय ।५२।
अने कदाचित पदक होय जे धर्म कर्या निरावर्ण
विभूती कही ते सत्य जे स्वरूप तणुं आवर्ण ।५३।
विभूती होअे तो दूर रहे वस्तु जे छे अद्भुत
विभूती जाणे प्रभुने ते जो होय विभूत ।५४।
अेह वचन श्री गुंसाईजीअे कीधुं सत्य प्रमाण
अेम श्री गुंसाईजीअे अनेक प्रकारे कीधुं जाण ।५५।
अनेकवार अेणी पेरे विसद कर्युं बहु वार
पण अेणे स्वरूप जाण्युं नहीं अेक लगार ।५५६।

त्यांहां पूर्व पक्ष श्री गुंसाईजी तो ईश्वर महा संपन्न
मारग करता माहा गुरू सर्व संसय नाशन ।५५७।
सर्व प्रकासक अेह अेहोनी देखाडी वस्तु
देखे ते सहु कोअे जणावी जाणे समस्त ।५८।
अने अेणे नहीं ते जाणी ते कारण कोण करी
तेहनुं कहुं समाधान हुं आसेमन धरी ।५९।
अे स्वरूप प्रभावे करी पण जाणे नहीं अे स्वरूप
कृत्य असाधारणे पण जाणे नहीं अे रूप ।६०।
कदाचित अतुल कृत्य जाणे तेणी घडीअे तेणे काल
अे स्वरूप प्रभावनुं ज्ञापन पछे भूले ततकाल ।६१।
अेक उदर उतपन्न ने कार्याभिमाने जेह
तेणे करीय नहीं जाणे मोटुं कारण अेह ।६२।
अेक समय आवीने को अे वैश्नव अेक
अेकांते विनती करी प्रभुने करी विवेक ।६३।
मारी अे विनती छे सुणीअे प्राण आधार
राजना स्वरूपने जाणे गुंसाईजीनो परिवार ।६४।
त्यारे श्री हस्ते तर्जनी अंगुलीनी करी सान
वचने करीने अेम कह्युं इनकुं नहीं पहेचान ।६५।
विमात बंधुसुं श्री महाप्रभुजी राखे हेत
तो अे जाणे फरी पूछयुं करी संकेत ।६६।
महाराज विमात बंधु तो राजने जाणे तेह
त्यारे श्रीजीअे कह्युं वे हुं न जाणेअेह ।६७।
राज अे शा माटे नहीं जाणे कहीअे अर्थ
त्यारे प्रगट करी कह्युं पोताने सामर्थ ।६८।
इनकुं कुल अभिमान हे ताते जाणे नांहीं
ओर थे कछु अेक अधिक अे समझत मारग मांहें ।६९।
पे मोकुं नहीं जाने अेहवा कह्या वचन
स्वकीयने स्वतः जणावा पोते थई प्रसन्न ।७०।
अेहवुं कुल अभिमान तणुं मोटुं प्रतिबंध
श्री गुंसाईजीअे प्रगट जणावे न जाणे अे स्वरूपनी गंध ।७१।
अेक उदर उतपन अभिमान अपार
तेणे करी अे शुं जाणे महा सहोदर सार ।७२।
अे शुं जे को अन्य ज्यांहां होअे अभिमान
अभिमाने होअे वस्तु वेगली अेह कहुं छुं निदान ।७३।
ज्यांहां अभिमान होअे त्यांहां दैन्य न होअे लेश
दैन्य विना अे वस्तु जडे नहीं महा सुदेश ।५७४।

श्रीजीअे कह्युं आलस्य लज्या अभिमाननी गंध
वस्तु जाणवाने तेह स्नेहने छे प्रतिबंध ।५७५।
माटे कुल अभिमाने श्रीजी न जाण्या मूल
अग्रजे तो अे आद्यथी नव जाण्या ते समूल ।७६।
मुक्षे श्री गुंसाईजीने नवि जाण्या निरधार
तो अे क्यांहांथी जाणे सार तणु जे सार ।७७।
जो पहेला वक्तानुं स्वरूप जो जाण्युं होइ
तो तेहनुं जे वचन कृत चितमां आवे सोइ ।७८।
श्री गुंसाईजीने जाणे तो ओलंघे नहीं सूचन
वचन ओलंघ्यानो प्रकार कहुं आणी मन ।७९।
अेक समय वाघेलो रामचंद्र जे राज
देशाधिपति कने आव्यो सीकरी मलवा काज ।८०।
प्रथम अडेलमां दर्शनने आवे प्रति वर्ष
ते श्री गोकुलमां आव्यो धरी मनमां हर्ष ।८१।
त्यारे श्री गुंसाईजीने गिरधरजीअे कह्युं तेम त्यांहां
अे मोटा राजा आपण रह्या तेना देश मांहां ।८२।
ते माटे अेहोने सामा पधारो राज
श्री गुंसाईजीअे अेम कह्युं अे महारो नहीं काज ।८३।
बडो भयो तो कहा पे हमारे नहीं मर्याद
सामा जइअे अेसी भइ नहीं प्रातते आद्य ।८४।
सामा पधराव्या श्री गुंसाईजीसुं करी विवाद
श्री गुंसाईजीने अेह गम्युं नहीं पण सामा गया वाद ।८५।
राजानेतेडी लाव्या बेठा आंगण ज्यांहां
तेणे समय श्रीजी हते भीतर सेवा मांहां ।८६।
राजाअे श्रीजी पूछया ने अेहोनुं सर्व प्रकार
अडेलमां दर्शनने आव्यो त्यांहां कह्यो छे विस्तार ।८७।
तेहज प्रकार अहीं हवो राजा कर्यो विदाअे
ते गिलानी सामा पधार्यानी गुंसाईजीने नहीं जाअे ।८८।
ते घणी वार प्रगट करी कह्युं छे काढी लीक
जन्मभरे हमें थकी कीनी हे द्वै लौकिक ।८९।
अेक तो लाडबाइके ठाकुरकुं बेठावन पाट
रणथंभोरकुं गये हते हम यहु कारण माट ।९०।
दुजे यहुं राजाकुं ओ सामे गयो जान
यह हमकुं द्वै वातकी मिटत नहीं ग्लान ।९१।
श्री गुंसाईजीनुं स्वरूप जे मान्युं होअे अेम
त्यारे अेहवुं श्री गुंसाईजी कन्हे जइ करावे केम ।५९२।

अेहवी अनेक प्रकारे रीष करे मन मांहें
अेहनी सी जो इहा आश्रित तेह करे दिठाइ ।५९३।

भामिनी बहुजीनी खवासिणी अगरवार वाणीअेण
नाम छजो गिरधरजीने उपरे बोले कुवेण ।९४।

आवी घरमां सर्वनी साथे करे ते द्वेश
श्री गुंसाईजी लगण आवी पोहोंचे ते कलेश ।९५।

श्री गुंसाईजीअे तेहनुं पवित्रुं पहेर्युं नहीं
गिरधरजीअे वात सुणी खुणसाये अहीं ।९६।

अेक मोहनदास चारण तेहनो आश्रित
तेणे आवी श्री गुंसाईजीने मिथ्या कह्युं अनीत ।९७।

ठाकुरने मोसुं कह्यो आयके सपने मांहें
अबके याही वरसमों पवित्रा पहेरे नांहीं ।९८।

त्यारे श्री गुंसाईजीअे पूछयो वाको कहा इद प्रत्य
छजोअे पहेराय नहीं कह्युं याही निमित ।९९।

श्री गुंसाईजी अेम बोल्या पामीने खेद
अेहोना बोल्यानो मन मांहां जाणी भेद ।६००।

हमारे पवित्रा न पहेरे ठाकुर अेसी जान
छजोके लीने छजो भइ ते मान ।१।

खुणसाया जोइ चारण बिहीनो कहे महाराज
मिथ्या बोल्यो में उनकुं भलो मनायवे काज ।२।

अेहवुं करे वली ते अेक दिवसे भंडार मांहां
भामिनी बहुअे मोकली लेवाने कांइ त्यांहां ।३।

भंडारीसुं बंटी ते मांगी ते भंडारी दु:ख पामी
श्री गुंसाईजीनी आगल घणुं पोकार्यो आवी ।४।

त्यारे श्री गुंसाईजी खेद पाम्या अेहोनो सांभली वांक
वलतुं कह्युं कोहे रे या रांडको काटो नाक ।५।

भगवत नामे सेवक हरीआणीओ ब्राह्मण
तेणे वचन प्रमाणी गुंसाईजीनुं मनमां कीधुं पण ।६।

ताकता ताकता अेक समय पाम्यो ते ताक
सुती जोइ छाती पर बेसी काटयुं नाक ।७।

कापीने नासी गयो पोता केरे देश
गिरधरजीअे गुंसाईजीसुं मांडयो कलेश ।८।

कहे ब्राह्मणने मारूं तोज करूं जलपान
अेहवो रोष धार्यो अेणे ते करी निदान ।९।

श्री गुंसाईजी अेह सुणीपोते थया प्रसन्न
बाहाज्य ते पीडा अति घणुं अेहनुं राखवा मन ।६१०।

देखो कहां हे कहां गयो वेगे पकडी मंगाओ
सब कोउ जाय ढुंढो अरू लाओ जहां पाओ ।६११।
अेम करी अने गिरधरजीनुं कीधुं समाधान
वचने विवेक करी अने कराव्युं ते जलपान ।१२।
वलतो को अेक दिवसे भगवतन थई आव्यो संत
श्री गुंसाईजीने छानो आवी मल्यो अेकांत ।१३।
गुंसाईजीअे कह्युं मुसकाइ अे कहा कीयो रे कुजात
मारत अेसो जु जानसे जो आवतो उनके हाथ ।१४।
तेणे कह्युं महाराज मर्यानो तो सहेज विचार
पण राजनुं वचन मिथ्या केम थावा दहुं तेणी वार ।१५।
पछे जेम तेम करी गिरधरजीने लगाडयो पाअे
अेह प्रकार अेहोना परकरनो नित्य थाअे ।१६।
पोते करे अमर्याद जे आवे भगवद भोग
ते भगवद सामग्री करे पोताने विनियोग ।१७।
अेक समय अेक तनसुखनो परकालो सार
अति उतम बहु मोलनो आव्यो जेणी वार ।१८।
श्री गुंसाईजीअे नाथजीने हित करी विचार
चांपाभाईने सोंप्यो लेइ राख्यो भंडार ।१९।
गिरधरजीअे दीठो लेइ अणाव्यो अेह
साडी करी भामिनी बहुने पहेरावी तेह ।२०।
ते साडी पहेरी आव्या भोजन शाला ज्यांहां
दहीं परोसता दीठी श्री गुंसाईजीअे त्यांहां ।२१।
भोजन करवो तो भूली गया पहेचान्यो आप
सद्यज उठीने अचव्या मनमां थयो परीताप ।२२।
चांपाभाईने तेडी कह्युं के तनसुख क्यांहां
चांपाभाईअे विचार्युं पोताना मन मांहां ।२३।
जेष्ट पुत्रने तो कांइ कहेवाशे नहीं लेश
अेहवी अमर्याद सुणीअेभीओ पामशे कलेश ।२४।
माटे कह्युं नहीं ने कह्युं हां लावुं महाराज
बीजो परकालो लाव्या ते जोवानो काज ।२५।
अे नहीं रे लाव जो में दीनो हे रात
राज ते अेहज तहां में जानी वात ।२६।
अे पहेरी भोग करेंगे बोल्या पामी रूख
पाछे थे जो संतती होयगी ताते पावेगो दुःख ।२७।
अेअटल अनिरवचन श्री गुंसाईजीनुं सत्य
अने वली दुःख पामी कह्युं तेहवुं फल निमित्य ।२८।
जे ज्येम ज्यांहां त्यांहांथी हवि उठी महा भव्य
वडपणने पक्षे करी उपजाव्यो देव द्रव्य ।६२९।

जेणे नाथजी नहीं जाण्या शुं जाणे गुंसाईजीने अेह
गुंसाईजीने जे नहीं जाणे शुं जाणे श्रीजीने तेह ।६३०।

जे महा अतुल असाधारण अद्भुत स्वरूप
जाणवुं सुगम नथी अे तो छे परम अनूप ।३१।

जे प्रथम श्री गुंसाईजी जाण्या होअे प्रेम सहित भर भोग
ते अेहनी प्रिय वस्तुने ते होअे जाणवा जोग ।३२।

श्रीजीना स्वरूपने श्री गुंसाईजी लहे अद्भुत
श्री गुंसाईजीनुं स्वरूप अे जाणे सलुणु सपुत ।३३।

बाकी अेह स्वरूपने कोअे न जाणे लेश
जाणवुं तो अलगुं रह्युं आ करे उलटो द्वेष ।३४।

अे द्वेषनो जेह प्रकार ते समय समय अनुसार
तेणे तेणे ठाम कहेवाशे प्रगट करी विस्तार ।३५।

पण प्रथम जे गणेश व्यासे गोविंददुवेने प्रश्न त्रण
प्रेमे करी पूछया छे जे आणी अंतःकर्ण ।३६।

महा वस्तु तो श्री वल्लभजी विस्तारनुं शुं प्रयोजन
प्रगट्या अे कोण से कारण बीजा बालक अन्य ।३७।

अे त्रण प्रश्न पूछया तेहनो उतर कह्यो जेह
अे तो विभूती छे स्वरूपनी अेमां प्रयोजन अेह ।३८।

वस्तुना आवरणने अर्थे आगल पाछल
परकर सहित प्रागट्य कर्युं अतिसय महा प्राबल्य ।३९।

त्यांहां असंभ वैनय संपति प्रकार जे समान
परकर ज्युत अे प्रागट्य कर्या अेह प्रभुनुं दान ।४०।

समान विना बहिरंगथी वस्तु दूरे नहीं रंच
तेणे हेत प्रगट कर्या जाणी अे प्रपंच ।४१।

स्वरूप प्रभाव तो प्रगट करेज्यांहां जाणे अन्य
हींडणरूप लावण्य ने रस ते प्रकार तो भिन्न ।४२।

ते तो अनुभवी जाणे जे होअे अंतरंग
माटे अेणे प्रकारे समान कर्या सहु संग ।४३।

अने प्रगट कर्यानुं कारण पूछयुं तेणी वार
दुवेजीअे तो कह्युं नथी इदमित करी निरधार ।४४।

अेतनमारगी अंतरंग तेहने जाची
अेहनी कृपाअे करीने कहुं मन मांहे रांची ।४५।

केटलाअेक जीव छे जे जे दैवी अंग
प्रगट लीलाना स्वरूप रसथी न्यारा आसुर संग ।४६।

तेहनो संग छोडावीने तेहना उधारने अर्थ
अेहनुं प्रागट्य कीधुं पोताने सामर्थ ।४७।

अेहोने अनंत पुत्र पौत्रादिक करी अतिसार
कृत्यम असुर जीवनो करवो उध्धार ।६४८।

माटे अे अंश कलादिक तमो अधिष्याता लही
अहंकाराधीन अेकठा अवतर्या सहु अहीं ।६४९।
नाम निवेदन करावानो समर्प्यो अधिकार
पुष्टि मारगे जीवनो करवा अंगीकार ।५०।
अे कारज पुरूषोतम सबंध विना नहीं होअे
माटे पोतानो सबंध सिद्ध करवाने सोअे ।५१।
ब्रह्म सबंघनी आज्ञा आपी ते आज्ञा सामर्थ
आचार्यजीने सबंधेकरी सर्यो सहु अर्थ ।५२।
आचार्य कुलने सोंप्यो सर्वे अे अधिकार
लगन कर्या त्यांहां जीव ते उध्धारवा अेहो द्वार ।५३।
बोधक सोधक प्रबोधक त्रण प्रकारे करी
पोते अंगीकार करे मनमांहां धरी ।५४।
पण स्व अंगीकृत ने अे अंगीकार तारतम्य अनेक
प्रमाण सहित द्रष्टांते करी कहुं तेह विवेक ।५५।
मारग करताने बीज बले कालांतरे फल होअे
त्यारे अे स्वरूप विषे सर्वात्मना उपजसे सोअे ।५६।
तेम उतर आश्रित देश मांहां बीज तणुं तारतम्य
बरफनुं दाब्युं कालांतरे अंकुरित थया जेम ।५७।
घामे बरफ घुले त्यारे प्रगटे अंकुर
अहीं अन्य उपासी आचरणनो प्रतिबंध थाअे दूर ।५८।
त्यारे फल प्राप्ती अंगीकारमां तारतम्य
त्यांहां लगी फलनुं भाव नहीं ने केहेनो नहीं गम्य ।५९।
ने अवारी दानत्वे अनेकने होअे फल साधारण
केहेने कृष्ण संयोग केहेने संसार तरण ।६०।
केहेने नर्क निवारण अे तो अे मारग विसैक
शरणागत ने प्रवाह रूप पण भिन्न ते अैक ।६१।
सर्वोत्कर्ष सबंध जे, उतम भजनानंद
ते भजनानंद अनुकर्णे भाजन प्राप्ति होअे आनंद कंद ।६२।
ते भजनानंद दान पात्र जे पोते कर्या अंगीकार
भिन्न छे ते न्यारा जे रमण रस अनुभवे नित्य ।६३।
अेम अेहो द्वारा अनुग्रही ने स्व अनुग्रही सृष्टी
तारतम्य भेद ते अति घणो ने लौकिकमां मिष्ट ।६४।
तेहनुं बीजुं प्रमाण जे प्रभुअे आचार्यने घेर
आचार्यत्वे प्रगट करी कीधी अेहवी पेर ।६५।
कार्य समाने करी अने सरखा दीसे पात्र
जेम अग्नि मध्ये सुवर्ण आदि देइ महेत मात्र ।६६।
धातु मात्र अग्नि स्पर्शे लालीमा देखाये
पण कलंक द्रव्य वेधक रस मले त्यारे सुवर्ण थाय ।६६७।

ते वेधक रसनो स्पर्श थयो ते त्यारे गिणाअे
शीतल थये रूप बदले रंग फेर जणाअे ।६६८।
तेम अग्निवत आचार्यजीनुं घर कहेवाय
त्यांहां आवे जे शरण ते सहु वैश्नव गणाय ।६९।
पण ज्यांहां श्रीजीनी द्रष्टि रूपी जे कलंक भेलाअे
तेथी श्रीजीने विषे तेह सबंधज थाअे ।७०।
अे संबंधनुं स्वरूप ते कही पेरे करी कहेवाये
ज्यारे श्रीजीने गुण श्रवणे ते शीतल थाअे ।७१।
स्वरूपसुं तदासक्ते स्थिर होअे मन ज्यारे
अेम जाणवुं जे मूल सबंध थयो ते त्यारे ।७२।
अने वस्तु बले संसारवत जे समय शीतल थाअे
वलतुं स्वाभाविक रूप प्रगट करे मूल जाअे ।७३।
त्यारे अेम जाणवुं जे वेधक वस्तुनी गंध
अहीं अे ते स्पर्शी नथी अनुग्रह मूल सबंध ।७४।
जे आचरण ज्यांहां त्यांहां विलंब जोवा मन
ज्यांहां अनुग्रह सबंध त्यांहां तेहवो भाव संपन्न ।७५।
त्यारे सर्वात्मिक भावे करी स्व अंगीकृत समान
रमण योग्य त्यारे होअे ने होअे रस दान ।७६।
अे अनुभव सिध्ध अनुकरण ते लखीये छे करी पण
रतनभाई भरूचना सारस्वत ब्राह्मण ।७७।
कृष्णजीभाई नागर वडोदराना स्व स्थान
आदे देइने अनंत सुद्रष्टे कर्या ते समान ।७८।
सुद्रष्टी रूपी वेधक द्रव्ये आवरण कीधुं दूर
अनुग्रह करीने कीधा ते भावे भरपूर ।७९।
तेहनो प्रकार विस्तार आगल कहीश रंगे
अेम बालक द्वारा सोधीने आसुरनो छोडावे संग ।८०।
त्यांहांथी करी अलगा ने करे स्वकीय समान
स्वकीयनो संग करावी करावे तेने रसनुं पान ।८१।
स्व अंगीकृतने संगे करी करे भाव संपन्न
पछी स्व रसे पोषण करी अने निरोधे मन ।८२।
ने जे उपर इच्छा नहीं तेहनी त्यांहां स्थिति थाअे
आहां अनुसरी सके नहीं विभूताश्रीत समुदाअे ।८३।
स्व अनुग्रही सुद्रष्टि विना जे करे तेहनो संग
अेकत्र थई अने ते अनुग्रही समूल रस रंग ।८४।
तेहने समान अंतराय थाअे ते देह
जो जस वस अे वस वचने अे निःसंदेह ।८५।
मार्गानुसारे वस्तु सिध्ध करवाने काज
अे प्रागट कर्युं कारण मइ गोकुलेश महाराज ।६८६।

अेणे प्रकारे अनेक भांतना दैवी अनेक
असुराश्रितनो अनुग्रह करवा करी विवेक ।६८७।
अे परिवार तणु प्रागट्य कर्युं अेणे अर्थ
तेहनुं प्रयोजन सर्व समूल कह्युं इच्छा सामर्थ ।८८।
अे महा अतुल पोतानुं प्रगट करवा प्रागट्य
अेहवो सर्वतोधिक मारग प्रगट थयो अति उदभट ।८९।
सर्वज्ञान अप्रतसिंधु अश्रुत ने वेदनुं मूल
अेहवा मारगनो विस्तार कर्यो अनुकूल ।९०।
गोकुलाधीश लीला करे लीला करतां मांहां
मारगनो ते प्रबल प्रताप जोइ अने त्यांहां ।९१।
आधिक्यनी असहनताअे ते आधिक्य पंडित
वादारथ आवे छे विद्याअे मंडित ।९२।
ते श्री गुंसाईजी लीला निशंकताने काज
निर विघनार्थ मारग द्रढ करवानो करी साज ।९३।
मारग बले करी वादीना मोडे छे मान
श्रुति शास्त्र उक्त जुक्ते खंडे ते निदान ।९४।
जे जेहवो तेहने तेणे प्रकारे निरूतर
केटलाअेक तो अे प्रकार जोइ थाअे अनुतर ।९५।
केटलाअेकने तो जीतीने आपे दान
सर्वत्र जस कहेता हींडे पामीने नाम ।९६।
अेक अेणी पेरे अेह कृतारथनो ते प्रकार
अेणे प्रकारे कृतारथ होअे भव जल पार ।९७।
नहीं तो अेहवो कोण जे अहीं आवी करे वाद
अेक अेहोना सेवकसुं थाअे न विवाद ।९८।
तो श्री गुंसाईजीसुं कही पेरे करे उच्चार
कृतारथ करवानो कीधो अेह विचार ।९९।
अेक वेर श्रीजीअे कह्युं छे करी बहु हास्य
भाग्यवान सभामां कह्यो छे ते प्रकार ।७००।
अेक वेर कोउ पंडित काहु ठोरते आये
उनके मन अेसी कछु पूछे श्री गुंसाईजीसुं जाअे ।१।
हमारे नागर वाणीओ सो करी जाने वात
नाम नारायणदास रूधोरी वाकी जात ।२।
उनको कहे तोअर्थ बोले धौरीको नाम
धौरी जाणो छो आवे जे सघले काम ।३।
उन यहु वात सुनी कोइ आयो वादार्थ
उनसुं जायके पूछयो तमो आव्या अे अर्थ ।४।
पूछवा आव्यो छुं ते भलु कहो अेक कहुं तेह
श्री गुंसाईजीनो धौरी छुं उतर दो सहुने अेह ।७०५।

अेणे प्रकारे अनेक भांतना दैवी अनेक
असुराश्रितनो अनुग्रह करवा करी विवेक ।६८७।
अे परिवार तणु प्रागट्य कर्युं अेणे अर्थ
तेहनुं प्रयोजन सर्व समूल कह्युं इच्छा सामर्थ ।८८।
अे महा अतुल पोतानुं प्रगट करवा प्रागट्य
अेहवो सर्वतोधिक मारग प्रगट थयो अति उदभट ।८९।
सर्वज्ञान अम्रतसिंधु अश्रुत ने वेदनुं मूल
अेहवा मारगनो विस्तार कर्यो अनुकूल ।९०।
गोकुलाधीश लीला करे लीला करतां मांहां
मारगनो ते प्रबल प्रताप जोइ अने त्यांहां ।९१।
आधिक्यनी असहनताअे ते आधिक्य पंडित
वादारथ आवे छे विद्याअे मंडित ।९२।
ते श्री गुंसाईजी लीला निशंकताने काज
निर विघनार्थ मारग द्रढ करवानो करी साज ।९३।
मारग बले करी वादीना मोडे छे मान
श्रुति शास्त्र उक्त जुक्ते खंडे ते निदान ।९४।
जे जेहवो तेहने तेणे प्रकारे निरूतर
केटलाअेक तो अे प्रकार जोइ थाअे अनुतर ।९५।
केटलाअेकने तो जीतीने आपे दान
सर्वत्र जस कहेता हींडे पामीने नाम ।९६।
अेक अेणी पेरे अेह कृतारथनो ते प्रकार
अेणे प्रकारे कृतारथ होअे भव जल पार ।९७।
नहीं तो अेहवो कोण जे अहीं आवी करे वाद
अेक अेहोना सेवकसुं थाअे न विवाद ।९८।
तो श्री गुंसाईजीसुं कही पेरे करे उच्चार
कृतारथ करवानो कीधो अेह विचार ।९९।
अेक वेर श्रीजीअे कह्युं छे करी बहु हास्य
भाग्यवान सभामां कह्यो छे ते प्रकार ।७००।
अेक वेर कोउ पंडित काहु ठोरते आये
उनके मन अेसी कछु पूछे श्री गुंसाईजीसुं जाअे ।१।
हमारे नागर वाणीओ सो करी जाने वात
नाम नारायणदास रूधोरी वाकी जात ।२।
उनको कहे तोअर्थ बोले धौरीको नाम
धौरी जाणो छो आवे जे सघले काम ।३।
उन यहु वात सुनी कोइ आयो वादार्थ
उनसुं जायके पूछयो तमो आव्या अे अर्थ ।४।
पूछवा आव्यो छुं ते भलु कहो अेक कहुं तेह
श्री गुंसाईजीनो धौरी छुं उतर दो सहुने अेह ।७०५।

वलतुं श्री गुंसाईजीने पूछजो जे तमारे होअे काज
तमो मोटा पंडित छो मुहुने कहो अेक आज ।७०६।

छींक ते केहेनी दीकरी क्यांथी आवी क्यां गइ
अे कहो तो कहा कहे थई रहे आश्चर्य मइ ।७।

चुप करीके योंहीं रहे अरू कछु बोले नांहीं
पाछे आपुही यों कह्यो तमो न जाण्युं अहीं ।८।

कहो तो अे हुं तमने कहुं हवे समजावी कही
छींक ते ब्रह्मानी दीकरी ज्यांथी आवी त्यां गइ ।९।

हास्य करीने कहो हवे उतर नहीं कहेवाय
अेणे प्रकारे अहीं अेना सेवकने उतर नहीं देवाय ।१०।

उगती जुगती अनेअक्षरे जीती सके नहीं सोअे
तो श्री गुंसाईजीसों वाद करेअेहवो जोग्य न कोअे ।११।

पण तेहने वलतो स्फुरत छे मारगनो उत्कर्ष
तेणे करी ते शरण आवी पामे छे हर्ष ।१२।

लौकिक अलौकिक पुरूषार्थ अेहथी सिध्ध थाअे
प्रथम दामोदर जा छीत स्वामी आदि समुदाय ।१३।

अनंत थया छे कृतारथ अनंत थाये छे नित्य
अनेक प्रकारे करी रचना ते अनेक निमित्य ।१४।

अेम द्रढ वास करीने पुत्रत्त्व सहित मर्याद
पिता तणी मनवृत लीधी आरंभी आद ।१५।

वेद वाक्य सत्य करवाने पिता ते धर्म समान
पण अहीं अे छे अतुल अपर्मित जेहनुं नहीं निर्माण ।१६।

ते अनुभवीने अनुभव घणां अनुभवी जाणे मन
ते लेखनमां केम आवे जेह छे अनिर्वचन ।१७।

हवे कहुं पूर्व प्रसंग अवतारिका करी विवेक
गुण चरित्र स्नेह आसयना अंगीकार अनेक ।१८।

प्रमेय महातम आच्छादन लीला करे छे सार
अे कही ने विधि विद्योगते लीला जे वन विहार ।१९।

अने कुलनुं कारण कह्युं अेबे मांगल्ये करी
संक्षेपे सूचन कर्युं अति आनंद भरी ।७२०।

हवे महा नायक रसिक वरे स्वकीयनो भोग
नवोढाना रसनी इच्छा करीने जे हवो संयोग ।२१।

ते गोणानी रस आगम लीलानो जे अमित प्रकार
ते आगल ओगणत्रीसे मांगल्ये बहु विस्तार ।७२२।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्भुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित प्रमेय गोपनार्थ धर्म चरित्र
।। सात्विक लीला वर्णनो नाम मांगल्य अठावीसमुं संपूर्णम् ।।

मांगल्य – २९ – ओगणत्रीसमुं

राग : "अहीं अेक प्रसंग लखुं छे ते सांभलो चित धरीय ने " अेम गवाशे।

जै जै महा रस पुंज रसिक सृंगार सार शिरोमणी
जे भक्तना सौभाग्य तिलक ने भाग्यवान भक्त तणो धणी ।१।
जे भक्त संगे श्री अंगे क्षणु क्षणु कला अधिकी घणुं
जे भक्त द्रष्टे थई वस अैश्वर्य भुले आपणुं ।२।
जे भिन्नता नहीं भक्त साथे कृपा इछित परस्परे
वस्तुत्वे अैक्यता अनुभव करी कराव्यो वल्लभ वरे ।३।
अेहवो रसिक वर ने रस उपयोगी सामग्री सोहामणी
स्नेहासकते सर्वदा करे लीला रसाल मोहामणी ।४।
महा रसिक जन रस दान दायक कामिनी मनोरथ भर्या
जे सौंदर्य असक्त चित प्रेमदा प्रचारे परवर्या ।५।
भामिनी भावनुं भाव पूरक कान्ताभिसारक फल प्रद
मानिनी मानने लीन मकरंद रस मधुप माता मद ।६।
ते मद उनमत झंकार वाणी धीराने विहवल करे
गाढ मध्यम मृदुल अेहवुं मान त्रिविधानुं हरे ।७।
गज गामिनी गति गुणासक्ते गजेंद्र वर गौरव भर्या
प्रबल प्रमेय प्रकार पूरित प्रियतमा प्रेमे वस कर्या ।८।
विलासनी जन भाव भावित सदा मन पूरित रहे
अंगना गण परिताप हारक आरत्य रंचेक नवि सहे ।९।
वनिता तणु भूषण मणी अबलाने बल दायक सदा
बाला तणु चित अनुग्रह अेहलाद कारी अे तदा ।१०।
आनंद घन नौतन रसिक भोग अनुरागी भोग्य वर
सर्वेन्द्रि यास्वाद रस मय रस आसक्ते रसो पर ।११।
चतुर वर चतुरा विषे चातुरी जे महा रस भरी
रहस्य रमण समे रसिके रसिक जे अंगीकरी ।१२।
अेहनी कणिका कारण सहुनुं जोता अेहवुं भावीउं
अे चातुरी सम करूं केहेने मन कोअे न आव्युं ।१३।
वाछाअेण अने भृर्त शास्त्रे कोक मांहें जे धरी
चतुराइ अेवी चातुरी पर कंइ वार न्योछावरी करी ।१४।
वीक्षण ईक्षणेथी उपजावे आनंद अति घणां
ते अेक रसना अनेक गुण हुं क्यांहां लगी कहुं अेह तणा ।१५।
महाराज राजेश्वर शिरोमणी विठल कुंवर सोहामणो
प्राणाधिक अति परम प्रिय श्री वल्लभ मोहामणो ।१६।

मुग्धा मध्या प्रागल्भ रमण प्रिय रस भोगीया
दक्षण नायक अति निपुण अने सदा रस संजोगीया ।१७।
केवल कृपा रस गम्य प्रभु श्री गोकुलमां राजता
रसरास अतिसय सुखद लीला करे नित्य बिराजता ।१८।
त्यांहां स्वकीया अंकुर जोबना नवोढाने दीधी योग्यता
शसैव किशोर रूपांतर जोबन प्रवेश रस भोक्ता ।१९।
हाव भाव रूपी जोबन रसना अंकुर प्रगट्या अति घणा
लजा रूपी पल्लव प्रसर्या कटाक्ष कुसुम सोहामणा ।२०।
उरोज रूपी सगम रसना फल प्रगट थयां तेह समे
अेम धरणी पूरण रस भरी आप्या ते पोते तेह समे ।२१।
स्वकीया नवोढाना स्वाधीन रसनी इछा कीधी स्वतःथी
पण नवोढा नायकानो रस पारदनी पेरे स्थिर नथी ।२२।
जे को पारदने धरणी उपरथी राखे ते करमां धरी
ते नायका नव वधुने ते सके स्थिर रंजन करी ।२३।
अेहवो निपुण नवोढा तणो रस अनुभवे न विरामीअे
अति रसिक अनिरवचनी सुखद ते परिश्रमे करी ।२४।
जे नवोढा नायका तेहने सहज अेहवा धर्म छे
भय त्रास कातर ने लज्या संकुच अेहवा मर्म छे ।२५।
अल्प वयण ने अनिमेख नयणा स्थिर मौन्य अधीरता
हठ जुअे रति होअे गोप्य आरत प्रगट दिसे भीरूता ।२६।
अेहवा दुराग्रह धर्म अेहने रह्या छे जे अनुसरी
ते वस करण अे निपुणवर अेक सहज धर्म बले करी ।२७।
ते प्रगट स्वरूप विषे स्वाभाविक धर्म छे अेहवातदा
लावण्यामृत सहित रूप ने प्रहसित वदनांबुज सदा ।२८।
चंचल चपल करूणा भर्या शुभ नेत्र कमल विमोहता
सुखद अति परिताप हारक सर्व मांहें सोहता ।२९।
अंग ने प्रत्यंग परम सुचारू शोभा भर अति
अद्‌भुत मनोहर कोटी काम अभिराम सुंदरता पति ।३०।
ते सलुणता सौंदर्यनी ने सनमुख रही निरखता
पुलकित रसावेशसुं रंजित हरख आंसु नयणे वरखता ।३१।
लावण्य निधि सनमुख स्वभावे प्रतिक्षणुं प्रमुदित बहु
अनुढा उढा नवोढा प्रौढा पतिवृता सहु ।३२।
स्वाभाविक अे सर्वनो अे सहज धर्म सिथिल करे
अेहवो महा नायक अेने अनुकूल थइने अनुसरे ।३३।
त्यारे अनुढानुं अज्ञान ने उढानी कातरता सहु
नवोढानो भय अने विश्रध्वष्टनो जे संकुच बहु ।३४।

अति विश्रध्वष्ट जे नवोढानी लज्या प्रौढानी धीरज टले
पतिवृतानो हठ दुराग्रह निरखता सहज बले ।३५।
अवस्थाभिन्न भिन्न भांते अद्‌भुत अभिलाषा करे
विस्तार तेहनो छे प्रथुक सहु मनोरथ मनमां धरे ।३६।
अनुढा ते आश्चर्य अति चकित चित्र लखी सी थइने रहे
श्रीमुख सुंदर जोइने मनोरथ धरी मन मांहां कहे ।३७।
विवाह माहारो अेहसुं जो होअे अेम हैयडे धरे
आग्रह सहित अंतरगते अभिलाख अनुदिन अे करे ।३८।
उंडा उसासा भरी भरीने दोष ब्रह्मानो धर्यो
आहवा ते परम सुंदरनी साथे विवाह मारो नवि कर्यो ।३९।
नवोढा रस जोग्य विन पण चाह रसनी अति घणी
अे स्वरूप जोइ मनमां धरे अभिलाष संगम तणी ।४०।
विश्रध्वष्ट ते दुतिका सनमुखे जुअे अनुरागे भरी
स्थापित ते वचन सखी तणु अभिलाषा मनमां धरी ।४१।
अति विश्रध्वष्ट ते सखीयथी कृम चार आगल परवरे
अे स्वरूपनो मनोरथ करी आगम थई जे अनुसरे ।४२।
प्रौढा ते परम प्रवीण जोइ आनंद उर न समाय छे
दामिनीवत चपलाइसुं धीमेथी सनमुख धाय छे ।४३।
पतिवृता ते पतीने तजी प्रेमे भरी प्रभुने मले
अे स्वरूपनो अभिलाष करी आरत धरी धीरज बले ।४४।
स्वैरिणी आप स्वभाव त्यागी अभिलाष प्रभुनो करे
काम पूरणने जोइ ते सद्य पतिवृत आचरे ।४५।
अेम मुग्धा मध्या प्रगल्भा पतिवृता अने स्वैरिणी
उढा अनुढा नवोढा अेम अवस्था सहु अेह तणी ।४६।
अेम मोद आतुरे लोभ्या थका ते हठाग्रह प्रभुसुं रहे
अलगा न जाअे निकटथी पल अेक अंतर नवी सहे ।४७।
स्वाभाविक सामर्थ अभिनव स्वरूप सहुने गमे
पराक्रम अद्‌भुत अेहवुं मर्यादाने अतिकृमे ।४८।
अेहनो तो अे सहु सुगम छे तो नवोढानो परिश्रम तेसो
जावदिक रस मय सेवाने सिद्ध छे ते विलंब केसो ।४९।
अने पोते पण अे रस विषे अनुकूल अति आशकत छे
तेथी सर्व भांते सर्वदा अे विहित रस अनुरक्त छे ।५०।
तथापी प्रभु उक्त रस भोक्ता छे तेणे करी करे
मर्यादा रसनी योग्यता सिध्ध थअेथी इच्छा धरे ।५१।
अेणे कारणे संजोगता हित विलंब पुष्प तणो हवो
ते समय कारण कहुं कांइ अेक जेह प्रभुअे अनुभव्यो ।५२।

सवंत सोल तेत्रीसे बहुजी ते भर जोबन समे
वरस सत्रह नववधु नवनाहोने अतिसय गमे ।५३।
अने वर्ष पचीसना प्रभुजी जोबने आव्या भरी
स्वकीया नवोढाना रमण रसना स्वादनी इच्छा करी ।५४।
त्यारे प्रथम पुष्पारंभ हवो त्यांहां रीत जे कुलनी सदा
ज्ञात ने वली शास्त्रनी ते कर्युं गोणु जे तदा ।५५।
समागमे जे प्रथम रसनी प्रगट लीला आचरी
विस्तार कांइ अेक कहुं मन मांहां अतिसय उलट भरी ।५६।
सौभाग्य सुखद सवंत तेत्रीशे शरद रूतु सोहामणी
ते मांहें महा रस योग्य पुष्पारंभने आरत घणी ।५७।
आरंभ सूचक आगमना चिन्ह सकल प्रगट हवा
श्री बहुजीने प्रति अंगे अंग हो अे सांप्रत्य अभिनवा ।५८।
अंग अंगमां आलस भरे चित मांहे चेन पडे नहीं
निंद्रा न आवे नयण फरके कारण कांइ जडे नहीं ।५९।
भुज करण कटि जंधाअे कांइ अव्यक्त पीडा होअे वली
उरोज फल भारे जणावे वात नवि जाअे कली ।६०।
भोंह कुंतल कर ने उर मांहें उठे ते लही
पण पोते तो अनुभव प्रथम संभावना जाणे नहीं ।६१।
ते पछे कमला बहेनने जे कह्युं कारण अे सहु
ते दिवस बे चारेक थया मुहने आहवुं थाये छे बहु ।६२।
बहेने कह्युं शुभ चिन्ह छे अे उदय आनंदनो वली
बहेने ते मामीने कह्युं अतिशे फूल्या सांभली ।६३।
मामीअे मोदे भरी वेणाभटने विनती करी
पारवतीने शुभनो समय आव्यो ते उलट भरी ।६४।
सामग्री गोणा तणी सिध करो उतम भांतनी
ते करे उत्साहसुं अभिनव धरी मन खांतनी ।६५।
हवे अेह रूतु महा मंगल दिवसे इच्छाने अनुसारथी
श्री बहुजी पीअर पोढीया ते सहेज मन विचारथी ।६६।
त्यांहां प्रथम संगम भय हरण सुखरास सुखद शिरोमणी
निज स्वप्नमां अनुभव करावी रमण रति रळीयामणी ।६७।
अनुभव करी अनुभव कराव्यो सकल मनोरथ पूरके
भय अने संकोच सोच निवार्यो लज्या चूरके ।६८।
वलता ते बहुजी जागीया पछे स्वप्ननी ते सुरति करे
अेहवे पुष्पनुं दर्शन हवुं संकोच मनमां धरे ।६९।
लज्या सहित संकुचाइने सेज्या थकी अलगा रह्या
घरमां जाण्युं गुरूजने ते परस्पर सहुने कह्या ।७०।

त्यांहां पछे मामी आवीया तेहने देखी उपराटा थया
कारण जणाव्युं तेहथी ते जोइने घरमां गया ।७१।
सौभाग्यवती समान वयनी उत्साहे ते सिध्ध करी
थाली गंधाक्षत तणी साडी ने चोली मांहें धरी ।७२।
ते मोकली मोदे भरी तेणे तिलक करी पहेराव्या
संकोच सहित अेकांत स्थल बेसाडीने मन भाव्या ।७३।
पछे अेक सौभाग्यवती श्री गुंसाईजीने घेर गइ
वधाइ मांगी फूलसुं ते शोभाजी आगल जइ ।७४।
तेहने वस्त्र आभरण पहेराव्या उत्साहासुं उलट भरी
द्रव्य आपी अती घणा ने अतिशे ते प्रसन्न करी ।७५।
पछे शोभाजीअे श्री गुंसाईजीने कह्युं काका कही सोहामणुं
श्री वल्लभके घर शोभन भयो ते सुणीने सुख पाम्या घणुं ।७६।
श्री गुंसाईजीअे त्यारे पूछयुं इच्छा थकी मनने गमे
पहेर्युं हतुं बहुजीअे पोते वस्त्र केहेवुं तेह समे ।७७।
वधाइ वालीअे कह्युं पहेरी हती नाही करी
स्वेत तनसुख तणी साडी अने वली सोंधे भरी ।७८।
अेहवुं महा शुभ मंगल सूचक सांभली मन फूल्या
जोतसी तेडी तेह समय पूछयो शुभ वचन त्यां बोल्या ।७९।
कह्युं बहुजीने पीहरथी घेर लाव्यानुं मुहुरत कहो
लगन ग्रह नक्षत्र जोइने यथार्थ जेहवुं लहो ।८०।
ते स्पष्ट करी सहु जोइउं रूतु मास दिन उतम घणुं
अति मंगलकारी जोग आव्या शुं कहुं हुं अेह तणुं ।८१।
आज उतिम दिन भलो घेर बहुजीने पधरावीये
वली तत्रीय पहोर घणुं उतम तेह समय लइ आवीये ।८२।
पछे जोतसीने मंगल तिलक करीने वस्त्र पहेराव्युं
श्रीफल अने दक्षिणा आपी जेहने मनने भाव्युं ।८३।
पछे शोभाजीने गुंसाईजीअे कह्युं वेणाभटने घेर कहो
आज बहुजीने पधरावसुं तमो तेह कारजमां रहो ।८४।
आपणे घेर बेसवाने मंगल साज ते सिध्ध करो
अेक स्थल जोइ त्यांहां सामग्री सर्व धरो ।८५।
अेह वचन सुणी शोभाजीअे पछे वेणाभटने कहाव्युं
अमो लेवा आवुं छुं बहुजीने अे सर्वने मन भाव्युं ।८६।
अेकांत स्थल कोटडीमां सेज्या बिछावी सिध्ध करी
नीचे जुलीची उपरे महा प्रभुजीनी धोती धरी ।८७।
ते बिछावणेथी देहरी लगे चणादालनी खीचडी
ढगली कीधी तेह समय ते रही अेक अेकने अडी ।८८।

घृत सहित काचा दूघणी अेक कटोरी आणी ज्यांहां
हलदीनी चार डलीअ आणी तीर बे राख्या त्यांहां ।८९।
चोक तोरण साथीआ सर्वत्र कीधा निज घेर
अेम भीतर सहु सिध्ध करी राख्या मंगल साज ते बहु पेर ।९०।
बाहेर तिबारीमां बिछावणा आंगणमां कर्या घणां
अने गंधाक्षत हलदी ने बीडा कर्या सिध्ध सोहामणा ।९१।
पछे वारणे अक्षत कटोरी लइ ज्ञातमां दइ निहोतरा
श्री गुंसाईजीने घेर शोभन छे कहे वेग आवो त्यांहां सरा ।९२।
ज्ञातना स्त्रीजन सहु अे काज अनुपम सांभली
श्री गुंसाईजीने घेर आव्या उत्साहसुं मननी रली ।९३।
वेणाभटने घेर पण सहु अेणी पेरे मंगल होय
ते उलटनुं निर्माण कही पेरे विसद करी सके कोय ।९४।
पछे बहुजीने सौभाग्यवतीअे छोहीने चोटी करी
वली तिलक अंजन भूषण बहु सृंगार करे उलट भरी ।९५।
साडी सशोभिती अभिनवी लेंगो चोहली सोहती
अलते अनुपम चरण रंगी पनही पेहेरे मोहती ।९६।
पछे पुआनी सामग्री गोल चणा ने घृत चावल धर्या
खीचडी खसखस गोलसुं खांडीने अे सहु सिध्ध कर्या ।९७।
वाजिंत्र अनेक प्रकारना वाजे ते परम सोहामणा
प्रथुक करीने नाम क्यांहां लगी कहुं अेक तणा ।९८।
श्री गुंसाईजीने घेरथी स्त्रीजन सहु आव्या ज्यांहां
गान करतां वाजते बहुजीने पधरावा त्यांहां ।९९।
समधण सनमुखे जइने आदर करी सहु तेडया
मान देइ मंदिर मांहां मनुहार करी बेसाडया ।१००।
त्यां अे समयना गान सहु को करे छे मन भावसुं
सर्वने तिलक करी अने बीडा ते आप्या चावसुं ।१।
पछे अनेक सामग्री सहित स्त्रीजन समाज जे आव्या
शुभ गान करतां गुंसाईजीने घेर बहुजीने पधराव्या ।२।
भवन बहु बेटी तणे ज्यांहां स्थल सशोभित सिध्ध करी
खीचडीनी ढेरी करी पधार्या ते पर पग देइ ।३।
बिछावणे बेठा पछी दूध घृत जे पहेलुं सिध्ध कर्युं
ते मांहेंथी तीर अग्रसुं कुल रीत करवा मन धर्युं ।४।
पाटलीअे घुंटण ने खभे मस्तके तेह स्पर्श करे
वली बहुजीना बेहु हाथनी अंजुली ते दूधे भरे ।५।
पछे आचमन तेहनुं करी हाथा ते दीधा भींतसुं
वलता बिछावणे फरी बेठा विधोगतिनी नीतसुं ।१०६।

कुमारिका बेहु घर तणी बे बेसाडी वाम दक्षणे
बीजा स्त्री बेसाडीया जे समान वय शुभ लक्षणे ।१०७।
दामोदरदासी ने कृष्णदासी गोरबाइ आदे सहु
अेहवा अनेक भक्त उत्साहसुं आवी रह्या ते निकट बहु ।८।
बाहेर आंगण ने तिबारीमां स्त्रीजन अति घणां
बहु बेटी विविधि पेरे समाधान करे तेह तणा ।९।
उत्साह सागर उलटयो सर्वत्रमां फेली रह्यो
तेणे मोदनी मर्यादा मेटी क्यांहां लगी जाअे कह्यो ।१०।
ढोलारी ढोलक बजाडे गाये छे स्त्रीजन घणी
क्षणराणी ने शेठाणी दइ नै गाअे गाल सोहासणी ।११।
समान वयना श्री प्रभुसुं रस तणी हांसी करे
अने रसिक जन रस मांहें पाग्या वचन मधुरा उचरे ।१२।
भाव बलथी भावता ने टोक तरक वचने कहे
अने हाव भाव करी सूचवे रस मुसकाइ प्रभु मनमां लहे ।१३।
श्री गुंसाईजी पोता तणी बेठके बेठां प्रेमसुं
समाचार भीतरना प्रतिक्षणु मंगावे ते प्रमोदसुं ।१४।
वेणाभटने घेरथी सामग्री आवी छे जे बहु
श्री गुंसाईजीने भीतर थकी कही कहीने पठवे सहु ।१५।
ते मांहेंथी खीचडी पुआ भीतर पठवे काजने
चालतुं थाअे ते सहु सर्वे रसोइना साजने ।१६।
बाकी सहु स्त्रीजनने आपे हलदी ने चावल चणा
बीडा आपी तिलक करी सत्कार कीधा अति घणा ।१७।
विदाय करीने कह्युं भोजनने ते वेगा आवजो
सहु कुटुंब जुत बालक सहित सर्वने साथे लावजो ।१८।
अेम कहीने ते विदाय कर्या पछे रात्र पडी सोहामणी
ठाम ठामे भीतर बाहेर दीवी प्रगट कीधी अति घणी ।१९।
सौभाग्यवती अेक तेडवा मोकली अेहवा पर्वने
तेडीने भोजन करावी बीडा आप्या सर्वने ।२०।
अर्ध रात्र लगी रहीने सर्वको अे विदाय कर्या
प्रथम दिवसे अेम कर्युं आनंदे अति उलट भर्या ।२१।
त्रण दिवस पर्यंत सहुको अेणी पेरे भोजन करे
सामग्री वेणा भट तणी गोरस बीडा घरना वरे ।२२।
बहुजीने चोटी करी सृंगार नख शिख सोहता
नित नवा नौतन भांतिना करे त्रण दिवस ते मोहता ।२३।
भोजन करावे मृणमय पात्रे ते त्रण दिवस वली
कुमारिका संग रहे खेले भोजन करे साथे मली ।१२४।

पाछे चोथे दिवसे शुभ समय अने लगन बल ज्यों ज्यांहां
हलदी खळी खांडी छाणी नाओेण स्नान करवावे त्यांहां ।१२५।

रजस्वलाथी रहित सोहासणी स्वतः निकट रहे
अंगवस्त्र करी साडी चोली लहेंगो कर ग्रहे ।२६।

आभरण सादा पहेरीने भीतर पधार्या भावता
चोकीओे बेठा नववधु सुख पाम्या सहु जोइ आवता ।२७।

वलता ते नाओेण माहावरे पग रंगे आशीष देइ देइ
सौभाग्यवती आवी निकट घृत दूध कटोरामां लही ।२८।

तीरना बे अग्रसुं त्यांहां रीत प्रथम तणी जेह
पगनी बने पाटली घुंटण खभे शिर स्पर्शज ते ।२९।

कुमारिका नाही करी डाबी ने जमणी जे रही
तेहने पण ओ रीत कीधी पीठिका कुलनी लही ।३०।

चोकीओे बेठा चार लाडु तिलने गोल तणा वली
सोहासणीने तेह समय वहेंची आप्या मननी रली ।३१।

भीना वस्त्र छोहया हता ते नेग नायणनो ज्यांहां
चणा चावल चारे छेडे बांधी ते आप्या त्यांहां ।३२।

ओेणे प्रकारे नाहीने सहु करी रीत ने नेमसुं
शुभ घडी शुभ वेला जोइ पीहर पधार्या प्रेमसुं ।३३।

चोटी पांथी करीने सृंगार नख शिखथी कर्या
पछे आरोग्या अनुमोदने अति अमित उलट भर्या ।३४।

श्री गुंसाईजीने घेर महा मांगल्य काज होओे अति घणा
चोका देइने चोक पूर्या सोहे परम सोहामणा ।३५।

वाओेण पीत अक्षत लइने ज्ञातमां दइ निहोतरा
कहे शोभन जोवा आवजो वेगा थइने सांतरा ।३६।

आंगणमां बिछावणा ने वेदी पासे पीढा धर्या
चीर बिछाव्या उपरे अने साज सहु ओे सिध्ध कर्या ।३७।

झारी बे सनमुख लही सहेकार पत्र करी
उपर चावल भरी कटोरा गोलनी भेली धरी ।३८।

पासे गंधाक्षतनी थाली सोपारी राख्या मांहें
जल पात्र ओेम उपहार सहु ततपर करी राख्या त्यांहां ।३९।

वाजा अनेक प्रकारना श्री विठलजीने घेर सोहीओे
नरगा नगारा नफेरी शहेनाइओे जग मोहीओे ।४०।

ताल मृदंग ने झांझ झालरी रवाव ते सहुने गमे
पंच शब्दा ने बंस विणा बाजे बहु विध ओेह समे ।४१।

भाट चारण जाचक गुणीजन मागद बंदी जस भणे
वैदिक पंडित आव्या ते बेठा स्थल आपापणे ।१४२।

वैश्नव सर्व ने ग्रामी जन जे आव्या उत्साहे करा
आंगण अटाली त्रीजे माल ने छजे भीर घणी भरी ।१४३।
चोक ने भीतर तिबारी मुंडेरीअे अति घणी
अने अपरमित सर्वत्र ठामे दीसे परम सोहामणी ।४४।
महा कुतुहल ठाम ठामे थई रह्यो ते क्येम लहुं
ज्यांहां त्यांहां प्रगट्यानंद विलसे विसद करी क्यां लगी कहुं ।४५।
वलतां ते श्री गुंसाईजीअे श्रीजीने भीतर थकी
लइ वेदीये पधराव्या ते शोभा जाअे न कही सकी ।४६।
महा प्रभुजीअे अेणे समय कोअे अनिर्वचनी रस तणु
सहेज शोभा भर स्वरूप प्रगट कर्युं ते सोहामणुं ।४७।
सृंगार रसना मध्यपाती नव रस स्वरूपात्मिक धर्या
अंगने प्रति अंग अंगे नवे रस अंगी कर्या ।४८।
लावण्य निधि अव्यक्त सुख संयुक्त बेठा आवीने
ते स्वरूप छाह्या मात्र सूचन करूं छुं मन भावीने ।४९।
जे महा रसिक वर लाडीले मोहिनी मोहक रस भरी
अनुरागनुं जे आधिदैविक केसरी धोती धरी ।५०।
अति अनुपम अेक रंगे सुवासित सोंधे भर्यो
हमेले भुजा पर लटकतो उपरेणो ते अंगी कर्यो ।५१।
सर्वतोधिक शीष उपर श्याम सरल सचीकणा
लह लह्या दीर्ध रसाल चुचुता ते केश सोहामणा ।५२।
सृंगार सारनुं मूल ग्रीवा पर अंबोडो ढलकतो
शोभा ते क्यांहां लगी कहुं विसद अे पीठ उपर चलकतो ।५३।
जाणे पीठनी प्रनालिकाअे रस वहे सृंगारनो
के प्रेमदा तणा मदपूर चाले सुहाग के सहु नारनो ।५४।
महा भाल विसालमां जे स्वकीय जनना भाग्यनुं
ते सोहाग आमोदे भर्युं कुमकुम तिलक सोहागनुं ।५५।
संवलित थई थई चूर्ण कुंतल तिलक उपर शोभीया
जाणे भ्रमर कुल भ्रंगांगना जुत सुवासे अहीं लोभीया ।५६।
भृकुटी धनुष आकार दीसे नेत्र अंबुज फूलीआ
सेत असेत आरकत चंचल चपल चारू अमोलीया ।५७।
करूणा रसे रस भरित रस ईक्षण तीक्षण निरखता
कामिनी काम व्यथाने दूर करे ते प्रेमे वरखता ।५८।
नासिका निपट सोहामणी निरूपम नवल शोभा धरे
चंपककली तिलक कुसुम सुक मुख कवी को सम करे ।५९।
नाग फणा तेल धार कहे ते उपमा केम मन धरूं
मकरंदे त्रीय रस स्वाद लुब्धक अेहने केहनी सम करूं ।१६०।

करण कोमल पातला सरूआ सुखद शोभा भर्या
मणि माणिक रत्न जडित अमोलिक शोभित हीरा धर्या ।१६१।
तेहनी ज्योति जगमग जगत पर अेहवा कुंडल कमनीय भावता
अलग आंदुलमान ते उदबोध रस उपजावता ।६२।
अधर मधुर अविक्त अति अरूण अनुरागे भर्या
होअे उदीपन रस रसिकने जेणे श्रवण पंथ उरमां धर्या ।६३।
वदन कमल विमोहकतुं स्मित श्वास मकरंदे भर्युं
विकसित सदा प्रफुल्लित अचल अहीं हास्य रस निश्चय कर्युं ।६४।
मोहोसर तणी रेखा रसीली संपूर्ण आवी भरी
ते अनिरवचनीय राजती महा शोभानी वृष्टे करी ।६५।
कंठे परम विचित्र भूषण तुलसी गुंजा शोभिता
वली हेम मुक्ता माल मणीमय मानिनी मन लोभिता ।६६।
उर उतंग उपर बिराजे उरवसी नंगे जडी
पदक चौकी जगमगे साम्यता देवा नवि जडी ।६७।
ते दीठे परिरंभण तणो अभिलाष मनमां धरे
स्पर्श सुख वांछे छे रसिकनुं अने वामाने विहवल करे ।६८।
आजान भुज दंड बिराजे वीर रस विलस्या समे
विलासथी उल्लास उपजे जोइ जोइ सहुने गमे ।६९।
के उर कंकण जडाव मणिमय फुदणा मफतुल श्यामनुं
ते निरखीने नववधु ते विसरे कारज धामनुं ।७०।
कर कमल कोडामणो मुद्रीका मनोहर भांतिनी
वली चूडा ने हथसांकला पहोंची हीरा पांतनी ।७१।
उदर अनुपम स्थल त्यांहां शुभ नाभी सर गंभीर जे
उनमत मदे गज गामिनी मन मग्न होअे जोइ ते ।७२।
स्वरूप छबि प्रतिक्षणुं नवल ते अद्भुत रस सृंगारनो
निरखता तृप्ती न पामीअे नहीं को अे अनुहारनो ।७३।
कटि देस कामागमन भर त्यांहां रौद्र रस अहरनिस रहे
रति जुत बोधक क्रोध करी विरूध्ध सुख अेथी लहे ।७४।
बाला नवोढा नायकाने भयानक रस सूचवे
नायक महा रति निपुण ते लावण्य मांहें प्रीछवे ।७५।
शांत रस ते स्वभाव शीले मुग्धानुं मन वस करे
रीझवी सनमुख करीयने रस काज उभयता अनुसरे ।७६।
अेम आठ रस अनुक्रमे कह्या जे प्रथक अंगे परवर्या
शिख थकी नख पर्यंत प्रभुअे प्रेम जुत अंगी कर्या ।७७।
सृंगार केसे नेत्र करूणा हास्य वदने सोहतो
वीर रस भुज परसीओ अद्भुत स्वरूपे मोहतो ।१७८।

रौद्र कामने द्वार विलसे भयानक ते कृत जोइ
शान्ती शिले कार्य कारण विसद अे कर्या सहु कोइ ।१७९।
गिणना मांहांनो शेष रस नवमों जे नव रसमां रह्यो
ते लोक मांहे विरूध्ध छे पण अहींया रस दायक कह्यो ।८०।
सुरति मांहे काम सदने वदन स्पर्शे विवस थकी
अे उभय उदबोधक समे ते रसिक लहे कहुं केम सकी ।८१।
नव अंगमां नव रसिकने नव रस अेणी पेरे अनुसर्या
नव मनोरथ नौतन उभय उपयोगने अंगी कर्या ।८२।
जंघा जुग रति रण तणा ते स्थंभ अविचल अेहवा
जानु जुक्त विवरण करतां केहेने कहुं अे जेहवा ।८३।
नख तणी श्रेणी सुभग उधबोध अद्‌भुत अेह तणो
अनिरवचनीय रसिक जे सहु क्यांहां लगी कहुं तेह तणो ।८४।
अंग अंग अमित रसे भर्या प्रति अंग परम अविक्तसुं
न्यारो न्यारो स्वाद ते करी जाणे पान जे जुगतिसुं ।८५।
जेहो उपर करूणा करे पोते स्वतःथी रस भर्या
तेह जाणे अेह सुख जे रसिक वरे रसे भर्या ।८६।
अेहवे महा रस पुंज स्वरूपे वेदी पर पधार्या
श्री गुंसाईजी जोइ हरख पाम्या भक्त ते भाव ओवार्या ।८७।
अेणी पेरे सुख आपे निरंतर भक्तने उलट भरे
अने आरति उपजावी अधिक अभिलाष सहु पूरण करे ।८८।
त्यांहां जमणी पासे श्री गुंसाईजी बेठा थई आनंद मइ
श्रीजी ते मोद संकोचसुं अति अंतर अनुमोद थई ।८९।
ढोलक लेइ स्त्रीजन अे समयना गान गाअे भांतसुं
मांहे गाल गाअे सोहामणी मली मलती पांत्यसुं ।९०।
नाना मोटा न्यातनां सहु मंडप मांहे आव्या
श्री गुंसाईजीअे आदर करीने मान देइ बेसाडया ।९१।
गुजरातनी स्त्रीजन निपुण आनंद अति मोदे भरी
गाअे छे गुण निधिना गुण वचन मांहां रचना करी ।९२।
आवो आवोजी सहीयर निरखीअे मनमां उलट अति घणो
लाडकडोरे वल्लभजी पाट बेसे आज दिन रळीयामणो ।९३।
उत्साह आनंद कह्यो न जाअे मोद मन स्वकीय तणो
शुभ समयनो अनुभव कर्यो मन भावतो मनोरथ घणो ।९४।
अे ठाम ठामे गान ढोलक कवि गुणीजन गाअे छे
मागद मनोरथ करी आव्या चारण भाट ब्राह्मण अे छे ।९५।
जै जै कार ज्यांहां त्यांहां थई रह्यो छे ते घणो
आनंदनो अनुभव करे सहु विस्तार केम कहुं तेह तणो ।१९६।

हवे वेणाभटने घेर बहुजी नख शिखे सृंगारीया
पहेरामणी अने दायजाना काज सर्व विचारीया ।१९७।
सज्या सुपेती साज सहु अने वस्त्र पात्र विविधी धर्या
सौभाग्य द्रव्य जे अे समयना सहु आणी सिध्ध कर्या ।९८।
पकवान उकील जे दालपचाइ सुखपुडी कण घृत ज्यांहां
जे समय जे जे काज आवे सिध्ध करी राख्या त्यांहां ।९९।
तेहवे समय श्री गुंसाईजीअे वेणाभट मन भाव्युं
समय मुहुरतनो थयो वेग आवो कहावीयुं ।२००।
बाजते वाजिंत्र स्वजन कुटुंब सहित सहु आव्या
उत्साहसुं सहु गान करतां बहुजीने पधराव्या ।१।
श्री गुंसाईजीअे वेणाभटने सनमान कीधा अति घणा
पछे बहुजीने श्रीजी निकट बेसाडया अति सोहामणा ।२।
सलज्जित उलट भर्या मोदे ते घुंघट करी अने
वाम भागे पीढे बेठा श्री अंगे अनुसरीयने ।३।
पछी बहेने आवी छेडला गांठया ते उभय स्वरूपना
त्यांहां स्पर्श रस अभिनवा प्रगट थया गोकुल भूपना ।४।
पछे वेणाभट जे जे सामग्री लाव्या छे घेरथी
तेह प्रसारे आंगणमां सहु जुअे उलट भेरथी ।५।
कसेडी हांडा कटोरा थाल चावल पल तणी
बंटे विविधी आभरण भरीया जटीत मुक्ता ने मणी ।६।
डबरा द्रव्य सुगंधनां अंजन तिलक नाडाछडी
सौभाग्य समय शोभितो आणीने राखी ते घडी ।७।
साडी ने चोली तणी छाबो सहेज सामग्री घणी
उत्साहसुं बहु लावीया संक्षा न थाअे तेह तणी ।८।
यजुर्वेदने मंत्रे आचार्य स्वस्ति वाचन उचरे
गर्भाधानने प्रभु अभिसेष बहुजीने करे ।९।
पांच सोपारी ने चोखा गर्भाधान मंत्रे करी
श्री कर अंजुलीअे करीने श्री बहुजीना खोलामां धरी ।१०।
पछे ते चावलनी खीर करीने बहुजीने लेवरावे छे
ने सोपारीनो छीर करीने बीडा मांहां आपे छे ।११।
पछे वेणेभटे श्री गुंसाईजीने सामग्रीनी विनती
कहावी ते प्रणपती करी अति दीन भावे दीनथी ।१२।
अेह तांतणो सूत्रनो जेम चंद्र समो कीजीअे
ते सरखुं में कर्युं छे पण राज मानी लीजिअे ।१३।
वलतुं श्री गुंसाईजीअे अेम कह्युं तमो साज ते लाव्या घणो
अेटलो तो मारा घरमां कांइ स्थल नथी धरवा तणो ।२१४।

अेहवुं परस्पर कहीने पछे करे छे पहेरामणी
प्रथम श्रीजीने करे आभरण सहित घणी घणी ।२१५।
अेम सहित श्री गुंसाईजी परिवार बहु बेटी सहु
पहेरामणी प्रेम सहित कीधी ते अति उलट बहु ।१६।
कुमारिका बेहुने साडी आपी अती हेजे भरी
पछे संबंधी सर्वे श्रीजीने अने बहुजीने पहेरामणी करी ।१७।
वेणाभट सीधो सामग्री लाव्या पाक ते सिद्ध थया वली
सुखपुडी ने उकीर अे सहु ज्ञातमां वांट्या मली ।१८।
पछे बहेने तिलक करीने बीडां हस्तमां आप्या
आरती करी आशीष देइ आयुष द्रढ करी स्थाप्या ।१९।
अे आरतीनी थाल मांहां ते द्रव्य मुके अति घणां
पछे ज्ञात सर्वने तिलक करी आप्या बीडा ने दक्षिणा ।२०।
ब्राह्मण ते पीत अक्षते आशीर्वाद दे उभा थई
शुभ शुभ कही वेदोक्त मंत्रे प्रभु मस्तके मेले लइ ।२१।
प्रथम गांठया छेडला बहेन ते छोडे तेह समे
श्रीजी अने बहुजी उठीने गुंसाईजीने त्यांहां नमे ।२२।
श्री गुंसाईजी स्नेहभर आशीष दीधी शुभ लही
अविचल बिराजो जोड अे धनवान पुत्र जुते कही ।२३।
वलता ते स्त्रीजन सर्व तेडावीने हलदी लेइ ने
अेम ज्ञात सर्व विदाय करी वलीया ते आशीष देइने ।२४।
श्री गुंसाईजीअे वेणाभटने द्वार लगी पोंहोंचाव्या
विवेक करी विदाय करीने फरी आसने आव्या ।२५।
वस्त्र भूषण द्रव्य आपी वाजिंत्री विदाय कर्या
मांगद गुणी याचक वलावीया ते आशीष दे उलट भर्या ।२६।
वलता ते भोजनने पधार्या त्यां प्रथम ब्राह्मण मली मली
दीधो ते आशीर्वाद उतम सार शुभ मांहां जे वली ।२७।
पछे कुटुंब ज्ञात वर्ग सहित भोजन कर्या सहु मली ज्यांहां
उठीने ब्राह्मणे आशीर्वाद ते दीधा त्यांहां ।२८।
बीडा आपी विदाय कर्या पछे कुल वैश्नवने घणी
श्री प्राण वल्लभने त्यांहां सहु करे भेट पहेरामणी ।२९।
रस रमण धाम समार्युं रचना ते सेन मंदिरे करी
तेह सूचन करूं कांइ मनमां अति उलट भरी ।३०।
आंगण तिबारी भीतर मंदिर सुंदर चित्र कराव्या
जेहवा ज्यांहां ज्यांहां शोभीये तेहवा कर्या मन भाव्या ।३१।
होदजरी हांसीया मखमलनी खासानी कमजी तणा
दरीआइ दोहोरी दोरंगी फिरता फरावे जोतणा ।२३२।

अेहवा चंद्रवा चतुराइसुं बांध्या ते छाते मोहता
मोहता मन मनसिज तणु अने सर्व उपर सोहता ।२३३।
छींट करणाटकी अने मांहें नारी कुंजर भांतीनी
हांसीया हमरू चौकना ठाडीयो बांधी खांतीनी ।३४।
टेरा ने परदा ठाम ठामे बांध्या ते बहु विधी करी
जुलीचा उंचा अमोलिक बिछाव्या सघले भरी ।३५।
सेज्या सकोमल सुखद सुंदर बिछावी रचना घणी
उजवल अधिक फीणथी समता न आवे अेह तणी ।३६।
चोकीयो हाटिकनी जडित ते सेजने रही अनुसरी
त्यांहां बीडा सहु संजोगनां ने बरास चुनोटी धरी ।३७।
हार पुष्प सुगंधना सोंधे ते चरच्या वली
आरसी निर्मल अमल अति राखी त्यां मननी रली ।३८।
बंटा विचित्र अनेक विधिना भांति भांति जडावना
रचना रचित अभिनव अनुपम राख्या त्यां बहु भावना ।३९।
नाना विधिना आभरण भर्या रत्न माणिक मणीना
पद्मराग हीरा पिरोजा अेहवा मोल अगणीयना ।४०।
चुआ जवाद ने साख गौरा अतर मेद अबीर जे
अरगजा उतम भांतीना सिद्ध कर राख्या त्यांहां ते ।४१।
शीसा तेल अनेकना ने गुलाबना शीसा घणा
ताके गवाखे धरी राख्या दीसे अति सोहामणा ।४२।
धूप अगर तणा उखेव्या रह्या छे फेली करी
मकरंद मंदिर मांहें महेक्या कर्या जे मनोरथ करी ।४३।
रस उदबोध सुगंध द्रव्य जे आवे त्यांहां उपयोगने
मिठाइ फल मेवा मधुर सुस्वाद राख्या भोगने ।४४।
पकवान अनेक प्रकारनां ने जलपानना गडुआ भर्या
शीतल सुगंधे सुवासीआ नेवरा छिरकीने धर्या ।४५।
सेजनी पंगति दीसे उष्णोदके गडुओ भरी
त्यां तष्टी सुंदर शोभिती ते लइने पासे धरी ।४६।
नरद चौपड सार पासा गंजीफा शतरंज अने
अेहवा खेल रस अधिक्यने करी राख्या भक्ते धरी मने ।४७।
श्रमजल निवारणने धर्यो पंखो ते प्रेम करी अने
वली ते समय विनियोग आवे ने धर्या उलट भरी अने ।४८।
बहुजीना सृंगारने सामग्री विविध प्रकारनी
समय वीती ते फरी सजाय ते करी राखी भावानुसारनी ।४९।
सामग्री अे समयनी जावद जे रसना काजनी
स्नेह भर भक्ते विविधी पेरे कीधी बहु सहु साजनी ।२५०।

भावे जुत वात्सल्यसुं चतुराइअे जे संभवी
रस जोग्य सुखद रमण हिते सिध्ध करी त्यां अभिनवी ।२५१।
अेहवे महा सौभाग्य भर जे रमण हित पुष्टे करी
ते आधिदैविक स्वरूपसुं आवी अे रयणी रस भरी ।५२।
परिकर सुखद पोता तणा जे आवे अे समय काजने
रसिकने रस वाधवा लावी ते सर्व समाजने ।५३।
ठाम ठामे दिपक प्रगट्या ज्योति तेहनी वाधती
ते रमण रस अविलोकवा अति उलटसुं आराधती ।५४।
नवोढाना रसनी प्रभुने आरती प्रगटी अति घणी
वाधे ते प्रतिक्षणुं अभिनवी मर्याद नावे तेह तणी ।५५।
श्री बहुजीने त्यां विविधी पेरे अंगे ते उवटणा कर्या
सृंगारवा नववधुने मनमांहे अति उलट भर्या ।५६।
अंग अंगुच्छे अंगुछी वस्त्र विविधी अणाव्या
ने सुवासित सोंधे भरीने श्री अंगे पहेराव्या ।५७।
अति सुखद भूषण भावता जे जे श्रीअंगे सोहता
ते धराव्या शुभ समय हित पेखता प्रियने मोहता ।५८।
नख थकी शिख पर्यंत ने शिख थकी नख लगी राजता
सृंगार शोभा स्वरूप विसद न थाअे बुधे लाजता ।५९।
श्रीजी सभा मंदिर थकी पछे सयन मंदिर आव्या
जरकसी वागे लटकता ते भक्तने मन भाव्या ।६०।
रमण मंदिर मांहें सामग्री जे नौतन करी धरी
रस नायक रसने हिते अविलोके ते प्रेमे करी ।६१।
अेहवे थयो रसनो समय सौभाग्यवान भर्यो ज्यांहां
रसभक्त अेक बहुजीने पधरावता आव्या आंहां ।६२।
बहुजीअे कह्युं पधारीअे अविलोकवा सुख सेजने
अमो रची छे रचना करी केवल तमारा हेजने ।६३।
मंदिर मनोहर सज कर्युं आवोजी जोवा हरखता
बंटा जटित भूषण भर्या तमो रीझसो ते निरखता ।६४।
अमो चित्र चोंहांपास कर्या छे दीठेथी मन भाईअे
आवोजी माहारे साथ ते अविलोकता न अघाइअे ।६५।
टीका ने काजल कुंपली साडी ने चोली अभिनवी
मुद्रिका मनोहर भांतीनी केणे न दीठी अेहवी ।६६।
अेक स्वरूप त्यांहां अनूप रह्युं छे सुख भर्युं त्यां रस तणुं
ते सेज उपर सोंहे छे मोहे छे परम मोहामणु ।६७।
अंग अंग तेहना अभिनवा निरखता देह विसारीअे
तेनी अनुपम रचना जोइने आपणुं सर्वस्व वारीअे ।२६८।

ते निरखवा वेगा थई पधारीये प्रेमे करी
आ समय छे अवकासनो तमो निहालो नयणे भरी ।२६९।
अे वचन सुणी चतुरा चपल समज्या ते हारंद्र मन तणुं
द्रष्टि नीची करी मुसकाया ने उर हरख्या घणुं ।७०।
मौन ग्रही उतर न आवे कांपे देह अधीरू थी
शीष धुणी कर करणे दे सूचवे सयणे भीरूथी ।७१।
समजावता समजे नहीं केम केम करी उभा करे
हा कही अने वली ना कहे फरी बेसे पण नहीं डग भरे ।७२।
त्यांहां प्रभु प्रेमातुर घणुं नौतन रसे परवस रहे
आचरणथी आसे जणाअे प्रगट करी कही पेरे कहे ।७३।
चकित थई चंचल पणे अने चेन चित मांहें नहीं
मुग्धा तणो मारग निहाले विलंब क्षणु न सके सही ।७४।
सेज पर कर फेरवे सामग्री निरखे तेह समय
पण बहुजी पधार्या विना व्हालाने मन कांइ नव गमे ।७५।
ते जोइ भक्त जे निकट उभा रसिक रसना पात्र जे
अनुभवी अनुदिन स्वरूपना अेहवा रसिक जन मात्र जे ।७६।
ते हास्य हित भरमें कहे टोक ते तरक वचने कही
वली परस्पर ताली देइ मुसकाया प्रभु सनमुख रही ।७७।
कहे आज अे रस अभिनवो अनुभवनो आव्यो समे
अेवा वचन रस मांहां लपेटया कहे ते सहुने गमे ।७८।
श्रीजी संकुची मुसकाइने सनमानसुं उतर करे
पण विलंब होअे बहुजीने ते सोच मनमां धरे ।७९।
आरत हरण आरत भर्या पेंडो जुअे आतुर थई
आन अनुसंधान नहीं थई रह्या अेहज रस मइ ।८०।
ते जोइ प्रेमदा परवरी जे सनमुखे उभी रही
विनंती बहुजीने करी पधराव्या करमां कर ग्रही ।८१।
केम केम करी पधरावीया डग भरे वली उभा रहे
वली विनव्या क्रम चार चाले फरी जावा दो वली अेम कहे ।८२।
बहु विनय वात्सल्ये करी मनुहारसुं त्यां लाव्या
लजा सहित घुंघट करी शुभ सदनमां पधराव्या ।८३।
कोइ अनिरवचननीय रस रमणना धामनी रचना घणी
ठाम ठामे ज्योति अति जगमगे ते दीपक तणी ।८४।
स्वाभाविक श्री अंगनो उद्योत जे शोभा धरे
आभरण झाक झमालसुं बहुजी भीतर परवरे ।८५।
अे समयनो उद्योत जे प्रगट्यो छे नाना भांतिनो
आगमन श्री बहुजी तणे झातकार थयो सहु जातिनो ।२८६।

जाणे माणेक स्फटिक पन्नानो परवत प्रगट्यो चोहोगमे
के जोति तेज ने कांति सहु अेकत्र थई अेणे समय ।२८७।
वली बहुजीना प्रति अंगमां शोभा जे दीसे अभिनवी
ते विधि सहित विवरण करूं मारी यथा मति जेहवी ।८८।
नख शिख थकी जे अगाधि रस ते उदधि पूरण रस तणो
लावण्या निधी पय पूरित अपरमित प्रगट्यो सोहामणो ।८९।
मन खंभ द्रढ अंग उदधि मथन अभिलाष केरी संखला
लगनी गुण आरत रवै कामे मथन होअे अति भला ।९०।
जोबन तणे बल भाव शिक्षक अेम मथने जे रत्न प्रगट हवा
ते अनेक अनिरवचनीय सुखद क्यां लगी कहुं अति अभिनवा ।९१।
प्रमाण पक्षे रत्न हितने परस्परे सहु मलीने
देव आसुर अेकत्र थई महेरामण मथीओ मलीने ।९२।
त्यांहां चौद लोकिक रत्न काढया साधारण विण अर्थना
ते वहेंची आप्या सर्वने प्रभु काजना नहीं व्यर्थना ।९३।
आंहा बहुजीअे व्हाला हिते सांप्रत्य कीधा अति घणा
प्रति अंग अंगे प्रगट करीया नाम अगणित तेह तणा ।९४।
जेहने जेम योग्यता होअे तेहने तेम सृंगारीया
नख थकी शिख पर्यंत ते महा प्रभु हेत विचारीया ।९५।
प्रति अेक प्रति उदबोध रस उपयोग आवे राजने
सांप्रत्य सनमुख लेइ आव्या व्हालाजीने काजने ।९६।
उपमा अपरमित अभिनवी समताने को आवे नहीं
जे प्रभुने रस काज आव्या वर्णन करूं हुं शुं कही ।९७।
प्राचीन रत्न जे विहित छे अलौकिक जे अंगी कर्या
ते साम्यता सूचन करूं कांइ जे बहुजीअे अंगे धर्या ।९८।
चंद्र वदन सोहामणुं निर्दोष निश्कलंकी मुदा
भय रहित संपूर्ण कला जुत संजीवन मूली सदा ।९९।
अमृत वचने वृष्टि होअे सींचन सुखद सोहामणुं
सर्वांग पर रंभा ओवारूं अेहवुं परम मोहामणुं ।३००।
सुभाव गुण अलौकिक समता रमा कोटि विसारीये
पारीजातिक अंग आमोदे थकी ते ओवारीये ।१।
अंगनी स्वच्छता जोइ कौस्तुभ मणी सम कीजीये
कहेवाने को बीजुं नहीं उपमा ते केहेनी दीजीअे ।२।
भोंहें वंक विलासनी जे धनुष आकारे रही
दक्षिणावृत शंखनी उपमा ग्रीवानी कही ।३।
गज गवन चंचल चातुरी अने धनवंतर आल्पाधने
विरह व्याधीनी आधि टाले वाचा मनसा ने कमर्ने ।३०४।

सुरभी काम दुग्धा पटंतर शीलने जु आणीये
पण वांछित अर्थ पूरक बहुजी कोण भांति वखाणीये ।३०५।
जोबन अति उनमत सुरावत भावे कल्पी अे धर्युं
समताने को आवे नहीं जे प्रभुअे अंगी कर्युं ।६।
सणगटे सनमुखे आवीया त्यां लाज वस विलस्या समे
चौद रत्ने चतुरा अलंकृत प्रेम जुत प्रभुने गमे ।७।
अेहवे स्वरूपे रस सदन आव्या ते बहुजी चित धरी
जावदिक रस भोगनी सामग्री साथे अनुसरी ।८।
योग्यता जेहने जेहवी अभिलाष तेहने तेहवी
अेम प्रथुक मनोरथ मन धरी भाव भरी थई अेहवी ।९।
समय रमण तणो लही उपयोगने साथे थई
प्रहरी प्रवेसी संगमां अबलाने अेम आवी लइ ।१०।
उत्साह भय संकोच जुत आवीने उफराटा रह्या
सेजे न आव्या संकुचथी माने नहीं केहेने कह्या ।११।
ते समय जे रस भक्त हता सेन मांहों मांहां देइ
वलीआ विचार आपथी महाप्रभुसुं आज्ञा लेइ ।१२।
त्यांहां निकट अेक खवासणी ते विनवे विनय करी
हाथ तेहनो तरछोडी खीजीने कहे रहे परी ।१३।
पछे बाथ भीडी हाथथी पधराव्या तेणे समय
बेसी गया उठे नहीं बहु भांति वचन कहे केमे ।१४।
सेज्याअे बेठा रसिकवर सनमुख रही कौतुक करे
मुसकाया महा मोदे भर्या रस तणो अनुभव करे ।१५।
आरतातुर अति निपुण चतुराइ अेक करी तदा
खवासणीने सयन देइ तेह समय सद्य करी विदाय ।१६।
मद हरण कोटिक कामना महा तेज पुंज रसो मइ
चतुर वर आनंद घन उठया ते अति आतुर थई ।१७।
मुसकाया मधुर वचन कही करी ग्रही बोल्या सोच सो
आवोजी सेजे बेसीअे अेवडो ते संकोच सो ।१८।
कर स्पर्शता संकोच लज्या पलाया पोते थकी
अेक भय रह्यो भीरूता जुत समागम आशा तकी ।१९।
सेजनुं भूषण महामणी लइ सेज पर पधराव्या
अे उभय अनुपम जोड जोइ तन प्राण धन ओवारीये ।२०।
नायक निपुण नव वधुनुं मन लैइ मनमां चावसुं
धीरव्या धीरज दइने सात्विक सुशील सुभावसुं ।२१।
उनमत अखिल रस अंगनो अंतरमां गोपन करी
मन मेहेली महा चतुर वर तेहोंमां मल्या धीरज धरी ।३२२।

ईक्षण अपेक्षा बहुजीना दिश तणी प्रभु मनमां धरे
अेक वार सादर सनमुखे शुभ द्रष्टी अम सामी करे ।३२३।
नमित नयणे मूक वयणे वात व्हालानी सुणे
मुसीकाय मन सणगट करी फरी पूछता मस्तक धुणे ।२४।
घुंघट तणा अवकासमां अवकास जोइ श्रीमुख जुअे
अेम दुरावी द्रष्टे रहे जेम प्रगट नव समजे कोय ।२५।
श्रीजीअे सणगट बेहु करे ग्रही अलवसुं अलगो कर्यो
स्पर्शीने मुख सनमुख कर्युं संकोच नयण तणो हर्यो ।२६।
पछे नयण सनमुख करीने मृदु वेण मधुरा उचरे
अल्प उतर पूरण सुखनी आरति अधिक प्रगट करे ।२७।
अेम नयण वयण ने मन तणो संकोच टाल्यो कृमे कृमे
अेक रह्यो रस अंग संगनो संकोच सहित तेह समे ।२८।
गंभीर धीर सुजाण महा प्रवीन नायक वर अहीं
अनुभव्याने आतुर घणुं पण समय विण विलसे नहीं ।२९।
कामने वस अे नहीं काम छे अेहोने वस सदा
रीझवी सनमुख करीने रसने समय विलसे तदा ।३०।
पछे सामग्री मेवा मिठाई बीडा पुष्प सुगंध जे
सहु परस्पर विनियोग आण्युं थर्युं समय सबंध जे ।३१।
श्री करे बीडुं लइने संयोग पान मांहां भरे
चीप करी चतुराइसुं बहुजीना मुखमां धरे ।३२।
बहुजी वदन विकसित करी श्रीकर थकी मुखमां ग्रहे
मुसकाया उभय अनूप रस ते समय निरखे ते लहे ।३३।
आरोगावीने आरोग्या पान प्रेमदासुं मले
जे स्नेह वेली अंकुरित पल्लवित कुसुमित थई फूले ।३४।
अेम रीझव्या रीझवार रसिके उभय अति उलट भर्या
खान पान समान रीते प्रीतसुं सनमुख कर्या ।३५।
पण प्रभु रस वसने समय त्यारे बहुजी केरो कर ग्रहे
त्यारे अंग संकोरीने पछी खसीने अलगा रहे ।३६।
अति चतुर परम सुजाण नायक भाव मनमां धरी
बाहाज्यनीत अंतर रस अेहवी अलप रचना करी ।३७।
चरण भूषण ग्रही क्यांहां घडया केणे कर्या
बहुजी वचन विवेकसुं उतर कहे उलट भर्या ।३८।
पछे कर तणा भूषण जोइ कह्या मधुर वचन सोहामणा
ते सांभली सुख पामीया ते मन हरख्या घणा ।३९।
करणना आभरण जोइ रीझया ते अति उलट भरी
अज्ञात थई कारण हिते पूछे ते कोइ अेक मिस करी ।३४०।

पछे कंठना भूषण जोइ कह्युं आतो अतिशे अभिनवा
उर तणा जोइ उरोज स्पर्स्या उभयता मंगल हवा ।३४१।
आरत भर्या आलंघिया हवो रस तणो विस्तार जे
परमित न आवे तेहनी पामे नहीं को पार ते ।४२।
अे अगाधि रस अेकांतीनो अति अनिर्वचनी अभिनवो
ते कोण विसद करी सके प्रतिक्षणे प्रगटे नव नवो ।४३।
रस भक्त महा अंतरंग जे को निरखवा ओटे रह्या
अे जोइ रसमां मग्न थया ते वचने नवि जाअे कह्या ।४४।
अेणी भांत रयणी रस भरी रस मांहें संपूर्ण हवी
विलसीने विकसित उभय थया आरती अे रस अनुभवी ।४५।
केली मांहें कामनुं मन वधार्युं व्हाले घणुं
सत्कार करी सत गणो कीधो प्रबल थयुं अेह तणुं ।४६।
रसमात्र जे सदपात्र सहु आशा धरी त्यांहां आव्या
महा रसे सहु पूरण कर्या जे जेहने मन भाव्या ।४७।
अभिलाख तेहने अधिक प्रगट्या श्री अंगे शोभा धरे
अभिनवेस्या अे स्वरूपने अन्यत्र कहुं न अनुसरे ।४८।
अेम रयणी रस पूरण सुखद रसमां वीती तेह समय
पछे प्रात उठया उभय अभिनव रस भर्या सहुने गमे ।४९।
मोद मनमां अति घणो पण दुरावे सहुथी घणुं
उल्लास माहा संकोच ते होअे रूप केम कहुं तेह तणुं ।५०।
दूरीय द्रष्टि करी घुंघट रस सदनथी सांचर्या
बहुजी गुरू जनने भवन पधारीया उलट भर्या ।५१।
त्यांहां सखी सुखद समान वयना हास्य परम वचन करी
कहे आज अम सामु जुओ सनमुख थई द्रष्टे भरी ।५२।
अेक सनमुखे दर्पण लइ उभी रही मुसकाइने
कहे निहालो शोभा नवल बहुजी रह्या संकुचाइने ।५३।
रस जाण स्वकीय सबंधना जे गौरबाइ आदे देइ
ते हित भर्या वात्सल्यसुं चांपे ते उरमां लेइ लेइ ।५४।
भामणा ले भावे भर्या कहे आजनो दिन अभिनवो
अमारा मनमांनो ते मनोरथ पूरण हवो ।५५।
पछे रसमस्या अति रस भर्या वांछित विलासे पागीआ
प्रति अंग अंग अनंग मोहक प्रेम रस अनुरागीआ ।५६।
मंगलनिधिनुं मंगल समे ते परम महा मंगल भर्युं
अति रसिक जे रसपात्र तेणे तेह समय दर्शन कर्युं ।५७।
अरूण अनुपम अभिनवा नयणा नवल शोभा धरे
अंग अंगना अंकित जोइ सहु रस तणी हांसी करे ।३५८।

अनुभवी अे जे रस तणा जे मर्मसुं बोले घणुं
मुसकाया प्रभु मानी लेइ हुं क्यां लगी कहुं तेह तणुं ।३५९।

पछे नाही मंदिरमां पधार्या सेवा रस सुख दानने
अंतरंग अति आसक्त उभा रूप रसना पानने ।६०।

त्यांहां बहुजी सणगट करी सनमुख दूरीने उभा रहे
प्रतिक्षण सनमुख द्रष्टि जुअे उभय अभिनव सुख लहे ।६१।

अेणी पेरे अेम लीला होअे नितनवी प्रतिक्षणु वाधती
रस भरी अभिलाष रसनो रहे रस आराधती ।६२।

स्वकीयाना रसनी अेणी पेरे लीला श्री गोकुलमां करे
वाधती नित नौतन अधिक आरत तणी आरत हरे ।६३।

हाव भाव अनेक विविधी विलास काम कला भरे
रति रण संग्रामे अति सुभट महा सुरतिने अंगी करे ।६४।

रसिकवर रसरास क्रीडा करे छे रहीने अहीं
पण जुवती मणी श्री बहुजीने गर्भाधान होअे नहीं ।६५।

तेहनुं कारण परम अनूप अगाधि कोण कही सके ते विसद करी
पण कांइ अेक छाया मात्रे कहुं अे पद कमल उरमां धरी ।६६।

साक्षात पुरूषोतमोतम शुध्ध रसात्मिक रसो मइ
विक्रिया रहित अविरूध्ध सेती सत्य काम प्रेम आनंद मइ ।६७।

पोताना स्वभाविक धर्मे रसे भर मोहामणी
आपत्यौदय रोधक करीने क्रीडा करे सोहामणी ।६८।

तेणे करी संताननी उतपत ते होअे नहीं
अे बुध्धि अनुसारे कह्युं वली बीजुं कारण छे अहीं ।६९।

लौकिक अनुकर्ण प्रभुअे लीला जे अंगीकरी
अच्युत थई अहरनिस रमे आनंदमय अति रस भरी ।७०।

आपत्यौदय अद्‌भुत रसनो भोग ते होअे नहीं
अेणे कारणे संताननी इच्छा न सद्य करी अहीं ।७१।

पण श्री गुंसाईजीना हर्ष ने अभिलाष मनमां अति घणो
कहे श्री वल्लभने पुत्र होअे हुं खेलावुं ते अेह तणो ।७२।

पण विलंब होअे तेणे करी श्री गुंसाईजीने आरति घणी
जाणे अे बहुने बालक न होअे चिंता रहे मन तेह तणी ।७३।

अेह सोच धरीने अे विचार कीधो मन मांहां
श्री वल्लभनो विवाह करीअे संततिने बीजो आंहां ।७४।

श्रीजीअे ते सद्य तेणे समय समाचार ते सुणीया अहीं
बहुजीनो सुशील स्वभाव जोइ मन विचारीने ना कही ।७५।

कह्युं या उपर दूसरो विवाह कबहुं ना करूं
यामें हे केतिक वात जो श्री गुंसाईजी चितमों धरे ।३७६।

जो इनकी इच्छा हे तो इच्छाते होयगी अहीं
तो दूसरे विवाह कीअेको प्रयोजन कछु नांहीं ।३७७।

श्री गुंसाईजीनो आग्रह लइ अनुकरण इच्छानुं धरी
प्रमाणानंद निशिध्धने अर्थे आपु अेम इच्छा करी ।७८।

त्यारे छ पुत्री ने त्रण पुत्र हवा ते तेहनो क्रम कहुं
प्रथमे पुत्री प्रगटिया तेहनुं नाम रोहिणीजी लहु ।७९।

पदमावतीजी सत्यभामा श्री गोपाल सुख धाम जे
घणुं अनिरवचनीय उदार अतिसय विठलरायजी नाम जे ।८०।

रूक्ष्मणीजी बीजी सत्यभामा व्रजपतिजी ने महालक्ष्मी
अेणी पेरे बालक नव हवा अे संतती सहु केहेने गमी ।८१।

अेहनो प्रकार आगल सवंत सोलशे साडत्रीसे आरंभ धरी
अनुक्रमे करी तेणे समय कहीस ते त्यांहां विसद करी ।८२।

अेम गृहस्थाश्रमनो अनुभव कर्यो प्रभुअे रूची धरी
गोणानी लीला अेणी पेरे कीधी ते महा रस भरी ।८३।

अे महेदने मनोरथे प्रभुअे दान पात्र लही भर्युं
त्यांहां अनुसरी अनुहार मात्रे यथा मति विवरण कर्युं ।३८४।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रिडा कल्लोल महा अद्भुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित स्वकीया अति विश्रध्ध नवोढाना
रसने आरंभे गोणानी लीला वर्णनो नाम
।। मांगल्य ओगणत्रीसमुं संपूर्णम् ।।

मांगल्य - ३० - त्रीसमुं

राग : " जै श्री गोकुलपति सदा जे श्री गौकुलचंद " अेणी जाते गवाशे

श्री रूक्ष्मणीजी सुवन सुखद घणुं अने अति सुख सागर
लोकोतर भुवने संपति परम अद्‌भुत परम अनूप ।१।
नि:साधन फल आत्मा जेहनुं प्राकृत परमानंद
ते मानष धर्मे रस प्रद प्रमुदित आनंद कंद ।२।
ते रस पोषक रस रसिक रसे करे संतुष्ठ
रसमय रसिक शिरोमणी रसे रसिक महा पुष्ट ।३।
भावना शुभ काज करण ने अनुभावातीत भावदाअे
भक्त भय हरण भाव रसिक उपमा कही न जाअे ।४।
वंश विवर्धन वंशनुं वंश धर्म प्रति पाल
वंश विभूषण मुगट मणी श्री रूक्ष्मणीजीनो लाल ।५।
श्री विठलेश प्रीय चतुर्थ सुत परम पुष्टि मार्ग
महा पुरूषार्थ रूप अे सर्वयोधिक रस पारग ।६।
सत्य प्रत्यज्ञ स्वरूप ने सत्यासत्य महा सार
त्रैलोकीअ गीअे मान जे पद अंबुज सकुमार ।७।
आनंद वर्धन जगतनुं गुणज्ञ शिरोमणी राय
जगत पूज्य गुण श्रेष्ठ अे विक्षात न अवनी समाय ।८।
महातम महिमा अति घणो तेहनो नावे पार
पण मानव मन मनोहर महा प्रकृती सारनुं सार ।९।
अे आगल ते अल्प छे जे महातम महिमा कहीश
मानव महा माधुर्य रस प्राकृत परम वरीस ।१०।
परमानंद स्वरूपनुं प्राकृत परम नवीन
रसदायक रस रास अति रहे सदा रस लीन ।११।
विशेष विदित उदार विधि श्री मद राजकुमार
बहु नायक नायक निपुण नित्य रसिक रस सार ।१२।
अेहने लीला रमणना स्थल छे बे महा पुष्ट
श्री गोकुल गोवर्धन अहीं प्रेम सहित संतुष्ट ।१३।
उत्साहे होअे नित्य रमण अखंडित मारग प्रणीत
सात्वीक भावोदीपनसुं दरस स्पर्श रस अेक चित ।१४।
अे लीलाने मुक्ष छे दरस परसादिक जेह
ब्रह्माभ्यंतर वचने करी पूरक रसना अेह ।१५।
मानस वच कायक सहित त्रिविधानंदे जुक्त
परम पुष्ट लीला करे सर्वोपर जे उक्त ।१६।

अेहवी लीला जाण्या तणुं केहेनुं नहीं सामर्थ
जो जाण्युं जाअे नहीं कहेवाअे केम अर्थ ।१७।
अे में वाचनीके कह्युं ते पण छाया मात्र
पण अे लीलाने समजवा योग्य नहीं पात्र ।१८।
कूप तणा मेडक पेरे ने अंधने हस्ती जेम
दुग्ध पान जाने नहीं मारी बुध्धि छे तेम ।१९।
अेक समय अेक हंस ते आवी बेठो कूप
मेडके पूछ्युं कोण तुं अेहवुं पक्षी अनूप ।२०।
अेणे कह्युं हुं हंस छुं क्यांहां तुमारो वास
हुं रहुं छुं वेगलो मान सरोवर पास ।२१।
मान सरोवर केवडुं मोटुं छे मुजने कहो दाख
ते मोटुं छे अति घणुं सी पेरे कहीये भाख ।२२।
मेडके कुआमांथी करी देखाडयो फाल
हंसे कह्युं मोटुं घणुं त्यारे बीजी करी ततकाल ।२३।
वली पूछ्युं फरी हंसने आवो छे ते ठाम
हंसे कह्युं मोटुं घणुं त्यारे कीधी हाम ।२४।
संपूर्ण कुआमां अेने फरी देखाडयुं तेह
हंस नव बोल्यो तेह समय मौन ग्रही रह्यो अेह ।२५।
मुक्ष मेडकने हंससुं रंच नहीं पहेचान
तो मानसरोवरनेज शुं जाणे अे अजाण ।२६।
जे लीला उपयोगीसुं प्रथम नहीं पहेचान
तो लीलाने ते शुं लहे ते अति अगाधि नहीं मान ।२७।
अेक सभामां जन्म अंध बेठो हतो त्यांहां
हस्ती मोटो मद गलित आवी उभो त्यांहां ।२८।
सर्वे जोइ सराहीयो त्यारे अंध कह्युं तेणी वार
हाथी मुजने देखाडीये हुं जोउं निरधार ।२९।
सर्व मली देखाडयो तेहने ते हाथी
तेणे ते हाथे करी जोयो ते टटोली ।३०।
में दीठो तेणे कह्युं हाथी जेहवी भींत
भींत सरीखो होअे छे उपजी मन परतीत ।३१।
त्यारे सर्व अेम कह्युं जो तुं रूडी भांत
हाथी भींत न संभवे जे करी मननी खांत ।३२।
वली फरीने टटोलता पग आव्यो ज्यारे हाथ
खंभ सरखो कहीने समजी धुण्युं माथ ।३३।
कान आव्यो ज्यारे हाथमां कह्युं सूप सरीखो तेह
सूंढ जोइने अेम कह्युं मूसल सरीखो अेह ।३४।

अेणे जे अे सरखुं कह्युं ते वचन कोन प्रमाण
जेहने अनुभव नहीं शुं कहे ते अजाण ।३५।
तेम महा रस लीला तणु स्वरूप न जाण्युं जाअे
में पण ते अनुभव विना अेणी पेरे अे कहेवाय ।३६।
वली कह्युं जो अंध ते गयो मित्रने घेर
जेणे अेहना हित अर्थ कीधी अेहवी पेर ।३७।
अति उत्तम कढी दुधमां मिसरी मेली शुध्ध
अंधने कह्युं ते तमे पीओ महा सुंदर छे दुध ।३८।
अनुभव नहीं अे अंधने दुध तणो ते लगार
तेणे पूछ्युं दुध ते केहेवुं छे तेणी वार ।३९।
पहेले कह्युं जे उजलुं कहे केहेवुं उजवल सेत
बगुला सरीखुं कहीने समजाव्यो ते हेत ।४०।
तेणे कह्युं बग केहेवुं त्यारे हाथ तणे अनुसारे
बांकी कोटे चोंच ज्युत अेम देखाडयो आकार ।४१।
हाथे टटोलीने कह्युं हांसीया सरीखुं तेह
में पीधुं केम जाअे ते कंठे अटके तेह ।४२।
ते पीधुं नहीं अमथुं रह्युं अेहवुं अेहनी पेर
अनुभव विन हुं केम लहुं महा लीला रस भेर ।४३।
महा अगम्य रसरास ते केम करी कहेवाय
विस्तार ते तेहनो शुं करूं कणिका नहीं समजाय ।४४।
माटे संक्षेपे कह्युं श्री गोकुल गोवर्धन
पुष्ट पुष्ट त्यांहां संपूर्ण लीला होअे संपन्न ।४५।
हां जो ते जेम अंधने देखाडयुं हतुं दूध
पान करत प्रमुदित थई समजत नहीं विरूध्ध ।४६।
तेम महा प्रभु कृपा करी करसे जे रस योग्य
जे अनुभव करवावसे आणीने उपयोग ।४७।
तो इच्छा सामर्थथी रस कहेवाशे जेह
भावी लीला अे प्रगट आगल कहीस तेह ।४८।
कृपा महेदनी पेरे करे निरहेतक बहु वृष्टि
पात्रांपात्रने ते न जुअे सींचन थाअे सृष्टि ।४९।
वृक्ष वेली पर्वत परे वनस्पति अने बाग
सलिता सागर अरण्य विषे करी अतिशे अनुराग ।५०।
स्वतः थकी सर्वत्र ने ज्यांहां त्यांहां उनइ उनइ
साधन विना अपेक्षा विना भरी के रस मइ ।५१।
तेम कृपाने कांइ न्यामिक नहीं अे छे अनुभव सिध्ध
अे माटे मारे विषे करसे कृपानी निध्ध ।५२।

महोदार पद कमल मकरंद करावी पान
प्रथम कहेवाडयुं आटलुं ते आगल करसे दान ।५३।
त्यारे कांइ अेक कहीस हुं पण स्वत:थी कह्युं न जाय
करूणा अे प्रभुनी विना अक्षर नहीं कहेवाय ।५४।
हवे अेह प्रकार अे समय अेहवी महा सुख सार
लीला करतां गुंसाईजीने घेर आनंदनो नहीं पार ।५५।
अेम करतां प्रभुने हवा वरस ते ओगणत्रीस
तेथी पहेली जेहवी लीला परम वरीस ।५६।
मंगल ओगणत्रीशे करी पहेली अहीं पर्यंत
अेम लीला सूचन करी वली कहुं अति उनमत ।५७।
वलता हवडा आ त्रीसमें मांगल्ये गुण रूप
गोकुल घणी सहु रस तणा भोक्ता परम अनूप ।५८।
अतुल असाधारण माहा पूरण अे प्रागट्य
अवतार चरित्र पोता तणा जेहनी जे उदभट्य ।५९।
लीलाना अनुभव अर्थे ने करवा ते विस्तार
ग्रहस्थाश्रम लीला तणो कीधो अंगीकार ।६०।
अेम संपूर्ण सुख तणो अनुभव करे अनूप
लौकिक अलौकिक सर्वनो पोते गोकुल भूप ।६१।
श्रुति स्मृति शास्त्र पुराण ने श्री भागवतनी उक्त
देस लोक कुल रीत करी अनुभव करे तेणी जुक्त ।६२।
महालोकोतर मंदिरे नित्य मांगल्य उत्साह
आनंद अनेक प्रकारना अनुभव होअे उमाहा ।६३।
अे सर्व सेवा अर्थ धरी आधिदैविक स्वरूप
आवीने उभा रहे सुंदर परम अनूप ।६४।
आगल भीड ते अेहनी ने ज्यांहां त्यांहां सर्वत्र
तिल पडवानो स्थल नहीं फूली रह्या जग तत्र ।६५।
बाहेर भवनमां भर्या मांगल्य ने आनंद
अेणी पेरे नित्य अनुभव करे प्रमुदित आनंद कंद ।६६।
त्यांहां प्रेम सहित श्री गुंसाईजी ते अचल सौभाग्यवती
पार्वती बहुजी कने वृत आचरण मती ।६७।
सौभाग्य वर्धन जे वृत आग्रहपूर्वक सर्व
करवावे श्री गुंसाईजी व्रत न्यामिक जे पर्व ।६८।
बहुजी परम पतिवृता प्रीयना श्रेयने अर्थ
सौभाग्य वर्धन रीतसुं सौभाग्यने सामर्थ ।६९।
वट सावित्री आदी देइ अेहवा छे अन्य
आचरण सहित करे सहु आरंभ उद्यापन ।७०।

दया दान करे नेम व्रत अने अन्य उपकार
अने सौभाग्यवतीने वस्त्र सहित अलंकार ।७१।
वेणी तिलक अंजन करे मांगल्य सहित सृंगार
आठ प्रहर जागरण करे आणी मन निरधार ।७२।
गुरू गोवर्धन गाय कुल जमुनाजी कुलदेव
उपहार सहित पूजन करे ब्राह्मणनुं ततखेव ।७३।
केवल कारण अेहनुं सौभाग्यनी सहु सिध्ध
अेणे व्रत कीधे होअे अचल कुशल महा निध्ध ।७४।
मुग्ध भावना भाव बले बहुजी निरूपाधी मन
ते जोइ अेह उपरे श्रीजी रहे प्रसन्न ।७५।
अेणे प्रकारे बहुजी भाव बले विनियोग
अंगीकार करीने आणे सहु उपयोग ।७६।
अेणे भावे करी कुशल सुखी महा संतुष्ठ
अभिलाषे अे भावने अे भावे रस पुष्ट ।७७।
अने बहुजी परम पतिवृता ते पतिसुं करे अनुकर्ण
सेवामां तत्पर रहे जोइ प्रभु आचरण ।७८।
मारग प्रणित सेवा तणा कारज होअे ज्यांहां
जाणे रखे को बीजुं करे पोते करे ते त्यांहां ।७९।
अेक दिवस उथापने सेवा कारज जेह
अेक करी बीजुं कर्युं श्री गुंसाईजीअे दीठुं तेह ।८०।
श्री गुंसाईजीने बहुजी विषे श्रीजीने ते सबंधे
बीजी बहुओथी अधिक हित रहे कारण बध ।८१।
शोभाजीने अेम कह्युं बेठि रहेत सब कोय
सारो दिन सेवा करे अेक यही का सोय ।८२।
शोभाजीअे हास्य करी वचन कह्यो अेक व्यंग
औरनकुं लरिका हे अे खाली रूप मन रंग ।८३।
येही करत है याहीथे सब बांटे ततखेव
ओर करत है अपने लरिकनहुं की सेव ।८४।
सतराइ श्री गुंसाईजी अेम बोल्या अेहो माट
कहा इनकुं लरिका नहीं ताते अे भइ घाट ।८५।
ओर अधिक भइ याही ते जाके लरिका होअे
अधिक हमारे सोइ हे जो सेवा करे सोअे ।८६।
पण श्री गुंसाईजी मनमां पाम्या सहेज कलेश
श्रीजीने बालक नहीं रहे आरति उदेश ।८७।
ते करता वली अे वचन सुणी उपज्यो ते अहीं
पण उक्ताइने शुं कहे श्रीजीने रूची न होअे ।८८।

श्री गुंसाईजीना मनमां अेम आव्युं प्रीछीअे
बहुजीना संकुचथी ना कही छे श्रीजीअे ।८९।
आग्रह तो थाअे नहीं तेणे करीने अेह
पण आरत रहे मनमां घणी बहुजी जाणे तेह ।९०।
बहुजीअे श्रीजीने कह्युं ते आनंद भेर
श्री गुंसाईजीने अे वातनो मनोरथ छे बहु पेर ।९१।
ते तेहोने ना कां कहो माहारो सो संकोच
अे वाते हुं प्रसन्न छुं करसो मां कांइ सोच ।९२।
त्यारे श्रीजीअे वरजीया बहुजीने अेणी भांत
तुम मुख ते कछु मति कहो जानत नांहीं यहु वात ।९३।
अे वात ते श्री गुंसाईजीअे सुणी खवासणी द्वार
ते चोपसुं चिंतामां अेम कह्युं सर्वात्मना निरधार ।९४।
बहुजीने तो दीसतो नथी कांइ अनुरोध
हवे अेहनो बीजो विवाह करवो करी प्रबोध ।९५।
पण श्रीजीने सुणाव्या विणा साहस केही पेरे थाय
ते अेक समय श्रीजीद्वारथी श्री गोकुल साथे जाय ।९६।
गोविंदभट त्यां संग छे गुंसाईजीअे तेहो साथ
श्रीजीने संभलाववा उदेशे करी वात ।९७।
गोविंद सुन श्री वल्लभकुं बालक होवत नांहीं
इनको विवाह कीयो चाहीये सोच रहेत मन मांहीं ।९८।
सुंदर कन्या प्रौढसी काके घर हे सार
आखे पेंडे आवता सहेजे कर्यो विचार ।९९।
अमुकाके घर हे भली अमुकसुं बेन होअे
अेम कही कही श्रीजीने संभलाव्युं ते सोअे ।१००।
रात्रे घेर पधारीने वेगा उलट भेर
रामचंद्र भट रेहीने कन्या हती घेर ।१।
त्यांहां करवावी वारता तेणे थई प्रसन्न
कह्युं अेथी उतम शुं छे मारूं भाग्य ते धन्य ।२।
अे वात विसद करीने कही श्रीजीअे बहु वार
ते उपर अे में लखी वचन तणे अनुसार ।३।
अेक वेर श्री द्वारथे आवते मोकुं सुनायवे
गोविंद मामासुं कही गोंसाइजी अपने भाये ।४।
गुंसाईजीअे मनमों यों धरी में कीनो याहि सुनाये
अरू में कछुं श्री गुंसाईजीसुं उतर दीओ न जाअे ।५।
कहा करूं मोपे आइ परी कीजे कोन उपाय
कोउ भांति बने नहीं अेसी बनी सो आय ।१०६।

गोविंद मामासों कह्यो पाछे में समुजाय
तुम संग श्री गुंसाईजीने कहा कह्यो मन भाय ।१०७।

जोइ कही सो सत्य हे गुंसाईजीसो कह्यो न जाय
पे करेंगो तो दु:ख पाउंगो कहीयो तुम समजाय ।८।

मोकुं यह इच्छा नहीं मेरो मन नांहीं सोये
या पर समजी विचार के कीजो उतम होये ।९।

उन जाके समवय कह्यो में जो कह्यो प्रतिबोध
तब जान्यो श्री गुंसाईजीने मेरो अनुरोध ।१०।

करीयत हे इन सुख निमित ओर यहु पावे जो दु:ख
तो काहेकुं कीजीये गुंसाईजीअे कह्यो श्रीमुख ।११।

बहु सुनिके मोकुं भयो पाछे अति संतोष
के जाने कर ही रहे कोन करे तब शोष ।१२।

कहेवायो अे विचारीके को बेठे जंजार
ग्रहस्तीनकुं अे विटंबना द्वै स्त्रीको वेहेवार ।१३।

अरू अेसो कीयो इ हतो मोकुं नेकुं सुनाअे
रामचंद्र भटके भवन कन्या मांगी जाअे ।१४।

उन हाथ जोडीके कह्यो मेरो भाग्य अपार
सो में कहे पाछे वाहेकुं नाहीं करी निरधार ।१५।

द्वारकेश्वरकुं वै करी कन्या समयो पाये
सो देवकी बहु कबहुं कबहुं कहेती मोसुं आये ।१६।

अेसी कहा थे मोहीकुं चहीअे अे सौभाग्य
सो बडभागी जगतमों पामे अेह सोहाग ।१७।

हवे श्रीजीअे श्री गुंसाईजीनो लेइ कलेशातुर मनोरथ
संताननी इच्छा करी पोताने सामर्थ ।१८।

त्यारे सेंत्रीस संवत्सरे श्रावणमां रूतुदान
बहुजीने तेणे समय हवुं ते गर्भाधान ।१९।

ते नागरी वृंद शिरोमणी चातुरीअे जाण्युं सद्य
जइ प्रथम अंत:स्थिति हरदय कमल विकसित ने जे गद्य ।२०।

आरति जुत उत्साहने ते दिवसना रसनी फूल
को अेक विलक्षण चाह जुत रति रण विषे अनुकूल ।२१।

तेज संकुलित थइने संग श्रवथी प्रसन्न
सुख उतपति तेणे लइ विजय स्थिति संपन्न ।२२।

अन्य अभावी अेहने थयो ते प्रथमे मास
आचरण गर्भ तणा हवा अधिक अधिक प्रतिमास ।२३।

अेहवा गर्भ तणा जोइ पोषण पुष्टि अवेव
निश्चय करीने सर्व को आनंदया ततखेव ।१२४।

पछे गर्भ शुध्ध संस्कार ते ज्यांहां लगी होअे सीमंत
कुलाचार रीते अधिक मंगल कर्या अनंत ।१२५।

सवंत अडत्रीसे वैशाख सुदी तेरस ने रविवार
हस्त नक्षत्र ने उदय गति घटिका ते अग्यार ।२६।

पल तीस समें ते मिथुन लग्न स्पष्ट कर्युं तेणीवार
बेटी प्रगटी तेह समय प्रथमें तेणी वार ।२७।

श्री गुंसाईजीना मनमां प्रथम अेह विचार
जो बेटो होय तो मेहेलीये उघाडा भंडार ।२८।

अेवामां केणे कह्युं भ्रांतने थइने सोअे
श्री वल्लभकुं बेटा भयो वधाइ दीजे मोअे ।२९।

श्री गुंसाईजी फूलसुं बोल्या अेहवा बोल
भंडारीने अेम कह्युं दीजो भंडार खोल ।३०।

ओर लुटाओ बहु आपथे धौबीको सब घाट
अेहवा उत्साहे भर्या अेहोना बालक माट ।३१।

अेहवामां केणे कह्युं बेटी भइ महाराज
त्यारे श्री गुंसाईजीअे अेम कह्युं भलो भयो बहु काज ।३२।

पहेले आइ लक्ष्मी प्रगट हमारे धाम
स्त्रीजनको कहो गाइयो ले बेटाको नाम ।३३।

श्री वल्लभको ओर बहुको नाम ले ले कर गाअे
इनके घर बेटा भयो मोहि सुनाये सुनाये ।३४।

गोसांइजी आरंद्र थई भरी आव्या तेणी वार
घाट भंडार तो अेमज रह्या पण खरच्यो द्रव्य अपार ।३५।

वलता गुंसाईजीअे अेम कह्युं बेटीको ले आओ
में मोहें देखुं वाहीको अेम बोल्या करी चाओ ।३६।

काहानाबाइ पासे हता बोल्या करी त्यां लाज
अे बेटी छे अेहनुं शुं मुख जोसो राज ।३७।

त्यारे कह्युं तो कहा भयो श्री वल्लभकी बेटी
सात बेटाके ठोर हे लीधी उर भेटी ।३८।

बेटीने रूपा तणा चूडानी छे रीत
रोहिणीजीने सुवर्णना कराव्या करी प्रीत ।३९।

श्रीजीअे ते जोइने विचारी समयो पाअे
गोविंदमामाने कह्युं कहो श्री गुंसाईजीसों जाअे ।४०।

तुम तो भाव आधीन करत जानी मन मांहें
राजा अरू बालकृष्ण हे कहा उनकुं बेटी नांहीं ।४१।

अे कहा उन थेइ अधिक भइ अरू तुटत हे मर्याद
ताते तुम असी करो जो चली आइ आद ।१४२।

श्री गुंसाईजीअे सुणी कह्या वचन अणमाप
अे बेटी गोकुलेशकी सहेज अधिक भइ आप ।१४३।
श्री गुंसाईजीने प्रथम अहीं पांच पुत्र परिवार
नाती चौद ते अभिनवा आरत रहे अपार ।४४।
जे रोहिणीजी दीठे हवो मनमां अति अभिराम
तेहवो को दीठो नहीं जेहनुं लीजे नाम ।४५।
अेहवो श्रीजीना सबंधसुं गुंसाईजीनो ते सबंध
अहरनिस अेहोने अेम रहे प्रेम तणो प्रतिबोध ।४६।
पूर्व पक्ष अेक उपज्यो जे श्री गुंसाईजीने मन मोद
श्री वल्लभने बेटा होअे ते में खेलाउं गोद ।४७।
अेह मनोरथ उपरे श्रीजीनी करी इच्छाअे
ते उपर पुत्री हवी ते कारण नवी प्रीछाअे ।४८।
ते उपर वली शास्त्रनी अेहवी छे मर्याद
नायक तेजाधिक्यथी पुत्रोतयो होअे आद ।४९।
ते तो श्रीजी आपथी अति अमोघ वीरज वान
पुत्री हवी कारण कहो ते कहुं छुं समाधान ।५०।
मर्यादा जे शास्त्रनी श्रीजीअे कीधी सत्य
नायकाने तेजाधिक्ये होअे कन्या उत्पन्न ।५१।
अेणे समय बहुजी विषे अधिक तेज ते सार
तेह थकी कन्या हवी अेम शास्त्रे कह्युं निरधार ।५२।
रमण इच्छा विषे रूची घणी श्रीजी अति सानुकूल
संताननी उतपतीने विषे इच्छा हती न मूल ।५३।
उपजावी इच्छा थकी नहीं रसनो उदबोध
तेथी तेज प्रबल नहीं नायक मन अनुरोध ।५४।
अधिक नायकने विषे श्री गुंसाईजीने मनोरथ ज्यारे
संताननी इच्छा करी आगले अेम हवुं त्यारे ।५५।
चतुराना अंग अंग विषे अनिरवचनी अति उक्त
चंचलता जुत चिहिन ते प्रगट हवा रस मुक्त ।५६।
तेथी इच्छाअे करी प्रबल थयुं बीज बल
तेणे करी पुत्री हवी कारण अेह अचल ।५७।
अने ओगणचालीस संवत्सरे शुभ दिवस फागुण मांहां
बीजी पण बेटी हवी श्रीजीने घेर त्यांहां ।५८।
अेकताले त्रीजी हवी बेटी जेणी वार
श्रीजी ते तेणे समय हता ते ठाकुरद्वार ।५९।
बालकृष्ण साथे हतां सुणीयुं अेणी पेर
त्रीजी पण बेटी हवी श्री वल्लभने घेर ।१६०।

बालकृष्णजी अे सांभली दु:ख पाम्या अेणी भांत
अेह विचार्युं अेहोने कहीस केम अे वात ।१६१।
वल्तुं श्रीजीने कह्युं चलो श्री गोकुल जाअे
अे वात सहु श्रीमुख कही अतिसे उलट मांहें ।६२।
बालकृष्ण मोसुं कह्यो चलो श्री गोकुल जाअे
में कह्यो इतनो कहा हे राजभोग सर्यो नाहें ।६३।
मोंसुं तो कछु कह्यो नांहीं अरू आप थई रहे वीग्र
फिरी फिरीके अे कहे चलो यहांसे सीघ्र ।६४।
में कह्यो जु कहा होइगो सो तबही चले तेहीवार
मेरे मन अेसो हतो रहेनो हे दिन चार ।६५।
अेसो आवश्यक कहा में पूछयो मारग मांहां
तुमारे घेर बेटी हवी यों कह्यो मन संकुचाय ।६६।
तब में कह्यो जो कहा भयो मेरे कछु न चाहा
इतनी वातनके लीअे भूखे चले सो कहा ।६७।
कहा भयो क्यों बालकृष्ण कह्यो तीसरी भइ बेटी
उंहां तुमकुं केसे कहुं दु:ख लज्या मेटी ।६८।
में हंसीके चुप करी रह्यो कछु नहीं मेरे मन
मेरे मनमांहें कछु लौकिक नहीं उतपन्न ।६९।
बेटी भइ तो कहा भयो ओर बेटा भयो तो कहा
प्रथम संताननी उत्पतिकी मेरे नहीं इच्छा ।७०।
जो जाने केसो उठे ओर सबेको ओर विचार
ताते अेसी वातको सबकुं दु:ख अपार ।७१।
पाछे बेउ बांधवे आवीने गुंसाईजीने कर्युं नमन
बालकृष्णजीने कलेश ते व्याप्यो अतिशे मन ।७२।
त्यारे श्री गुंसाईजीने अेम कह्युं दु:ख पामीने मन
श्री वल्लभके बेटी तीसरी बेटा न होअे वचन ।७३।
त्यारे श्री गुंसाईजीअे कह्युं बेटा होयगो याहे
यामों तो संदेह नांहीं पे हम देखे नांहीं ।७४।
पहेले हो तो हम देखते बोल्या अेणी पेरे अेह
भुलवणी वचने करी केम समुजे को तेह ।७५।
पुत्रत्वे पोता तणु प्रागट्य पुत्रने घेर
ते पुत्रनी आगल प्रगट करी कहे ते केही पेर ।७६।
ते हरीवंशजी आगल कह्युं हमकुं इच्छा मोद
खेलेंगे अेकवार हम श्री वल्लभकी गोद ।७७।
कारण अेह प्रसिद्ध छे अने बीजुं अेक प्रमाण
श्री गुंसाईजीना परोक्षथी ते छे सहुने जाण ।१७८।

ओक ब्राह्मण डमरेठनो जोशी ते विष्णुदास
श्री गोड ते तेणे करी श्री गुंसाईजीनी बहु आश ।१७९।

मनमां दुःख पाम्यो घणुं श्री गुंसाईजी लही मन धर्म
काहेको इतनो करे समजाव्यो करी मर्म ।८०।

जेह सो श्री वल्लभ होओ अरू मेरो दर्शन चाहे
श्री वल्लभके घर बेटा भयो ताको देखो जाओ ।८१।

श्री गोपाल देखाडया पोतानी अनुहार
पुनरपि प्रागट्य प्रगट करी देखाडयुं तेणी वार ।८२।

ओ माहिं संदेह नहीं सांप्रत्य ओह विचार
ओणे प्रमाणे प्रमाण करी कीधुं ओ निरधार ।८३।

केहेने ओनी योग्यता केहेने ओ अधिकार
श्री वल्लभने घेर उपजे पछे पोते कर्यो विचार ।८४।

कांइ केवल पुत्रत्वेज नहीं विचार तणुं अहीं काज
पुत्रनी तो इच्छा नथी प्रथम थकी महाराज ।८५।

पण ओहनुं कारण ओह जे सेवा मारग ज्यारे
प्रगटाव्यो सेवा तणु पूरण फल होओ त्यारे ।८६।

ज्यारे अंग सेवा करी स्वत:थी के साक्षात
अने सेव्यने परिपूर्ण होओ सेवानुं फल ज्ञात ।८७।

अने जे मर्यादा रक्षक प्रभु ते मर्यादाओ विरूध्ध
ओ सेवा केम अंगी करे नहीं मर्यादा कृत्य शुध्ध ।८८।

माटे पुरूषोतम ओ पुत्रत्वे करी सेव्य
तेहना प्रति उपकारने विचार कर्यो ततखेव ।८९।

त्यारे चतुर्थाश्रम तणो आरंभ कर्यो अनुराग
श्रीद्वारमां राजभोग देइ पधार्या ज्यां बाग ।९०।

वस्त्र ते वेशांतर कर्या त्यां हता बडा रामदास
ओह सुणी कमंडल लेइ आव्या श्री गुंसाईजीने पास ।९१।

भीतरीया कृपा पात्र ओ करे भीतरनुं काज
श्री गुंसाईजीने विनती करी सुणीओ श्री महाराज ।९२।

राज विचार करो छो ओ तो अमो चाल्या आज
ओ करवुं शुं राजने ओ साथे शुं काज ।९३।

तमे कहेशो मर्यादा हित तो आचार्यजीओ कह्युं छे ओह
नहीं तो पछे अमने कांइ दोष न देशो जेह ।९४।

आ तमो ने तमारा नाथजी अमो नहीं जाणुं रंच
नाथजीने अमो नवि लहुं कहुं छुं रहित प्रपंच ।९५।

राजनी आज्ञा ओ थकी सेवानुं कर्युं काज
जेहने सेवा सोंपवी तेहने सोंपो आज ।१९६।

अमो पण माला तिलकनो त्याग करीने तेम
वेशांतर थइने रहेशुं जो राज करो छे अेम ।१९७।

भगवत आज्ञावत करूं भगवदीनुं अेह वचन
नित्य कारण कह्युं जाअे नहीं आण्युं गुंसाईजीअे मन ।९८।

वलता फरी पधारीया पण कीधी मननी रीत
लौकिक अलौकिक तणु अनुसंधान रहित ।९९।

तांबोल तेल सुखद सहु अने बीजा सहु अनुराग
भगवद धर्मादिक सहु वस्तुनो खीधो त्याग ।२००।

अेक भगवद नाम उचार मुख वेसनत्वे करे सार
संभाषण नहीं अन्यथा कोसुं अेक लगार ।१।

अे कीधानो अभिप्राय जेम जावदिक जनने शिक्षा
तेम करी देखाडयो त्याग अे वासना रहित समक्ष ।२।

करी देखाडया विन स्वतः निरूपणे जाण्युं न जाय
अे प्रगट पदार्थ स्वकीयने दीठेथी समजाय ।३।

मुक्ष तो को आचरण जाणे नहीं लगार
धर्म नेम जाणे नहीं जाणे अे वेहेवार ।४।

अनन्य टेक पतिवृता नेष्टा न जाणे कोय
सर्वात्मना भाव स्नेह आसक्त ज्ञान न केहने होय ।५।

व्यसन वात्सल्य न को लहे अे सहु मुहुरत वान
मार्ग विस्तारीने फल सहित देखाडी कर्युं दान ।६।

तेम भगवद आसक्त पूर्वक त्याग तणुं जे स्वरूप
फल परवसाइ तेहवुं करी देखाडयुं अनूप ।७।

केशव जानी घणीओरना अने जीउभाई खंभात
तेडीने अेहोने कही आग्रह करी अेहवी वात ।८।

गुजरातके वैश्नव सबनकुं लेके चलो तुम आज
त्यारे केशव जानीअे पूछयुं शुं छे राज ।९।

त्यारे कह्युं व्यामोहको मेरे मन विचार
ताते तुमकुं कहेत हुं वेग चलो निरधार ।१०।

दक्षणायन हे ताहिते विलंब भयो को दिन
नां तो विचार बोहोत दिननको करी राख्यो हे मन ।११।

वलतो को अेक दिवस पछी आसुर विमोहक कर्म
समय जोइ देखाडीयुं लौकिक अनुकर्ण ।१२।

प्रथमे जाणीने कर्यो अस्वास्थनो अंगीकार
अतिशे कीधो अति घणो समुझी समूल विचार ।१३।

ते जोइ श्री महाप्रभुजी पामे घणुं कलेश
ते मुकुंददास सेखड क्षत्री भाव धरीया विशेष ।२१४।

तेणे श्री गुंसाईजीने कह्युं राजनुं अस्वास्थनुं जोइ
दु:ख पामे छे अति घणुं आ बालक सहु कोइ ।२१५।
ते दु:ख पावत नहीं गुंसाईजीने कह्यो सोये
अपने अपने लरिकनकुं खेलावत सब कोय ।१६।
हां दु:ख पावत हे सही अेक श्री वल्लभ आप
मेरे यहु अस्वास्थको इनको हे परीताप ।१७।
वलता श्री गुंसाईजीअे अेणे समय श्रीजीद्वार
पधार्यानुं मनमां धर्युं जाणी अेह विचार ।१८।
त्यारे सर्व बालक तणी ग्रीवा धरी धरी जाय
नवनीत प्रियने नमन करी सोंप्या सहुने त्यांह ।१९।
वलता ते नवनीतप्रीय सोंप्या अेह स्वरूप
जे श्री गोकुलनाथ सदा अचल गोकुल केरो भूप ।२०।
अेणे प्रकारे सर्वको सोंप्युं अेहोने हाथ
प्रगट प्रसिध्ध घनश्यामजी सोंप्या अेहोने साथ ।२१।
अे लरिका तुमारी गोद हे ओर बोहोत करी विगतव्य
इनकी रक्षा सर्वदा तुमकुं हे करतव्य ।२२।
अेहवुं कही शिक्षा दइ पधार्या गोवरधन
शोभाजी गिरधरजीने संग तेडया धरी मन ।२३।
श्रीजीने कह्युं बाबा रहो तुम श्री गोकुल मांहें
काज तुमारो होइगो बोली लेइंगे त्यांहें ।२४।
पछे श्री गुंसाईजी सूरती करे बहु वार
श्री वल्लभ आये नहीं पूछे वारंवार ।२५।
त्यारे शोभाजीअे विचार्युं जे कांइक छे कहेनार
काका तुम कछु कहेत हो पूछयुं तेणीवार ।२६।
गिरधरजी इहां निकट हे कहोजी कहेनो होअे
कह्युं कहेनो कछुअे नहीं हां इहां सब कोय ।२७।
पछे समय उपर श्रीजीने तेडाव्या धरी मन
सद्य पधार्या तेह समय गुंसाईजी थया प्रसन्न ।२८।
चकडोले बेसीने श्रीजी तेडया संग
पर्वत पर पधारीआ उपजावा मन रंग ।२९।
भीतरीया परचारक सहु दूर कर्या करी खांत्य
निज मंदिरमां रहीने रह्या ते अति अेकांत ।३०।
त्यांहां श्रीजीने नाथजी सोंप्या ने कह्युं तेह
तुमारे हे ओर तुमहीकुं सोंपत हुं सब अेह ।३१।
ग्रंथ जो रहस्य प्रकार जे पोथी हे बे चार
ते तो तुमारी वस्तु हे तुम जानत हो सार ।२३२।

अेम कही श्री आचार्यजीअे सोंप्युं अेहोने जेम
अेम श्रीजीने अे भिअे सोंप्युं सर्वे तेम ।२३३।
मार्गना अनुकर्ण ज्युत सहित जावदिक वस्तु
सोंप्यो अेहोने सर्वदा अेतनमार्ग समस्त ।३४।
प्रगट प्रसिध्ध जणावीयुं मनमां धरी विचार
आचार्यजी मेंड मर्यादामां न्युन न होअे लगार ।३५।
पण गूढ अर्थ छे अेहनो पुस्तक मिस मनवृत्य
वस्तु जे लीला उपयोगी ने कीधो जे सांप्रत्य ।३६।
भावात्मीक भावे भरी समर्पी लीला अर्थ
संकला ते सोंपी सहु लही सकल सामर्थ ।३७।
पछे नीचे पधार्या सहित श्री वल्लभलाल
पहेरावी श्रीकंठमां पोतानी कंठनी माल ।३८।
पाग पोतानी लेइने धरी श्रीजीने माथ
पोताना सर्वस्वने सर्वस्व सोंप्युं हाथ ।३९।
परम रसात्मीक स्वरूप अे स्नेह भरे करी प्रीत
जाणीने राख्या नहीं निकट समय भयभीत ।४०।
मोह नासन प्रभु मोह समय समीप न राख्या जाय
भोजन करवावी अने श्री गोकुल कर्या विदाय ।४१।
कह्युं तमो श्री गोकुल चलो हरिवंशकुं ले संग
नांतर अे ओर में दोउ दु:ख पावेंगे अंग ।४२।
अेहवुं वचन निश्चे कह्युं गिरधरजी दीधुं रोय
त्यारे श्री गुंसाईजी विर्जया रोवत काहाकेअे ।४३।
तुंहीं उठावेगो कहा मेरो बोझ विचार
में वैश्नव ही उपर जे मारग प्रणित प्रकार ।४४।
ताकी रक्षाओ करेंगे उनकी करेंगे ओअे
अे अनिरवचनी महा गूढ रस भाव न समजे कोअे ।४५।
विदा थतां विहवल थया उभय भराया नयण
समाधान सयणे कर्युं बोल्या नहीं कांइ वयण ।४६।
श्रीजी सद्य विदा कर्या श्री गोकुलने काज
हरिवंशजी चाल्या नहीं पधार्या महाराज ।४७।
मुकुंददास श्री गुंसाईजीअे जमुनावता लगी साथ
पोंहोंचावाने मोकल्या आव्या नामी माथ ।४८।
श्रीजीअे अेहोने कह्युं जाता मारग मांहे
कहा करूं में चलत हुं पे चलिवेको मन नांहें ।४९।
जानत हुं आनोर रहुं दूरीके मेरो अंग
पे इनकी आज्ञा आज लों कीनी नाहीं न भंग ।२५०।

छानो रही सकीअे नहीं वैशनव जाने मोहे
तातें में घर जात हुं सहेज कहेत हुं तोहे ।२५१।
नांतर अेसो देखीके जानो उचित नाहीं
अस्वास्थसुं अेहवा वचन घणा कह्या दुःख मांहीं ।५२।
वलता श्रीजी पधार्या श्री गोकुल सुख रास
मुकुंददास फरी आव्या श्री गुंसाईजी पास ।५३।
पूछ्युं श्री वल्लभ चले अस्वास्थ ज्युत कहे तेह
श्री गुंसाईजीअे अेम कह्युं में जानत हुं सब अेह ।५४।
सेवा हित स्वरूपांतरे कर्यो परोक्ष लीलानो विचार
त्यारे गिरधरजीने अेम कह्युं आणी मन विचार ।५५।
श्री वल्लभकुं आ वरसमें अवश्य होइगो बाल
ताको नाम प्रमाण करी धरीयो श्रीगोपाल ।५६।
पंचशब्दा बजबाइओ ओर बोहोते वाजिंत्र
अेहवी अे आज्ञा करी स्थापित कर्युं विचित्र ।५७।
बेताले वधी माध छठ हवी मकर संक्रांत
उतरायण पण अहींथी हवुं दक्षणायन गयुं प्रांत ।५८।
पछे सप्तमीअे पोते थकी तेल मंगाव्युं सार
तेलाभ्यंग तणो कर्यो पोते अंगीकार ।५९।
नाही भोजन करीने बेठा तकीये लाग
बीडुं खंडावीने आरोग्या अनुराग ।६०।
पत्र ते बे छाना लखी महेल्या गादी छेक
अेक मांहें सहु पुत्रने शिक्षा लखी अनेक ।६१।
तुम चिंता मति कीजीये बडे भये हो तुम
छांडे श्री आचार्यजीअे लरिकाइमों हम ।६२।
लौकिक अलौकिक जे करो कह्यो हमारो मानी
श्री वल्लभकुं पूछीके कीजो रूचि पहेचानी ।६३।
श्री वल्लभकुं भाई करी यह तुम जानो सत्य
श्री वल्लभ कहे सो कीजीये मानी लीजीयो सत्य ।६४।
समय तणा कर्तव्यनी पध्यत बीजा मांहें
अेणी पेरे बेहु राखीया गादी नीचे त्यांहे ।६५।
वलतो ते समय पूछीयो दिन कितनो अेक जेह
गाय वरहेते खरिकमों आइ पूछ्युं अेह ।६६।
बेठा तकीया गादीअे परोक्ष कर्यो तेणी वार
गिरधरजीअे काका कही बोलाव्या बहु वार ।६७।
वलता शोभाजी कहे काका कहां हे आप
महा आकृंद करीने कीधा अनेक विलाप ।२६८।

लौकिक उपजावी घणुं करवा लाग्या अहीं
कहे हवे हुं शुं करूं कांइअे सुझे नहीं ।२६९।
शोभाजीअे अेम कह्युं लिखत हते कछु लेख
तामे कछु अेक होयगो नीके करी तुं देख ।७०।
ते जोता गादी तलेथी पत्र जडया बेउ गद्य
वांचीने ते शिक्षा तणु फाडी नाख्युं सद्य ।७१।
बीजुं पत्र कर्तव्यनुं वांची जोइ करी
पद्यत जे जेणी पेरे लखी कीधी ते मन धरी ।७२।
माघ वदी सातम तिथि सवंत सोल बेतालीस
सीतेर वर्ष उपर थया दिवसे ते अठावीस ।७३।
अेणी पेरे कर्युं राज अचल प्रगट करी बहु साज
परोक्ष तणी इच्छा करी पधार्या कारण काज ।७४।
पछे श्री गोकुल श्रीजी भणी आव्यो अे समाचार
ते सुणी श्रीजीने अस्वास्थ थई अपार ।७५।
त्यारे बालकृष्णजीअे धसीने चांप्या हरदया वार
श्री वल्लभ अमो छुं तुम वडे तमे छो अम आधार ।७६।
तमो जो अेम अेणी पेरे करो तो अमारो कोण प्रकार
अमारे तो सर्वस्व तमो मारग थंभणहार ।७७।
अमो तो सर्वतमो थकी अने अमारे छो तम अेक
अे तमो थांभ्युं जोइशे कह्या ते वचन अनेक ।७८।
घटिका बे उपरांत ते सावधान थया अेणी भांत
मूलने कलेशे सर्वमां प्रगट्यो अति उतपात ।७९।
गोवर्धन त्रुटया घणुं त्रण दिवस पर्यंत
आंदुलमान थयुं सहु जेको नेष्टावंत ।८०।
गाय अेक अेणी समे रांभीने घणुं अेह
भमरी खाइ भोंये पडी ततक्षण मेल्यो देह ।८१।
पछे श्रीजी श्री गोकुलथी पधार्या ततकाल
गाय गोत्र वैश्नव तणी कीधी ते संभाल ।८२।
हरीवंशजी त्रीजे दिवसे सहित असही परीताप
श्रीजीअे वरहा मांहेंथी खोली काढया त्यां आप ।८३।
हरिवंशजीने अेम कह्युं महा परम सुखदाय
काहेकुं अेसी करत तोकुं नांहीं अंतराय ।८४।
गिरधरजीनो कलेश ते समे नहीं लगार
घणी भांत समाधान करी टाल्यो तेणी वार ।८५।
कुटुंबने परिवार सहु बहेन ने बीजा बंधु
मर्यादा हित अेम कह्युं गुंसाईजीना वचन सबंध ।२८६।

नवनीत प्रिय द्वारे करी सोंप्या अेहोने जेह
समाधान कर्या तेहना अपणाव्या सहु तेह ।२८७।

पछे तेहेताले संवत्सरे पोष सुदी शुभवार
चौदस श्री गोपालनो जन्म हवो अतिसे सार ।८८।

त्यारे अति उत्साह हवो आनंदनो नहीं पार
वाजिंत्र अनेक प्रकारना बजडाव्या तेणीवार ।८९।

वाजिंत्र गान जोइने श्रीजीअे वरज्या अेह
परोक्ष गुंसाईजीनो लही आणी मन संदेह ।९०।

त्यारे कोइ अेक कह्युं गुंसाईजीनी आज्ञा थकी
गिरधरजी पोते करे ते सुणी नहीं बोल्या सकी ।९१।

मोद परस्पर सर्वने ने वधाइ बोले सर्व
श्री गुंसाईजीनी आज्ञाथी सहु कीधुं अेणे पर्व ।९२।

गोविंदस्वामीअे कह्यो ने आज्ञा दीधी जेम
श्री वल्लभजीने बेटो होये त्यारे करजो अेम ।९३।

तुम वृजराणीके लाल अेम करी गाजो गान
तेणी पेरे तेणी भांति करी गाय भाग्यवान ।९४।

अेहनो अर्थ गंभीर छे सम्यक कह्यो न जाय
महेद कृपाथी जाणीअे अनुग्रहथी प्रीछाय ।९५।

सुदामे ब्रह्मचारीअे तेह समय महेली लाज
वधाइ मागी मुदित थई आपो श्री महाराज ।९६।

हुं उपर श्री महाप्रभु सदा सर्वदा नित्य
प्रसन्न रहो प्रेमे करी निःकारण निमित्य ।९७।

जे प्रभुजी वांछित कल्पतरू पूरण काम अथाह
सत्य संकल्पे आपीयुं ओर कर्यो निरवाह ।९८।

पछे जात कर्मादिक पुत्रना कर्या ते प्रमुदित थई
ते जोइने सर्व को थया ते आनंद मइ ।९९।

नाम करण केरे समय गिरधरजी हेरी
गड्डुअे उठीने गया पोते मोंहों फेरी ।३००।

श्रीजी धरता हता नहीं प्रथम ते पोते नाम
कह्युं दादा विन क्यों धरूं अेह उनको काम ।१।

हवडा नाम तमो धरो जोतसीअे कह्युं तेह
नाम प्रतिष्ठा आवीने गिरधरजी करसे तेह ।२।

नाम करण मुहुरतने थोडो रह्यो शुभ काल
वलतुं श्रीजीअे धर्युं नाम ते श्री गोपाल ।३।

आवी गिरधरजीअे पूछीयुं धर्युं नाम शुं जेह
कह्या पछी वलतुं कह्युं श्री गुंसाईजीअे कह्युं मुने अेह ।३०४।

नवनीत प्रिय द्वारे करी सोंप्या अेहोने जेह
समाधान कर्या तेहना अपणाव्या सहु तेह ।२८७।
पछे तेहेताले संवत्सरे पोष सुदी शुभवार
चौदस श्री गोपालनो जन्म हवो अतिसे सार ।८८।
त्यारे अति उत्साह हवो आनंदनो नहीं पार
वाजिंत्र अनेक प्रकारना बजडाव्या तेणीवार ।८९।
वाजिंत्र गान जोइने श्रीजीअे वरज्या अेह
परोक्ष गुंसाईजीनो लही आणी मन संदेह ।९०।
त्यारे कोइ अेक कह्युं गुंसाईजीनी आज्ञा थकी
गिरधरजी पोते करे ते सुणी नहीं बोल्या सकी ।९१।
मोद परस्पर सर्वने ने वधाइ बोले सर्व
श्री गुंसाईजीनी आज्ञाथी सहु कीधुं अेणे पर्व ।९२।
गोविंदस्वामीअे कह्यो ने आज्ञा दीधी जेम
श्री वल्लभजीने बेटो होये त्यारे करजो अेम ।९३।
तुम वृजराणीके लाल अेम करी गाजो गान
तेणी पेरे तेणी भांति करी गाय भाग्यवान ।९४।
अेहनो अर्थ गंभीर छे सम्यक कह्यो न जाय
महेद कृपाथी जाणीअे अनुग्रहथी प्रीछाय ।९५।
सुदामे ब्रह्मचारीअे तेह समय महेली लाज
वधाइ मागी मुदित थई आपो श्री महाराज ।९६।
हुं उपर श्री महाप्रभु सदा सर्वदा नित्य
प्रसन्न रहो प्रेमे करी निःकारण निमित्य ।९७।
जे प्रभुजी वांछित कल्पतरू पूरण काम अथाह
सत्य संकल्पे आपीयुं ओर कर्यो निरवाह ।९८।
पछे जात कर्मादिक पुत्रना कर्या ते प्रमुदित थई
ते जोइने सर्व को थया ते आनंद मइ ।९९।
नाम करण केरे समय गिरधरजी हेरी
गडुअे उठीने गया पोते मोंहों फेरी ।३००।
श्रीजी धरता हता नहीं प्रथम ते पोते नाम
कह्युं दादा विन क्यों धरूं अेह उनको काम ।१।
हवडा नाम तमो धरो जोतसीअे कह्युं तेह
नाम प्रतिष्ठा आवीने गिरधरजी करसे तेह ।२।
नाम करण मुहुरतने थोडो रह्यो शुभ काल
वलतुं श्रीजीअे धर्युं नाम ते श्री गोपाल ।३।
आवी गिरधरजीअे पूछीयुं धर्युं नाम शुं जेह
कह्या पछी वलतुं कह्युं श्री गुंसाईजीअे कह्युं मुने अेह ।३०४।

पण प्रथम अे नाम कह्युं नहीं अेहवो मननो भाव
अेणीपेरे अे अहरनिस रहे अेहोनो अेह सुभाव ।३०५।
पण श्रीजी तो सर्वे लहे सहुनुं सर्वे कृत्य
पुत्र तणु कारण ने श्री गुंसाईजीना मननी वृत्य ।६।
चौआले सवंत्सरे फागण सुदी शुभ दिन
गिरधरजी उत्साह धरी आणी उलट मन ।७।
वासुदेव भट आहांरीनो हे सुत वल्लभ भट नाम
विवाह रोहिणीजीनो कीधो अेहोने धाम ।८।
पछे पसतालीसे फागुण वदी त्रयोदसी
विठलरायजी जनमिया आनंदे उलसी ।९।
नाम करण केरे समय सर्वे कह्युं तेणे ठाम
अेहनुं धरीअे अेह समय श्री गुंसाईजीने नामे नाम ।१०।
श्रीजीअे अे नामनो मनमां धरी संकोच
कह्या वचन कारण लही करी अंतरगति सोच ।११।
बोहोत बडो अे नाम हे अे योग्यता इनमो कांहां
वलतुं नाम तेहज धर्युं कुल रीते करी त्यांहें ।१२।
पछे पदमावतीजीनो गणेश भटने घेर
गोपीनाथ भट साथे हवो विवाह ते उतम पेर ।१३।
जेम मांगल्य गोणाने कह्यां पाछल जेणी पेर
तेणे कृमे तेणी पेरे हवा नव बालक अेहो घेर ।१४।
हवे आगल भिन्न थया तणुं कारण हतुं ते जेह
ते जथारथ वचने करी कहीये छे कांइ तेह ।१५।
महोदार श्री महाप्रभु सर्व करण सामर्थ
पोता केरी बेठके बेठे पूरक अर्थ ।१६।
सभापती विद्या सकल परिपूर्ण लक्षण संयुक्त
अेणी पेरे अतुल प्रताप ज्युत राजे अभिनव उक्त ।१७।
अे सभापतीना लक्षण कहुं जे दक्षण नायक सार
शास्त्र प्रमाणे सूचवुं पण अेहोनो लहुं न पार ।१८।
लक्षा विधि लक्षण निपुण ते ताके अेहोनुं शर्ण
पण कांइ अेक हुं सूचन करूं लौकिकने अनुकर्ण ।१९।
सुख सागर सार जे सारनुं सृंगार तणो सृंगार
सृंगारात्मीक रूप अे प्रिय अेहने सृंगार ।२०।
परम रस रमणीय अे अति मनोहर अेह स्वरूप
उपमा देवा अेहने अेह स्वरूप अनूप ।२१।
नर्तन वर्तन निपुण संगीत नाट्य सुजाण
राग रागिणी रसिकवर तान ताल विधि जाण ।३२२।

सकल कला चातुरी प्रवीन सर्व शास्त्र विसारद नीत
कौतुके रति हासे कुशल पापारति रहित ।३२३।
सुखदायक परमाविधि पात्रापात्र परीज्ञान
जगत मान्य अे विवेक पर जाणे मानयामान्य ।२४।
अति गंभीर अगाधि गति गूढ भावना जाण
अल्प गुण ग्राहक निपुण अति गुणवंत सुजाण ।२५।
कामे कुलीन परचित हरण रूची करता रूचिदाये
धर्मीष्ट धर्मे शास्त्रे कुशल परमित कही नव जाय ।२६।
सदाचार रति सुचि सदा मुख विलास मृदु बोल
सत्यवादी सुस्वरी मधुर धुनी न को अेहो तोल ।२७।
बलवान वचन सामर्थ ने महा प्रतापीक आप
दया समुद्र कृपा निधि विक्षात हरण परीताप ।२८।
क्रीडा निरमाणे निपुण विद्या विवेक विचार
सिम सिमा विधीथी विचित्र विचिक्षणता नहीं पार ।२९।
बहु मित्री बुध्धीमान बहु धारण शक्य स्थिर मत
अति सुंदर निर्म छरी कीर्ती लोभी अत्य ।३०।
कीर्तीवान करूणानिधी क्षमाशील रूपवान
शोभानो सागर स्वतः अेहवो माहा श्रीमान ।३१।
विश्व बंधु मांहां सुभट सभापति अेणी पेर
परमाविधि लक्षण सहित अेम राजे नित्य घेर ।३२।
त्यां भगवदी अनेक समाज सहु भर्या रहे अहर्निस
अभिलाषी अे पद कमल जे आवे दशो दिस ।३३।
जे कांइ भेट पहेरामणी लावे जे उमही
श्रीजी पासे आवीने समर्पे ते सहु अहीं ।३४।
अनेक प्रतिष्ठित राजसी राणा ने वली राय
सुर असुर कवि गण गुणी भाट ब्राह्मण समुदाय ।३५।
पंडित वैदिक भिक्षुक भला जाचक मांगद सर्व
प्रथम अहीं आवे सहु मेलीने मन गर्व ।३६।
तेहना अनेक प्रकारे करी श्रीजी करे समाधान
पात्र प्रमाणे दक्षिणा आपे इच्छीत दान ।३७।
इच्छाअे पहेरामणी यथा योग्य अनुसार
कभाई पामरी आदे दइ आपे करी मनुहार ।३८।
अने जे स्व अंगीकृत सृष्टीनो पोते करवो वरण
विचार करी राख्यो स्वतः ते आवे अहीं शरण ।३९।
अेहवी अनुपम सृष्टीने प्रथम गुंसाईजीअे अहीं
नाम निवेदन आदे दइ कराव्युं सहु अहीं ।३४०।

अने सेवक श्री गुंसाईजीना परम अनुग्रही पात्र
तेणे पण श्रीजी लह्या सम्यक कारण मात्र ।३४१।
अेहनुं अेह प्रमाण जे अेक राणोभाई भाट
बोखोर वावडीनो ते आव्यो दर्शन माट ।४२।
स्व अंगीकृत श्रीजीनी सृष्टि मांहेनो तेह
गुंसाईजीने शरणे आववा श्री गोकुल आव्यो अेह ।४३।
दर्शन करी दंडवत कर्या गुंसाईजीअे कर्युं समाधान
कह्युं आव्यो छुं सेवक थावा दीजे मुहने दान ।४४।
त्यारे श्री गुंसाईजीअे देवो देवाडो रजपुत जे द्वारपाल
पासे ते ठाडो हतो तेहने कह्युं ततकाल ।४५।
जा रे तुं ले याही श्री वल्लभके पास
ते लाव्यो श्रीजी कने पामी अति उल्लास ।४६।
त्यारे श्रीजी पोते ढलण करी जेम स्वकीयने आपे नाम
तेह प्रकारे अेहने आपी पूर्या काम ।४७।
त्यारे अेणे कवित कर्युं हतुं बडा श्री गुंसाईजी उपर
ते ठाकुरजी उपर कही भण्यो ते उलट भर ।४८।
श्री वल्लभ नाम समरीअे पूरण पुरूषोतम
कारण सहित अलगा करी भाज्यो तेहनो मर्म ।४९।
भ्रम भाजी भक्त वधारीया प्रगट परमानंद
श्री गोकुल पधार्या स्वतंत्र आनंद कंद ।५०।
अे कवित अेणे कर्युं त्यां मोडासानो भट रावल
तेणे कह्युं ते केम जाणीया अेहवो महा प्रबल ।५१।
राणोभाई कांइ बोल्या नहीं पण श्रीजी चतुर सुजाण
मनवृत लइने टोकसुं बोल्या अेहवी वाण ।५२।
तोकुं अेह प्रतित हे पण राणो भाई समज्या नहीं
अेहनो आसय भिन्न छे पण कारण कहुं छुं अहीं ।५३।
अेणे समय अेणे श्रीजीनुं जाण्युं नथी स्वरूप
पोते स्व अंगीकृत सृष्टीमां ते जेह न जाणे रूप ।५४।
तेने पश्चाताप मन उपज्यो पामे नहीं विराम
श्री गुंसाईजीने श्रीमुख थकी पाम्यो नहीं हुं नाम ।५५।
हाय हाय हवे शुं करूं छेतरायो तां सही
वलतो अेणे मनमां विचार कर्यो ते अहीं ।५६।
हवे कांइ ग्रंथ लखावीने पाठ करूं तत्पर
अेक वीसलनगरनो वाणीओ खोखोभाई नागर ।५७।
अेहो कने ग्रंथ लखाववा गयो ते राणोभाई
नवरत्न कृष्णाश्रय आदि परीणामे सुखदाइ ।३५८।

खोखाभाईअे कह्युं कोण छो आव्या तमो क्यांथी
आव्या गुजराते थकी छेतराया आहांथी ।३५९।
इच्छी आव्या श्री गुंसाईजीने श्री गुंसाईजीअे कह्युं न नाम
अंतरमां आरत रही थयुं न पूरण काम ।३६०।
त्यारे तेणे पूछीयुं पठयो केणे धाम
गिरधरजी गोविंदजीअे केणे आप्युं नाम ।६१।
राणोभाईअे अेम कह्युं तेणे आप्युं नहीं
श्री वल्लभजी कने मोकल्यो अेहोअे आप्युं अहीं ।६२।
त्यारे खोखोभाईअे अेम कह्युं कहीने अेनुं नाम
ना रे छेतरायो नथी आव्यो छे तुं ठाम ।६३।
चिंता कांइ करीश मां आव्यो छे अनुकूल
जे कांइ छे ते अेह छे सकल सारनुं मूल ।६४।
राणाभाईअे अेहो थकी जाणी अलौकिक वस्तु
सोच ते रंग रह्यो नथी चिंता पामी अस्त ।६५।
चिंता गइ अे ग्रंथथी प्रथम लखावता मांहें
तो पाठ करे चिंता टले शुं आश्चर्य छे त्यांह ।६६।
अने अेहवो भगवदी संग जे जाण्या मलता वार
तेहने संगे जाणीअे ते मांहें कोण विचार ।६७।
श्रीजीअे दूर कर्यो नहीं स्वरूप बले संदेह
ग्रंथ ने संग द्वारा करी निसंदेहे कर्यो तेह ।६८।
ग्रंथ पाठ करवा तणु अने भगवदी केरो संग
प्राबल्य प्रगट कराव्युं पोते मनने रंग ।६९।
नहीं तो शुध्ध रसात्मिक पुरूषोतमोतम सोय
भक्त निरोधादिक करे जे कांइ करवुं होय ।७०।
ते सहु स्वरूप बले करी करे ते कार्य अनूप
पण अे मारग मर्यादानुं परम महा फल रूप ।७१।
साधण अेह प्रगट कर्युं अेणे प्रकारे वर्ण
स्व अंगीकृत सृष्टी आवे छे सहु शर्ण ।७२।
अने स्वरूप प्रभावे ते सर्व मध्य तेहने प्रथम स्वरूप
प्रभाव बले स्वरूप ज्ञापन करी पछे तेहो द्वारा ते अनूप ।७३।
सर्वने स्वरूप ज्ञापन कर्युं पण तेथी स्वभाविक तेह
जाणी सर्वे वस्तु जे ते करता वली अेह ।७४।
महा विचिक्षण निपुण अति दक्षण नायक रीत
सर्व भांते सर्वसुं राखे करी प्रीत ।७५।
अने स्वरूप तणा दर्शन तणी शब्द स्पर्श लावण्य
सहु रसनी माधुरीमां सहु अहीं अे संपन्न ।३७६।

महोदार तेणे करी जावद थई ओकत्र
सहु श्रीजीने समीप रहे जाओ नहीं को अन्यत्र ।३७७।

ते उत्कर्ष प्रताप जोइ अग्रज ते मन खेद
अधिक इर्षा उपजी त्यारे भाज्यो भेद ।७८।

पछे श्रीजीथी न्यारा थवा पबो त्रिवाडी तेडी
तेहो पासे कहेवाडीयुं पासे बेसाडी ।७९।

तमो समजावो जइने जेम कहेवाये तमथी
सहु भाईओने अेम कहो न्यारा रहे अमथी ।८०।

तरवाडीअे सर्वने कह्युं जइ कहाव्युं तेह
को सांभली अेमज रह्या हां कही केणे अेह ।८१।

पछे ज्यारे श्रीजीने कह्युं बोल्या ढापण कुल गोत
दादासुं तुम यों कहो न्यारे काहे होत ।८२।

न्यारेमों कछु भली नाहीं ताते रहीअे अेक ठोर
केसो न्यारो होयनो चितवो कुलकी ओर ।८३।

त्यारे तरवाडी अेम बोलीया सुणीअे महाराज
न्यारा थयुं तो जोइशे आग्रह करी कह्युं आज ।८४।

आग्रह कहा रे जा कहे अेसी कबहुं होइ
जो हम न्यारे होय हे कहा कहेंगो कोइ ।८५।

न्यारे कोनथे होइये न्यारेको कहा ठाम
जा तुं दादासों कहे ले के मेरो नाम ।८६।

ते तरवाडीअे जइ कह्युं न्यारे कोअे न जाय
बीजा को थाओ भले श्री वल्लभजी नहीं थाय ।८७।

मनना भाव सहित कह्युं गिरधरजीअे जेह
न्यारे तो पहेला प्रथम करवा छे तां अेह ।८८।

अेहोना आपवा आगले अमो तो रह्युं न जाय
लुटतो अेहनी अे छे घणी जे कांइ कह्युं न जाय ।८९।

हुं बे वार जइ अने करी आव्यो परदेश
पण मारा घरमां द्रव्य तो रहे न कांइ लेश ।९०।

अे ब्राह्मण ने गुणीजन अने बहेन आदि जे सर्व
आरत्य ज्युत ते आपे घणो जे मांगे ते द्रव्य ।९१।

जे कांइ घरमां खरच छे ते श्री वल्लभ माट
अे मांहें अवगुण घणां अेहोनो घणो कुघाट ।९२।

नाम तो भावे तेहने आपे करी निरधार
निवेदनमां पात्रापात्रनो करे न अेह विचार ।९३।

जे आंहां निवेदन करवुं आंहांनुं करवुं नहीं
जे मन माने तेम करे कांइ विज्ञान नहीं ।३९४।

परीक्षा जोइ श्री आचार्यजी पहेला कहेता नाम
अेहोने इच्छा आपणी आप्या साथे काम ।३९५।
सर्व कोइने मान दे करे नहीं तिरस्कार
तो घर केम चाले आपणुं ते अेहोने नहीं विचार ।९६।
केहेने खीज्युं जोइअे केहेने दीजे मान
केहेने नाकारो करी केहेने दीजे दान ।९७।
अेहोने तो कांइ ते नहीं घर सामी नहीं द्रष्टी
पोता सामुं जोइ करे सर्व भांतिनी वृष्टी ।९८।
अेक दिवसनुं होअे जे कहीअे साने काज
अेहोने तो अे नित्यनुं लाजे वणसे काज ।९९।
तो अेहोनुं हुं शुं करूं अे घरमां राखी
अेहवा अवगुण छे घणां कह्युं निसासो नाखी ।४००।
अेम कहीने बीजे दिने श्रीजीने साक्षात
सनमुख मोंह उपर कही प्रगट करी अे वात ।१।
श्री वल्लभ तुम न्यारे रहो समुजो याही मांही
सबहिनकुं लरिका भये को मर्यादा राखत नांहीं ।२।
विना विचारे व्यय बहुत होवत हे सब साथ
होत जात है रिण बहुत ताते मेरे माथ ।३।
वेर वेर परदेश में जात हुं दिन ओर रात
तोहुं रिण तुटत नांहीं अधिक अधिक भयो जात ।४।
ताते भिन्न रहो सबे अे सुणी माहा सुरधीर
श्रीजी बोल्या तेह समय जाणी अेहोनुं हीर ।५।
दादा तुम बेठे रहो सुखसुं अपने धाम
तुम कछु चिंता मती करो अे सब मेरो काम ।६।
जे कछु करनो होयगो सबे करेंगे हम
जो कहिहो सो करीअे सोइ जो प्रसन्न होयगे तुम ।७।
पे न्यारे काहे होत हो न्यारेमों कछु नांहीं
जेह वचन कहेवा हता कह्या घणा हित मांहीं ।८।
त्यारे गिरधरजीअे ना कही वचन कह्यां त्यांहां अेह
न्यारे रहेनो तो चाहिअे यामों नांहीं संदेह ।९।
अरू तुम कछु चिंता खरचकी मती कीजो मनमांहां
सीधो सब में देउंगो जो कछु घरमें चाहे ।१०।
त्यारे पूर्ण प्रतापीक बोल्या मर्यादा रक्षक
सहन करी सनमुख थई धर्म तणा पक्षक ।११।
दादा अेसी कहा कहेत हो सीधो कहा तुम देहो
पे अेकत्र रहो तो भली हे न्यारो भलो न अेहो ।४१२।

जो अेसी आवत अबे तुमारे मन मांहीं
तो कहा कहीअे ने श्रीजी बोल्या नांहीं ।४१३।
त्यारे वली अेम बोल्या गिरधरजी वचन
श्री वल्लभ तुम यहु सुनो जानी अपने मन ।१४।
श्री नाथजी ओर नवनीतप्रीय न्यारे बेठे नांहीं
ताते सेवा यहां कीजीये प्रसाद लीजीयो आंहीं ।१५।
अरू वाटनो तो कछु हे नाहीं रिण में देउंगो काट
अरू नेग चलाउंगो सबे देउ न काहु वाट ।१६।
में हुं बडो लेउंगो काहु न देहुं भाग
अेणी पेरे कही प्रगट कर्यो पोतानो अनुराग ।१७।
त्यारे अविरूध्ध सेती निरलोभ पर चितवंत बोल्या अेह
तुमपे मांगत कोन हे मति दीजीयो कह्युं अेह ।१८।
पे तुमारे घरमों प्रसाद ले सेवा करीअे सोय
सो हम कहा मजूर हे जो अेसे सेवा होइ ।१९।
सेवा जब करवायेंगे ठाकुर अपने लीन
सोतो उनके हाथ हें नांहीं काहुके आधीन ।२०।
अेणी पेरे अेक बे वार सनमुख कह्या वचन
पण नाथजीने श्रीजीने आप्यानुं नहीं मन ।२१।
अने अे तो सर्व गुंसाईजीअे प्रथम कर्यो छे प्रकार
श्रीजीना उपवीत उपरांत ते सेवा सोंपी सार ।२२।
सेवा रस अनुभव अर्थ पधराव्या सेवा मांहां
त्यारे सहु बालकने प्रथुक प्रथुक यथा योग्य कर्युं त्यांहां ।२३।
सेव्य स्वरूप पधार्याने कृमे कारण सहित समाज
तो ते स्वरूपना सृंगार ने वांटाना सोंप्या काज ।२४।
श्री गुंसाईजी घणुं अते सहेज करे सृंगार
सौकर्य असौकर्य करे बीजो सहु परिवार ।२५।
श्री गोकुल वस्या उपरांत ते श्री गुंसाईजीअे करी निमित
आज्ञा आपी सर्वने सेवा करवा नित्य ।२६।
प्रथम मुक्ष श्रीजीने कह्युं बाबा कही तेणी वार
श्रीनाथजीकुं तुम करो मन भायो सृंगार ।२७।
ते सृंगारे नाथजीने श्री गोकुलनो भूप
शोभा प्रगटे अभिनवी सुंदर परम अनूप ।२८।
मथुरानाथजीने वांटे कीधा गिरधरजी
ते सृंगार करावे अेहोने अति उलट भरजी ।२९।
गोविंदजीने सोंपीया सेव्य जे श्री विठलेश
सृंगार करावे अेहोने सुंदर परम सुदेश ।४३०।

द्वारकानाथजीने करे बालकृष्णजी सृंगार
सृंगारे श्री गोकुलचंदने रघुनाथजी तेणी वार ।४३१।
अने महाराजजी सेवामां आवे नहीं लगार
तेहनो बांट नवनीतप्रीया श्री गुंसाईजी करे सृंगार ।३२।
घनश्यामजी लरिका निपट मदन मोहनजी सेव्य
ते सृंगार करावे श्रीजीने साथेथी ततखेव ।३३।
अेम प्रथुक प्रथुक करीने कह्या अे सात सेव्य स्वरूप
अेह सहु अभिप्राय ज्युत कारण परम अनूप ।३४।
अे जेणे प्रकारे पधार्या श्री आचार्यजीने घेर
ते प्रकार श्रीजीअे कह्यो ते कहुं छुं कांइ पेर ।३५।
ते प्रथम मुक्ष श्री नाथजी श्री आचार्यजीने सासरेथी
पधार्या ते प्रकार सहु प्रथम आव्यो छुं कही ।३६।
ग्रंथ तणे आरंभथी चोथे मांगल्ये सार
श्री गुंसाईजीना प्रागट्यने मांगल्ये कर्यो विस्तार ।३७।
अने विठलेशजी पधार्यानो कहुं छुं तेह प्रकार
श्री आचार्यजीना स्वप्नमां ठाकुरे कर्युं निरधार ।३८।
जे कल में तुमको देउंगो वस्तु अनुपम अेक
श्री आचार्यजी जाणी रह्या मनमां अेह विवेक ।३९।
पछे सहवारे सेवा करी चरणाट्यना चौटा मांहां
सहेज पधार्या आपथी ब्राह्मण मल्यो अेक त्यांह ।४०।
विठलेशजीना स्वरूपने आगल उभो लेइ
तेणे कह्यो अे लेहुंगे त्यारे थया ते आनंद मइ ।४१।
त्यां आचार्यजीअे विचार्युं आज्ञा भइ सो अेह
त्यारे ब्राह्मणने कह्युं जो मांगे सो लेहु ।४२।
पछे ते ब्राह्मण मनमां धरी मांगी मोहोर अेक
ते आपी तेणे समे करी अने घणो विवेक ।४३।
अेणे कांइ जाण्युं नहीं माग्या केरूं हेत
श्रीमुखे कह्युं तेणे समय जो मांगत सो देत ।४४।
पछे घेर पधराव्या नाम धर्युं विठलेश
पाठ बेसाडया प्रेमे करी कर्यो ते पदाभिशेष ।४५।
त्यारे अंकाजी आव्या सद्य कर्युं रूतु स्नान
नमन करी उभा रह्या आचार्यजीअे कह्युं देइ मान ।४६।
अबके बेटा होइगो तुमारे मन अभिराम
ताकुं हम अभिप्राय ज्युत विठलेश धरेंगे नाम ।४७।
केणे पांडरपूर विठलेश कही वरण कर्युं छे अत्य
ते सर्वे मिथ्या जाणजो अेह कहुं छुं सत्य ।४४८।

अने मदन मोहनजी आचार्यजीनी महेतारीना सेव्य
नाम इलमाजी ते जाणे प्राकृत देव ।४४९।
प्रथम माहा स्मार्त रहे अने देवी पूजे अेह
श्री आचार्यजी नाथजीने छोहवा दे नहीं तेह ।५०।
ते अहंकारे अे भिआ पोते सेवा भिन्न
आरंभी अलगी करे जाणीने मन ।५१।
त्यारे श्री आचार्यजीअे कह्युं जो करो सेवा मन पूर
सुखेन तुम अपनि करो पे देवीको करो दूर ।५२।
पछी देवीनो त्याग करी कहुं बेसाडी अन्यत्र
अेह वात सहुको लहे जाणे छे सर्वत्र ।५३।
श्री आचार्यजीनी कृपाथी सेवा करे ते त्यांहां
वैश्नव थया पोते घणुं सेवा लीधी मांहां ।५४।
गजन क्षत्री धावणो कालपी जेनुं गाम
नवनीतप्रीयजी आगरे बेसे तेहने धाम ।५५।
तेहने आज्ञा अेम हवी यहां मोकुं नाहीं सुहात
आचार्यजी पासे मोय ले चलो अेहवी करी ते वात ।५६।
श्री आचार्यजी अडेलथी श्री गोकुल पधार्या ज्यारे
पछे तेणे पधराव्या आचार्यजीने घेर त्यारे ।५७।
सेज्या भिन्न हती नहीं ते पोता केरे अंग
आचार्यजी अंगराग करी लेइ पोढे ते संग ।५८।
वलता अडेल पधार्या श्री आचार्यजी तेह
ते उपर आदर करी पधराव्या ते अेह ।५९।
वली करनाबल यमुनाजीनो कराडो तुटयो ज्यांहां
प्रगट्या मथुरानाथजी ते माहेंथी त्यांहां ।६०।
ते श्री आचार्यजीने स्वप्नमां आज्ञा दीधी तेह
ते उपर आदर करी पधराव्या ते अेह ।६१।
वैश्नव तणा समाजमां आचार्यजी सेवा करी
पीपल तले बेठा हतां ते अेम बोल्या मन धरी ।६२।
वैश्नव सामुं जोइ कह्युं मेरो कह्यो करेंगो आहें
अेक कडा गामनो कनौजीयो ब्राह्मण हतो त्यांहां ।६३।
हाथ जोडी उभो रह्यो करी विनती आज्ञा देओ
त्यारे कह्युं आचार्यजीअे ले याकुं तुं सेओ ।६४।
ते शीष चढावी लेइ गयो प्रसन्न थयो मनमांहें
कडा गाममां जइने नित्य सेवा करे त्यांहें ।६५।
पछे को अेक दिवस इच्छा थकी दामोदरदास संभलवार
शांत थया त्यारे करी स्त्रीअे अति संभार ।४६६।

घरनी सामग्री सहु अने साथ द्वारीकानाथ
नावे बेसाडी अडेल मोकल्या साथ ।४६७।
नाव कडाने घाट ते आव्युं जेणी रात
त्यारे मथुरानाथजीअे स्वप्नमां कही वात ।६८।
द्वारकानाथ पधारे छे बेसी जेणे नाव
त्यांहां बेसाडी मोकलो अमने अेहवो भाव ।६९।
वलता बेहु स्वरूप ते अतिसे उलट भेर
पधार्या प्रेमे करी श्री आचार्यजीने घेर ।७०।
वधाइअे आवी श्री आचार्यजीने कह्युं ते नामी माथ
पधारे छे द्वारकानाथजीने साथे मथुरानाथ ।७१।
ते आचार्यजीअे अति उत्साह कर्यो रीझया मनने चाव
वैश्नव सामा मोकल्या बेसाडीने नाव ।७२।
पधारता मथुरानाथजी सांभली भली मानी मन मांहां
पधारे छे द्वारकानाथजी अे तो कछु भली नाहीं ।७३।
कोउ ब्राह्मणके पधारते तो होती भली वात
त्यारे गोपीनाथजीअे सांभली विनती करी अेणी भांत ।७४।
ठाकुर पधारत घरे अरू भली नांहीं कहो राज
सो काहेते अेसी कही सो कहीअे मोहे आज ।७५।
त्यारे कह्युं द्वारकानाथकुं आभरण हे बहु मोल
हमारे घर हे ग्रहस्ती को मति को लेवे खोल ।७६।
ग्रहस्तकुं संपती नून्याधिक होवत हे काहु जोग
कबहुं अे आभरण ले करे अपने विनियोग ।७७।
तब देव द्रव्य उपयोग थे होवे कुलको छेद
अरू नष्ट जाय या द्रव्यथे अेसो इनको भेद ।७८।
त्यारे गोपीनाथजीअे अेम कह्युं तुमारी संतती मांहें
अेसो तो को होयगो अेसी कहीअे नांहें ।७९।
त्यारे श्री आचार्यजीअे कह्युं तो भलो अेह पधराओ
पे जो वेसी होइगी तो हे बुरो उपाय ।८०।
वलता पधराव्या घरे अेणी पेरे अेह प्रकार
अे मांहें अे प्रागट्यना कारणनो नहीं पार ।८१।
अने गोकुलचंदजी माहावनमां प्रगट्या पृथ्वी मांहांथी
नारायणदास ब्रहमचार्यअे जइ तेणे दीठा त्यांहां ।८२।
त्यारे वडा गुंसाईजीने आणी आप्या घेर
आचार्यजीअे घेर पधारता कीधी अेहवी पेर ।८३।
नारायणदासने अेम कह्युं अे प्रगट भये गोकुल मांहां
इनकुं अन्यत्र ले जोइंये सो कछु उचित नांहीं ।४८४।

ताते सेवा तुम करो इनकी नीकी रीत
ते स्नेह सहित सेवा करे आणी मनमां प्रीत ।४८५।

भोग समर्पे अेहने जेह गायनुं दूध
ते गायने घास ते धोइने नीरे करी अति शुध्ध ।८६।

केणे कह्युं अे घासने धुओ छो शा माट
दूधमां आवे किरकिरी धोउं छुं ते माट ।८७।

वैश्नव आवे परोणा ज्यारे अेहोने घेर
खीर करे तेणे समय अतिसे उलट भेर ।८८।

केणे जइ आचार्यजीने कह्युं सांभलीअे राज
खीर करे वैश्नव निमित करे न ठाकुर काज ।८९।

आचार्यजीअे कह्युं सतकार करी वैश्नव आवे जब
उतम सामग्री रूचि सहित ठाकुर आरोगे तब ।९०।

अेहवो भाव ते नारायणदासनो पाछे ते थया ज्यारे शांत
वलती ते सेवा करे स्वामी जे कृष्णदास ।९१।

सतावीस वर्ष लगी अेणे सेवा करी
पछे श्री गुंसाईजी पधारीया मथुरामां चित धरी ।९२।

त्यारे सर्वे अेम कह्युं गुंसाईजीने आणी मन
गोकुलचंदजी पधरावीअे बेसे छे अे भिन्न ।९३।

पण संकोचे कृष्णदासने श्री गुंसाईजी जाणी मन
पधराव्यानी वातनुं कही न सके अेक वचन ।९४।

ते भगवद इच्छाअे करी उठयो उपद्रव अेक
गोरो दलपतराय जे ते कारण कहुं विवेक ।९५।

देशाधीपतीना हाथीनो अधिष्याता हतो जेह
कारणथी कारज अर्थ आव्यो त्यांहां तेह ।९६।

कृष्णदासने तेणे कह्युं देखाडीने ताप
तारे तो अलफाउ छे अे सेवा मुहने आप ।९७।

त्यारे कृष्णदासे अेहने कह्युं अे अलफाउ केम थाय
अे धरोवर श्री आचार्यजीनी में केम आपी जाय ।९८।

वलता ते मथुरामां पधार्या गुंसाईजीने घेर
अेम साते स्वरूप पधारीया कारण सहित सुपेर ।९९।

ज्यारे प्रभुजीअे प्रगट करावीयो सेवा मारग ज्यांहां
त्यारे सेवा मारगना अनुकर्ण जोइअे सर्व त्यांहां ।५००।

सेवा मारगनी साथे अे लीलात्मक परम अनूप
अभिधान सहित प्रगट कर्या अेहवा प्रथुक स्वरूप ।१।

त्रिविधी लीलानी नित्यता पुर्णता ज्ञापन अर्थ
त्रिविधी लीलानुं सूचन कर्युं पोताने सामर्थ ।५०२।

जे अहीं अे प्रागट्यने विषे अेको अंश न्युन ते नहीं
अेणे करी अे पुर्णता प्रगट जणावी अहीं ।५०३।
अेमां कारण अनंत छे अे ईश्वरनो आसय प्रौढ
अेहनुं कारण विसद करी कहेवाये नहीं गूढ ।४।
माटे अे श्री गुंसाईजीअे प्रगट्याना स्थलनुं जेह
नामनुं ने ते रूपनुं ज्यांहां जेहवुं कारण अेह ।५।
त्यांहां तेणे प्रकारे प्रगट करी सृंगारनी आज्ञा करी
अहीं नौतन करवुं हतुं नहीं पहेलुं करी राख्युं मन धरी ।६।
पण गिरधरजीअे गुंसाईजीनुं कर्युं उलंघवा अर्थ
सोपाधिक आग्रह कर्यो विण समजेथी व्यर्थ ।७।
त्यारे पबो त्रिवाडीअे कह्युं शिद करो छो उपाध्य
सेवा विन न्यारा केम रहेशे अे वात न केहेने साध्य ।८।
ते दिवस पांच सातेक पछी गिरधरजीअे कह्युं अेह
श्री वल्लभ तुम न्यारे रहो श्री नाथजीकुं लेहुं ।९।
कह्युं में श्री नाथजीकुं लेके बेठाउ कांहां
तुम तो अेसी कहेत हो में वाट देउंगो नाहीं ।१०।
तेणे कह्युं श्री गुंसाईजीकी बेठकमां बेठाओ
त्यारे कुल पालक कुल आभरणे विचार्यो मनमां भाओ ।११।
घनश्यामजी ने कल्याणरायजी न्यारा राख्या न जाय
अेहने अलगा केम करे कारण छे समुदाय ।१२।
धनश्यामजी श्री गुंसाईजीअे सोंप्या अेहोने हाथ
तेहनो आसय लहीने निर्वाह करवो नाथ ।१३।
कल्याणरायनी मेहेतारी ते राणी अेकवीरा बहु
शांत थया त्यारे कह्युं ते जाणे छे सहु ।१४।
गोविंदराय विक्षप्त मने रहेता वैराग्य भेर
ते जाणी मनमां धर्युं लरिकानी शी पेर ।१५।
आसपास परिवार सहु बेठा जेणी वार
पण श्रीजी सामुं जोइने ते तेणी वार ।१६।
चार बेटा त्रण बेटी अे देखाडी हाथे करी
अे सर्व तमारी गोद छे अेम कही आव्या भरी ।१७।
त्यारे श्रीजी कांइ बोल्या नहीं मर्यादा रक्षक धर्म
जेष्ठ भाई पासे हता जाणी अेहवा मर्म ।१८।
त्यारे वडपण लही अने गिरधरजी बोल्या अेम
चिंता कांइ करवी नहीं अे मारा लरिका तेम ।१९।
वली श्रीजी सामुं जोइने कह्युं ते बीजी वार
पण श्रीजीअे श्री मुख थकी कांइ कर्यो नहीं उचार ।५२०।

त्यारे बालकृष्णजीअे कह्युं वंदना करीने आप
तुम मनमों कछु मती धरो अे लरिकन को परिताप ।५२१।
ते अेकवीरा बहु अति निपुण अने महा भाग्यवान
श्रीजीनुं स्वरूप जाण्युं प्रगट तेनी उपमाने नहीं आन ।२२।
अे सर्व कहे छे वचनथी पण थावो नहीं निर्वाह
अेहोथी काज सरे नहीं अे उपजी मन दाह ।२३।
त्रीजी वार श्री मुख जोइ कह्युं ते थइने भीर
त्यारे बोल्या अेणी पेरे महा जाणक पर पीर ।२४।
चिंता यहु लरिकानकी कीजे मति कछु कोय
तुमारे करनो सो करो जो आ समे उचित होय ।२५।
याकी में जानु कही बोल्या वचन ते अल्प
अे ईश्वर सत्य वक्ता सदा ने वली सत्य संकल्प ।२६।
लौकिक अलौकिक भांत्य सहु करवो ओर निर्वाह
ते न्यारा मेहेल्या जाअे नहीं ते माटे करी साहे ।२७।
सवंत सोल छेंतालीसे वसंत पंचमी उपरांत
माघ सुदी जेष्ठ भाईथी न्यारा रह्या अेणी भांत ।२८।
श्री नाथजी विठलेशजी मदनमोहनजी त्यांहां
त्रणेय स्वरूपने लेइ पधार्या श्री गुंसाईजीनी बेठक मांहां ।२९।
सेवा सामग्री गिरधरजीअे आसन वस्त्र पर्यंत
वांट ते कांइ आप्युं नहीं अेक सूत्रनो तांत ।३०।
बहुजीनो चीर बिछाव्यो सिंहासनेतेणी वार
ते उपर पधराव्या स्वरूप जे सेवा सार ।३१।
पूरणता सहु भांतिनी पोते प्रगट करवी अहीं
ते माटे अेहो पासथी बांट ते माग्यो नहीं ।३२।
स्वरूप बले सहु स्वकीय जन आकर्ष्या करी नेह
अेणे समय आतुर थई आव्या ते सहु अेह ।३३।
अधिकारी भंडारी अने भीतरीया ततकाल
प्रचारक ने पोहोरूआ ग्वाल ने गाडीवाल ।३४।
वैश्नव सर्वने स्त्री पुरूष बालकने वली वृध्ध
मनसा वांचाअे करी आवी सर्व समृध्ध ।३५।
जेम जलनिधी पास तरंगिणी वही आवे जलनी रास
तेम अे तणाइ सर्वको आव्युं श्रीजी पास ।३६।
पण मार्ग निर्वाहक निपुण अने अतिसे सहेनाधीश
तेहने चिंता सर्वनी जे छे सहुना ईश ।३७।
मनमां अेह विचार्युं सहु को तो आव्युं अहीं
दादाने घेर सेवा तणो निर्वाह केम थाशे तहीं ।५३८।

ते सर्वने तेडी तेडी कह्युं पण त्यां को जाअे नहीं
त्यांहां ते मन माने नहीं अनुसरी रह्युं सहु अहीं ।५३९।
ते अनेक ते समाधाने करी मुक्ष ते गोपीदुवे
भीतरीया त्यां मोकल्या वली आग्रहे गया ते जेह ।४०।
चांपाभाईने तेडी कह्युं सुन तुं मेरी वात
तुं गुंसाईजीको अधिकारी हे अरू दादा हे बडे भ्रात ।४१।
ताते वहां गयो चाह्येि तोकुं उचित सोइ
चांपाभाईअे सांभली गाढे दीधुं रोइ ।४२।
श्रीजीअे अेहवुं जोइने कीधी अति मनुहार
उफराटा रोता राख्या कठिन पडी तेणी वार ।४३।
अने शंकरभाई ज्यारे प्रथम जुदा थयानी वात
सांभलीने उठी गया वृंदावन तेणी वार ।४४।
श्रीजीअे तेडुं मोकल्युं पण आवे न चिंते अहीं
कही पठव्युं तो आवुं जो अन्यत्र मोकलो नहीं ।४५।
नहीं तो कहीं उठी जासुं त्यारे श्रीजीअे कह्युं समुजाय
तुम सेवक श्री गुंसाईजीना उठी काहेकुं जाओ ।४६।
इच्छा आयके सुखेन रहो में याही ते कहेत हतो सोय
दादा बडे ताते तुमकुं वहां रहेनो उचित होइ ।४७।
त्यारे फरी कहाव्युं भले बडे पण अमो नहीं जाउं त्यांहां
राज सत्यवचन आपे तो अमो आवसुं आंहां ।४८।
सत्य वचननुं पत्र ते पठव्युं जेणी वार
आव्या आनंदित थई अेहो घेर तेणी वार ।४९।
जे कृपापात्र श्री गुंसाईजीना ते अन्यत्र केम जाअे
ते प्रपन्न अहींअेज होअे आश्चर्य शुं समुदाय ।५०।
अने प्रभुजी अेहो पर हित करे तेहनुं आश्चर्य नहीं
मारग करतां महेदनां अंगीकृत जे अहीं ।५१।
अेफलथी महदत्व ते सिध्ध थयुं संपन्न
जे अेणे प्रकारे ते सहु हवा ते अहीं प्रपन्न ।५२।
फल सिधे साधन सिद्ध ते कहीअे छे अे प्रमाण
अेह वचन श्रीमुख थकी कह्युं छे मीठी वाण ।५३।
अने अे तो न्यारा केम रहे स्वरूपनी सलुणता जोइ
बांधव बहेन आदि देइ अहीं आवे सहु कोइ ।५४।
बालकृष्णजी द्वारकानाथने लइने आव्या अहीं
प्रमुदित थई पासे रह्या आवी श्रीजी मांहें ।५५।
शोभाजी सत्याजी पण अहीं आव्या मली
महाराजजी पण आव्या अेहो मांहे रह्या भली ।५५६।

बालकृष्णजीनी स्त्रीअे कह्युं तमो बडा अेहो मांहें
रह्या छो ते उचित नहीं विचार करो मनमांहें ।५५७।

वलता ते अलगा रह्या अने पांच मास रही मांहें
श्रीजीअे त्यारे कह्युं में यों जानत नाहें ।५८।

में सबनको निर्वाह करत हुं अेसी उपजत नाहीं न सोउ
श्री गुंसाईजीकी इच्छाते होत हे तुम न्यारे मती होउ ।५९।

पण स्त्री सुभाव लइने वचन ते आणी मन
पोतानी इच्छा थकी रह्या ते पोते भिन्न ।६०।

अने दोढ वरस महाराजजी रह्या ते श्रीजी मांहें
कदाचित केहेने प्रश्न अेक उपजशे ते त्यांहें ।६१।

सहु भाईओने सेवाहित अने जदुनाथजीने नहीं
तेहनुं कारण विसद करी कहुं छुं ते अहीं ।६२।

माहाराजजी सेवा विषे मुक्षता नहीं प्रपन्न
तेणे करी श्रीजीने आवे नहीं कांइ मन ।६३।

श्री आचार्यजीना सेव्यने पधराव्या तेहोने घेर
इच्छा नहीं ते कारणे हवी ते अेहवी पेर ।६४।

तेथी अेहोना मनमां आदर उपज्यो नहीं
ज्यां जेहोने आदर नहीं पधारे केम तहीं ।६५।

ज्यांहां आदर आरत सहित नहीं ते मन
त्यांहां कोउ पदारथ प्रभु ते करे नहीं संपन्न ।६६।

तेहनुं अेह प्रमाण जे न्यारा थया उपरांत
महाराणीअे अेम कह्युं धरीने मनमां खांत ।६७।

सर्वको घेर आपापणे सेवाना बहु ठाठ
अमारे घेर सेवा नहीं जे कहोजी शा माट ।६८।

गुंसाईजीनो शुं बेटो नहीं मारो जे भरथार
बीजा केम सेवा करे अेम बोल्या तेणी वार ।६९।

गिरधरजीने अेम कह्युं करीनें अेहवी पेर
सेवा मारा वांटनी पधरावो मारे घेर ।७०।

त्यारे कह्युं गिरधरजीअे नवनीतप्रीय आपुं नहीं
गुंसाईजीने खेलवाना सेव्य छे ते तमो सेवो अहीं ।७१।

अे छोटा ठाकुर सेवुं नहीं अेम बोल्या जदुनाथ
के लेउं नवनीत प्रीयाजी के लेउं मथुरानाथ ।७२।

गिरधरजी कहे गुंसाईजीअे आप्या छे मुजने अेह
अे बेहु मांहांथी अेको अेहने आपुं नहीं हुं तेह ।७३।

अेम करतां वात वधी घणी ने पडी ते अति अहंकार
ते महाराणीनी बहेन ते घनश्यामजीनी नार ।५७४।

ते घनश्यामजी अेहोनो पक्ष करी बोल्या अतिसे गर्व
अर्ध बांट अेकलो हुं लेइश अर्ध ज बांटमां सर्व ।५७५।
लावीश नवनीतप्रीयने कोण धरसे माहारो हाथ
अे सुणी गिरधरजीनो भय पाम्यो सहु साथ ।७६।
कीवाड बाहेरना दइने सेवा करे ते त्यांहां
मर्यादा रक्षक महाप्रभु दर्शने पधारे ज्यांहां ।७७।
वली जेष्ठ भ्रात जाणीने मिलवा करवा नमस्कार
त्यारे गिरधरजीअे अेहोने कह्युं तेणी वार ।७८।
तुम वरजो घनश्यामकुं अति डर लागत मोहे
त्यारे श्री मुखथी कह्युं वरजुंगो में सोय ।७९।
श्रीजीने सूरती आवी नहीं गइ वात विसरी
बीजे दिवसे वली गया त्यारे कह्युं ते फरी ।८०।
श्री वल्लभ घनश्यामकुं वरजो कहे जाय
हां दादा वरजुंगो कब वरजोंगे याहे ।८१।
मोकुं तो यह भयहुंते ज्वर आव्यो सब रात
आज अवश्य तुम वरजीयो अेम कही गिरधरजीअे वात ।८२।
ते श्रीजी घेर पधारीया घनश्यामजी सेवा मांहां
नीची द्रष्टे सेवा करे आवी उभा त्यांहां ।८३।
सेवाथी पहोंची करी आवी बेठक मांहां
तेहवे अचानक श्रीजीअे आवीने ग्रही बांहे ।८४।
त्यारे उचुं जोइ अविलोक्या स्वरूपामृतनी वृष्टि
तेह थकी घनश्यामजीअे नीची कीधी द्रष्टि ।८५।
महा रमणीक स्वरूप अे विरूध्ध रूचे नहीं लेश
तो पोते सहेज स्वभाव बले करवा दे केम कलेश ।८६।
महा विरूध्ध वचनना प्रगट दावानल बोल्या जेह
दादासुं घनश्याम तुम कलेश करत हो अेह ।८७।
में वरजत हुं आजथे कलेश न कीजो ताहे
बांट लीये ते तुमकुं संपति बढि हे नांहें ।८८।
श्री गुंसाईजी सामे देखीके विचारो अेसी पेर
अरू नवनीतप्रीयकुं बेठन दो दादा घेर ।८९।
जदुनाथकुं सेवा विषे प्रपन्नता नहीं सोय
ताहिते उन आपुथे सेवा कछु न होअे ।९०।
अरू तुम कहा यहु जानत नहीं नाथजी अरू नवनीतप्रीय नाम
अे न्यारे बेठे नहीं सुनी लेहो घनश्याम ।९१।
हमारे घेर नवनीतप्रीय बेठत हे नित्य
में वरजत हुं तोहेकुं छांडो अेहनी मित ।५९२।

आज कह्यो नहीं करोगे कहीयत नीकी भांत
अंत मिलु हमे वाहीसुं अब मानो मेरी वात ।५९३।
त्यारे नीचुंथी उंचुं करी जोयुं न लज्यावश
घनश्यामजीअे अेम कह्युं बोलुं नहीं अवश्य ।९४।
मुख सामुं जोइ सक्या नहीं अतिसे संकोचभर
स्वरूपाकृत प्रगट करीने कह्युं तेणी पेर ।९५।
अेहवी ग्रहस्ताश्रम तणी अंगीकृत लीला सार
अभिप्राय सहित लीला करे तेहनो नावे पार ।९६।
आचार्यजी सेव्य स्वरूपनी सेवा नहीं अेहोने घेर
अे प्रकार अेणी पेरे हवो हवे कहुं छुं पूर्व पेर ।९७।
अलौकिक धन अेहोना बांटनुं जे लीला मध्यवर्ती
ते तां अनुसरी रह्युं प्रात लगी धुरथी ।९८।
अेम गिरधरजीना आग्रह थकी श्रीजी थया ते भिन्न
पण लौकिक द्रव्यादिक कांइ बांट न मांग्यो अन्य ।९९।
जेम भक्तने प्रभुनुं स्वरूप धन भक्तनुं प्रभुने धन
अे उभयता परस्पर भाव अनन्यता मन ।६००।
जे केवल स्वरूप सबंघणी भरणी छे सृष्टि जेह
जेहेनो स्वरूपे विनियोग छे तेहने स्वरूप बले भरे अेह ।१।
अे धनथी पोते वैश्नव सकल संपति सिध्ध करवी अहीं
ते माटे अे कारणे बांट ते लीधो नहीं ।२।
अहीं लौकिक धन शा काजनुं रसिकने स्वकीय ते धन
अेणे मदे अन्य धननी संभावना नहीं मन ।३।
तो अेइच्छा शी करे अे श्रीमुखे कह्युं छे त्यांहां
ज्यांहां अलौकिक पदार्थ सिध्ध छेत्यां लौकिक कीया मांहें ।४।
अपेक्षा विन आयास विन पाछल लागुं ज्यांहां
घसिटायुं आवे सदा तेहनी साथे त्यांहां ।५।
जेम शकटनी पाछल झांखरूं वलगुं आवे जेह
तेम लौकिक अलौकिक पाछल सहेजे आवे तेह ।६।
ज्यांहां जीवनी अे दशा ज्यारे कृपा प्रभुनी होअे
तो अे प्रभु लौकिक धन तणो बांट सो मांगे सोय ।७।
माटे स्वरूप बले सहु स्वत:थी कीधुं वैश्नव द्वार
धने धनवर्ध, करीने कर्यो वैश्नवनो विस्तार ।८।
अति अलौकिक माहा विचित्रता प्रगट करवा काज
ने पूरणता पोता तणी प्रगट करवा महाराज ।९।
अने बीजे भाई भोजाइअे भिन्न रह्या पहेला
द्रव्यादिक लोभे करी काज कर्या वेहेला ।६१०।

भंडारेथी घरमांथी जे पाम्युं द्रव्य समेत
पोतानुं मन मानतुं कीधुं स्वारथ हेत ।६११।
अने श्रीजी पासे भेट जे आवे द्रव्यनी साथ
ते पोते कहीं छुहे नहीं सहु भंडारीने हाथ ।१२।
अे अनाद्य रीत छे अेहोनी राखे नहीं पोता पास
अे राखे कहो कोणथी जो सहुने अेहोनी आस ।१३।
भंडार सहु प्रथमना अमथा मुकी तेम
केवल सेव्य स्वरूपने लेइ पधार्या अेम ।१४।
प्रभु लौकिक अनुकर्णे करी लीला अलौकिक जेह
स्वरूप गोपन हित सर्व जे लौकिकवत लीला जेह ।१५।
पछे सेवा आसने पधरावीने अेम कीधुं तेणी वार
श्री हस्त केरो फेरूवो उतार्यो प्राण आधार ।१६।
चांपा शंकरना हाथमां आपीने बोल्या राज
याकी सामग्री सबे लाओघरके काज ।१७।
पछे भाई भत्रीजा बहेन भाणेज सहु परिवार
सर्व सहित भोजन कर्युं करी आदर मनुहार ।१८।
पोढी उठी उथापने गादी तकीअे आप
आवीने बेठा त्यांहां हरण सकल परीताप ।१९।
त्यारे वैश्नव सर्वको स्त्री पुरूष जे कोइ प्राणी मात्र
भेट करी उत्साहसुं जेहवुं जेहनुं गात्र ।२०।
वित समान केणे करी केणे चित समान
ढेर रूपैयनको कर्यो हता जे भाग्यवान ।२१।
तेवामां गुजरातनो थोडो अेक समाज
आव्यो आनंदे भर्यो प्रथम जे दरशन काज ।२२।
तेमां रंगाबाई सोनी अने धनाबाइ रजपुत
तेणे वहेला वहेला थइने काज कर्या अद्‌भुत ।२३।
पोते मथुरा जइने घंटा ने झालरी
आरती लाव्या अभिनवी समर्पी उलट भरी ।२४।
प्रथम तहां देवो देवाडो रहेतो अहीं द्वारपाल
तेणे घर पोता तणुं समर्प्युं ते ततकाल ।२५।
श्रीजीअे पोता तणी बेठक करी तेणे ठाम
स्वकीयनो अंगीकृत अेणी पेरे पूरे काम ।२६।
पछे वलता चांपोभाई बीजे दिवसे थई
वेगे चाल्या आगरे प्रभुनी आज्ञा लइ ।२७।
ज्यावदिक उपयोगनी सामग्रीना साज
उतम उतम आणीया आवे जे अहीं काज ।६२८।

श्रीजीनी असवारीने घोडा ते अति सार
बे लीधा उतावला तेहनो कहुं प्रकार ।६२९।
अेक अठावीश मोहोरनो नीलो तेहनुं नाम
बीजोसतर मोहोरनो लटकण आव्यो धाम ।३०।
वलता आव्या भेटना अेकथी अेकअनंत
अति सुंदर बहु मोलना है वर महीमा वंत ।३१।
तेहना नामने रूप गुण लक्षण अनेक प्रकार
ते आगल कहीश विसद करी तेहनो सहु विस्तार ।३२।
ज्यारे भिन्न थयानो विचार थयो त्यारे चांपा भाईने त्यांहां
गिरधरजीअे अेम कह्युं तुं रहे मारा घरमांहां ।३३।
ना कही त्यांहां टोक्या हता गिरधरजीअे चांपोभाई
श्री वल्लभके घर रहीके राज करो मन भाई ।३४।
और चोडंडी वाहेणी उपर फिरीओ बेठ
अेहवा वचन गिरधरजीअे कह्या करी घणुं रूठ ।३५।
तेह वचननी टोक उपर चांपेभाई तेणी वार
लेइ आव्या वाहेणी चोडंडी माहा सार ।३६।
चांपोभाई जाअे बागमां ने वली कहीं थोडे काज
बेसी जाअे वाहेणी करी सुंदर बहु साज ।३७।
पोते पण रूडा रहे पहेरे वस्त्र आभरण
भव्य भांत भावे घणी मोटुं अंतःकरण ।३८।
सामग्री भंडारमो भरे जे उतम होइ
अेह वात सहु विसद करी श्रीमुखे कही छे सोइ ।३९।
अेह वात गिरधरजीअे सांभली मन धरी
आवी भेट थई ने आवी सामग्री ।४०।
प्राअे अे लौकिक तणो जाणे बहु प्रकार
अहंकारे माने नहीं पोता केरी हार ।४१।
त्यारे बोल्या मन विचारीने अे में जानत हुतो सोय
श्री वल्लभ ज्यांहां रहेंगे त्यांहां रहेंगे सबकोय ।४२।
पे अेकत्र रहे अविज्ञा करे सो रूचे नहीं मन मांहें
सब कोउ वहां अनुरक्त रहे मोपे आवे नहीं ।४३।
भिन्न कीये में ताहिते जानीबुझीके आप
अेमअेहोने असही होअे आंहानो तेज प्रताप ।४४।
अहंकार ईर्षा करे ते सहु कारण अर्थ
अे इच्छा शक्ति सेवा करे इच्छाने सामर्थ ।४५।
हवे अेणे प्रकारे महाप्रभु नित्य श्री गोकुल मांहां
परम आनंदे स्वकीय हित लीला करे ते त्यांहां ।६४६।

अनेक हास्य कौतुक कथा वात प्रसंग सहित
अेम परिकर परिवार ज्युत अहीं बिराजे नित्य ।६४७।
सदा सुखद परमाविधी स्वतंत्र परम अनूप
नित्य निरंकुश लीला करे गोकुल केरो भूप ।४८।
पण भाग्यरास गुजरातने विषे जे गामे गाम
श्री अंगे प्रगटित लीला उपयोगनी सृष्टि जे ठामे ठाम ।४९।
प्रगट करी प्रागट्य अर्थ अनुपम अनेक समाज
ने पोषक थई पूरण हवी भाव भरी रसराज ।५०।
कृपा पात्र हित पात्र जे केवल रसना पात्र
अभिलाष भर्या आरत भर्या सिध्ध थया रसिक जन मात्र ।५१।
तेहोना मनोरथ मन तणा अति अव्यक्त महा गूढ
ते भाव भावता ने रूदे थया ते अति आरूढ ।५२।
तेहोना रस अनुभव तणी इच्छा करी महाराज
भजनानंद रसानंद ने जे छे पुष्ट समाज ।५३।
अे पुष्टि रसे वस रसिकवर ते भक्तने करवा दान
इच्छा मध्यपाती थई कृपा द्वारा सनमान ।५४।
ते रसावेसथी भक्तने मनोरथ हवा प्रकाश
तेथी भाव प्रगट्या अति ते परम महा रस रास ।५५।
भक्त विषे ते भावनो अविर्भाव जे होइ
अे ते स्वरूपनो धर्म छे ते जाणे सहु कोइ ।५६।
आविर्भाव पूर्ण पात्र जोइ करे ते परम प्रवीण
रूप मार्गी स्वकीय ते होअे रस आधीन ।५७।
अेणे कारणे इच्छाअे प्रथम भक्तने योग करी
त्यांहां भाव रूपी बीज ते वाव्युं भावे भरी ।५८।
शुभ स्थलथी अंकुर थई जतन थकी प्रसरीय
प्रफुल्लित थई फल थयुं आव्युं रसे भरीय ।५९।
त्यारे पोते आरत सहित ते फलनी करे आस
अहर्निस अभिलाषा रहे क्षणु न मेहेले पास ।६०।
ज्येम करषणी बीज वापन करे भूमी शुध्ध करी सार
कुभोमें वाव्युं थकुं प्रसरे नहीं निरधार ।६१।
बीजो कुभोमें जो पडे प्रसरे नहीं प्रसिध्ध
तेथी तेहने फल तणो अर्थ न थाअे सिध्ध ।६२।
ते बीजमां प्रथम पोते पासथी रंच नहीं सामर्थ
ते बीजे करी ते समे सरे न तेहनो अर्थ ।६३।
सुभूमीअे वावी जतन करे सांप्रत्य थई अेक चित
फलने अभिलाषे करी रसना स्वाद निमित ।६६४।

ते फलथी ते धणीनो सिध्ध मनोरथ थाय
अेणे सबंधने करी अलौकिक सहु प्रीछाय ।६६५।

तेम भजनानंद रस गूढ अति स्वतः नहीं समुजाय
भगवद उद्यमे पामीअे बीजो नहीं उपाय ।६६।

प्रभु पोते रमण इच्छा करे त्यारे होअे सिध्ध
ने भक्तना मन विना दान प्रभु करे नहीं महा निध्ध ।६७।

सर्वात्म जो भाव होअे तो मांहां रस संपन्न
त्यांहां पूर्व पक्ष अेक उपज्यो आव्युं अेहवुं मन ।६८।

जे साधन साध्य तो छे नहीं भजनानंद छे जेह
ते भाव सर्वात्मना जे कह्यो ते साधन नोहे अेह ।६९।

त्यारे तां भजनानंद पण थयुं ते साधन साध्य
समाधान अेहनुं कहुं जेथी रहे न आध्य ।७०।

सर्वात्मभाव साधन नोहे अे केवल फल रूप
मध्य पाती फलात्मीक केवल रसनुं स्वरूप ।७१।

जे पुष्ट पुष्ट रसं मार्गी तेहना भावनुं नाम
रस कहीये छे तेहने जे प्रभुनुं अभिराम ।७२।

अेह रसे अति आसक्त प्रभु रसाधीन रस मांहें
अेम दान अपेक्षा भक्तसुं नित्य करे चित त्यांहां ।७३।

ते उलतपुलत अेक अेकने दान अपेक्षा होइ
भाव मार्गी ते लहे अन्य न जाणे कोइ ।७४।

ते भावे भावात्मीक कर्युं व्हालाजीनुं मन
इच्छाने इच्छा प्रगट करी करवा रस संपन्न ।७५।

स्वरूप मार्गी भक्तना भाव ते परम वरेश
प्रभुनी इच्छाने फेरवी सनमुख करे सुदेश ।७६।

को कहेसे अे केम होय जे भक्तना मननो भाव
ते इच्छाने केम फेरवे प्रगटावे केम चाव ।७७।

भाव इच्छाने फेरवे सनमुख करे ते सत्य
इच्छा भाव आधीन छे अे अनुभव उपपत्य ।७८।

त्यांहां कहुं छुं सांभलो प्रगट प्रमेय सांप्रत्य
श्रीजीअे कीधुं ते कहुं अेह वचन करी व्यक्त ।७९।

जुदा थया त्यारे प्रभु सुंदर महा परम वरेस
चांपे भाईअे विनव्या करीअे अेक परदेश ।८०।

त्यारे श्री मुखथी कह्युं में गोकुल छांडी अन्यत्र
चलीवेको परदेशकुं कबहुं न करूं चित ।८१।

अेह वचन कहीने पछे पधार्या केम अेह
वचन ओलंघन कर्युं जो भावे आकरस्या तेह ।६८२।

तेहना सुख अनुभव अर्थ करवाने अभिसर्ण
आरत्य आरत हरणने प्रगटी अंत:करण ।६८३।
अंगी इच्छे अंगने अने अंगीने इच्छे अंग
तेणे आरत उपजी जाणी पूर्व संग ।८४।
ते आरत इच्छा पवन पावकथी उभरी
भक्तना उर अवनि विषे आभ्यंतर प्रसरी ।८५।
अंग अंग भेदे थकी पामी अतिशे वृध्ध
ते आरत अतिसे प्रगट करी जे प्रगटी स्वकीय समृध्ध ।८६।
ते आरते आरत भर्या प्रभु अतिशे अकुलाय
पण पधारे अे केही पेरे केहेने नहीं कहेवाय ।८७।
सहसा पधारे नहीं जोइअे कांइ निमित
त्यांहां इच्छाअे आपथी रचना कीधी विचित्र ।८८।
सामग्री सहु सिध्ध थई आवे प्रभुने जोग
अेम जाणी अे सृष्टिने करवा अहीं विनियोग ।८९।
जे इच्छा सनमुख थई भावे करी आधीन
तेणे प्रभु सनमुख कर्या सुंदर महा प्रवीण ।९०।
अेम भावे इच्छा फेरवी ने इच्छाअे प्रगट्या भाव
तेह विसद करीने कहुं धरी मनमां अति चाव ।९१।
भाव प्रबल थया भक्तने अेह कृपानुं दान
दाताने अे दानथी इच्छा हवी फलदान ।९२।
जे इच्छाअे भक्तने अंतर कर्यो प्रवेश
अेक भावे सर्वने प्रगट्या भाव सुदेश ।९३।
श्रीजीने सहु भाईथी थया जे जाणी भिन्न
गुजराते सहु भक्तने सहेजे आव्युं मन ।९४।
विठलदास आदि देइ जे अेतद रस पात्र
तेहोने मनोरथ उपज्या स्वकीय जे प्राणी मात्र ।९५।
जे कोइ भांते अेकवार अहींया पधारे गोकुलेश
जनम सफल होअे अम तणो आरत रहे न लेश ।९६।
ते हरिवंशजी सेवा निमित प्रथम ते रहेता त्यांहां
तेहोने जइ विनती करी अतिसे उलट मांहां ।९७।
चाचाजी तमो अति चतुर तमने सहु सामर्थ
श्रीजीने विनती लखो अमारा भाग्यने अर्थ ।९८।
तमो पधरावो प्रेमे करी गोकुलपति महाराज
आनंद होअे अभिनवा ने सरे ते सहुना काज ।९९।
अेह काज तमथी थशे तमो जो करो सहाय
तो आशा पूरण अम तणी मनोरथ पूरण थाय ।७००।

त्यारे महेद कृपा पूरित प्रबल अनुग्रही अनुपम पात्र
हरिवंशजी बोल्या तेह समय अेह मारूं नहीं गात्र ।७०१।
गोकुलपती गोकुल छांडिके आंहां आवेंगे नाहीं
पे हां अेक उपाय हे सो आवत मनमांहीं ।२।
पधारवेकुं द्वारका कबहुं आवे मन
अे संमत सांभलीने सहु को थया प्रसन्न ।३।
अे उध्वरीत भक्त गुजरातना जेना प्रभुजीअे स्वत:थी आप
अन्य भाजन निवारण कर्या हरया सकल परीताप ।४।
अे ग्रसित हृदयना घणी जे साधु सकल जन मात्र
रसपात्र तणा अे परीग्रहित परम अनुग्रही पात्र ।५।
लीलाना साक्षी स्वारथ रहित रस पात्रना आछादन
भावे पोषक भगवदी जेहने रस संपन्न ।६।
महा फलना फल ने परम फल केराअे द्वार
अति पुरूषार्थ रूप अे उभयआसकत अपार ।७।
जेहनी स्वरूप बले रक्षा करी पोताने मन भाय
अेहवुं वृत अे शुं धर्युं जे कांइ तज्युं न जाय ।८।
अेहवा प्रभुना भक्त अे जेहने श्रीमुखे करी
प्राण प्रभुअे प्रेमसुं कह्युं ते भावे भरी ।९।
वेसे भगवदीकुं नहीं देखते तो रहेतो पश्चाताप
भली भइ गुजरातकुं गोन कीयो हमआप ।१०।
अनुभव सूरते वचन अे बहुवार कह्या छे घणुं
क्यां लगी भाग्य सराहीअे तेह समय ते तणुं ।११।
वलतुं त्यां चाचाजीअे अनेक भांति चित धरी
पत्र लख्युं प्राणेशने रस भर विनती करी ।१२।
ते मध्ये कलेश करी हारंद्र कर्युं प्रसिध्ध
भाव निरूप्या भेद करी जे स्नेह तणी महा निद्ध ।१३।
मर्यादा मुक्षे देइ द्वारकाने उदेश
अेणी पेरे विनती लखी भक्ते परम वरेश ।१४।
अे मारग छे राजनो रक्षक पोषक राज
ते राख्यो जोइअे राजने मारगना हित काज ।१५।
द्वारका श्री आचार्यजी ने श्री गुंसाईजी सोय
पधार्या छे रूची करी कारण जाणी कोय ।१६।
तेहोना कीधा धर्मना पक्षक परम कृपाल
अेहवुं जाणी तेहनी करवी ते संभाल ।१७।
जो राज नहीं पधारसो तो गुंसाईजीना कुलनो जेह
निमित करीने द्वारका पधारे नहीं तेह ।७१८।

अने कहेशो राज जे को समे पधारीस त्यांहां
ते वलतुं बनी आवे नहीं पधारवुं ते आंहां ।७१९।

पधार्यानो समय ते हवडा छे महाराज
वेगे करी पधारजो कहुं छुं मेली लाज ।२०।

कोण गात्र मारूं प्रथम हुं सहुथी परम अयोग
राजनी करूणाअे मुंहने कीधो छे अति योग ।२१।

ते करूणाना बल थकी थई ते अतिसे दीठ
गूढाशय विनती करी कीधी मध्य वसीठ ।२२।

जे को समजे आपथी तेहोने शुं कहे कोय
राज बडा छो शुं लखुं करजो उचित होय ।२३।

भाव अनेक प्रकास करी लख्या जे विनती मांहे
ते अग्रम लीला रसिक रसे विसद कहीश त्यांहां ।२४।

अेहवुं पत्र लखीने पठव्युं गोकुल भणी
निश्चय करी पधारसे गोकुल केरो धणी ।२५।

अेह पत्र मारगमां आवे छे जेणी वार
ते पहेला चांपाभाईअे कीधो आंहां विचार ।२६।

पबो त्रिवाडी तेडिया ने शंकरभाईसुं मली
चांपोभाई अेकत्र थई संमत कीधो मली ।२७।

भक्त भाग्य विस्तारवा सेवा संपन्न हेत
करी देशांतर गमननी विनती विनय समेत ।२८।

महाराज मनमें धरी करीअे अेक परदेश
त्यारे गोकुलना जीवन धणी आभरण श्री गोकुलेश ।२९।

सेवाने रसे अति रसिक अेम बोल्या हित भरी
नाथजी आगेमुठ अेक छोला राखुं धरी ।३०।

पे गोकुल छांडु नाहीं केवल द्रव्य विशेक
में ग्रहस्त निर्वाहकुं करूं नहीं परदेश ।३१।

द्रव्य निमित परदेश में करूं सो उचित नाहीं
तुम चिंता काहु भांतिकी मती कीजो मन मांहीं ।३२।

अरू ठाकुर भली करेंगे सब भांति अरू सब प्रकार
कहा चलत हे द्रव्यकी सगर्भ वचन कह्या सार ।३३।

श्री गोकुलनुं सर्वात्म द्रव्य सेवननुं हेत
कही करी देखाडयुं आपथी हित अनुकर्ण समेत ।३४।

वलता चांपोभाई ने शंकरभाई तेणी वार
पबो त्रिवाडी मलीने कीधो अेह विचार ।३५।

प्रभुनो आसय जोइने भंडारे तहां घणुं
सर्व पदार्थ जोइअे शुं करवुं तेह तणुं ।७३६।

माटे हरीवंशजी गुजरात छे अे सघलुं वृतांत
विसद करीने तेहोने लखीअे सहु अेकांत ।७३७।
अे प्रभुने विनती करीने त्यांहां पधरावे अेह
कानी अेहोनी मानसे प्रभु आणे छे नेह ।३८।
इच्छाने अनुसारथी अे निश्चय करी वात
पत्र लखीने मोकल्युं वेगे ते गुजरात ।३९।
अहीं अे कारज कर्युं इच्छाअे सर्वत्र
अेहवे गुजरात थकी आव्युं ते शुभ पत्र ।४०।
ते सर्वे विनती करी महा प्रभुने आप्युं हाथ
वांचीने पधारवुं निश्चय कीधो नाथ ।४१।
गुजरातने पधारवा प्रभुअे ज्यारे कर्युं मन
त्यारे ते गुजरात थई सकल रसे संपन्न ।४२।
आनंद मोद उत्साह मली उलटे आरंद्र थई
धसमसीने आगल थकी आव्या ते रस मइ ।४३।
महा भाग्य उदयना फल तणी वधाइ वेगे करी
लेइ धाया उतावला बहु आशा मन धरी ।४४।
ते नगर नगर नव रूचि सहित गाम गाम बहु ठाम
प्रत्येक प्रमोद प्रगट हवो ज्यां त्यांहां धामे धाम ।४५।
अे वधाइथी महा भाग्यनो उदय थयो अनुराग
ज्यांहां त्यांहां सर्वत्र सर्वको करी माने ते भाग्य ।४६।
महाभाग्य भाग्य कहेता थका थया ते भाग्य मइ
तेथी भाग्य जगतना विसतर्या सुख थई ।४७।
अे महाभाग्यना उदयथी जेम चंद्र उदयथी थाय
जलनिधी माहा उछल्लित थई पोतामां न समाय ।४८।
तेम रस सागर उछल्लित थई फेल्यो फूल्यो संपन्न
तेणे आरत रूपी लहेरमां मग्न थया भक्तना मन ।४९।
अने प्रभुना आगमने विशे हरखे करी अंग अंग
पूरण थई प्रफुल्लित हवा प्रतिक्षणु वाध्यो रंग ।५०।
जेम मेघने आगमने थकी वनस्पति भार अढार
नव पल्लव थाअे नव रसिकने आगमने अनुसार ।५१।
अने आखो देश रिध्ध सिध्धमें संपते थयो पुर्ण
वैभववान सहु थयुं दुःख दरिद्र थया चूर्ण ।५२।
श्रीजीअे महादाननुं फल अनुभव ते करी
पधार्या ते गुजरातथी पोते ज्यारे फरी ।५३।
त्यारे श्रीमुखथी कह्युं आप श्री गोकुल मांहां
धन्य धन्य ते अनुभवी जे कोहु हता त्यांहां ।७५४।

जब हम गुजराते गये अेम बोल्या मन भाय
तब संपती गुजरातकी कहा कहुं कहीय न जाय ।७५५।
संपूर्ण सब देशमों मणि माणेक मोती
अरू राजनगर खंभातकी संपती विनहोती ।५६।
जेसे अन्नकी रास होइ तेसे मोतीकी रास
मानो ढेर जुआरके देखे प्रगट प्रकार ।५७।
आवे छोटी छोटी लरिकनी मेरे दर्शन काज
सो आभूषणमों भरी सुंदर करी के साज ।५८।
नख शिख अंग न देखीअे भूषण आगे लेश
तोलीये तो वे अंग ते भूषण होअे विशेष ।५९।
अेम सर्व प्रकारे सर्वथी प्रफुल्लित थई गुजरात
त्यांहां पधारे गोकुलपती फूल्या अंग न मात ।६०।
लीला पांच प्रकारनी तन मन अंगी समेत
रसभोगी रस सागर तणी मर्यादाना सेतु ।६१।
उभय मनोरथ पूरवा रस अर्थे महासार
विजय करे छे ते कहुं कांइ अेक विसद प्रकार ।६२।
वलतुं ते गिरधरजीअे पूर्व चालवा काज
मुहुरत लेइ जोतसी कने कीधा ते सहु साज ।६३।
ते जोतसीने श्रीजीअे कह्युं अमारे काज सुदेश
मुहुरत अेक विचारजो चालवुं छे परदेश ।६४।
अे वात आप श्रीमुखथी कही ज्यारे कर्यो विचार
दादाने पूर्व चलनेको मुहरत धर्यो जेही वार ।६५।
तब हम वाहीसों कह्यो अे सुनो हो जोतसी सोइ
अेक मुहुरत हमारे लीये विचारो उचित होइ ।६६।
पाछे वे मुहुरते तो बन्यो नाहीं जो उन दीनो तांहे
गोविंद त्रीवाडीने सुन्यो रहे ते आगरे मांहे ।६७।
उन कहे पठयो तुम मति चलो नांहीं अे मुहुरत सुदेश
में मुहुरत जब देउंगो तब कीजो परदेश ।६८।
मुहुरत जे प्रथम बण्युं नहीं तेहनो कहुं प्रकार
अेक प्रभुना चरित्रमां कारण बहु विस्तार ।६९।
गुजरातेथी जे प्रथम वैश्नव तणो समाज
दधालीयेथी आव्यो हतो दर्शन केरे काज ।७०।
प्रभुअे तो सद्य विजय तणुं मुहुरत लीधुं आप
ते समाज सहु व्याकुल थयो प्रगट्यो अति परीताप ।७१।
कहेआ जुओनी बाइ आपणा आव्याना मारगमां
पगला भुसाया नथी अने प्रभु पधारे त्यांहां ।७७२।

हवे शुं करवुं आपणे केहेने अे कहेवाय
केही पेरे अे प्रभु रहे कीजे कोण उपाय ।७७३।
त्यारे धनाबाइअे मेघने विनवीने कह्युं सहु
जो आवे तुं अेह समय मेघ लाडु करूं बहु ।७४।
प्रभुना भक्त तणुं वचन मानी समुजी गद्य
तेणी वेला तेह समय मेघ ते आव्यो सद्य ।७५।
ते श्रीजी त्यार पछी रह्या अेक मास पर्यंत
भक्त सहु भावे भर्या कीधा मनोरथ अंत ।७६।
अे विलंब तणुं कारण कहुं जे गुजराते छे भक्त
जे प्रभुने विलंबे करी होअे आरत ताप अव्यक्त ।७७।
उभय अभिनवो उपजे अधिक रसने अर्थ
भाव प्रबल प्रगटाववा इच्छाअे कर्युं सामर्थ ।७८।
पछे गोविंद त्रिवाडीने मुहुरते सडतालीसे शुभ रूप
आसाडादि गुजरात मिती छेतालो जे अनूप ।७९।
चैत्र सुदी नवमी निपुण नव नव आनंद दाय
अे मुहुरते मुरती सुखद ने उलट अंग न माय ।८०।
महा भाग्यवती गुजरातने करवाने महा दान
गुजराते पधारीया केवल कृपा निधान ।८१।
ते लीला अनुपम अति जेहनो नावे पार
अग्रम लीला रसिक रस त्यांहां करसुं विस्तार ।८२।
रसिक रस ग्रंथ जे नाम ते मांहें मांगल्य सोल
कहीस ते विसद करी आगल रसना रोल ।८३।
श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल ग्रंथ जेह
अेहनो अेक तरंग अे थयो विसद कहुं हुं तेह ।८४।
त्रीस मांगल्य कली दश सहस्त्र त्रणसे अडसठ करी
अेणी पेरे अेक तरंग अे पूरण कीधो भरी ।८५।
सवंत सोलसे उपर छेतालो पर्यंत
प्रागट्य थकी ते अहीं लगी कही लीला मय मंत ।८६।
हवे बीजे तरंगे प्राणपति पधारी गुजरात
रस लीला करी तेहनी कहुं कांइ वानगी मात्र ।८७।
महेद तणी रूची जोइ अने रीझया अति सुखदाय
गोपालदासे विनती करी भाग्य महेद सहाय ।७८८।

इति श्री गोकुलेश लीला रसाब्धी क्रीडा कल्लोल महा अद्भुत विचित्र रस
व्याराना गोपालदास विरचित श्री गृहस्थाश्रम अंगीकार
सुखानुभव लीला वर्णनो नाम मांगल्य त्रीसमुं संपूर्ण
।। प्रागट्य सिध्धांत संपूर्णम् ।।